शिवप्रसाद सिंह

औरत

औरत

शिवप्रसाद सिंह

कथाकार का बयान

किसी आदरणीय सहायक मित्र के सहयोग को भुला देना कृतघ्नता है। मैं चाहता तो अपने समादरणीय मित्र डॉ० शिवेन्द्र को पी-एच० डी० उपाधि मिलते ही भुला देता। आजकल ऐसा ही होता है। पर शिवेन्द्र एक बड़ी हस्ती का नाम है। वह मात्र प्रवक्ता हैं समाज-शास्त्र विभाग में पर मेरे तो गुरु और मित्र दोनों हैं। दो साल बड़ा होना कोई मानी नहीं रखता, पर अपनी आत्मा में घुमड़ती सम्पूर्ण व्यथा को मेरे आग्रह पर उन्होंने जिस रूप में सुनाया वह तो बहुत गहरी मित्रता में विश्वास के कारण ही सम्भव हुआ। मैंने उनसे अनुरोध किया : "आपके जीवन की इन घटनाओं को जो मैंने प्रत्यक्ष देखीं और जो आपके मन में थीं उनका विवरण सुना, उसे प्रकाशित कराने के पहले आपको दिखा देना चाहता हूं।" डॉ० शिवेन्द्र मेरे गुरु हैं। मेरे शोध-कार्य के निर्देशक रहे। अब मैंने पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर ली है। चाहूं तो औरों की तरह मैं भी उन्हें ठेंगा दिखाकर अलग हो सकता हूं। जो देखा, जो सुना उसे रंग-रोगन लगाकर प्रेम की गाथा बना सकता हूं, पर नहीं। मैं कथाकार हूं, इसीलिए सत्य के प्रति प्रतिश्रुत हूं। मैंने इसी कारण उन्हें पूरी पांडुलिपि पढ़ने को दे दी। स्वभावतः हंसते हुए बोले—"ले जाओ, प्रेम इसे छपवा दो। देखना क्या! वैसे भी साहित्यकारों की खसलत से वाकिफ हूं। मैं न तो तुम्हें मानहानि का नोटिस दूंगा और न ही तुम्हारी कृति को अनचाहा महत्व दूंगा और न ही इसे झूठ और काल्पनिक कहकर तुम्हें पाठकों के सामने नंगा करूंगा। जाने क्या-क्या लोगों ने कहा और बका है मेरे बारे में; उसी भूसे की राशि पर यह गोबर भी रख दो। इसे देखना क्या?" मैंने जिद पकड़ ली। लाचार उन्हें पढ़ना पड़ा। पढ़कर पांडुलिपि देते वक्त बोले—"आश्चर्य है तुमने डॉ० शर्मा की कहानी-कला की पूंछ छोड़ दी इस बार। बड़ा आकर्षक उपन्यास है यह। लेकिन प्यारे भाई तुमने उत्तम पुरुष 'मैं' के रूप में इतने नरेटर्स एक साथ जुटा दिए हैं कि पाठकों को भ्रम भी होगा और चिढ़ भी। कहीं नरेटर तुम हो, कहीं मैं हूं, कहीं हरीश हैं, कहीं मुनीश हैं—बड़ा घपला है। कौन 'मैं', किस 'मैं' से कह रहा है। उपन्यास पकड़ता है, पर अगर नरेशन का

घपला न होता तो बेहतर होता।" ठीक है सोचूंगा। आपने इसे आकर्षक माना इतना ही पर्याप्त है। मैं आपसे कथा-साहित्य की रचना-प्रक्रिया पर बहस करने नहीं आया हूं। मैं किस्सागो नहीं हूं। 'नरेशन' को डिस्टॉरशन में बदलना चाहता हूं। हमारा पाठक सीधी-सपाट शैली को पढ़ते वक्त एक उपन्यास की कला को दूसरे की कला से बिलगा नहीं पाता। और भाषा की पारदर्शिता कथा-रस में उसकी बहाऊ शक्ति के कारण महत्त्वहीन बन जाती है। आखिर भोगा है आपने, मैंने सुना है, हरीश और मुनीश का विवरण भी आपने ही नरेट किया है। तो भाषा में दर्द समान नहीं हो सकता। मेरा नरेशन तटस्थ है, आपका आत्मभोग है। अतः ज्वलन में डूबा है। "मारो गोली यार"—शिवेन्द्र ने कहा—"ई सारी बकवास किसी कहानी गोष्ठी में करना जहां उखड़े हुए बूढ़े और उदन्त बछरे सब एक दूसरे पर इकट्ठा कीचड़ उछालते हैं। तुम्हारी जमात की हैसियत है क्या इस देश में? कहानीकार बने घूमो। कोई पान भी नहीं खिलायेगा। खुद ही पान खिलाकर कोई फंसे तो उसे नरेशन बताना। अपुन को छोड़ो भाई। जय हिन्द।"

अब आप बताइये ऐसे अहंकारी को मैं क्या कहूं।

आपका
प्रेम स्वरूप

द्वारा—शिव प्रसाद सिंह
13, गुरुधाम कालोनी,
वाराणसी-221010

शिवेन्द्र मेरा दोस्त है। बहुत प्यारा आदमी है। मैंने कभी मजाक में कहा था—"क्यों शिबू, आज फिर तुम्हें सावन की धानी चादर में लिपटी अपने गांव की वादियां और सीवान याद आ रहे हैं क्या ?"

वह धीरे से बोला—"छोड़ो यार। अब वे गांव रहे कहां। कभी तुमने कर्मनाशा के पनघट को देखा है ? कर्मनाशा ही क्यों तुमने किसी भी नदी, जलाशय, कुएँ के पनघट को देखा है ? लाल बालू पर बहती साफ स्वच्छ धारा से पानी भरते वक्त खिलखिलाती लड़कियों के गले की घंटियों की मीठी आवाज सुनी है ? कभी तुम्हें लगा है कि औरतों की इस भीड़ में पचास फीसदी वे लड़कियां हैं जो चार-पांच साल के अन्दर करमू यानी कर्मनाशा के पनघट को छोड़कर किसी और पनघट को खोजने चली जाएंगी ? शेष पचास फीसद तो पांच साल के भीतर यहां आई हुई ब्याहताएं हैं, जिनके मन को कोई जानता नहीं। पता नहीं वे भी जिस पनघट को छोड़कर आई हैं, वह इसी तरह से खिलखिलाती लड़कियों से गमकता था या नहीं, इस पनघट में वह प्यार है या नहीं। वह प्यार जिसे वे अपने मायके में पाती रहीं। औरत की भी क्या दुनिया होती है। तुमने वह लोकगीत सुना है प्रेमू···।"

वह अचानक चुप हो गया।

"कौन-सा लोकगीत ? शिवेन्द्र तुम इतना उदास क्यों हो गए ? कोई बात है क्या ? बोलो यार—सुनाओ न वह लोकगीत।" मैंने कहा।

"अब छोड़ो भी। बात यह है दोस्त, कि मैं जब भी पनघट शब्द सुनता हूं, कहीं और जाने कहां, किसी और ही नदी के किनारे के पनघट में डूब जाता हूं। या कहीं कुएं के चबूतरे पर थककर बैठ जाता हूं। जहां नदी नहीं होती, वहां कुआं ही पनघट होता है। यह कमबख्त पनघट शब्द मुझे तोड़ने लगता है। इस दुनियावी पनघट से परे कोई और पनघट होता होगा। 'बहुत कठिन है डगर पनघट की' खुसरो ने कहा है। पर मैं उनके पनघट पर नहीं भौतिक दुनिया के पनघट पर सोचता हूं। मैंने तो जिन्दगी भर दुनियाबी पनघट की ठिठोलियां, कहकहे, छेड़-छाड़, यही सब देखे हैं। जब बावला मन कुहक उठता है तो वह जाने कहां डूब

जाता है—

'कइसन मेला लगा पनघट पर
मोरे बलमवां की बारी उमरिया
अंगुरी पकरि कहे ले चल डगरिया
संग की सहेली सब करें ठिठोली
मारो गेडुंर नटखट पर'

अपने पूर्वांचल में आज भी बड़ी उमर की दुलहिन का 'बारो बलम' आंगने में गिल्ली ही खेलता है। उसकी सयानी सहेलियां ताने देती हैं—

'पनिया भरन गई ऊ कहे गोदी में ले ले
मारूंगी रसरिया की मार वो तो हंस के बोले
बलमा नादान मेरे आंगने में गिल्ली खेले।"

"सुनो यार शिवेन्द्र तुम मेरी नैया मझधार में लाकर छोड़ दोगे क्या ? मैं सचमुच बहुत परेशान हो गया—प्यारे मुझे पी-एच० डी० न मिली तो खुदकुशी कर लूंगा। बहुत मुश्किल से नौकरी मिल रही है। बिहार में लेक्चरर बनने के लिए कम से कम दस हजार का डोनेशन देना होता है। वह सब मेरा बाप खेत को रेहन रखकर जुटाने को तैयार है। पर यार तुमने जो इतना मुश्किल सब्जेक्ट दे दिया जिसके लिए आंकड़े जुटाना और शोध-प्रबंध तैयार करना मेरे लिए तो 'पंगु चढ़ै गिरिवर गहन' जैसा एकदम असम्भव है। कुछ तो मदद करो दोस्त। मुझे किनारे लगाओ। एक हजार औरतों से इंटरव्यू लेकर 'पूर्वांचल में नारी की स्थिति' पर मैं क्या लिख पाऊंगा। प्यारे, तुम्हारे भरोसे ही यह सब टंट-घंट उठा रखा है मैंने ?" मैं गिड़गिड़ाता रहा।

वह मुस्कुराकर बोला—"घोंचू ! आज तक जब समाजशास्त्र विभागों ने गांवों से बटोरे आंकड़ों के विश्लेषण से यही निष्कर्ष निकाला है कि आजादी के पहले यानी वेद के बाद और शोध-प्रबंध के पहले तक नारी की स्थिति के बारे में जो कुछ कहा गया है वह कूड़ा है। नारी के बारे में अपने समाजशास्त्री लोग कहते हैं कि अब भारत की नारी जग गई है। संविधान में उसके अधिकार हैं। उसे अब वे तमाम अवसर प्राप्त हैं जो अब तक पुरुषों को ही दिए जाते हैं। अब वह पुलिस में, न्यायपालिकाओं में, प्रशासन में सब जगह मर्द के साथ कंधे से कंधा मिलाए चल रही है। यही सर्वमान्य निष्कर्ष है। मेरे दोस्त प्रेम स्वरूप, तुम्हें भी यही सिद्ध करना है। क्योंकि तुम्हारे शोध प्रबंध के निर्णायक वे समाजशास्त्री ही होंगे जो नारी-जागरण पर शोध कराकर और करके विद्या-मंदिरों में ऊंची कुर्सियों पर बैठे हैं। रही बात आंकड़ों की तो मैं हफ्ते-भर में सारे आंकड़े बने-बनाए, एकदम तैयार तुम्हें दे दूंगा। तुम्हें अपने को मूर्ख साबित तो कराना नहीं है न ? जब सारे आंकड़े एक जैसे हैं, तो तुम्हारे आंकड़े अलग कैसे हो सकते हैं ? आंकड़े गांव-गांव

घूमकर इकट्ठा करोगे ? भई वाह, ऐसा मूर्ख शोधकर्ता तो मैंने पहली बार देखा। गांव जाकर आंकड़े बटोरने में तुम्हारा बेहद नुकसान होगा। लोग प्रश्नवाचक निशानों से तुम्हारी थीसिस रंग देंगे। लिखेंगे—शोधकर्ता को इतना भी ज्ञान नहीं कि सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री डा० शिवेन्द्र ने यह सिद्ध कर दिया है कि अब नारी समस्या नामक कोई चीज बची ही नहीं।"

"यह सब तुमने सिद्ध कर दिया है शिवेन्द्र ?" मैंने व्यंग्य से उसे देखा।

"हां जी मैंने सिद्ध कर दिया है।" वह मेरी आंखों में घूरते हुए बोला। एक बात तुम नई जरूर कर सकते हो। बशर्ते तुम्हारे मशीनी दिमाग में इन्सानियत के लिए कोई जज्बात हो। चलो आज शाम मैं तुम्हें अपने गांव ले चल रहा हूं। लेकिन याद रखना कि इस दौरे का मकसद आंकड़े बटोरना नहीं है। चने का होरहा, अध-पके गेहूं, जौ की बालियों को भूनकर निकाले दाने की उम्मी तथा गन्ने का रस पीना और उस पर मंडराती गिद्धों की कतारें देखना है तो चलो। शायद कुछ दिनों बाद ये गांव इस काबिल भी नहीं रहेंगे कि तुम्हारे जैसे अतिथि के आने पर होरहा और ईख के रस से तुम्हारा स्वागत करें।"

हम गांव में घुसे ही थे कि एक बहुत बड़ी कोठी के फाटक के सामने खड़े अधेड़ आदमी ने कहा—"का हो शिवेन्दर, सुना, चिरई गांव के बाद ई करमूपुरा के भी भाग जाग गए हैं। इहो विसेख विकास छेत्तर हुई गवा।"

"हमें नाहीं मालूम चाचा ?" शिवेन्द्र ने कहा—"जो भी क्षेत्र बने, उसके चौधुरी तो आप ही बनोगे। इस इलाके में आप जैसा दिमाग किसी और को तो मिला नहीं चाचा।"

"अच्छा-अच्छा ई 'कमरा' लटकाए कौन साहब हैं भइया ?"

"ई हमारे दोस्त हैं चाचा प्रेम स्वरूप। आपके गांव पर खोज कर रहे हैं। कितना प्रेम सरपंच में है और कितना परजा-पौनी में, यह भी बतायेंगे। विशेष क्षेत्र बनने से गांव के सरपंच सुवर्ण राय जी ने करमूपुरा को स्वर्ग बनाने के लिए किस तरह एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया। यह सब तो बताना ही होगा न चाचा ?"

"वाह, वाह हो शिवेन्दर तोहरे जबान पर ललका मिरचा के तिताई अबहीं जस के तस हैं। का बढ़िया बात कही भइया तुमने ? तो ई सोबरन राय के फोटू लेने आए हैं। हम तो समझत रहे भइया कि इहौ कोनौ चमत्कार हैं। खास छेत्तर के खबर मिलते हमरे करमूपुरा के लाश पर गीध-कौवा मंडराये लगे। ई हमरे गांव के गरीब परजा के भूखे पेट, फटे चिथड़े कपड़े, और हवा से उधराई उजड़ी झोपड़ियन के फोटू लेवे आए हैं ? सुनत हैं भइया गांव के जेतनै गन्दा गलीज का

फोटो आवत है उतनै महंगा दाम पर ई विदेसन में बिकत है।"

"सही सुने हो सोबरन राय, ई सब फोटो तुम्हरे जैसे लोगों की करतूत के पक्के सबूत होते हैं। कैसे झोंपड़ी जलती है, कैसे करजा के भार के नीचे गरीब लोगों का बदन नंगा होता है, कैसे-कैसे तुम्हारे जैसे शोषक लोग जोंक की तरह गरीबों का खून चूसते हैं, कैसे जनता को बहकाने के लिए तुम्हारे जैसे लोग नकली घड़ियाली आंसू बहाते हैं। निहाय की चोरी करके सूई का दान करने वाले तुम्हारे जैसों के चेहरों की कुटिल भौहों और उस पर उभरी बहशी और जंगली सिकुड़न को ये कैमरे बहुत सही ढंग से पकड़ते हैं, हां ई जरूर है कि कैमरे अभी इतने अच्छे नहीं हैं कि तुम्हें बेनकाब करें, लेकिन गरीब लोग तुम्हारे जैसों के चेहरों की लकीरों में बहुत कुछ जान लेते हैं। चाचा। समझे ? चलो जी प्रेम स्वरूप।" शिवेन्द्र ने कहा।

"ई तो जायेंगे ही भइया, इन्हें कोई जबर्दस्ती रोकेगा नाहीं। पर चेहरे से इहौ तुम्हारे जैसे बड़े कांइयां विद्वान लगत हैं।"

"चुप रहो सोबरन राय।" शिवेन्द्र बोला—"ये हमारे दोस्त हैं। हमारे मेहमान हैं। हमने इन्हें होरहा और रस की दावत दी है। आप तो बहुत समझदार हो गए हो चाचा। इतना अन्तर आ गया है आप में कि पहचानना मुश्किल हो गया है। कर्मनाशा के पानी की तरह आपके दिल-दिमाग दोनों बड़े साफ और स्वच्छ हो गए हैं। हम तो इसे अपनी सरकार की विजय मानेंगे चाचा। वक्त के साथ बदलने की कला तो आपकी पुश्तैनी विरासत है। आपके लकड़ दादा गवर्नर को डलिया पहुंचाकर राय साहब बने थे। आपके बाप और हमरे आजा सुभगसिंह कलक्टर के खातिर रोज एक बड़ा खस्सी और सैकड़ों मुर्गे जबह करके दावत देते थे। आप बुड्ढे हो गए हो चाचा, पर याददाश्त ज्यों की त्यों है। जगजीवन राम अपनी तश्तरी से मिठाई उठाकर आपकी तश्तरी में जब रखते थे आप धन्न-धन्न चिल्लाते उनके पैर पकड़ लेते थे। आजकल सुना है टिकैत के भगत होय गए हैं। चन्दौली वाली सभा में तो आप पूरे गांव में मुनादी कराके, खूब तैयारी के साथ बीसियों बैलगाड़ियों और ट्रैक्टर ट्रालियों में बच्चों से बूढ़ों तक को ठूंसकर आए और पूरा मैदान भर दिया था आदमियों से। क्यों चाचा यह जो खासमखास क्षेत्र बना है न, उसमें तो आपके जिगरी दोस्त बटेसर के तिवारी शिवशंकर का ही राज होगा। वे बिना आपसे पूछे तो घुसे न होंगे उसमें। वाह चाचा गिरगिट हो कोई तो आपकी तरह। आप महान हैं। चलो जी प्रेमस्वरूप।"

"अरे बुरा मान गए शिवेन्दर बेटा।" अचानक बूढ़े का चेहरा स्याह अलकतरे में डूब गया—"अरे भइया, तू तो हमरे खानदान के हीरा हो। हमरी का हैसियत है कि तोहें गिरगिट के तरै रंग देखाई।" बुड्ढा बड़ी ही शैतानियत से मुस्कुराते हुए बोला—"भइया, सही घरी बेला में पधारे हौ, किरपा करौ और आपन

बहिनियां सुरसतिया के बिआह में जो कर्जा तोहरे बाप देवेन्दर लिए रहे, बोहिका लौटाय दो। जेकरे पास एको बित्ता खेत नाहीं है, भइया उहै अपने दोस्त के होरहा खियावै और ईख के रस पियावै का न्यौता दे सकत हैं। तुमने भइया सोनवां, रुपवा का ता उद्दार कर दिए, अब एक बची है तेतरी। उसे भी पार घाट लगाकर जई हौ एह बार।"

"का बात हो सोबरन भाई ?"

"चल जा ओहर घूरे पंडित, अगर तू हमरे मामला में टांग अड़ायेगा तौ हम एकरे संगै तोरो जुबान खिचवाय लेवेंगे। समझ लेओ। तुम लोग सारे पढ़वैया लोगन के संघ बनाय रहे हो। दरिदरी संघ से तुम लोग सोबरन को डरवाय दोगे ? सुन रे तोरे बाप ने एक हजार रुपया लिया था।"

"का कहो, का कहो, हो सोबरन।" हल्ला-गुल्ला की खबर पाते ही शिवेन्द्र के बाप आ गए—"तू इतना झूठ काहे बक रहे हो। हम तो कुल पांच सौ रुपिया लिहे रहे।" देवेन्द्र हकलाकर बोले।

"पांच सौ रुपिया लिहे रहे तो पांच साल का सूद भी तो लगेगा। रुपिया पीछे चवन्नी सूद अबौ चलत है। अरे ई कहो कि हम ईमानदार हैं कि 'चक्कर बुद्धी' नाहीं लै रहे हैं। अउर एक साल का सूद माफौ कर दै रहे हैं। सवा सौ रुपिये का खाली चारै साल में पांच सौ रुपिया होय गया।"

"और जो तुम रेहन में खेत जोत रहे हो ?"

"ऊ खेत नाहीं है हो देवन्दर भाई, ऊ बंजर परती है। ओके जोते में हमार ट्रैक्टर स्साला भरभष्ट होई गवा। हजार रुपिया दिलाए तब ऊ ट्रैक्टर फिर चलने जोग बना। हम तो भइया हर तरै से तुम्हरी मदद कर रहे थे...। कौन था गांव में तोहरे जाकड़ी खेत के रेहन रखके ठनाठन गिनने वाला। ऊ मूरख तो सोबरन ही रहे हो देवेन्दर।"

"ई अनियाब है।" देवेन्द्र को तैश आया—"तुम सड़-सड़ कै मरोगे। तुम्हरे बदन में पिलुवे पड़ेंगे। तुम हमरी गरीबी के फैदा उठाय रहे हो।"

"अच्छा, अच्छा, हम सड़ के मरेंगे तो मरेंगे, तोहरे लड़के जैसा नीच करम नाहीं करेंगे। हमरे खानदान के कौनो छोकरे ने किया होता तो हम जहर खाय लेते। मगर तुम हो कमीने आदमी। अपने सड़े हाथ को काटकर फेंक दो देवेन्दर। नाही ई स्साला शिवेन्दर तोहरे पुरखों को इकट्ठा तार देवेगा। तोहरे यहां बिरादरी का कोई आदमी पिशाब करने भी नहीं जावेगा।"

"अबे हरामी।" शिवेन्द्र उछलकर चबूतरे पर कूद गया।

"रुक जाओ शिवेन्दर।" उसके पिता ने पुकारा, "मच्छर मारने से भइया हाथ कुछौ नाहीं लगेगा। हमरी किस्मत खराब थी। हम गरीब न होते तो कर्जा क्यों लेते।" उन्होंने शिवेन्द्र को पकड़ा।

"हट जाओ बाबू, ले स्साले, गिन ले एक हजार है।" शिवेन्द्र बोला—"ससुर इस गांव में लगता है तोरे पड़दादा की जमींदारी फिर आ गई लौटकर। उसे उखाड़ कर ही गांव छोड़ूंगा, देखूंगा तुझे, देखूंगा। बकरी के मूत से तेरी डंकमार मूंछ को सफाचट करवा कर ही गांव छोड़ूंगा। याद रखना सोबरन, अब पाला देवेन्दर से नाहीं शिवेन्दर से पड़ा है। देवेन्दर गुलाम हिन्दुस्तान में जन्मे थे। शिवेन्दर का जन्म आजाद हिन्द में हुआ है। गुलामी और आजादी का फर्क बताकर तुम्हें, गांव छोड़ूंगा। हां।"

"काका यह गलत काम है।" शिवेन्दर के चचेरे भाई नरैन ने कहा—"आपने बिना लिखा-पढ़ी के खेत दिया क्यों। हमारे आंगन को बांटने वाली डंड़वारी बहुत ऊंची हो गई है क्या? ई स्साले सोबरना ने हमारे खानदान की इज्जत पर हमला किया है। क्या हम उसकी जमीन में बसे हैं? आपके पास खेत नहीं है, पर उसी के बगल वाला हिस्सा भी तो आपका ही है? इस हरामी की हिम्मत कैसे हुई कि एक बाहरी आदमी के सामने बक दिया कि जेकरे पास एकौ बित्ता खेत नाही है, उहै अपने दोस्त के होरहा खिआवै और ईख के रस पिआवै का न्यौता देई सकत है।"

हल्का जाड़ा था। अभी भी बरामदे में बिछे पुवाल पर कम्बल और रजाइयां तहिया कर रखी रहती थीं। रात में रजाइयों की जरूरत नहीं थी, पर मोटी रुई की रजाई भी तो तेली के बैल की तरह आंख का अंटौतल बन सकती थी। मैं बहुत देर तक प्रतीक्षा करता रहा। हमीं दो आदमी थे भी। इसलिए वहां तीसरे का इन्तजार भी न था। शिवेन्द्र ने पूछा—"क्यों, प्रेम? तुम्हें यह सब बहुत गिजगिजा-गिजगिजा लग रहा होगा? मैं जानता हूं कि तुम्हें नींद नहीं आ रही है कौन सा सवाल है तुम्हारे सीने में? पूछ डालो ताकि नींद अच्छी आए।"

"सवाल नहीं है बन्धु, समस्या है—" मैंने कहा—"तुम्हारे पिता एकदम अकेले पड़ गए हैं। एक थी तुम्हारी बहन वह भी शादी के बाद ससुराल चली गई होगी। तुम्हारे पिता तुम्हारे चाचा के घर खाना खाते हैं। बूढ़े आदमी के लिए खाली खाना ही तो नहीं चाहिए। उनके सपनों का एक संसार रहा होगा। वे अपने आंगन को, चाहे वह आधा-आधा बंटकर छोटा ही रह गया हो, बच्चों की किलकारियों, बहू के पायल की झनकार से गूंजते देखना चाहते रहे होंगे। तुमने उनकी खबर पूछना भी छोड़ दिया है। यह तो बहुत बड़ा जुर्म है, और कोई इसे चाहे माफ भी कर दे, मैं तो माफ नहीं करूंगा। तुम इतने निर्मोही और निर्दयी हो, यह मैं नहीं जानता था।"

"सुनो प्रेमू, मैं तुम्हें गांव ले आया था इसीलिए कि तुम अपनी आंख से एक दोस्त की व्यथा-कथा समझ सको। तुम क्या समझते हो कि मैं अपने बाप से, उनके मन से, उनकी इच्छाओं से कटकर अलग हो गया हूं।"

"फिर, यह सब दमघोंट सन्नाटा तुम्हारे आंगन में क्यों है? सोनवां, रुपवा कौन थीं? और यह तेतरी? यह कौन है?"

वह चुप रहा।

"बोलो भई, पाप कथा है क्या? तुम मुझे भी अपनी निजी टोली से निकाल चुके हो क्या?" मैंने कहा

"नहीं प्रेमू! वह पाप-कथा नहीं ताप-कथा है। तुम जानना चाहते ही हो तो सुनो—सोनवां मेरे बचपन की साथी थी। माना उनकी जात छोटी है। वे ठाकुर, ब्राह्मण नहीं हैं। वह दुसाध हैं। ठीक है ठीक है। बीच में मत टोको। दुसाध चमार की तरह नीच नहीं माने जाते हैं। तुम समाजशास्त्री तो यह भी नहीं जानते होंगे कि दुसाध है क्या? क्योंकि सोसियोलाजी के लिए इतिहास तो अब भी कम्पलसरी नहीं बना है न। प्राचीन भारत में हर बड़े राजा के पास एक ऐसी कोतल सेना होती थी जो दुश्मन पर हमला करने को तब भेजी जाती थी जब सामान्य सेना हार जाती थी। इसे दुस्साधिक कहते थे। छोड़ो वरना तुम कहोगे कि मैं हिस्ट्री पढ़ाने लगा। हां, तो सोनवां दुसाध थी। आजकल के गांवों की अछूत कहलाने वाली दुसाध जाति की लड़की। वह मेरे साथ पढ़ती थी। हम टाट पर सट-सट कर बैठते थे। वह मेरे भूजे की पोटली में से चना फरूई चुराकर खाती रहती थी। मैंने एक दिन उसे भूजा चुराते देख लिया और बिना कुछ सोचे-समझे जोर का थप्पड़ मार दिया। वह तिलमिला उठी। उसके कान के नीचे गाल पर उंगलियों की साटें उभर आईं।

"उसने अपनी स्लेट और पेंसिल झोले में डाली। किताब कापी ठूंस कर झोले को कंधे से लटकाए चली गई। जाते वक्त उसने मेरी ओर एक नजर देखा। मैंने चुपचाप गर्दन झुका ली। वह चली गई। उस वक्त हम प्राइमरी कक्षा पांच में थे। उसका छोटा भाई शोभनाथ उससे दो साल छोटा था। वह कक्षा तीन में था। उसे कुछ भी पता नहीं था कि सोनवां और मेरे बीच झगड़ा हो गया है। तब हम तीनों बहुत छोटे थे, बच्चे थे। मैंने सोचा था कि सोनवां इस बात को भूल जाएगी। वह नहीं आएगी तो मैं ही जाकर माफी मांग लूंगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। रात को मैं चुपचाप लेटे आसमान के तारे गिन रहा था कि शोभनाथ आया—'शिबू भइया, ए शिबू भइया।' उसने मेरी उंगली पकड़कर खींचा—'तुमने सोनवां को देखा है?'

" 'क्यों, सोनवां को क्या हुआ?'

" 'वह मिल नहीं रही है, मैंने सारा गांव ढूंढ़ लिया।'

"हम दोनों लालटेन लिए करमू घाट की ओर दौड़े। करमू घाट रात के वक्त बिल्कुल हमारा हो जाता था। जब बहुत गर्मी पड़ने लगती थी तो हम छुटभैये लोग सभी करमू घाट पर नदी में सारा बदन डुबोए, गर्म लू को ठेंगा दिखाते, किलोल करते थे। शायद सोनवां वहीं हो। हम लालटेन लिए घाट पर पहुंचे। वहां कोई नहीं था। मैंने एक मिनट अपनी उंगली से सिर को ठोंका। मत छेड़ो बीच में। तुम यही न पूछना चाहते हो कि उस वक्त मेरे भीतर अचानक इतनी प्रौढ़ता कहां से आ गई। सिर तो सिनेमा के हीरो ठोंकते हैं जब प्रेमिका छिप जाती है। सिनेमा वाले स्साले हम गरीब गांव वालों से चीजें चुराते हैं। भला बताओ कि सिर कौन ठोंकता है, वही न जो बेजुबान होता है? हमारे पास किसी गुमशुदा की तलाश के लिए न तो टेलीफोन होता है, न तो पुलिस। न तो अस्पताल जहां तहकीकात की जाती है कि आपके यहां कोई इस शक्ल और हुलिए का व्यक्ति ऐक्सीडेंट की वजह से तो नहीं आया है। देखो, कितनी सुविधाएं हैं शहर वालों को। फिर भी जब हीरो उंगली से सिर ठोंकता है तो बम्बइया फिल्मों के सौदाई पूर्वांचल के छोकरे यह सोचते हैं कि प्रेमिका जरूर न जरूर किसी क्लब में डांस कर रही होगी। और वे सच भी साबित होते हैं। वह दूसरे मर्द के साथ डांस कर रही होती है। और उसका प्रेमी हीरो चेहरे को गुस्से के गुलाल से रंग कर पैर पटकता लौट जाता है।

" 'हो सकता है शोभनाथ कि वह बरुनी खंदे के पास बैठी हो?"

" 'बरुनी खंदे के···?' शोभनाथ रोने लगा था। 'वहां तो भइया लम्बे-लम्बे घड़ियाल तैरते रहते हैं। वहां तो कोई नहीं जाता। वहां तो अंधेरे में···।' शोभनाथ 'सोनवां, सोनवां' चिल्लाता बरुनी खंदे की ओर दौड़ा। मूरख ने लालटेन करमू घाट पर ही रख दी थी। मैंने लालटेन उठाई और उसके पीछे-पीछे दौड़ा। मैं मन ही मन अपने को धिक्कार रहा था। सोनवां अगर मर गई तो क्या जवाब दूंगा। न सही दूसरों को, क्योंकि अछूत लड़की के मरने से क्या फर्क पड़ता है उनको, पर अपने को मैं कभी माफ नहीं कर पाऊंगा।

" 'आ जाइए शिबू भइया।' शोभनाथ खुशियों से पागल हो गया था जैसे। चिल्लाया—'यह है सोनवां···।'

"मैं लालटेन लिए वहां पहुंचा। लालटेन उठाकर मैंने सोनवां के चेहरे को देखा। 'क्या देखता है।' वह गुस्से से बोली—'देख ले, देख ले, ले देख। तेरी उंगलियों के निशान ज्यों के त्यों हैं। शोभू, चलो, लौट चलो। ई भइया नहीं, भेड़िया हैं। अपनी नई मां से भी गया गुजरा जानवर है। वह हमें चार-चार दिन रोटियां नहीं देती, और मैंने भूख से हारकर इसकी पोटली से एक मुट्ठी भूजा ले लिया तो इसने ऐसा थप्पड़ मारा कि मेरे कान के नीचे खून बहने लगा। भगाओ इसे। जा भाग, हरामी कहीं का, कमीना।'

" 'क्यों री।' शोभू बिगड़ा—'तूने नई मां की सारी गालियां सीख लीं ? यही सलीका है क्या ? यह सब क्या भगवान की प्रार्थना के बोल हैं ? वह मुझे हरामी और कमीना कहती है, तुझे जंगरचोट्टी और नीच कहती है। देवेन्दर चाचा के घर क्या हंडे में रुपिया गड़ा है। सुरसतिया के बदन का झिगुला देखा है तूने। शिवू भइया का नेकर देख ले। इनके पास तो तन ढंकने का भी कपड़ा नहीं है। ई धन्ना सेठ कबके हुइ गए। थोड़ा सा भूजा लाए होंगे पोटली में। तू कहती कि मैं भूखी हूं। वे खुद दे देते। तूने चोरी क्यों की ? बोल, चोरी क्यों की ?'

" 'वह चोरी नहीं थी। मैं समझती थी···'

" 'क्या समझती थी ?'

" 'तुमसे मतलब, मैं किसी को क्या समझती हूं। किसी को क्या कहती हूं। तुम क्या मेरे बाप हो। स्साले शोभू के बाप। मैं मारकर तेरी नाक तोड़ दूंगी। मैंने भूजा नहीं चुराया था। नहीं चुराया था, वह पोटली मेरी भी होगी, यही सोचकर एक मुट्ठी भूजा ले लिया था···' वह हिचक-हिचककर रो रही थी, 'मैं इनकी पोटली कभी नहीं छूऊंगी। अब कभी नहीं छूऊंगी।' "

"फिर ?" मैंने पूछा।

"फिर क्या। एक दिन बड़ी अजीब-सी हवा चली। मुझे पता नहीं था कि अमोला एक विरिछ बन गया है। हमारे देहात में आम खाकर गुठली घूरे पर फेंक देते हैं। बरसात के दौगरे के साथ वह गुठली रंग बदल देती है। और एक दिन बहुत छोटा-सा पौधा जन्म ले लेता है। हमारे यहां लोग इस पौधे को अमोला कहते हैं। यह इतनी तादाद में उगता है कि सबको विरिछ बनाने की बात कोई किसान सोचता भी नहीं। इन अमोलों को उखाड़कर इनकी चटनी बनाते हैं। छोकरे गाते हैं—'अनमोलवा के चटनी पूदीना मांगे ले। पिंजरे के सुगनी सलाम करे ले।'

"एक दिन गांव आया तो देखा शोभनाथ की कच्ची बखरी से सटा आम का पौधा बहुत बड़ा हो गया है। सफेद साड़ी में लिपटी, पीठ पर कजरारे बालों को फेंकती एक युवती खड़ी है और सहसा वह आम की गाछ से लिपट जाती है। और यह लो, सारी गाछ मंजरियों से लद जाती है। कैसा लगा यह। लड़की छू दे तो बेमौसम आम फूल जाता है क्या ? बोल प्रेमू !"

" 'कौन है ?' मैंने कहा।

" 'ओफ कब आये ?' वह मुस्कुराकर बोली।

" 'चला ही आ रहा हूं, मुझे क्या पता कि गांव में घुसते ही इतना बड़ा सगुन घट जायेगा। अब तो सलेट किताबें झोले में लादकर चलने वाली छोटी गुड़िया

कहीं खो गई। उस गुठली में इतना बड़ा विरिछ छिपा था। मैंने तो सोचा तक नहीं। वैसे संस्कृत वाले कहते हैं कि कोई जवान लड़की आम की गाछ को अंकवार में भर ले तो वह बौरों से लद जाती है, चारों ओर खुशबू फैल जाती है। झुंड-के-झुंड भौंरे मंडराने लगते हैं। सुनता तो यह भी हूं कि कोई बौर छूता है तो कभी-कभी मधुमक्खियां डंक भी मार देती हैं।'

" 'कभी छूकर देखो। जाओ सरस्वती जोह रही थी।'

"उसने कह तो दिया कि सरस्वती जोह रही है, पर वहां से एक सूत बराबर भी हिली नहीं।

" 'क्यों क्या देख रहे हो इस तरह ?'

" 'कुछ नहीं, बस यही सोच रहा था कि दस साल कितने बड़े होते हैं। तुमने दस साल में न केवल अपनी काया पलट कर दी बल्कि लगातार न्यौता भी दे रही हैं तुम्हारी आंखें।'

" 'तुम पूछना चाहते हो न कि यह साड़ी-ब्लाउज, यह स्लीपर, यह···?'

" 'हां मैं पूछना चाहता था कि यह सब किस तरीके से हुआ ? यह तो साफ है कि तुम मेरी शंकालु आंखों में सहमी-सहमी कुछ देखना चाहती हो। कोई-न-कोई शक है तुम्हारे भीतर। तुम बहानाबाजी मत करो। एक ऐसा घर जिसमें चार-पांच लोगों के खर्चे-वर्चे का भी इन्तजाम नहीं हो सकता, वही परिवार अचानक चिथड़े-गुदड़े को फेंककर इतनी आसूदगी कहां से पा गया। एक लड़की जो जात से नीच और करम से अछूत कहलाती है वह रातो-रात नये जमाने की औरत की तरह खुद अपने पैरों पर कैसे खड़ी हो गई। क्या मैट्रिक पास कर लेने से ही कोई इस तरह की जिन्दगी बसर कर सकता है ? तुम्हारी फीस के रुपये सोबरन राय देते रहे क्योंकि मरते समय सुलोचन दुसाध अपने परिवार का भार सोबरन राय को सौंप गये थे। तुम्हारी मां मर चुकी है। चचिया की कुछ बातें मैं भी जानता हूं। वह सोबरन राय से घिन करती थी। उसके मुंह में कीड़े पड़ें का शराप देती रहती थी। फिर कहीं सोबरन राय ही तो तुम्हारी बैसाखी नहीं बन गया। बोलो, सोनू बोलो ?' मैंने निष्ठुर होकर पूछा।

" 'मैं इस वक्त कुछ नहीं बोलूंगी। तुम अगर सत्य जानना चाहते हो तो खा-पीकर आ जाना। अगर एक हरिजन, अछूत अथवा सोबरन राय की बैसाखी पर चलने वाली के बारे में कुछ पूछना हो तो। वैसे मैं किसी के सामने अपने को जवाबदेह नहीं मानती। सिर्फ एक दोस्त के नाते तुम पूछ सकते हो।'

" 'ठीक है सोना जी, मेरी अब कोई खास दिलचस्पी नहीं है। यह सब जानने में क्योंकि मेरा छोटा भाई नारायण ठीक ही कहता है कि जिस पेड़ का बोकला (छिलका) होता है, वह उसी में सटता है।' मैंने व्यंग्य से कहा।

" 'मतलब ?'

" 'बस सिर्फ यह कि मैं अन्तिम विदा कहने जरूर आऊंगा।'

"फिर शिवेन्द्र क्या हुआ। तुम गए उसके घर ?" मैंने कहा, "सोना सोबरन राय की बैसाखी पर चलती रही, हो सकता है, ऐसा, यह भी हो सकता है कि तुमने बाहरी लेवन-पोतन देखकर सोना को गलत समझा, क्योंकि भाई मेरे इलाके में तो इस तरह के हालात नहीं हैं, मजदूरी करने वाली युवतियां भी सफेद साड़ी, ब्लाउज, स्लीपर पहनती हैं। चलो, मान लिया कि यह कि तुम्हारे पूर्वांचल में गूदड़ लपेटे रहना अब भी नीची कौमों की लाचारी है, वे इतनी जल्दी सबकुछ अचानक नहीं पा जाएंगे जो दूसरे इलाकों में आम बात है। फिर सफेद साड़ी के लेवन के भीतर बारिश की बौछार से चेचक के दाग जैसे जो निशानात उभरते हैं दीवालों में उन्हें छिपाना भी तो एक मकसद हो सकता है। तुम गए थे उसके घर ?" मैंने पूछा।

"हां, मैं गया था उसके घर। वह मुझे बाहरी बइठके में बैठाकर पानी लाने गई। "गर्मी है, एक गिलास पानी पी लो। ठंडा है। मेरी तरह तो नहीं। सचमुच ठंडा है।" उसने व्यंग्य भरी मुस्कान में होंठों को दबाते हुए कहा—"अभी शोभनाथ गया है। पान लाने। पानी और पान में तो लोग कहते हैं छुआछूत का असर नहीं होता।

"बहस मत करो।" मैंने गिलास लिया कि उसने हाथ पकड़ लिया—"ये बताशे तुम्हारे लिए मंगवाए हैं। तुम इन्हें गरीबों का मीठा गोलगप्पा कहते थे न ? दो-एक लो। कभी-कभी खाली पानी पीने से लग जाता है। क्यों खतरा मोल लेते हो ?"

"खाली पानी तो सुबह लग ही चुका है। कितनी बार एक ही चीज को देख-कर पानी लगा करेगा। पानी का धक्का प्यासे के लिए उतना खतरनाक नहीं होता जितना वादाखिलाफी का। जो तुम कर चुकी हो।"

उसकी आंखें छलछला आईं—"सच मैंने वादाखिलाफी की ? कब ? किससे ?"

"दीदी !" शोभू चिल्लाता हुआ आया, "शिवेन्द्र भाई साहब आए कि नहीं ?" वह निकसार के उठंगे हुए दरवाजे को खोलते हुए बोला—"अरे वाह," वह दौड़ा और मुझसे लिपट गया। "भैया, कितने बरस के बाद सुधि आई हमारी ? हम क्या सचमुच बेगाने हो गए थे ? सोनवां रोज कहती थी—देख शोभू आज मुंडेरे पर कागा बोल रहा है। लगता है पाहुन आने वाले हैं। मैं कहता था—दीदी अपने कौन पाहुन हैं।। न कोई ननिहाल से आने वाला है, न फुफुआउर से। बाबू और बुआ भाई बहन थे। अब हम दो हैं बहन-भाई। जब देव ने पैदाइस का क्रम ही बदल दिया तो पाहुन कहां से आएंगे। मैं तुझसे बड़ा होता जैसे बाबू बुआ से थे, तो मेरी

ससुराल से जरूर कोई आता और कागा के उचारने पर तू उसे दूध-भात खिलाने की घूस देती···। वह मुझे मारने को दौड़ती थी।"

"चुप हो जा शोभू···" सोनवां ने पल्लू से आंखें पोछीं। "बेवजह अपनी छिपाई चीजें दिखाना बेवकूफी है। न अपना कोई पाहुन था, न है, न होगा।"

"क्या कोई जब पति बनता है या पत्नी का रिश्तेदार बनता है या नातेदार तभी पाहुन आते हैं? क्या जिनकी तकदीर में ससुराल नहीं लिखी है, उनके यहां कभी पाहुन नहीं आएंगे? आखिर कब तक? अपने पाहुन को जोहना ही क्या पाप है?"

"तो पाप मेरा है, दंड मेरे परिवार को क्यों दिया जा रहा है। शोभू फिर ऐसी बातें मत करना···शिबू जी आज अन्तिम बार विदा कहने आए हैं···।"

"सोनवां, तू मेरी हर बात को उल्टा क्यों समझती है। मैं अकेला तो नहीं रहता न इस गांव में। जिधर जाओ सिर्फ एक चर्चा है···?"

"क्या चर्चा है शिबू भइया?" शोभनाथ बोला।

"यही कि सोनवां सोबरन राय की रखैल है।"

"कौन स्साला···मादर···?"

"चुप हो जा शोभू। चर्चा है, तो ठीक भी है। गलत भी है।" वह धीरे से बोली।

"अरे केहू है भाई?" किसी ने दरवाजे की सिकड़ी खटखटाई। सोनवां, धीरे से उठी—"आइए, त्रिलोकीनाथ जी।"

"अरे वाह, हियां तो अपने शिबू भाई भी हैं। बहुत दिन बाद मिलना हुआ।" घूरे पंडित के लिए सोनवां ने मचिया रख दिया—"आओ नेता जी, यहां बैठो।"

"क्यों, सोना बहन मुझे क्यों बुलाया आपने? कोई समस्या है?" घूरे पंडित ने अपने सिर पर से गांधी टोपी उतारी और उसे बड़े प्यार से तहियाकर चारपाई पर रख दी।

"हां त्रिलोकी जी, आप जरा शिबू बाबू को पिछले साल वाली सारी घटनाएं ज्यों की त्यों सुना दीजिए।"

"इसमें सुनाना क्या है सोना बहन, यह तो शिबू भइया गांव में जहां भी पूछते जान जाते। क्यों भइया, आपको किसीने नहीं बताया?" घूरे पंडित घूरते हुए बोले—"सोनवां के 'तिरिया-चरित्तर' पर आपने लम्बे-लम्बे भाखन तो सुन लिए होंगे लेकिन उस पर क्या गुजरी यह किसी ने बताया? नहीं, यह कोई नहीं बताएगा क्योंकि करमूपुरा अपने करम का रोना सोबरन राय के माथे नहीं लिखेगा। काहे से कि सोबरन राय बड़े आदमी हैं। पैसे वाले हैं। उनकी देश-दिहात में धाक है। वह दूसरों के पाप-पुण्य का नियाब करने के लिए बुलाए जाते हैं। उनके पास दस लठैत हैं। कौन चूहा उनके गले में घंटी बांधने की हिम्मत करेगा? पर हिम्मत

की। चूहे ने नहीं चुहिया ने।"

नेता त्रिलोकी ने अपने मुंह पर भिनभिनाती मक्खी को उड़ाया और मेरी ओर देखते हुए बोले—"शिबू भइया, आपने कल जैसा कालिया दमन किया वैसा तो कोई शायद ही करे। आपने तो बिना सहारे, बिना मदद सोबरन राय को जिस तरह जलील किया वह तो बेमिसाल है। ऐसा ही आपने एक बार औरो किया था। आपने दौड़-धूपकर अमड़ा गांव के शिवधनी को बुलाया और उनके सामने भरी पंचायत में कहा—सुन लीजिए शिवधनी भाई, ई हैं आपकी कांग्रेस के मजबूत पाए सोबरन राय। चौड़े गोटे वाली खादी सिलिक की चादर को कंधे पर लटकाए, गांधी टोपी और बुर्राक, कुरता-धोती में बेदाग जनसेवक। जिनकी चादर में गरीब, मजूर और उनकी बहू-बेटियों के खून का दाग है, मैं आपके सामने उनमें से एक-एक के नाम लेकर इनसे पूछना चाहता हूं कि जो खुद ही भूख से मर रहे थे, उन्हें किराये के गुंडों से पिटवाने और मरवा डालने की क्या जरूरत थी। मैंने इसीलिए आपको छुपाकर किये जाने वाले सारे कारनामों की झलक दिखलाई, अब पूछिए इनसे।

"क्यों भइया सोबरन राय तुम्हारी कोठी के उत्तर अलंग वाली चाहरदीवारी से मैंने देखा कि तुमने सुलोचन दुसाध को बेंत की छड़ी से पीट-पीटकर लहूलुहान कर दिया। तुम्हारे पापी अमलों ने उसके सर पर लाठी मारी। यह सब क्या है? यही महात्मा जी की अहिंसा है? एक गरीब हरिजन के साथ इसी तरह का व्यवहार करना बताया था बापू ने। आपको मैंने पहचान लिया है सोबरन राय। तुम नीलगाय की खाल पहने भेड़िए हो। खून चूसना तुम्हारा धरम है और पाप की कमाई को बांटकर पुलिस-दरोगा को खरीदना तुम्हारा करम है। तुमने अभी तक कांग्रेस की आंख में धूल झोंका है? मैं इसका बदला लेकर रहूंगा सोबरन राय। अब आया हमारी समझ में कि तुमने सुलोचन दुसाध को सरपंच क्यों बनवाया। सुलोचन कांग्रेसी नहीं था। सच तो यह है कि वह आदमी के सिवा और कुछ भी नहीं था। वह सोसलिस्टों का उम्मीदवार बना और तुमने ठाकुरों के वोट रातों-रात खरीदकर उसको दिलाकर जितवाया। तुम नाम कांग्रेस का लेते रहे। वोट खुद अपने को दिलाते रहे। तुमने कहा होगा सुलोचन से कि वह तुम्हारे सहारे जीता है तो तुम्हारे सारे पापकर्मों को उसे जायज बताना ही पड़ेगा। जब सुलोचन ने तुम्हारी बात मानने से इन्कार कर दिया तो साम-दाम से काम न चलने पर तुम दंड पर उतरे···तुम निहायत नीच आदमी हो···"

"मारो स्साले सोबरन को।"

"मारो स्साले सोबरन को।"

"सच कहता हूं शिबू भैया कि एक सोलह साल का छोकरा सोबरन को इस तरह चिथड़े-चिथड़े करके हवा में उड़ा देगा, ऐसा किसी ने सोचा भी नहीं था। मैं

तो दंग रह गया था।"

"छोड़िए घूरे पंडित, सोलह साल के छोकरे के सामने सुलोचन चाचा तड़प-तड़प कर मरे और वह उन्हें बचाना तो दूर नकली मातम में भी शामिल नहीं हुआ। भला एक हरिजन के मरने से मेरा क्या सरोकार है। मैं तो इतना कमजोर था कि सुलोचन चाचा के मरने के बाद बनारस चला गया। और सोनवां की महतारी से कहता गया कि सोबरन राय तेरे परिवार की परवरिश करेंगे। तू रो मत।"

"यह झूठ है" सोनवां ने अपनी हथेली से झपट्टा मारा और उसके नाखूनों से मेरा सारा चेहरा छिल गया। शोभू ने उसे पकड़कर अलग किया। "तुम चुड़ैल है क्या? देख तो शिबू भैया का चेहरा खून से रंग गया।"

"तू मरहम पट्टी कर दे," सोनवां बोली—"मेरा वश चले तो मैं इनका गला घोट दूं। इन्होंने मेरे साथ मक्कारी की। इन्होंने मुझसे कहा कि अचानक दिल का दौरा पड़ने से मेरा बाप मरा। बोलो, तुमने कहा था कि नहीं?"

"कहा था। जरूर कहा था। पर मक्कारी नहीं थी वह। वह एक जलता हुआ सच था। खाने-खरचे के लिए भी तुम्हारे घर में एक मुट्ठी चावल नहीं था क्योंकि तुम्हारे बाप ने घूसखोरी से इनकार कर दिया था। तुम लोगों को उनके मरने के पहले जो रकम मिली थी उसने तुम्हारे रहन-सहन को बदल दिया था पर बाद में रोटी भी मय्यसर नहीं होती थी। अगर मैंने सच कहा होता तो तुम लोग सड़क पर भीख मांगते। हो सकता है कि तुम गांव छोड़कर कस्बे में द्वार-द्वार गिड़गिड़ाते और बर्तन मांजने या इसी तरह की कोई नौकरी मांगते और लोग दुरदुरा देते। कहार, गोंड़, काछी तो वैसी नौकरी पा भी जाते हैं, क्योंकि वे गरीब हैं तुमसे कुछ कम या कुछ ज्यादा पर, गंवई मूर्खता ने उनमें एक और गुण भी डाल दिया है कि वे अछूत नहीं हैं। सभी सवर्ण उनका छुआ पानी या रसोई खा सकते हैं।"

"मेरा परिवार भीख मांगता तो मांगता, हम दर-बदर की ठोकर खाते तो खाते। तू कौन होता था मेरा। तू कौन होता है इस परिवार का? तुझे मेरे बारे में फैसला करने का क्या हक था। तुमने हमें कहीं का नहीं रखा?" सोनवां फूट-फूट-कर रोने लगी।

"मैंने क्या किया? यह सब तुमने किया। मैंने परवरिश की बात की थी और तू सोबरन राय की बेटी बन गई। दुसाध कन्या ने राय बहादुर की बेटी बनना मंजूर कर लिया। वह मंहगे कपड़े-लत्ते पहनने लगी। उसने गिरगिट की तरह रंग बदलना शुरू कर दिया। लड़कियों के हाई स्कूल में सलवार, कुर्ता पहने गरदन पर चुन्नी डाले वह बड़े घर की बेटी की तरह शिष्टाचार सीखने लगी। वह छत्री-बाभन की लड़कियों से अपने 'गाड फादर' यानी धर्म पिता सोबरन राय का नाम लेकर अपने को उनसे भी महान बताने का रौब दिखाने लगी। हर बात में चाहे

वह कपड़े-लत्ते की हो, चाहे साबुन-चोटी की हो, चाहे इत्र-फुलेल की हो, वह इतराती रहती, सबका बखान करती रहती, मानो अचानक वह दुसाध से बदलकर छत्री बन गई। जब उसकी उमर अठारह साल की हुई तो उसके मुंह बोले पिता ने एच० एम० टी० की 'नूतन' घड़ी तोहफे में दी। सब जानते हैं कि पीले रंग की चेन असली सोने की नहीं रोल्ड गोल्ड की होती है, पर वह तो उसे असली ही कहती रही क्यों ? क्योंकि वह खुद नकली औरत होती जा रही थी। उसे यह भी नहीं मालूम था कि घड़ी का तोहफा अठारह वर्ष की होने पर ही क्यों मिला। अठारहवें वर्ष में कौन-सा सुर्खाब का पर लग जाता है किसी लड़की में ? एक गंवार दिमाग सुस्त लड़की भी जानती है कि अठारह का मतलब है लड़की से औरत बन जाना। एक बदबूदार गन्दी लड़की को इत्र-फुलेल से महकती औरत बनाने वाला मूर्ख था क्या ? हां, यह जरूर था कि तब तक तुम्हारे भीतर का जमीर मरा नहीं था। तुम धीरे-धीरे यह समझने लगीं कि इन दिनों तुम्हें देखकर गाडफादर की आंखों में इस तरह की अतृप्त चमक क्यों उभर रही है। वह हमेशा तुम्हें ललचाये नेत्रों से क्यों देखता है, उसने दो-एक बार हल्की कोशिश की होगी छेड़छाड़ की, तुम तबतक सहती रही होगी। किन्तु जब उसकी हरकत आंखों से उतर कर चमड़े में बढ़ने लगी, उसने तुम्हें छूने के लिए, तुम्हें चूमने के लिए तुमसे खुलेआम अवैध सम्बन्ध के लिए पैर बढ़ाया होगा।"

"बन्द करो बकवास···मैं तुम्हें इतना नीच नहीं समझता था शिबू। तू भैया नहीं साले नाबदान के कीड़े हो, तूने मेरी बहन पर इस तरह के आरोप लगाये तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा···" शोभू गुस्से में मेरी ओर बढ़ा। मैं चुपचाप उसे देखता रहा। मैं तैयार था कि वह हमला करे। मुझे मारने की कोशिश करे, वह आगे बढ़ता रहा, और जब मुझ पर कूदने ही वाला था कि सोना ने उसकी कलाई पकड़ ली—"रुक जा शोभू, रुक जा। शिबू ने जो कुछ कहा वह सब ठीक है। हालांकि उन्होंने बहुत-सी बातें अनुमान में कही हैं लेकिन नतीजा ठीक ही है। उनकी बातें बिल्कुल सच हैं।"

"क्या ?" शोभू चौंक कर उछला—"क्यों री बेहया कौन-सी चीज कम थी मेरे घर में ? बनाव सिंगार के लिए हमारे पास पैसे न हुए तो क्या हुआ। इज्जत के साथ जी तो रहे थे। तूने न केवल शिबू भैया को धोका दिया बल्कि अपने सगे भाई के जीने का सहारा भी छीन लिया। इस आदमी ने तुझे आज से नहीं पन्द्रह साल पहले जब तू गुड़िया थी, तुझे अपनी संगिनी मान लिया था। तेरे लिए वह कुंवारा बैठा रहा। तिलकहरू आते रहे और देवेन्दर चाचा लौटाते रहे। नीच ! तूने शिबू को धोका दिया है।" इतना कहकर शोभू उछला और उसके दोनों तलवे सोनवां की छाती में लगे। वह इस धक्के को संभाल नहीं सकी और गिर पड़ी। वह जरा भी नहीं रोई। उठते ही आंगन में गई और एक छड़ी ले आकर उसने शोभू से कहा—"ले

शोभू ! तू मेरा सबसे प्यारा आदमी है। चाहे अपने को भाई मान, चाहे मत मान पर मेरी विनती सुन ले शोभू। मुझे इतना मार कि मैं लहूलुहान हो जाऊं। कोई तो अपना बने। मुझे शिबू नहीं मारेंगे। वे आज कहते हैं कि सोबरन राय की आंखों में धर्मपिता की नहीं, वासना से भूखे भेड़िये की चमक थी। क्या वे तीन साल पहले आकर मुझे बचा नहीं सकते थे ? अगर उन्होंने मुझे अपनी माना होता तो क्या एक थप्पड़ मारने में भी लाचार हो जाते ? तू कह रहा है शोभू कि मैंने शिबू को धोका दिया। देवेन्दर चाचा के पास शादी के लिए तिलकहरू लोगों की भीड़ लगती रही और चाचा सिर्फ एक वाक्य कहते--भैया लड़का मेरे कहने से शादी नहीं करेगा। जब मन होगा तभी शादी करेगा। हो सकता है कि शादी करे ही नहीं। मैं लाचार हूं। तू शिबू का पक्ष ले रहा है। तू शिबू के दिल की बात जानता है कि मुझसे शादी करना चाहते थे। इसीलिए कहीं शादी करने को तैयार नहीं थे, किन्तु शोभू मैं क्या चाहती थी, कभी किसी ने पूछा। तू समझदार था, मेरे मन की व्यथा समझ सकता था, पर एक बहन अपने भाई से कैसे कह सकती थी शोभू कि वह शिबू पर जान देती है। वह उससे मिलने के लिए समुद्र की तरह उफन रही है। मेरे तिलकहरू नहीं आ सकते, क्योंकि मैं मर्द नहीं हूं औरत हूं, पर मेरे मन के रेगिस्तान में सिर्फ एक कोना था जहां बैठकर पागल पपीहा पीउ, पीउ चिल्लाता था। वह कोना शिबू थे। वह तूने क्यों नहीं देखा। वह किसी और को नहीं दिखता क्योंकि हरिजन लड़की और शिबू के प्रेम को वे बड़े लोग मजाक मानते, किन्तु तू तो वही था शोभू जो मैं थी। तूने क्यों नहीं देखा कि हर रात मैं घंटों रोया करती थी शिबू के लिए। मेरा मन तड़पता था, मेरे प्राण तड़पते थे और अब कुलटा हो ही गई तो सबके सामने ही कह दूं कि मेरा सारा शरीर शिबू से मिलने के लिए तड़पता था, मेरा शरीर झुलसता रहता था, मेरी चोली के बन्द टूट जाते थे, मेरी सांसों में तपती लू की सांय-सांय करती हवाएं चलती रहती थीं। शिबू मेरे लिए संजीवनी की तरह थे। वे आते तो मैं जीते जी मुर्दा बनने के लिए विवश नहीं होती।''

''सोना बहन,'' घूरे पंडित बोले—''मैं समझ नहीं पाया एक बात। माफ करना आप लोग। मैं ये सारी बातें सुनता रहा। पारिवारिक बातें हैं। मुझे चला जाना चाहिए था, पर सोना बहन क्या तुमने रोपनी वाली मजूरिनों को मर्दों के बराबर मजदूरी दिलाने के लिए जो सत्याग्रह किया था वह सब धोका था।''

''नहीं, घूरे पंडित ! वह सब धोका नहीं था। सत्याग्रह तो आज के जमाने में मूर्खता के अलावा और कुछ है ही नहीं। मैं सोनवां को सत्याग्रही के रूप में देखने के लिए नहीं तैयार कर रहा था। मैं तो उम्मीद किये था कि यह राजनीति की रूमानियत तोड़कर सिपाही बनेगी। आज तक सत्याग्रह से किसका हृदय-परिवर्तन हुआ घूरे पंडित ? सोनवां को तो मैं अंगारा बनते देखना चाहता था। यह ठीक है कि वह सत्याग्रह में तीन दिन तक अनशन में अडिग रही। आपके दूसरे कार्यकर्ता जहां

रात को छिपकर शरबत पीने को अनशन विरोधी नहीं मानते थे। वह वहां बहत्तर घंटे बिना जल के बैठी रही। उसने न एक दाना अन्न लिया न एक बूंद पानी। यही गीत गाती रही सोनवां :

मरि-मरि कइलीं हम रोपनी सोहनियां
रोजिया देत निकसे परान हो
मरदा पावें दिनवां के सोलह रूपइया
आठ देत औरत के निकरै ला जान हो
काहे के बनवला प्रभु औरत के जतिया
केहु नाहीं मानत समान हो-हो-हो
अपने कमाई बिना राजा भोगे राजपाट
हमकै मजूरी देत फाटे आसमान हो···"

"हां भइया, शिबू बाबू, इसी गीत ने तो सोबरन को बूढे बन्दर की तरह पगला दिया। कटकटाकर कहता था—'अबे सालियो, हरामजादियो मैं बिना कमाई के एक पैसा भी खर्चा नहीं करता। हम दुई दिन में तुम्हारी गोटी इस तरह विचलावेंगे कि तुम लोगों को कहीं डूब मरने के लिए चल्लू भर पानीओ नाहीं मिलेगा।' सोबरन कटकटा कर कहता और अपने लठैतों को लाठी भांजने के लिए हुकुम देकर हुक्का गुड़-गुड़ाता।

"आप जानते हैं नेताजी, यह गीत किसने लिखा था ?" सोनवां ने पूछा।

"नहीं, सोना बहन।"

"यह गीत मेरे शिबू ने लिखा था।"

"अयं वाह भैया शिबू, तुम तो छिपे जवाहर हो।"

"हीरा, जवाहर नहीं नेताजी, एक ज्वालामुखी जो सबको तो फूंकेगा ही अपनों को भी बिना फूंके शांत नहीं होगा।" सोनवां बोली।

"क्यों भाई रामजिआवन, तोहन लोग का हमरे खिलाफ साजिश करत हो ? तुम लोग सुना रोपनी वाली मजूरिनों पर लाठी चार्ज को अतियाचार कहत हो।"

"हां, मालिक ठीकै सुना है आपने" रामजिआवन बोले—"अबहीं तो शिवेन्दर भैया हैं नाहीं। सो शान्ती की बात कर रहे हैं। ऊ सब। शिवेन्दर होते तो उ लोग कोठी उड़ा देते डायनामाइट से···"

"अबे स्साले नाऊ, बारी डरपोक, ई कोठी कोनों जंगली चट्टान नाहीं है कि कोई डायनामाइट लेकर उड़ाने आवैगा और कोई रोक-टोक ना करेगा। अबे स्साले जा के कह दे ऊ बहेतू सिवेन्द्रा से कि सोबरन राय ऐसा नहीं मारते कि पीठ पर घाव दिखे। उ तो रूई का फाहा पहले ही सटवाय देते हैं, हंटर तो ओकरे बाद

बरसते हैं।"

"जी मालिक।"

"रामजिआवन भागा-भागा हम लोगों के पास आया।" घूरे पंडित बोले—"उससे हंटर का नाम सुनते ही हमारे साथ बैठी चमाइनों के दिल धुकुर-धुकुर करने लगे। सब कोई न कोई बहाना बनाकर घिसकने लगीं। तभी भैया शिबू, हमारी सोनवां बहन चट्टान के मानिन्द खड़ी हो गई। बोली—अरे कायर भगोड़ियो, कब तक भागोगी। यहां जान भी जाए तो तुम्हारी बेटी-पतोहुवें तुम्हारा जस बखानेंगी—मेरी सास, मेरी बहन, मेरी मां, मेरी भाभियां लम्बी सांस लेकर कहेंगी, मिल तो गया मर्द के बराबर दर्जा, अब खेतिहर मजूरों के बराबर ही मजूरिनें भी मजूरी पायेंगी। आज के जमाने में तुम दस रुपए पाती हो, मर्द लोग सोलह रुपए पाते हैं। मजूरी तो अभी भी सहर के मजदूरों के सामने आधा-पौना ही है, पर हम उसके लिए बाद में लड़ेंगे, पहले अपने लिए लड़ो। एकजुट होकर लड़ो। सोबरन राय के चेहरे पर उदासी का पीला रंग बदबूदार सड़े हुए आम के गूदे की तरह फैल गया। कितना चिपचिपा लग रहा था सोबरन राय का चेहरा। सहसा साहस बटोर कर बोले—ई खुद तो सोबरन की बेटी बनती है। बड़े घर की लड़किनों की तरै फैशन करती है। मर्दों के साथ बेशरम की तरह हंसती बोलती है। अरे चला हो बहिनी जी, भाग रे सुनरिया के माई, लात खाए के सवख (शौक) हो का? तभी कोठी के बाईं ओर से और दाईं ओर से ठाकुर के लठैत टूट पड़े। भगदड़ तो पहले ही शुरू हो गई थी। लाठी लगते ही हाय, हाय चिल्लाती मजूरिनें रफा-दफा हो गईं। सुरता विन्द की लाठी मेरे कंधे पर लगी और मैं दर्द के मारे लेट गया···"

"बस, बस हो गया घूरे पंडित! पूरा किस्सा साफ-साफ सुना दिया आपने। जब आप खुद ही दर्द से लेट गये तो आप करते भी क्या। सोबरन राय के लठैतों ने सोनवां का झोंटा पकड़ा और उसे घसीटते हुए कोठी में ले गए। है न?"

"हां भैया, तुम्हें तो सब पता ही है। मैंने ल ाख उठने की कोशिश करी पर कुछ न कर सका। हां, ई जरूर है कि लठैत कह रहे थे। सोनवां मार सहकर भी रोई नहीं। और जब कोई बस नहीं चला तो सोबरन राय ने डर के मारे कि कहीं कोठी सचमुच न उड़ा दें क्रांतिकारी लोग डायनामाइट से, सोनवां को बाइज्जत रिहा कर दिया।"

"ठीक बात है घूरे पंडित, आप जैसे क्रांतिकारी जहां हों वहां सोबरन की क्या बड़े से बड़े जालिम की हैकड़ी हवा हो जाती है। अच्छा घूरे महाराज, आप चलें अब," मैंने रुखाई से कहा।

"क्यों सोना इनकी कोई और जरूरत तो नहीं है न?" मैंने सोना से कहा।

वह कांप गई। उसकी आंखें बुझ गई थीं, बोली— "और काम क्या है। सब तो कह ही दिया।"

"अच्छा सोना बहन, शिबू भइया, चल रहा हूं अब। मेरी जब भी जरूरत हो शिबू भइया याद जरूर करना क्योंकि मैं तो अपनी चुटिया अब बांधता ही नहीं। सुबह संझा करते बख्त भी नहीं बांधता। जब तक इस चंडाल सोबरन राय का पुश्त दर पुश्त सफाचट्ट नहीं हो जाता, भइया अपनी चुटिया खुली रखेंगे। हम भइया नये जुग के चानक्य हैं, हां।" घूरे पंडित ने चुटिया हिलाई।

"आप तो बेजोड़ हैं घूरे पंडित, दो एक कांग्रेसी और होते इस गांव में तो यह करमूपुरा चिरई गांव के बहुत पहले खास विकास क्षेत्र बन गया होता।"

"अरे भइया, ई सब बातें हमसे न कहकर शिवधनी नेताजी से कह देते तो हमहूं न सही विधान सभा में जिला परिषद में तो घुस ही जाते, हें, हें, हें, हें,। कैसी उलटी दुनियां हो गई। ईमानदारी से काम करने वाले जन सेवक लोगन को कोई नहीं पूछता।"

"जरूर कहेंगे घूरे भैया, जरूर कहेंगे। आपने सोनवां की लाज बचाई, आपके कारण उसे सोबरन राय ने बाइज्जत रिहा कर दिया। यह मैं कभी नहीं भूलूंगा घूरे पंडित ! इसका इनाम मैं दूंगा आपको। बखत आने दीजिए।"

"अच्छा जय हिन्द नेता जी !"

"जै हिन्द शिबू भइया !"

"हूं, तूने झूठ बोला गांव वालों के सामने कि कोठी में जाकर सोबरन राय ने माफी मांगी और रोपनी करने वाली मजूरिनों को मर्द के बराबर मजदूरी देना मान लिया और तुझे छोड़ दिया गया। तुझ पर कोई जोर-जुल्म नहीं हुआ। तू रात भर सोबरन की कोठी में बन्द रही, और इस सच को तुमने छिपाया, लीपा-पोता क्यों ? क्यों ?" शोभू में पुनः बहशी प्रेत जगने लगा— "बोल पापिनी, सारा गांव कहता है कि तेरे पेट में बच्चा है। लोग यह भी कहते हैं कि यह बच्चा शिबू भैया का है। मैंने सच मान लिया था। तू कह रही थी न कि तू शिबू को पाने के लिए तड़पती थी, सारा शरीर उनका इन्तजार करता था। मैं यह जानता था सोनवां। हां, उतना विस्तार से नहीं जानता था कि औरत को अपने मर्द से मिलने के इन्तजार में कितनी तकलीफ से गुजरना होता है। मैं जानता था जैसी बेकल तू है, वैसे ही शिबू भैया भी हो सकते हैं। इसलिए चाहे गांव में उनका आना-जाना किसी ने न भी देखा हो तो क्या हुआ। शादी की रस्म अदायगी से ही तो मर्द औरत एक नहीं होते। जो जिन्दगी भर तुझे अपनी जनम-संगिनी मानता रहा, वह यदि तुझसे एकान्त में मिला और तुम्हारा सम्पर्क हुआ तो ठीक है, तुम दोनों समझदार हो, एक दूसरे को चाहते हो इसलिए यदि उस अनजान रात के मिलन से कोई जीव आ ही गया तो मैं उसका मामा बनकर धन्य हो जाऊंगा। मैं तो यही सोचता रहा सोनवां। अब बोल, यह बच्चा किसका है ? बोल !" शोभू की आवाज में सुलोचन की कड़क थी, उसमें दुस्साधिक खून था, तड़पकर उसने सोनवां के गाल पर करारा थप्पड़

मारा और वह गनगना उठी। "बोल, किसका बच्चा है ?" तड़ाक्-तड़ाक्, "किसका बच्चा है यह, बोल"···तड़ाक् तड़ाक्···"नहीं बोलेगी। अभी बुलवाता हूं।" वह कोने से छड़ी उठाकर आया।

"छोड़ दो शोभू। पागल हो गए हो क्या। यह तुम्हारी बड़ी बहन है।" मैंने कहा।

"बड़ी बहन नहीं हरजाई और चुड़ैल है, बोल···" फिर वही तड़ाक्-तड़ाक्। सोनवां की आंखों में उजड़ने की व्यथा थी, पर पाप की स्वीकृति का नामोनिशान नहीं था—"मैं बेबस थी। उसके लठैतों ने मेरे हाथ-पैर बांध दिए थे। मैंने बहुत कोशिश की। चिल्लाई। सोबरन ने खुद मेरे मुंह में अपना गमछा ठूंस दिया। मेरा शरीर पसीने-पसीने हो रहा था—पर मैं अकेली औरत कर क्या सकती थी। मेरा दैव ही रूठा है। न चाहते हुए भी एक पापी का गर्भ यदि मेरे पेट में आ गया तो मैं क्या कर सकती थी।"

"तू आत्महत्या कर सकती थी, रेल के नीचे कटकर मर सकती थी। हजार तरीके हैं जान देने के। आज पांच महीने का गर्भ लिए तू गांव की खोरियों में घूमती है और लोग फुसफुसाते हैं कि शिवेन्दर ठाकुर का गर्भ लिए बेहया की तरह इठलाती चलती है बेसवा। तू मुस्कुरा देती है। तुझे सुख मिलता होगा।"

"हां, हां मुझे सुख मिलता है। सपने का भी सुख होता है। मेरे पेट में जिसका गर्भ आना चाहिए था, वह नहीं आया, किन्तु दुनिया इसे उसी का गर्भ कहती है तो मैं खुश क्यों न होऊं ? बोल हरामी शोभू का बाप, मैं खुश क्यों न होऊं। हें हें हें···शिबू का गर्भ। शिबू का गर्भ।"

सहसा वह लड़खड़ाई और गिर पड़ी। मैंने दौड़कर उसके बेहोश शरीर को खींचा। उसका सिर अपनी जांघ पर रख लिया। उसके दोनों गालों को अपनी हथे-लियों से सहलाते हुए मैंने कहा—"सोनवां, सोनवां···होश में आ। सोनवां होश में आ।" किन्तु वह शायद अन्तिम बार विदा मांगने आने के पहले विदा हो चुकी थी। "शोभू दौड़करस रकारी अस्पताल के डाक्टर को बुला लाओ तुरन्त।" शोभू अस्पताल की ओर दौड़ा। तभी फाटक ठेलती रुक्मा आई। उसने सोनवां को बेहोश देखा। उसका सिर मेरी गोद में था।

"क्या हुआ शिबू भाई साहब।"

"पता नहीं अभी लड़खड़ा कर गिरी।"

"मर गई।"

"क्या ?"

"हां, हां मर गई। जब आप गांव में घुसे तो सोनवां मिली थी न आपसे ?"

"हां, मिली थी, पर।"

"पर क्या, मैंने तो उससे कहा कि शिबू भाई साहब दिल के बहुत साफ और

ईमानदार कामरेड हैं, वह तुम्हारी बेबसी का ब्यौरा सुनेंगे तो तुम्हें माफ करके स्वीकार लेंगे। हो सकता है कि यह आने वाला बच्चा, उन्हें पसन्द न हो, तो क्या हुआ। इसको जनमते ही किसी अनाथालय में दे देना या बच्चे से अगर तुझे खुद घिन आती है तो एबार्शन करा लेना। इसमें इतनी परेशानी क्यों। लेकिन लगता है वह झेल नहीं पाई। बड़ी रूमानी टाइप औरत थी यह। हमारे कामरेड हरीश कहते हैं कि रूपवा तू मूर्ख है। एक नहीं हजार शिबू कहें तो भी सोनवां अपने सपने की दुनिया छोड़कर ठोस जमीन पर नहीं उतरेगी। वह जब पापी के टुकड़े पर थूकने की जगह कुतिया की तरह दुम हिलाती रही, अपनी साड़ियों का बखान करती रही, सोबरन राय को पिता कहती रही है तो वह सोबरन के गर्भ को पाप-पुण्य के बीच फंसाकर उसी में लटक जायेगी। वह जियेगी नहीं, जिस दिन उसने जाना कि शिबू अब उससे अलग हो गए, वह उसी दिन मरेगी। कामरेड की बात सही निकली। वह मर गई। मैं, खोजती हूं, उसके कमरे में शायद जहर की शीशी-बीशी कुछ मिल जाए।"

थोड़ी देर में रुपवा आई—"शिवेन्दर भाई साहब, यह है वह शीशी। देखिए 'प्वायजन'।"

"सुन रुपवा, यह शीशी कहीं फेंक दे। भगवान के नाम पर तू डाक्टर से आत्महत्या के बारे में कुछ मत कहना। कभी-कभी सत्य को छुपाना भी धर्म हो जाता है। नहीं छिपेगा तो यह लाश पोस्टमार्टम के लिए भेजी जायेगी। सुलोचन दुस्साधिक के परिवार पर कलंक का टीका लग जायेगा···।"

"बस, बस" रुपवा हंसी—"कैसे खूबसूरत हैं ये आदर्शवादी तर्क। हमारे कामरेड हरीश कहते हैं कि जब कोई आदमी खानदान की इज्जत, मानवता, ईमान, धर्म, आदर्श वगैरह बकता हो तो समझ लेना उसने सपनों की दुनिया में जीना सीख लिया है। यानी वह अभिजात मूर्खता की रेत में गर्दन डालकर शुतुरमुर्ग की तरह असफलता को सफलता में बदलने का ख्वाब देखता है।"

"मैंने तुमसे फिलासफी बकने को नहीं कहा है। तुम्हारे कामरेड ये कहते हैं, तुम्हारे कामरेड वो कहते हैं, कहें, बकें, कोई फर्क नहीं पड़ता इसमें। तुम हाई-स्कूल की परीक्षा में फेल होने के कारण अचानक बहुत-बहुत समझदार हो गई हो। बड़ी रणनीति सीख ली तुमने। मैं इन्तजार करूंगा उस दिन की जब तुम अपनी रणनीति से करमूपुरा की नियति बदल कर, बेईमानी के महलों को फूंककर, मसाल हाथ में लिए पूरे इलाके में क्रान्ति की आग जला सकोगी पर इस वक्त मेहरबानी करिये देवी जी और जैसा कह रहा हूं, वैसा ही करिए।" मेरे स्वर में बहुत हरारत थी।

"तो तुम कामरेड हरीश से जलते हो, अपनी पोंगापंथी में मुझे भागीदार बनाने की साजिश कर रहे हो, षड्यंत्र···मैं इसे कभी भी···स्वीकार नहीं

करूंगी ।"

"मानता हूं।" इतना कहकर मैंने सोनवां की लाश को एक ओर धकेला और रुपवा के गाल पर करारा थप्पड़ जड़ दिया। "यह है पोंगापंथी तरीका।" मैंने उसकी चोटी पकड़ी और ऐंठकर उसकी पीठ पर एक लात जमा दी, वह तिलमिला-कर रह गई। तभी डाक्टर के साथ शोभू आया। वह बहुत घबड़ाया हुआ था। "यह पड़ी है डाक्टर साहब। जरा देखिए सर। मेरी एकमात्र सगी बहन रूठ गई है मुझसे। इसे बचा लो डाक्टर, इसे बचा लो···।"

डाक्टर ने आंखों की पलकें हटाकर देखा। नब्ज देखी। "मैं अब कुछ नहीं कर सकता शोभनाथ! देर हो गई। क्या यह बहुत टेंशन में रहती थी?"

शोभू को मैंने आंख दबाकर इशारा किया। वह बोला—"टेंशन, नहीं डाक्टर साहब! उसे टेंशन क्यों होता।"

"शायद गांव में जो चर्चा चल रही है, उसे सुनकर यह परेशान हुई हो?"

"कैसी चर्चा?"

"अब उन सब बातों को सोचना ही बेकार है। दिल का दौरा पड़ा और वह चली गई, यही कारण ठीक रहेगा। मैं मृत्यु की सर्टिफिकेट दे रहा हूं। दाह संस्कार जल्दी से जल्दी करा डालो। हो सकता है कि पांच-छह घण्टे बाद उसका शरीर नीला पड़ने लगे। तब आप लोग बहुत चक्कर में पड़ जाओगे।"

डाक्टर ने प्रमाण-पत्र दिया और सोनवां का दाह संस्कार हो गया। मैं उस समय ऐसी मानसिक हालत में था कि घाट भी नहीं गया। बनारस चला आया।

"हूंहं तो इस तरह हुआ सोनवां का उद्धार, यही वर्ड तो कहा था उस नीच सोबरन राय ने।" मैं बोला—"यार शिबू, तुमने उसके लिए इतना किया, इतना सहा, फिर उसकी चर्चा में तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों आये? यह सब सुनकर तो मैं गर्व से फूला नहीं समाता यार कि तुम्हारी लैंग्वेज की कड़वाहट के पीछे कालकूट विष है, भयानक जहर, इसे पीकर महादेव नीलकंठ हो गए। तुममें तो अब भी पराजय की भावना नहीं है, तुम कितने बड़े हो शिबू।"

"छोड़ो यार, मैं आंसू इसलिए रोक नहीं पाता दोस्त कि उसका एक 'सेंटेंस' बहुत कसकता रहता है मन के भीतर। उसने कहा था कि क्या शिबू तीन साल पहले आकर मुझे बचा नहीं सकते थे। क्या वे मेरी गलती के लिए थप्पड़ मारकर मुझे रोक नहीं सकते थे? प्रेमू, मैंने कहा नहीं उससे कि पिछले एक साल से मेरी पढ़ाई-लिखाई के लिए खर्चा तो दूर पिताजी दो मुट्ठी चावल नहीं दे पाते थे। मैंने थप्पड़ तो मार दिया होता, बहुत गुस्से में था मैं उन दिनों, पर उस जैसी फैशनपरस्त औरत को मैं रखता कहां। और सच यह भी है प्रेमू कि उसकी

नासमझी ने मुझे एकदम कठोर और सख्त पत्थर बना दिया। मैं उसे मन से निकाल देने के लिए, उसकी परछाईं से लगातार लड़ता रहा। वह जिद्दी थी, तो मैं उससे भी बुरा बन गया, सुना है तुमने—बड़की मार कबीर की चित से दिया उतार। मेरे लिए वह मर चुकी थी।"

"तुम झूठ बोल रहे हो शिबू!" मैं ठहाका लगाकर हंसा, "तीन साल हो गये उसे मरे, तुम तबसे क्या अपने को जिन्दा समझ पाते हो?"

तभी एक युवक आया।

"नरैन मिलो इनसे, यह हैं मेरे दोस्त, प्रेमस्वरूप। उम्र में चार साल छोटे। यानी तुमसे सिर्फ एक साल बड़े। और प्रेमू यह है हमारा कमांडर नरैन। दोस्त के लिए जान की बाजी लगा सकता है। पर तुम कभी यह गलती मत करना कि इसके बाहरी और भीतरी चेहरे एक हैं। कब गुस्सा होगा, कब पिघल जायेगा। इसे समझ पाना बहुत कठिन है।"

"बड़े भाई, इतना मूर्ख तो मत बनाइये, मैंने तो दो साल पहले ही कान पकड़ लिए। अब ज्यादा अगमजानीश्वर मत बनाइए। चलें, आप लोग भोजन करें और मुझे अपने ढंग से काम करने दें। बस। रुपवा की बहादुरी तो बताइयेगा पर मेरी मूर्खता का जिक्र मत करियेगा," नरैन जी चले। साथ-साथ रसोईघर में ठहर पर बैठे। भोजपुरी वाले रसोईघर को पीली मिट्टी से लीपकर चौका लगाते हैं। इसे 'ठहर' कहते हैं। खाना खाकर लौटे और पुवाल के गद्दे पर हम बैठे। मैं तकिए के सहारे उठंगा था। शिबू पैर फैलाये सन्नाटे में कुछ खोज रहा था।

"अब शुरू हो जाओ प्यारे लाल।" मैंने कहा—"कल का भिनुसार शायद गांव की तकदीर का मोड़ साबित होगा। नरैन के चेहरे से लगता है कि वह बहुत चिढ़ा है।"

"नरैन को जो तुम आज देख रहे हो। वह ऐसा नहीं था। वह इतना रंगीन गेरुवा वस्त्र पहनता था कि मैं इसकी निवृत्ति को देखकर चिढ़ाता था। एकदम शान्तिवादी आदमी था। असल में इसकी तटस्थता ने ही सोबरन के दिमागी-कोबरा को दूध पिला-पिलाकर पाला। वह सोबरन की शरारतों पर चिढ़ता था पर यह भी माना करता था कि सोबरन के दादा और हमारे पड़दादा सुभगसिंह तो एक ही थे। झगड़ेंगे सुबरन से तो वंश की निन्दा होगी। मूर्ख था। एकदम मूर्ख था। इससे ज्यादा सही और व्यावहारिक तो मेरी अनुज-वधू है। यानी नरैन की पत्नी। नरैन एक मामूली सी बात पर चिढ़ गया। उसे अपनी जात पर गर्व था। मैंने हरिजनों को अपनाया, कुजात बना। नरैन बहुत रुष्ट रहता था। सच तो यह है रिसर्चर कि 'आउट आफ डेट' होते हुए भी अभी

तुलसी का भोगा सत्य ज्यों का त्यों छाया है हमारे समाज पर।" शिबू बोला।

"कौन-सा सत्य ?" मैंने पूछा

"वही—सबसे कठिन जात अपमाना।"

"अभी भी ब्राह्मण, क्षत्रिय जात को कोट की तरह नहीं, चमड़े की तरह चिपटाये हुए हैं। कितना दुःख होता है। इन्हें बताना बहुत मुश्किल है दोस्त। मैं कभी सोचता हूं कि होंठों पर टेप चिपका लूं। न होंठ हिलेंगे, न मैं कोई व्यंग्य करूंगा। आज भी किसी तिवारी को गाली दे दो तो सारे देहात के ब्राह्मण इसे अपमान मानकर तुमसे बदला लेंगे। छोड़ेंगे नहीं। अपने बटेसर गांव में हैं शिवशंकर तिवारी। मैं उन्हें चिढ़ाने के लिए कहता हूं कि तिवारी चाचा आप तो बेकार ब्राह्मण कहलाते हैं। हैं नहीं।

"बुड्ढा गुस्से में कहता है—'हम का हैं, तू यही समझने जोग होता हरामी त अइसे कुजात रजपूत नाहीं कहलाता। मैं ब्राह्मण नाहीं हूं, बोल का हूं। चमार हूं ? दुसाध हूं ?'

" 'तिवारी बाबा तुम बनिया हो। हर चीज को अपने झूठे तराजू पर नापते हो। बिना हिचक सत्य को छुपाकर स्वार्थ के पक्ष में ढुलक जाते हो। तुम्हारे तराजू में पसंगा भी है और तुम डांड़ी मारने में भी बेजोड़ हो।'

"बूढ़े तिवारी मुझे दौड़ाते रहते हैं। उन्हें चोर कहना और ब्राह्मण कहना एक जैसा लगता है। खैर छोड़ो।"

"नरैन जी के बारे में जो तुम्हारे विचार हैं शिबू उससे लगता है रुपवा सोनवां से बिल्कुल अलग तरह की औरत थी। वह भावुक नहीं थी। यह तुम खुद कह चुके हो। सोनवां की मौत के मौके पर उसने जो कमेंट्स दिए, तुमने जब उसे मारा, तब भी वह अपनी बातों पर दृढ़ रही। तुम्हारा विरोध किया उसने। तुम इससे चिढ़कर उसके बारे में जो भी राय बनाओ, पर एक हरिजन लड़की को जलता हुआ अनार तो कामरेड हरीश ने बना ही दिया। अब तुम हरीश से रश्क करो और उसे गलत दृष्टिकोण से देखो तो यह तुम्हारा आइडिया कहलायेगा। इसे सब लोग सही मानने को तैयार नहीं हैं। तो भी तुम अपने नजरिये से रुपवा की कहानी भी सुना दो···"

"लगता है करमूपुरा का पानी तुम पर पांच घण्टे के अन्दर इस तरह हावी हो गया है दोस्त कि तुम सही दास्तान को सुने बगैर, फैक्ट्स को देखे बगैर, फैसला सुनाने के पहले ही एक मनगढ़न्त फैसला ले चुके हो। नरैन बहुत ही प्रैक्टिकल है। पर कभी-कभी औसत से ज्यादा प्रैक्टिकल हो जाना भी मूर्खता कहलाती है। एक युवक को ज्यादा आदर्शी होना चाहिए और कम से कम यथार्थी। वरना किसी बड़ी लड़ाई का सपना देखना भी मुमकिन नहीं होगा। तुम गलत सोच रहे हो कि मैं हरीश से जलता था। जलना तो दूर मैं हरीश पर गंभीरतापूर्वक सोचना भी

समय की बर्बादी मानता हूं। कौन-सा ऐसा आधार है करमूपुरा विकास क्षेत्र में। जनता से जुड़ी कौन सी मशीन है जो हमारी क्रान्ति को रोक रही है। परेशानी यही है कि हम पहाड़ को उड़ाने का नक्शा बनाते हैं, बहुत बड़ा व्यूह बनाते हैं, लम्बा-चौड़ा जाला बनाकर पूरे इलाके को छेंक लेते हैं, और सोच लेते हैं कि इसमें सोबरन राय जैसा मगरमच्छ हर हालत में फंस जायेगा। आप हड़ताल करा दें तो मिलें तो बन्द हो जाती हैं, हड़ताल से मिल मालिक अपने आर्थिक नुकसान को सोचकर कुछ ढील देता है, मजदूर-नेताओं को खरीदकर मामला सलटाने की पहल करता है, और बाद में एकदम निराशा की स्थिति भी आई तो थोड़ा सा मंहगाई-भत्ते को बढ़ाकर बोनस देने का ऐलान करके हड़ताल के जाल को हटवा देता है। जाल वहां कारगर हो जाता है क्योंकि वहां एक मिल है आंख के सामने और एक-मजदूर संघ है, आंख के सामने। पर सोबरन राय जैसा मगरमच्छ मिल मालिक के कद का नहीं है, वह इतने बड़े विस्तार वाले विकास क्षेत्र में इतनी मिलें रखता है कि कहीं भी किसी भी गांव में छिपकर वह तुम्हारे मनसूबों पर पानी फेर सकता है। खेतिहर मजदूर और मिल मजदूरों में जो बुनियादी फरक है, उसे समझें।

"रुपवा मुझसे नाराज है। मैं इसे जानता था। पर मैं उसके परिवार से किसी स्वार्थ की वजह से नहीं जुड़ा था। मुझे सोनवां से प्रेम था। पर न तो वह किसी पूंजीपति की कन्या थी, और न तो मुझे उससे कुछ पाने का लोभ था। एक बार जाड़ों में ही गांव आया। इसी जगह, इसी पुआल के गद्दे पर बैठा था। नरैन भी था। तभी रुपवा की छोटी बहन तेतरी आई।

" 'हियां सिवेन्दर भैया हैं का नरैन जी ?'

"नरैन हंसा—'तू तो बड़ी शहरी होती जा रही है तेतरी। तू मुझे नरैन जी कह रही है।'

" 'का, ई कौनो गलत बात हौ नरैन जी।'

" 'अरे नहीं री गलत बात नहीं अच्छी बात है। सबको ऐसा ही बोलना चाहिए। क्या बात है। यह सामने बैठे हैं शिवेन्दर भइया।'

" 'सिवेन्दर भइया, एक ठो महिला आपको देने वास्ते चीठी दिए रही। बोली कि एह को सीधे सिवेन्दर को मिले। अइसा कहा।'

" 'अच्छा, अच्छा, ले आ चीठी, दे मुझे।'

" 'आप ई चिट्ठी से दुःखी हुए कि सुखी ?'

" 'मतलब।'

" 'ऊ महिला बोली थी कि चीठी मिलने से देख के बताना कि ऊ खुसी हुए कि दुखी।'

" 'अरे वाह री तेतरी तू तो भाई वंडरफुल लड़की है।

" 'ई का होत है ? ववंडरफूल का है ?'

" 'अच्छा-अच्छा चीठी देखकर बताते हैं कि मैं दुखी हुआ कि सुखी।'

"मैंने चीठी खोली। रुपवा ने लिखी थी—भाई साहब को रुपवा का चरण-स्पर्श। आपके साथ मैंने गलत व्योहार किया। आप हमारे हितू हैं। हमारे ऊपर आपके अहसान हैं। हम पागल थे कि बड़ी बहन के मौत पर बहुत बुरी तरह पेश आए। आइन्दा ऐसी गलती कभी नहीं करेंगे। कान पकड़ते हैं। हमें माफ कर दें। हम आपके सगे हैं। सगे लोग छोटों को माफ कर देते हैं, हो सके तो अपने वेशकीमत समय में से थोड़ा मुझे भी दीजियेगा। आपकी साली—रुपवा।

" 'वाह तेतरी, तू उस महिला से कह देना कि हम सुखी हुए।'

" 'सच ?'

" 'हां भई।'

" 'तो सिवेन्दर भइया उस महिला को छिमा कर दिये आप ?'

" 'हां भई।'

"वह खिलखिलाती हुई भाग गई। मैंने नरैन को उत्सुक देखकर वह चिट्ठी दे दी—'लो, तुम भी पढ़ लो।' उसने पूरी चिट्ठी पढ़ ली।

" 'मेरी एक विनती है शिबू भैया।'

"मैंने हंसते हुए नरैन की पीठ पर एक धौल दिया। कहा 'तुम भी नरैन कभी-कभी बच्चों-सी बात करने लगते हो। विनती की बात क्या है। तुम तो मशविरा देना चाहते हो। तुम यह भी जानते हो कि मेरे जैसा जिद्दी आदमी भी केवल एक व्यक्ति के सामने लाचार हो जाता है। वह जिद्दी आदमी है नरैन। बोलो।'

" 'तुम शिबू भाई, रुपवा से मत मिलना।'

"नहीं मिलूंगा। अब बताओ मुझे क्यों नहीं मिलना चाहिए ?"

"इसलिए शिबू भाई कि अभी सोनवां के साथ जो कुछ हुआ, उससे मेरे खान-दान की इज्जत धूल में मिल गई है। यह शहर नहीं है कि तुम जिससे मन करेगा मिलोगे। यह गांव है। बिरादरी है। हमारा हुक्के-पानी का रिश्ता है। आधी बिरादरी ऐसे ही हमारे खानदान को कुजात कह कर छोड़ चुकी है। अब शादी-ब्याह, मरन-जियन में कोई हमारे यहां झांकने भी नहीं आता। गांव पुराने हैं, सड़े हैं, यह सब ख्याल बेशक सही हैं, हम तुम्हें इन्हीं ख्यालों की वजह से एक बार मन-मानी कर लेने की छूट दे चुके हैं। बहुत समझाने-बुझाने से कुछ लोग हमारे यहां आने-जाने लगे हैं। हुक्का-पानी, बातचीत, न्योता-हंकारी में शामिल होने लगे हैं। हमारे घरों में भी शादी योग्य लड़के-लड़कियां हैं। हम जात बाहर शादी तो नहीं करेंगे न ? करेंगे तो भोगेंगे। हमारे यहां कोई पेशाब करने भी नहीं आयेगा। सो भैया तुम अब रुपवा के यहां अगर जाते हो तो नरैन को छोड़कर जाना होगा।" उसने मेरी ओर घूरते हुए कहा।

"ठीक है नरैन, मैं याद रखूंगा। जब रुपवा के यहां जाना पड़ेगा तो तुम्हें छोड़कर ही जाऊंगा।"

"चिढ़ गए।"

"नहीं, सत्य से चिढ़ना कोई इन्सानियत है क्या ?" मैंने कहा—"मेरे लिए मेरे खानदान की बेटे-बेटियां कुंवारे रहें तो मेरे जीने को धिक्कार है। मैं नहीं चाहता कि मेरी बहन राजी मेरे कारण कुंवारी रहे।"

"फिकर राजी की मत करो शिबू भैया ! उसका बड़ा भाई तो मैं हूं ही। उसकी शादी की चिन्ता नहीं है। चिन्ता तो तुम्हारी बहन सरस्वती की है।"

"ठीक है यार नरैन, राजी और सरस्वती में भेद नहीं करता मैं। बात आ ही गई तो बता ही दूं कि सरस्वती की शादी इसी चैत महीने में हो जाएगी।"

"अच्छा, यह तो बड़ी खुशी की बात है। लड़का किस जात का है ?"

"शुद्ध राजपूत, वह भी दूर का नहीं अपने पड़ोस का है। बनारस में पढ़ता है। उसे सोनवां कांड अच्छी तरह मालूम है। उसे ही नहीं उसके बाप को भी।"

"तो नाम-गांव क्यों नहीं बता रहे हो ?"

"नाम-गांव भी बता दूंगा नरैन। बहरहाल तो रुपयों का बन्दोबस्त करना है। लड़का चाहे लाख प्रगतिशील हो, राजपूत है न। सो तिलक न सही सामान चाहिए। इन्तजाम में लगा हूं। कर लिया तो फिर आऊंगा। तुमसे पूछे बिना शादी नहीं करूंगा। न सही तुम्हारी तरह सौ फीसदी, पर आधा पौना तो मुझे भी खानदान की इज्जत का ख्याल रहता ही है। अच्छा नरैन अब चलूं। अभी शाम के तीन बजे हैं। थर्टीन अप मिल जाएगी।"

"नाराज हो गए शिबू भैया ! कल जाने वाले थे ?"

"अरे नहीं, नाराज होकर नहीं, जरूरत है, इसलिए जा रहा हूं।" कहकर मैं चला आया। बाद में पता चला कि मेरे इस तरह चले आने की वजह से नरैन बहुत रोया। वह यही कहता रहा कि मैंने राजी और सरस्वती को अलग-अलग बांट दिया और राजी, सरस्वती को बराबर मानने वाले शिबू भाई के दिल पर मैंने चोट की। मैं अधम हूं। नीच हूं।

मैंने बनारस से उसे एक चिट्ठी लिखी—इस तरह की बातें सोचकर दिल दुखाना बहुत गलत है। मुझे जब से पता चला है कि तुम निराधार अपने को अपराधी समझकर मन को सता रहे हो, मैं उपवास कर रहा हूं। जब तुम्हारी चिट्ठी आएगी कि तुम उन बातों को भूल गए तभी अनशन तोड़ूंगा। चिट्ठी के उत्तर की जगह खुद नरैन आ गया। मैंने वहीं उसे सरस्वती के होने वाले पति से मिलवाया। लड़का एम० ए० प्रथम श्रेणी में पास करके पी-एच० डी० कर रहा था।

"लड़का तो बहुत अच्छा है। खूब तेज और खूब सुशील।" नरैन ने कहा।

"नाम क्या है ?"

"वह तो तुम्हें पता है।" मैंने कहा।

"मतलब ?"

"भई उसका नाम सुशील ही है।"

हम दोनों ठहाका लगाकर हंसे।

"इसने सरस्वती का फोटो देखा है ?"

"नहीं फोटो नहीं देखा है, खुद मिल चुका है।"

"कब।"

"जब तीन महीना पहले बाबू उसे लेकर बनारस आए थे।"

"ओह" वह हंसा—"देवेन्दर चाचा ने कहा था थोड़ी बीमार रहती है। अब समझा।" वह हल्के हंसा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता नहीं उदासी थी। मेरी समझ में नहीं आया कि नरैन क्यों उदास है। मैंने बिना सोचे तीर चला दिया—"मैं इससे भी अच्छा लड़का खोजूंगा राजी के लिए।"

"नहीं शिबू !" वह उठा—"राजी का भाई अभी जिन्दा है। अच्छा।"

"सारी तैयारी पूरी हो गई। क्या-क्या कैसे हुआ। किस तरह कर्ज लेकर दहेज न लेने के नाम पर पचीस हजार की चपत लगी। उसकी कहानी तुम्हें मालूम है। किन्तु तुम्हें एक बात नहीं मालूम थी।" शिबू ने मुस्कुराते हुए कहा।

"यार तुम अजीब आदमी हो, तुम सचमुच बातें छुपाने में माहिर घौरधप्पा हो।"

"ई घौरधप्पा कौन-सा विशेषण है दोस्त ?"

"बात छिपाने वाले को हम घौरधप्पा कहते हैं।"

"ओह मुंहचुप्पा की वजन पर।"

"हां, आगे बढ़ो। कौन-सी बात थी जो मैं नहीं जानता। लड़के के बाप ने ऐन मौके पर टी० वी० के साथ ट्रांजिस्टर की मांग कर दी, उसे मैं जानता हूं और यह भी जानता हूं कि मंड़वे-मंडप में दान दक्षिणा के लिए बटोरे रुपयों में से ट्रांजिस्टर खरीद लेने से कुछ बचा नहीं···पर तुमने कहा कि चलो···काम चलाएंगे किसी तरह। फिर कौन-सी बात है जो मैं नहीं जानता।"

"यह बात नहीं जानते हुजूर कि सुशील ने आकर कहा कि शिबू भाई साहब मेरा फूफा साला बड़ा दुष्ट है, वह जहां भी बारात में जाता है लड़की वालों को नीचा दिखाने के लिए कुछ-न-कुछ अड़ंगेबाजी करता है। वह विश्वनिन्दक है।

" 'ई विश्वनिन्दक क्या बला है भाई।' मैंने पूछा था सुशील से।

" 'यह कहानी तो शिबू भाई साहब मैंने कलकत्ते में सुनी थी। एक बड़ा ही

नीच किस्म का आदमी था जो बड़े-से-बड़े काम में भी कोई न कोई ऐब ढूंढ़ लेता था। दुनिया उससे संत्रस्त रहती थी। नारद जी से उस अद्वितीय व्यक्ति की सूचना पाकर भगवान विष्णु ने कहा कि भई ऐसे विश्वनिन्दक का मैं दर्शन करना चाहता हूं। आप उन्हें आमंत्रित करके ले आइए। मैं बैकुंठ में जो कुछ भी है सब उनके आतिथ्य में लगा दूंगा। देखूं तो कैसे निन्दा करता है मेरी। आप जानते हैं बैकुंठ तो बैकुंठ ही रहा होगा। देवांगनाओं ने द्वार से घुसते ही विश्वनिन्दक पर पुष्पों की वर्षा की, अत्यन्त मसृण गलीचे पर चलते हुए वे सिंहासन के पास पहुंचे। भगवान विष्णु ने स्वयं अर्घ्य दिए, पाद-प्रछालन किया। सुख ही सुख।

" 'विश्वनिन्दक जब चलने लगे तो भगवान् उन्हें पहुंचाने बैकुंठ द्वार तक आए। हाथ जोड़कर बोले—कहिए अतिथिदेव कोई त्रुटि तो नहीं रही। अच्छा लगा? विश्वनिन्दक बोले—अब क्या कहूं, एक त्रुटि थी। यहां सब इतना अच्छा था कि अच्छा नहीं लगा। सो हमारे विश्वनिन्दक फूफा कुछ न कुछ करेंगे। शिबू भाई साहब मेरे बड़े भइया संजय की शादी में गए थे ये सज्जन। ऐसा प्रबन्ध था चौचक कि कहीं से मीन-मेख की गुंजायश नहीं थी। दूसरे दिन जनवासे में दोपहर की कच्ची रसोई के लिए चावल-दाल वगैरह यानी सिद्धा-पानी बंट गए। लोगों ने एक ही जगह छह-छह आदमी की सूची देकर चावल, आटा, दाल, आलू, घी, अचार सब प्राप्त किया। रसोई बनाने के लिए उपले और मिट्टी के बरतन भी मिले। मेरे विश्वनिन्दक फूफा ऐसा सुन्दर प्रबन्ध देखकर बड़े दुखी हुए। उन्हें लगा कि घरातियों ने इतना बढ़िया प्रबन्ध करके उनके यश को ठेस पहुंचाई है। बस उन्होंने कुछ सोचा और डण्डा लेकर मिट्टी के बरतनों को तोड़ दिया और घरातियों के यहां नाऊ भेजकर कहला दिया कि जब तक दूसरे लैंवढ़ (बर्तन) नहीं आते लड़का खिचड़ी खाने नहीं जा सकता।'

" 'फिर क्या हुआ?'

" 'कुछ नहीं कर सका। घरातियों ने कहा कि ब्राह्मणों के लिए नए लैंवढ़ भेज रहे हैं और बाकी के लिए हम खुद खाना बनवा रहे हैं। सो शिबू भाई साहब एक और काम करना होगा आपको।'

" 'वह कौन-सा काम है।'

" 'यह आदमी यहां कुल अडतालीस घंटे रहेगा। अत: अडतालीस घंटे बेहोश रखने के लिए पांच बोतल ह्विस्की और आधा किलो तला हुआ काजू जरूर चाहिए उसको और उसके दो चमचों को शान्त रखने के वास्ते।'

" 'ठीक है भाई पांच सौ रुपए का और इन्तजाम करूंगा।' मैंने कहा और सुशील चला गया।"

"लेकिन तुमने तो कोई इन्तजाम किया ही नहीं। मैं साथ-साथ था। पांच बोतल ह्विस्की और आधा किलो काजू था ही नहीं तुम्हारे साथ। मैं बड़ी

उत्सुकता से देख रहा था—और जहां तक मुझे याद है उसका फूफा गुस्सैल जरूर था। पर कोई हरकत नहीं की। जनवासे में इसकी चर्चा भी नहीं चली। नरैन ने बल्कि बरात की विदाई पर तुम्हें शाबाशी दी। फिर···।"

"प्रेमू बेटे, अभी तू बच्चा है। तू नरैन की दालान में पुवाल के गद्दे पर लेटे-लेटे खड़ी दोपहरी में खर्राटे भरकर सोया था। तुझे क्या मालूम। उसका फूफा आदमी नहीं नेता था।"

मैं ठठाकर हंसा—"वाह रे शिबू उस्ताद तुम्हारी भाषा का जवाब नहीं। जो आदमी नहीं होता वह नेता होता है। वाह यार···क्या किया उसने। बक जाओ जल्दी, कहानी चरम बिन्दु पर है—बोलो।"

"इस कहानी का चरम बिन्दु कभी आया ही नहीं। यह औरत की त्रासदी है! जानेमन इसमें हमेशा पारा चरम बिन्दु छूता रहता है। उस भुचेंगड़े (काली चिड़िया) ने मेरे बाप से कहा—'कहिए देवेन्दर ठाकुर। सिकन्दर कहां है?'

" 'किसे पूछ रहे हो ठाकुर।' मेरे बाप ने हाथ जोड़कर पूछा।

" 'अरे आपके शाहबजादे शिवेन्दर कहां हैं, जिसकी बहिन अन्दर उसका भाई सिकन्दर। हम बड़े खतरनाक आदमी हैं देवेन्दर ठाकुर। हमारी मांगें पूरी नहीं होंगी तो हम आपकी व्याही लड़की को यहीं छोड़कर बारात लौटा ले जाएंगे।'

"बाबू कांपने लगे—'का फरमाइश है सरकार।'

" 'आपको कहा गया था न कि मुझे शराब और खस्सी न मिले तो मैं अंधा हो जाता हूं। कहां है शराब की बोतलें, कहां है और खस्सी···फटाफट बोलिए।'

" 'शराब ओफ् भूल गया था। ठाकुर, भिजवा रहा हूं।'

"बाबूजी ने यह सब मुझसे कहा। मैं चक्कर में पड़ गया। मुझे इस तरह चिन्तित देखकर वे बोले—'सर पकड़ के काहे बैठत हो। ऊहैं सामने ह्विस्की और शराब के पांच बोतल। खस्सी की बात तो सुशील लिखे ही नहीं।' सुशील ने बाबूजी को पत्र लिखा था यह सुनकर मेरा क्रोध आसमान छूने लगा। मैं गुस्से में कांपता जनवासे की ओर चला कि बाबूजी ने पकड़ लिया—'सिवेन्दर, ई सब ठकुराई कहात हो। ई सब इज्जत के निशानी हौ। ऊ खस्सी के बात लिख देते तो हम उहौ करते। जइसे मुर्दा की छाती पर पांच मन वैसे ही सात मन। दो सौ के खस्सियों के लिए भी परबन्ध करते।'

" 'ई सब परबन्ध हुआ कहां से?'

" 'बहिन के विदाई कराय के पूछिहा, अबहीं इहां सांस लेवै के जरूरत ना हौ। ले जा ऊ सब बोतल, आ काजू, आ विनती कइके समझाया कि खस्सी का परबन्ध नाही हो सका सरकार। काजू से काम चलाय लो। नाही तू बइठो तोसे ना होई। नवा खून हौ न। ई सब हम जानत हैं।' "

"तो इसके लिए पैसा कहां से आया?" मैंने पूछा और ठहाका लगाकर हंस

पड़ा—"धामड़ हो यार। अभी तो सोबरन रायने पांच सौ का एक हजार वसूला ही है। ई जात भी स्साली इतनी नीच हो गई है प्रेमू—कभी-कभी कै जैसी चीज घुमड़ने लगती है गले में। कफन खसोटी ही ठकुराई बन गई है स्साली। इस जात में राम, कृष्ण कभी नहीं जनमे होंगे। ई सब झूठ है। ठीक कहता है स्मिथ कि राजपूत साले नीच भर और गोंड़ नहीं तो उनसे भी गए गुजरे शकों और हूणों की संतानें हैं। यही प्रत्यक्ष सत्य है।"

"सच बात है दोस्त। ऐसी करनी, भर, गोंड़, नहीं तो क्या बाभन करेंगे?" मैंने कहा।

"बन्धु गलत यह है कि तुम भर, गोंड़ का दर्जा घटाने का अपराध कर रहे हो? भर और गोड़ आदमी होते हैं राजपूत नहीं। रिसर्चर इसे गांठ में बांध लो।" वह बोला।

शिबू ठठाकर हंसा। उसकी आवाज में मतवाले हाथी के पैर में बंधे मोटे सीकड़ की झनझनाहट थी, जिसे मैं सह नहीं सकता था। मौन हो गए हम।

"बात की दिशा मत बदलो, शिबू, मैंने रुपवा की कहानी पूछी थी, सरस्वती की नहीं।" मैंने कहा।

"तुम पूर्वांचल की नारी की स्थिति पर रिसर्च कर ही नहीं सकते प्रेमू। तुम भूल जाते हो कि नारी की दीनता, उसकी नियति, उसकी ट्रेजेडी एक जैसी है। सरस्वती और रुपवा में जात के आधार पर अन्तर करोगे तो उस विराट् अंधकार को देख भी नहीं पाओगे। जो ब्राह्मण घरों की वृद्धा से लेकर शूद्रों की बहन बेटी तक, बेटी-बहू से लेकर दाई और चेटी तक सबको अपने दमघोट तमस में खींच चुका है। यह बहुत बड़ा मगर है। मुझे नहीं लगता है कि किताबी आंकड़े बक देने से गजेन्द्र-मोक्ष मिल जाएगा। इस नक्र के जबड़े के विकराल दांतों के शिकंजे में कोई एक-दो औरतें नहीं कसी हैं, पूरा नारी अस्तित्व ग्राह-ग्रसित है। कोई भी विनती सुनने वाला नहीं है। गजेन्द्र मोक्ष के लिए जो बहुरूपिया दौड़ा था, जिसकी भक्ति के लिए यह यातना का सच और छुटकारे का उपाय बताया गया, वह खुद इतना खोखला और रिक्त और अबूझ होता गया कि आज वह नारी को बचाने के लिए दौड़ना तो दूर एक इंच भर हिलने की ताकत नहीं रखता। असल में वह कुछ होता तब न। कुछ करने चलता। जो नहीं है, वह द्रोपदी के चीर-हरण को रोकने आएगा कहां से। उसे अब औरत की कामेदी नहीं त्रासदी में मजा आता है।"

मैं एक क्षण चुप होकर शिबू के चेहरे की ओर देखता रहा। "आगे बढ़ो।"

"सरसू के विवाह के बाद उसी साल जेठ में राजी का ब्याह ठीक हुआ। मुझे

नरैन ने लिखा कि लड़का बहुत बड़े पैसे वाले बाप का बेटा है। उन लोगों का भैंसों का खटाला है गोरे-गांव बम्बई में। लड़का काफी पढ़ा-लिखा है। अगर जरूरत हुई तो वह कभी भी नौकरी पा जाएगा। आप तो महाराष्ट्र सरकार के मंत्री हरि प्रसाद मिश्र को जानते ही हैं। वह लड़का उनका दाहिना हाथ माना जाता है।

"मैं मिश्र जी को जानता था। हालांकि मंत्री, सचिव, जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक जैसे लोगों को जानने का मतलब होता है बेवकूफी। ठीक है कि मैं कुल तीस-बत्तीस वर्ष का युवक हूं। मेरा जान-पहचान का घेरा बहुत बड़ा नहीं है, पर जितना है, उसकी सच्चाई जानता हूं। मेरी पहुंच उन तक बहुत कम है, पर मेरे आदमी उनके चोर दरवाजों से सब कुछ हालात बताते हैं। तुम जान ही गए होगे कि मेरे आदमी का मतलब है सर्वेन्ट, चपरासी, दाई, आया यानी हम भुक्खड़ लोगों का परिवार बहुत बड़ा है और आवश्यकता पड़ने पर वह परिवार अपने विस्तार में मगरमच्छों को भी जकड़ लेता है और जब धीरे-धीरे हमारे लोग उसे समेटने लगते हैं तो बड़ी-से-बड़ी मछली हाथ-पैर पटकने के बावजूद बचकर नहीं निकल सकती। मैंने नरैन को साफ लिख दिया था—लड़का बम्बई में रहता है। बम्बई और बनारस में दूरी लम्बी है। खूब सोच-विचार कर, फूंक-फूंक कर जमीन पर पैर रखना। खुद अनुभवी हो। धोके की संभावना भांपने की अकल भी मिली है तुम्हें। शादी जरूर करो, यदि विश्वास जमे। जरूरत पड़े तो खबर करा देना। मैं हर जरूरी और मुश्किल काम, अपनी पूरी ताकत से करूंगा। शुभ। दो महीने बाद अचानक एक दिन नरैन बनारस आया। हमेशा मेरे डेरे पर ही ठहरता था। पर उस बार वह बगल वाले सीतापुर गांव के सरजू प्रसाद सिंह के यहां रुका। सरजू प्रसाद अपनी ही बिरादरी का था। पड़ोसी था। नरैन वहां रुका तो क्या हो गया। हो सकता है गहने-कपड़े वगैरह खरीदने आया होगा और शायद मैं जानता न होऊं सरजू प्रसाद कपड़े-लत्ते, गहने-गुरियों के मामलों में बहुत माहिर होगा।

"शाम को नरैन अकेले आया। बहुत गुस्से में था। बोला—'आप इस तरह के घुन्ना सांप हैं, यह कभी नहीं सोचता था। आपके इस डेरे पर आज यह कहने आया हूं कि राजी की शादी कटवाकर आपने जो विश्वासघात किया है, उसका बदला लूंगा। और आपको ऐसा पाठ पढ़ाऊंगा कि आप भी जिन्दगी भर याद रखेंगे ?'

" 'यह कौन-सा बचपना है नरैन, तुम अगर एक निर्दोष को बिन किए अपराध का दंड देना ही चाहते हो तो उसे भविष्य के लिए क्यों टाल रहे हो। मैं भी अकेले हूं। तुम भी। मैं दरवाजा बन्द कर लेता हूं।' मैंने बगल से बेंत की मोटी छड़ी उठाई और उसके हाथ में देते हुए कहा—'लो यह; अगर मैंने राजी की शादी कटवाई है, तो मेरे जैसे नीच आदमी को जीने का कोई हक नहीं है।' मैंने दरवाजा

उठंगा दिया और बनियान निकालकर उसकी तरफ पीठ करके बैठ गया। 'मैं अपनी मरी हुई मां की शपथ लेकर कहता हूं कि मैंने ऐसा नहीं किया, तुम मुझे पीटो। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं मर जाने तक अपने गले से उफ् भी नहीं कहूंगा।' पता नहीं क्या हुआ वह चुपचाप बैठा रहा। 'कितना तड़पाओगे चुप बैठकर। पीटते क्यों नहीं।'

" 'शिबू भइया, मेरी समझ में कुछ नहीं आता। पता नहीं किसने यह शादी तुड़वा दी। हम वरेच्छा भी दे आये हैं। सुना वह उसे लौटा देगा।' बोला—'तुम्हारी बहन की किसी आदमी के साथ आश्नाई चल रही है। अब राजी की शादी कभी नहीं हो सकती।' वह फूट-फूटकर रो पड़ा।

" 'चुप हो जा नरैन। मैं कोई जादूगर नहीं हूं। कोई ज्योतिषी और नजूमी भी नहीं हूं। मेरी इस तरह की दोस्ती भी नहीं है किसी से। फिर भी वादा करता हूं कि यह शादी होकर रहेगी। तुम शादी की तैयारी करो। किसी से कोई बात-चीत नहीं, किसी के पास बैठना-उठना नहीं। मैं कहां गया। क्या किया, इसे जानने की कोशिश भी नहीं करना। अब शान्त हो जाओ। गांव लौट जाओ। रुपये-पैसे की कोई तंगी तो नहीं है न?'

" 'नहीं।'

" 'तो ठीक है जाओ। तैयारी करो।"

"अब चुप क्यों हो गये शिबू दोस्त। बोलो यार तुम हर जगह वहीं गड़बड़ी करते हो, तुम कहानी की कला नहीं जानते। तुम वातावरण गढ़ लेते हो, पर चरित्र को एक ऊंचे बिन्दु पर पहुंचाकर···। यह भला कौन सी बुद्धिमानी है।" मैंने कहा

"ओफ, तो तुम्हें डॉ० शर्मा की कहानी कला वाली किताब पूरी तरह याद है। वाह भाई। तुमने जो कुछ बी० ए० में पढ़ा याद है, इसलिए तुम कहानी का चरम बिन्दु चाहते हो, तुम्हें सस्पेंस चाहिए। भाईजान मैं कहानीकार नहीं हूं। मैं ईमानदार गवाह हूं। मुझे फुर्सत नहीं कि अपनी देखी दुनिया को जो हमेशा मन को मथती रहती है, तरतीब हूं। यह हरारत चाहे कहानी हो या न हो, जनता के कटघरे में खड़ा होकर इसे सुनाना मेरा धर्म है। एक बड़े लेखक से उसकी स्टेनो बोली—आप अंग्रेजी के इतने बड़े लेखक हैं और आप व्याकरण की ऐसी भद्दी गलतियां करते हैं, यह सब आपको शोभा नहीं देता। जानते हो क्या कहा था उस लेखक ने। बोला—मैडम, मैंने प्राइमरी में जो व्याकरण पढ़ा था वह भूल गया। इसी से मैं प्रसिद्ध लेखक बना, आपने याद रखा है, इसी से आप स्टेनो हैं।"

हम दोनों ठठाकर हंस पड़े थे। क्या अजीब संयोग है। मैं मन ही मन सोच रहा था। आज सोबरन राय से झगड़ा न होता तो शायद मैं शिबू के असली आदमी

को देख भी नहीं पाता। कितना तूफान है भीतर। और ऊपर शान्ति। खिलखिलाहट।

"नाराज मत हो यार," वह बोला—"तूने इस बार चरम बिन्दु की बात नहीं की, लगता है, मजाक से खरोंच लग गई। मैं उसी हफ्ते शाम वाली ट्रेन से करमूपुरा पहुंचा, नौवतपुरा (कर्मनाशा) स्टेशन पर चुपचाप बैठा रहा। जब रात आधी बीत गई तो चुपके से गांव की ओर चला।

"मैं गलियों में घुसा तो कुत्ते झल्लाये। कुत्तों के बारे में मैंने गलत धारणा बना ली थी। मैं समझता था ये बेईमान मालिक की पहरेदारी के जोश में किसी बेगुनाह को भी सजा दे देते हैं कभी-कभी। पर उन्होंने मुझे सूंघा, शायद मेरे बदन से करमूपुरा की माटी की गंध मिल गई उन्हें, वे चुपचाप लौट गये। मैं सीधे सुलोचन दुसाध के दरवाजे पर पहुंचा। धीरे-धीरे कई बार सिकड़ी बजाई।

" 'कै हो।'

" 'दरवाजा खोल मैं हूं शिबू।'

"उसने झटके से दरवाजा खोला और मेरे पैरों में गिर पड़ी—'बड़ी देर कर दी। किस ट्रेन से आ रहे हो।'

" 'पहले दरवाजा बन्द कर।' मैंने कहा और निकसार वाले कमरे में बिछी उसी की चरपाई पर बैठ गया—'आया तो शाम वाली गाड़ी से ही। पर अंधेरे में आना चाहता था। इसीलिए नौवतपुरा बैठा रहा।'

" 'भूख लगी है न?'

" 'नहीं भूख तो नहीं, प्यास बहुत लगी है। कल से ही पानी नहीं लिया।'

" 'क्यों निर्जला अनशन चल रहा है क्या? गांधीवादी नेता के अनशन से तो राजी की समस्या सुलझेगी नहीं। जब तुम सोनवां को बचा नहीं पाए तो राजी क्या बचेगी।' वह चुपचाप आंगन में गई। थोड़ी देर बाद लौटी—'गुड़ की इस भेली के अलावा खाने को कुछ नहीं है।'

" 'हूं, तो अनशन गांधीवादी नेता नहीं कामरेडवादी रूपा जी कर रही हैं। कहिए काली माता, अब आप बहुत अनशन कर चुकीं। लोग कहते हैं कि दुर्गा के हाथ में राक्षसों के रक्त-मज्जा से रंगी खड्ग होती है जो खूब उजली होती है। और खूब चमकती भी है। उठाइए देवी माता। वह तलवार उठाये बिना भक्तों की रक्षा कैसे होगी।'

" 'सुनिये शिबू बाबू। मैं सोनवां नहीं हूं। हम इस तरह की बेवकूफी से खुश होकर आपके नाटक में शामिल होना नहीं चाहते। कामरेड हरीश कहते हैं कि सोबरन राय को गन्दे पनाले में ऊभ चूभ करते हुए देखने में मजा आयेगा। पर मैंने हरीश से कह दिया कि ठाकुर चाहे सोबरन राय हों, नरैन जी हों, और चाहे…।'

" 'शिबू हों, हम उन लोगों की आपसी लड़ाई में भागीदार क्यों बनें? यही न? यही है न निर्णय प्रगतिशील कामरेड्स का। मैं पहले से ही जानता था। जब आदमी डरता है तो बिना जाने कि मेरा शत्रु मरा या नहीं उसका प्रेत जरूर दिखने लगता है। सोबरन राय ने सोनवां को मार डाला, तब प्रगतिशीलों का निर्णय हुआ कि सोनवां रूमानी थी। फैशनपरस्त थी। उसे तो एक न एक दिन मरना ही था। आप लोग इसे 'सेल्फ कंट्राडिक्शन' कहते हैं, किन्तु न तो हरीश कामरेड जानते हैं न तो कामरेड रूपा कि इस अन्तर्विरोध में जीना हिन्दुस्तानी औरत की मजबूरी है। सोनवां रूमानी थी। चलिए मान लिया। आपको इससे तस्कीन मिली, धन्य भाग्य मेरे, पर राजी क्यों आत्महत्या की ओर ढकेली जा रही है?'

" 'हम जानते हैं कि राजी बेगुनाह है तो भी, हम सोबरन राय से अपने तरीके से निपटेंगे शिबू साहब। आपकी सहायता की दरकार नहीं है हमें?'

" 'आपको दरकार हो चाहे न हो आपने सोबरन राय से घूस लेकर राजी की शादी में बाधा डालने की चाल चली है, यह जानते हुए कि राजी निर्दोष है···।' मैंने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा।

" 'सब अपनी चाल चलते हैं। क्या आप चालें नहीं चलते।' रुपवा बोली, 'सरस्वती के विवाह में जो-जो पापड़ बेलने पड़े आपको, उसे आप खूब अच्छी तरह जानते हैं।'

" 'ठीक है पापड़ ही बेलिए। क्या कीमत चाहिए। राजी की शादी को सकुशल समाप्त कराने के लिए। आप क्या मदद करेंगी हमारी। यह तो सबको मालूम है कि राजी की ससुराल वालों की नाजायज मांग पूरी करनी पड़ेगी। सवाल है कि यह मांग मान लेने पर भी अगर लड़का सहयोग न करे तब?'

" 'यह सब सोचना तो आपका काम था। लड़के का चरित्र आपको जानना था। लड़का अगर ब्लैकमेल कर रहा है तो उसे समझाने के तरीके ढूंढ़ना भी शिबू साहब आपको करना था।'

" 'मैंने तुम्हें इतना नीच नहीं समझा था रूपा। लड़का शादी के पहले सोबरन का न्योता पाकर, उससे शह पाकर, उसके यहां मेहमान बनकर रहता था। इस बात को सोबरन ने अपनी औरत तक से नहीं बताया। यह बात सिर्फ एक आदमी जानता था यानी तुम्हारे पिता सुलोचन का छोटा भाई मंगरू। जाहिर है कि इस चीज को मंगरू जानता था और यह भी जानता था कि कहीं यह भेद खुला तो सोबरन राय की बन्दूक का पहला शिकार मंगरू बनेगा। मंगरू ने विश्वास करके, अपने ऊपर मंडराते खतरे को देखकर इस भेद को बताया क्योंकि उसे अपने प्राण प्यारे थे। मंगरू को इस गांव में इतना विश्वास किस पर था?'

" 'जाहिर है रूपा पर!' वह बहुत जोर से ठहाका लगाकर हंसी—'आपका भी कोई जवाब नहीं है जानेमन। मैं सोनवां की बहन हूं। इसलिए साली पर आधा

हक तो तुम्हारा है ही । करूं भी क्या बड़ी जादू से भरी आंखें हैं तुम्हारी जीजाजी । बोलो साली का आधा दाम चुका दो सिर्फ एक चुम्बन । आधे अधिकार पर दावा भी नहीं करोगे ।'

" 'आधा क्यों, पूरा कहो' दरवाजा खोलकर हरीश निकसार में आया—'नमस्कार शिबू भइया । आपको आए तो दो घण्टे हो गये । सोबरन राय को इस बार पूरी तरह नंगा कर देना है । हम जितनी देर कर रहे हैं, उस नाग को उतना ही दूध पिला रहे हैं । सुमंगल घटिया किस्म का छिछोरा लड़का नहीं है । उसका बाप बम्बई में भइया है । दूध का व्यापार करता है । भैंसों का खटाला चलाता है और उसका दिमाग बम्बई के चालू लोगों की करतूतों से इतना मुत्तासिर है कि वह दोनों चीजें चाहता है । सोबरन से लड़की को बदनाम करने के बदले दस हजार रुपये भी और लड़की को बदनाम करने के बाद बरेच्छा पर दिये गये चढ़ौवे को डकार जाना भी । हम अब क्या करें । मेरा काम बताइए । हम नरेन जी की हर तरह मदद करना चाहते हैं, पर करें क्या ? पिछले पन्द्रह दिन से हमने घात लगाकर एक सबूत तो इकट्ठा किया है ।'

" 'कैसा सबूत ?' मैं प्रसन्तता के मारे उछल पड़ा ।

" 'अपनी साली की चिरौरी करिये ।'

" 'देखो कामरेड' रूपा हंसी—'साली पर पूरा हक मान लोगे उसके पाहुन का तो पछताओगे । तुमने कभी अपने चेहरे से मेरे शिबू के चेहरे का मिलान किया है । हजार गुना पैनी आंखें हैं । ये आंखें सोनवां को बेंध गईं । वह घायल हुई और बची नहीं । मुझे इन आंखों से ढंके रहो कामरेड वरना सुलोचन का खून मुझे भी सोनवां की डगर पर चलने के लिए मजबूर कर देगा ।'

"सहसा मेरी आंखें आंसुओं से डबडबा आईं—'नहीं रूपा । वैसा वक्त आया तो मैं इन्हें विल्व मंगल की तरह सूये से बेध दूंगा ।'

" 'ई क्या हो जाता है शिबू भाई ।' हरीश बोला—'रूपा तो मजाक कर रही थी । आपने सोनवां, रुपवा, शोभू जैसे तथाकथित नीच दुसाधों के लिए अपनी इज्जत को, खानदानी प्रतिष्ठा को दांव पर लगा दिया । कुजात बन गए, पर कभी बेईमान नहीं बने । कभी वादाखिलाफी नहीं की । उसकी हर बेवकूफी से बिंधते रहे, पर उसे छोड़ा नहीं । यह क्या मामूली बात है शिबू भाई । जा रूपा, ले आ वह फोटो ।'

"रूपा ने एक फोटो लाकर दी । वह राजी के कंधे पर हाथ धरे एक युवक का चित्र था । मैं उसे देखता, कुछ सोचता रहा । सोबरन राय ने राजी और सुमंगल का परस्पर मिलना-जुलना किस उद्देश्य से कराया होगा ।

" 'क्या बात है शिबू भाई ?'

" 'मैंने निर्णय ले लिया है हरीश । तुम्हें यह करना है कि जिस तरह यह फोटो

अब तक गुप्त है, गुप्त रहने दो। किसके कैमरे से लिया गया है यह चित्र ?'

" 'मेरे कैमरे से शिबू भाई,' हरीश ने कहा, 'आप निश्चिन्त रहें। मैं ब्लैकमेल नहीं करूंगा। इतना नीच मत मानियेगा। क्या निर्णय लिया है वह बताएं।'

" 'पूरा तो अभी नहीं बताऊंगा हरीश। पर जैसे भी हो सुमंगल, उसके बाप तथा इस गांव के आठ-दस गण्यमान लोगों को यहां करमूपुरा में बटोरने का दायित्व मैं तुम्हें सौंप रहा हूं। मैं चार बजे उस बटोर में सीधे पहुंचूंगा। उस गांव के लोग तथा यहां के न्यायप्रिय लोगों यानी जहूर चाचा और यादव बाबा को भी बुलाना जरूरी है। बैठक प्राइमरी स्कूल पर होगी। यानी सोबरन राय की कोठी के ठीक बगल में। समझ गए ?'

" 'हां, आप जाइए।'

" 'यह फोटो मैं ले जा रहा हूं। मेरे आने की खबर किसी को भी नहीं लगनी चाहिए।'

"मैं गांव से निकल कर जब चला। अभी केवल उजास फूटा था, सूरज की मेंड़र अभी बनी नहीं थी। कुछ देर में इसी झुटपुटे उजास से लाल सिंदूरी सूरज निकलेगा। औरत की जिन्दगी में भी एक चीज है सूरज से जुड़ी यानी उसकी मांग का सिन्दूर। इस सिन्दूर की रक्षा के लिए औरत अपने प्राणों को दांव पर लगा देती है। समाज हर सुन्दर चीज पर नजर गड़ाता है। होना चाहिए। यह तो स्वभाव है। कौन रोक सकता है इसे। पर सबसे अधिक, सबसे वेशकीमत सुन्दर चीज होती है औरत। हजारों वर्षों का भारतीय इतिहास कहता है नारी रत्न है। उसे पाये बिना सारी उपलब्धि बेकार है। इस औरत को इतिहास ने बेशकीमत तो कह दिया, रत्न तो है वह, किन्तु इसी मान्यता ने उसे लूटने, चुराने, बहकाने, फंसाने, यानी किसी न किसी तिकड़म से उस पर कब्जा करने की ख्वाहिश को जन्म भी तो दिया। यह सही है कि जिस तरह ताले चोरों के लिए नहीं लगाये जाते, भले लोगों के लिए ही इनका उपयोग है। यानी धन देखकर यदि ईमान डिग जाए तो यह क्षण के लिए पुनः सोचने वास्ते ताला लगा रहता है। चोर भला कौन सा ताला है जिसे खोल न सकें। नारी का ताला ही तो उसकी मांग का सिन्दूर है। पर वह सिन्दूर ही खरीद-फरोख्त की चीज हो गयी। कौन रखता है लाज सिन्दूर की।

"मैं यही सब अंट-शंट सोचता चलता गया। सामने बटेसर था। शिवशंकर तिवारी के दरवाजे पहुंचा तो वे खटिया पर बैठे दातौन कर रहे थे।

" 'अरे वाह भइया शिवेन्दर जी, बड़ी देर भई···'

" 'गलत, यह पंक्ति शिवेन्द्र के लिए नहीं है चाचा जी' मैंने तिवारी जी के चरण छुए और बगल की चौकी पर बैठ गया। उन्होंने जल्दी-जल्दी दातौन की कूंची दांतों में रगड़कर उसे चीरकर जीभ छीलते हुए खंखार कर बोले—'अरे

भइया ई अनर्थ काहे कर रहे हो। तुम काठ की चौकी पर बैठोगे भाई। तब तो हम नरक में भी जगह नहीं पायेंगे।' उन्होंने अपने नौकर को बुलाया—'बइठके में से तोशक निकाल कर उस पलंगड़ी पर फैला दे। और जा दौड़ के, रामसुआरथ के यहां जलेबी निकल रही होगी टटकी। एकदम गरम गरम, ले आ जल्दी···।'

" 'अब कहो बेटा, क्यों हमारी बात गलत है। तुम जाने कितने महीने बाद आ रहे हो। फिर क्यों न उलहना दें—बस मैंने कहा—बड़ी देर भई। क्या गलत है इसमें ?'

" 'चाचा जी गलत यह है कि आप पिछले ही महीने चैत के नवरात्र में हमारे डेरे पर दर्शन दिये रहे···'

" 'अरे यार, डेरा तो डेरा ही होता है भाई। कहां घर-द्वार कहां डेरा।'

" 'वैसे आपने जो पंक्ति कही है न चाचा, वह बहुत उपयुक्त है। मेरे आने से और आपके श्रीमुख से इस पंक्ति के निकलने का बहुत पवित्र कोई कारण होगा। पिछले जाने कितने सौ वर्षों से बटेश्वर का तिवारी वंश पूरे क्षेत्र में सदा पूजित होता रहा है। आपके पिताश्री साहित्य के अद्‌भुत शास्त्री थे। पितामह ज्योतिष सम्राट थे। प्रपितामह ध्रुपद के सिद्ध गायक थे···उस महान वंश के आप उत्तराधिकारी हैं चाचा। मैं पिछले कई महीनों से सुन रहा हूं कि आप अपनी महान् वंश परम्परा के प्रतिकूल आचरण कर रहे हैं। अगर आप जैसे पवित्र ब्राह्मण चोरों और घृणित काम करने वालों की शरण बन जायेंगे तो सच कहता हूं चाचा कर्मनाशा फिर त्रिशंकु के लार में डूब जायेगी···।'

" 'अरे शिवेन्द्र बेटा, चुप, चुप ई कैसा सराप दे रहे हो हमें। कौन हरामी कहता है कि मैंने चोरों को शरण दिया। नाम बताओ शिवेन्द्र, तुरन्त बोलो। नीच लोगों ने शिवशंकर को भोला समझ लिया है क्या ? हम अवसर आने पर परशुराम भी बन सकते हैं, हां। कौन है साला हरामी···बोलो। शीघ्र बोलो।'

" 'तिवारी चाचा, आपको तो मालूम है ही कि मैं राजपूत नहीं हूं कुजात हूं, यानी हरिजन, दूसरे यह कि आपकी और मेरे चाचा सोबरनराय की दांत-काटी रोटी की मैत्री है। इसमें आप गुणदोष के आधार पर अगर सही निर्णय करने की हिम्मत रखते हों तभी बात करूं। वरना कुजात के कारण आपको भ्रष्टता मिलेगी और मित्र-द्रोही का स्वागत करने के कारण अपने जिगरी दोस्त सोबरन राय से अपमानित होना पड़ेगा।'

" 'कौन साला कहता है कि शिवेन्द्र कुजात है। कहीं आग भी छिपाए छिपती है। शिवेन्द्र के चेहरे पर लिखा है प्रताप। हां, लपट जो कैसे सबको जला देती है इसमें गिरकर विष्ठा भी भस्म हो जाती है। शिवेन्द्र में जात-कुजात कैसे अंटेगी भैया। लो आ गई जलेबी।'

"मेरी ओर दोना बढ़ाते हुए तिवारी जी बोले—'कुछ गड़बड़ झाला सोबरन

ने किया है क्या ?'

" 'नहीं तिवारी चाचा आप भी किसकी बात करते हैं। भगवान परशुराम ने याद दिलाया था चाचा कि देख ले हैह्य राक्षस मेरे बाण से घायल क्रौंच पर्वत कांप रहा है···हां चाचा। इस बार गड़बड़ झाला नहीं अंधेर हो रही है और यह सब तुम्हारे रहते होय रही है। सोच लो।'

" 'जलेबी तो खाओ पहले, फिर बताओ। जैसी भाषा तुम बोल रहे हो उससे तो लगता है मामला संगीन है।'

" 'बात यह है चाचा कि अपने गांव से सटे सीतापुर में एक ठाकुर हैं पुरुषोत्तम सिंह।'

" 'अरे, वह भैंस के खटाला वाला ?'

" 'हां, उसका लड़का है सुमंगल।'

" 'वह पतरा-छरहरा गोरा वाला।'

" 'हूं, उससे मेरे भाई नरैन की बहन राजी का लगन तै हुआ। बरेच्छा भी एक हजार एक रुपया दे आया नारायण। अब वह शादी की तैयारी कर चुका अब सब कुछ हो गया तो अचानक पुरुषोत्तम ने कहला दिया कि वह शादी नहीं करेगा। क्योंकि पता चला कि लड़की दुश्चरित्र है।'

" 'ऐं, अरे ऊ भइया स्साले पुरुषोतम की ऐसी हिम्मत। उसने सुभग ठाकुर के परिवार को गाली दी। साला यह तो सीधे गौ-हत्या है। मैं ससुर को नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारे पितामह ठाकुर सुभगसिंह हमारे पिता दीनबंधु शास्त्री को अपना भाई कहते थे। हमारे सुख-दुख में वे सगे भाई से भी अधिक सहायता कर गये हैं। हमारे दोनों परिवारों के रिश्ते से और कल्पू की वजह से हम चुपचाप लगा जाते हैं।'

" 'प्रण करो चाचा तो तुम्हें नीचता का एक ऐसा सबूत दिखाऊं कि तुम्हारी आत्मा भी कांप जायेगी।'

" 'कैसा सबूत।'

" 'सुनो चाचा तुम शकुन्तला बहन और मेरी राजी बहन में फरक मानते हो ?'

" 'ई क्या बक रहे हो शिवेन्द्र ! शकुन्तला तुम्हारे डेरे पर एक महीना रही। तुमने उसकी दवा-दारू कराई। मैं सरस्वती, राजी, शकुन्तला में फरक करता तो क्या उसे तुम्हारे डेरे पर अकेले छोड़कर चला आता ? तुम्हें क्या हो गया शिवेन्द्र ? तुम मुझे इतना नीच समझते हो ?'

" 'तो लो यह सबूत।'

"शिवशंकर तिवारी ने तुरन्त भांप लिया कि लड़का तो सुमंगल है और बगल की लड़की कौन है ? बोले—'लड़की कौन है शिवेन्द्र !'

" 'राजी है चाचा।'

" 'हे भगवान ई तो विश्वासघात है। राजी अपने भावी पति के बुलाने पर गई होगी वहां। शायद वह उसे देखना चाहता रहा हो। क्या रहस्य है इसमें ? शिवेन्द्र मैं पागल हो जाऊंगा। जल्दी बताओ।' तिवारी चाचा हिल उठे।

"यह आप अपने जिगरी दोस्त सोबरन राय से पूछिये चाचा कि पिछले महीने सुमंगल दस दिन तक उसकी कोठी में क्यों छिपा रहा। वह चोरी-चोरी राजी को मिलने के लिए क्यों बुलाता था। जब यह फोटो खिंच गया है चाचा तो आप खुद सोचिए यह मिलना-जुलना क्या गांव वालों से छिपा है। लड़की दुश्चरित्र नहीं थी, उसे दुश्चरित्र बनाने के षड्यंत्र का नतीजा है यह फोटो। अब बताइए आप। मैं तो अभी कुजात हुआ हूं, मुझे अब कतली और खूनी भी बनना पड़ेगा। अगर आप जैसे नपुंसक लोग लड़कियों पर होने वाले घिनौने अत्याचार को देखकर भी आंखें मूंदे रहेंगे तो मैं चुन-चुन कर करमू विकास क्षेत्र के हर ग्राम प्रधान और सरपंच को गोली मार दूंगा और अपराध स्वीकार करके पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दूंगा। मैं यह राक्षसीराज चलने नहीं दूंगा तिवारी चाचा। आप अगर चुप रहे इस बार तो पहले निशाना आप होंगे। मैं सारा कच्चा चिट्ठा लिखकर कल्क्टर को भेजकर ही कतल करूंगा। आठ कतल होगा। होगा। मैं उठकर चलने लगा तो शिवशंकर तिवारी ने दौड़कर मेरी कलाई पकड़ ली—

" 'मैं समझ गया, बेटे बड़ी देर भई नन्द लाला···। नहीं शिवेन्द्र मैं द्रोपदी का चीर-हरण नहीं होने दूंगा। मैं न तो द्रोण हूं न भीष्म पितामह। जो हूं तुम्हारे साथ रहूंगा। अब बताओ क्या करना है।'

"हमने बातें कीं। मैंने चलते हुए कहा जैसे भी हो पुरुषोतम और सुमंगल को लाना ही है।

तभी डेढ़ साल के बच्चे को गोद में लिए एक लड़की आई। वह गोड़, नाई की रही होगी। बोली—तिवारी बाबा कल्पू बो भौजी कह रही हैं कि करमूपुरा के शिवेन्दर जी आए हैं। उन्हें रोकिए। कल्पू भाई साहब अब आते ही होंगे। खाना बन गया है। शिबू भाई साहब को बिना खाए जाने मत दीजिए।

" 'अब बोलो शिबू' तिवारी जी हंसे---'हमारी बहू देवता है बेटा। अभी तुम तिवारी वंश की बात कर रहे थे न ! हम तो बड़े वंश के नालायक सदस्य हैं पर बाप-दादा के पुण्य से बहू जो मिली वह साक्षात् सीता है। वह तो बेटा हमारे वंश का दीपक बनकर आई है। उसकी बात टाल सकने की हिम्मत मुझमें तो नहीं है।'

" 'वैसी हिम्मत किसी में भी नहीं हैं। मैं कल्पू का लंगोटिया यार हूं। मिल गया होता तो मन में थोड़ी खुशी भी आ जाती। आप अपनी बहूरानी से कह दो चाचा कि आज हस्तिनापुर से बुलावा आ गया है। मैं रुक नहीं सकता। हां, इसके एवज में एक हफ्ते भर बटेसर में टिकूंगा और तब देखूंगा कि मेरी खातिर-बात कैसे

होती है ।'

" 'देख लीजियेगा ।' भीतर से आवाज आई—'वादा भूलिएगा मत ।'

" 'यह तो तिवारी चाचा, कल्पू का बच्चा सुनीत ही है न ?'

" 'हां भई, तुम्हें तो मेरी अगली पीढ़ी भी जानने लगी, देखो कैसे आंखें मुल-मुलाकर देख रहा है ।'

"मैंने पाकेट से बीस रुपया निकालकर बच्चे के हाथ में रखा । 'चाचा, सुनीत से पहली बार मिल रहा हूं। संकट में हूं न । खाली हाथ आ गया । ये एक तुच्छ उपहार है अपने बेटे को ।'

" 'ऐसा नहीं···' भीतर से आवाज आई ही थी कि मैं तेजी के साथ तिवारी चाचा के चबूतरे से कूदकर गली में आया । और लगभग भागते हुए गायब हो गया ।"

स्कूल के बरामदे में दरी पर आकर लोग बैठे । हरीश ने बताया कि जब वह गांव के बुजुर्ग सीताराम यादव को बुलाने गया तो यादव जी ने कहा—"ई सब करके का मिलेगा ? जहां शिवशंकर तिवारी आ सोबरन राय सट-सट के बैठेंगे वहां सच तो क्या मच्छर भी नहीं घुस पाएगा, हां, वाकिर जब तुम कह रहे हो तो चलो ।" इसी तरह के आठ लोग और थे । दो हरिजन, चार राजपूत, दो मुसलमान सब आकर बैठ गये । हरीश सबकी अगवानी कर रहा था । तभी सीतापुर के पुरुषोतम सिंह, सुमंगल, उसके चाचा सुमेर सिंह आकर बैठ गए । पुरुषोतम सिंह ने छींट का साफा बांध रखा था । गले में काले गंडे में नर्दली लटक रही थी । उन्होंने इधर-उधर देखा और मूंछ ऐंठते हुए बोले—"कहिए तिवारी जी महाराज, का हुकुम है ? हमें बुलाने की जरूरत क्यों आन पड़ी ।"

"जरूरत होगी भैया तभी तो हाथ जोरिके बुलाया होगा ।" सीताराम यादव ने कहा । उनकी उजली मूंछों में ढंके ओंठों में सफेद दांत झिलमिला रहे थे । एकदम मासूम बच्चे की तरह बोले—"बिना चांड़ के केहू गदहो के पास नाहीं जात हो पुरुषोतम ठाकुर ।"

"तू है कौन ? काला भुचेंगड़ा । बड़ा ऐंठके बोल रहा है । अपनी हैसियत देख कर बोला कर बुड्ढे ।"

"हैसियत देख के ही तो भइया बोलत हैं । तुम्हारे खटाले में जितनी भैंसे हैं उसकी चार गुनी हमरी बिरादरी में हैं । तू भइया हो खटाले वाले, हम हैं अहीर बल्टा वाले । लोकदल को लोग बल्टा पार्टीए कहते हैं हो ठाकुर । हमरी हैसियत इतनी तो है ही ठाकुर कि तोहरे सीतापुर को एक घंटे में एह तरह घिरवाय सकत हैं कि कुतिया साली भी भीतर से बाहर नाहीं जाइ सकत । समझे ।"

"क्यों तिवारी जी, आपने हमारी बेइज्जती करने को बुलवाया है ?"

तभी जीप का शोर सुनाई पड़ा। जीप स्कूल के सामने आकर रुकी। चार रायफलधारी पुलिस कांस्टेबल बरामदे में चारों कोनों पर खड़े हो गए। हरीश दौड़ा मेरे पास आया। बोला—"सब ठीक है। चलिए।"

"आइए मैडम······।"

"हुंह, क्यों हरीश जी जहां मैं पहुंचती हूं वहीं आप पहले से ही विराजमान रहते हैं। यह इत्तफाक है कि सुनियोजित तरीका ?"

"मैडम, जब से आप इस एरिया की निगरानी करने लगी हैं हरीश को लोगों ने पूछना भी बन्द कर दिया है। क्या करूं भूखे पेट सोता रहता हूं।"

"मुझे बहुत अफसोस है हरीश, कहो तो तुम्हारे लिए खाना मंगवा दूं। हुंह।"

"हां शुक्ला।"

"हुजूर।" थानेदार बोला।

"कितने रायफलधारी हैं तुम्हारे साथ ?"

"कुल चार ही हैं मैडम।"

"चार हैं और तुम डरपोक की तरह कहते हो चार ही हैं। तुम प्रतिभा बंसल को नहीं जानते सब-इंसपेक्टर शुक्ला। प्रतिभा बंसल संकट आ जाये तो तूफान को भी रोक सकती है। चारों सिपाहियों को बरामदे के चारों कोनों में खड़ा कर दो। टैप रेकर्डर में नया कैसट लगाओ।"

"यस मैडम !"

"करमूपुरा क्षेत्र के आप तमाम लोगों को मैं नमस्कार करती हूं। मैं देख रही हूं कि यहां सभी बुजुर्ग लोग हैं। आपके सामने मैं आपकी बेटी की तरह आई हूं। लेकिन एक बात से आपको आगाह कर दूं। झूठ बोलने वाले, बेईमानों के लिए मैं बेटी नहीं रणचंडी बन सकती हूं। अब बताइए। पुरुषोतम सिंह कौन साहब हैं ?"

"मैं हूं," पुरुषोतम सिंह अपना साफा जमाते हुए उठा—"मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं, हुजूर कि हम बाप-बेटे को यहां क्यों बुलाया गया ? करमूपुरा के अन्दरूनी मामलों से मेरा क्या संबंध ?"

"अन्दरूनी मामलों में जब दखल दिया जाता है पुरुषोतम सिंह तो सूचना पाते ही पुलिस चल देती है। यह सिर्फ चांस है कि तुम करमूपुरा में मिल गये। नहीं मिलते तो मैं तुम्हारे गांव में ही यानी सांप के बिल में पकड़ती।"

"लेकिन आप मुझे सांप क्यों कह रही हैं। शिष्टाचार भी नहीं आता आपको। मुझे तुम-तुम बक रही हो। मैं इस इलाके का एक इज्जतदार आदमी हूं। मैंने भी दुनिया देखी है बंसल साहिबा, मैं देहाती भुच्चड़ नहीं हूं। बम्बई में मैं तीस साल से रहता हूं। मैं नगर ही नहीं महानगर का आदमी हूं। मुझे पुलिस-पुलिस कहकर डरवाने की कोशिश मत करो। जो पूछना हो साफ पूछो। बदतमीजी छोड़कर,

समझीं।"

प्रतिभा बंसल मुस्कुराती हुई हथेली पर रूल ठोकती पुरुषोतम के पास पहुंची, "मैं बदतमीजी कर रही हूं पुरुषोतम सिंह ?" उसने कब पैर उठाया किसी ने नहीं देखा। उसका बूट पुरुषोतम के जबड़े पर तड़ाक् से लगा और वह गिर पड़ा—"शुक्ला !"

"हुजूर !"

"एक रायफल वाले से कहो, कि इसके पीछे खड़ा हो जाये। उठो पुरुषोतम सिंह, तुम इज्जतदार हो, महानगर में रहते हो, तुम गंवार भुच्चड़ नहीं हो, पर लगता है एक चरित्रहीन बेटे के बाप जरूर हो ?"

"आप मुझे···इस तरह जलील कर रही हैं ?"

"जलील और बेगैरत आदमी को और कुछ करने या कहने की जरूरत नहीं है। तुम्हारा लड़का सुमंगल सोबरन राय के घर में पिछले महीने की शुरूआत में पन्द्रह दिन तक यहां क्यों रहा ?"

"यह हमारा अन्दरूनी मामला है, मैं कुछ नहीं कहूंगा।"

"अन्दरूनी तब तक रहता जब तक तुम्हारा लड़का यहां किसी परिवार के लोगों से मिलता-जुलता नहीं। तुमने एक प्रतिष्ठित परिवार को बदनाम किया है। एक मासूम लड़की पर बे-बुनियाद आरोप किया है कि वह चरित्रहीन है। वह चरित्रहीन क्यों है ? कौन-सा सबूत है तुम्हारे पास। तुम समझते हो पुरुषोतम सिंह कि औरत एक कठपुतली होती है। तुम जब चाहो उसे नेक कह सकते हो जब चाहो पैसे के लालच में उसे चरित्रहीन कह सकते हो। लेकिन समझ लो, खूब समझ लो, प्रतिभा बंसल औरत के सही हक को दिलाने के लिए ही पुलिस में आई है। इसलिए जो कुछ भी कहना हो शरीफ की तरह कहो, वरना मैं बहुत बुरी औरत हूं···याद रखो। बोलो तुम्हारा लड़का सोबरन राय के यहां क्यों रहा ?"

"सोबरन राय हमारे दोस्त हैं। हमारा घरेलू संबंध है। इन्होंने इसरार किया कि भाई सुमंगल को कुछ दिन के लिए यहां भेजो। उसका जी बहल जायेगा···मैंने भेज दिया। अब क्या किसी मित्र-दोस्त के यहां आना-जाना भी गैर-कानूनी हो गया है बंसल साहिबा।"

"ई झूठ है हुजूर," सोबरन राय खड़े हो गए—"ये खुदै भेजे थे। हमें का पड़ी कि इनके लड़का को न्यौता पठावैं।"

"अब आप यह भी कह दीजिए कि इसकी एवज में मुझे आपने दस हजार रुपया भी नहीं दिया, पूछिए बंसल साहिबा, दिये कि नहीं···" पुरुषोतम बोला।

"हूं", प्रतिभा बंसल खिलखिलाकर हंसी—"बड़े कच्चे खिलाड़ी हो पुरुषोतम। सोबरन तुम तो एक खून चूसने वाली जोंक की तरह पिलपिले आदमी लगते हो। तुम दोनों ने दोस्ती निभाई। अपना-अपना मकसद रहा होगा। मैं वह

नहीं जानना चाहती। उठो सुमंगल ! याद रखो कि अभी तुम उभरते हुए जवान हो। तुम्हारे बयान में सिर्फ सचाई ही नहीं यह बोध भी होना चाहिए कि तिकड़म करने के अपराध में तुम जेल भी जा सकते हो। बोलो ! तुम इस गांव के प्रतिष्ठित नागरिक नारायन सिंह की बहन से क्यों मिले ! बोलो, यदि वह बदनाम औरत थी तो तुमने उसे बुलवाया क्यों ? उससे एकान्त में मिले क्यों ?"

"यह झूठ है ! बंसल साहिबा ! हम जिसे जानते हैं कि चरित्रहीन है, उससे मिलने सुमंगल नहीं गया। कौन है जो कहता है कि सुमंगल राजी से मिला। या उसने उसको बुलवाया ?"

"एक तो मैं हूं ठाकुर !" रुपवा बोली—"पूछो अपने बेटे से कि उसने मुझसे आरजू-मिन्नत नहीं करी ? कहने लगा रूपा जी, सिर्फ उसे दो मिनट के लिए दिखला दीजिए।"

"क्यों बे !" पुरुषोतम बोला, "तूने इस छिनार औरत से राजी को बुलवाया। ओह समझ गया यह सब सोबरन की करतूत है। बदनाम को और बदनाम कराने की क्या जरूरत थी। सोबरन भाई आप यह चाहते थे कि राजी और सुमंगल की शादी हुए बिना दोनों के मिलने-जुलने का तमाशा दिखाकर और पक्का कर दें कि सिर्फ चरित्रहीन नहीं दो कौड़ी की औरत है वह।"

"तभी, मैं दूरी से झटके के साथ उठा और जब तक कोई रोके मैंने अपने मुंड से पुरुषोतम के सीने पर इतनी जोर से टक्कर मारी कि वह भहराकर गिर पड़ा। मैं पागल हो गया था प्रेमू।" मैंने कहा "उठ स्साले, उठ हरामी, मेरी बहन चरित्रहीन है, वह दो कौड़ी की औरत है। तेरी मजाल स्साले कि मेरे परिवार को खुले चौराहे पर नंगा करने चला है।" मैंने उसके सिर पर अपने जूते से ऐसी ठोकर मारी की उसका चेहरा खून से रंग गया। "उठ बे महानगरी बोध वाले, आज तुम्हें एक ऐसे नगर का बोध करा दें जहां सिर्फ नाबदान के पिलुवे भरे हैं—वह नगर है तेरा मन और दिमाग। ले यह···"

एक बूट के लगते ही पुरुषोतम उठकर खड़ा हो गया—"आप बंसल साहिबा, लाख कोशिश करिये। हम ताश के पत्ते नहीं हैं। हुकुम के गुलाम नहीं हैं। हम रघुवंशी हैं। काल से भी नहीं डरते। मैंने कहा है कि लड़की चरित्रहीन है, आप उसके साथ मेरे बेटे को बेइज्जत करने की कोशिश मत करें वरना पछतायेंगी।"

"बन्द करो बकवास, बोलो सुमंगल तुमने राजी को बुलवाया या नहीं। तुम उससे मिले या नहीं ? बोलो···" बंसल ने पूछा—"बोलो······बताओ सच — सच।"

"मैंने हुजूर उसे बुलवाया। राजी से मैं प्रेम करता हूं, वह बहुत सुशील और गंभीर लड़की है। मैंने उसे धोका दिया। मिला था एक बार सिर्फ यही कहने के लिए कि मैं राजी से मुहब्बत करता हूं। राजी मेरी है। यह गलती है तो इसका

जिम्मेदार मेरा बाप है। इसे दंड मुझे देना चाहिए था किन्तु यह नीच बाप नहीं नरभक्षी तेंदुआ है जो किसी खानदान की इज्जत बेचकर ऐंठ रहा है। उसे शर्म आनी चाहिए थी। और वह कलंकी आदमी अपनी होने वाली बहू को आज चरित्र-हीन कह रहा है। हुजूर, मैं और राजी आपके सामने, सबके सामने विवाह करना चाहते हैं।"

"अब बोलो पुरुषोतम" बड़ी जोर से ताली पीट कर बंसल हंसी—"ठाकुर हो पुरुषोतम, जरा अपने गंदे कुरते के नीचे झांक कर देखो। राजी से किसी भी पुरुष का वास्ता क्या? तुम औरत को बेइज्जत कर सकते हो, क्यों? जानते हो क्यों? इसलिए कि औरत की शरम का बड़ा मोल होता है। यही सिखाते रहते हैं सभी! बाप, भाई, यहां तक कि बेटे और बेटियां भी। औरत को 'शरम कर' का उपदेश देते हैं सभी। मान लो पुरुषोतम, राजी राजा होती और तुम्हारा मुमंगल सुमंगली होता, तब तुम क्या करते? तुम्हारी बेटी की इज्जत ऐसे ही नीलाम होती तो क्या करते। जंगली भैंसे जैसे सिर में खालिस गोबर भरा है। तुम उसी का सहारा लेकर मुझे डरवाने की कोशिश कर रहे हो।"

"क्षमा कर दें हुजूर! मैं, आपके पांव पड़ता हूं। बेइज्जती राजी की नहीं मेरी हुई है सरकार!" सुमंगल बोला।

"ई सब तो ठीक है सुमंगल, शादी करे चाहत हो, अच्छी बात है, पर भइया जिसका चीर-हरण भया, उस परिवार से बिना माफी मांगे, गोड़ पर गिरे ऊ लड़की का मुंह लेकर जायेगी तोहरे पास। कहौ तिवारी जी कलेजा में बर्छी मारकर लीपा-पोती से काम ना बनत? झूठ कहत हैं? तिवारी बाबा?"

"अरे नाही सरदार—तोहार बात अनमोल हौ, भइया, सोलह आना सच है।" शिवशंकर तिवारी ने कहा।

"सुन ले सार सुमंगला, तुझे ये लोग फंसाय रहे हैं। तुम मिले भी हो दो मिनट के वास्ते तो नकार दे शादी। हमारी आबरू बेच के स्साला तू शादी करेगा तो रहेगा कहां, रोटी-दाल कौनो देगा। इनके पास कोनी सबूत है का? कह दे नहीं करते।" पुरुषोत्तम बोला।

"सबूत तो नहीं है बाबू, पर मैं मिला था उससे···।"

"क्या हुआ, बोल दे···हम यह शादी नहीं करेंगे।"

"देखा भइया तिवारी जी आप लोगन ने। ई मादर···पुरुषोत्तम ठाकुर अपने को लाट गवर्नर जानत हैं···कह अ लड़के कि तू हमरी राजी बिटिया को चरित्तर हीन मानता है। कर दे शादी से इनकार। पहली बार अइसी पंचाइत देखत हैं हम। हम तोहरे खानदान के कपार मुंड़वाय के गदहा पर चढ़ाइ के पूरा छेत्तर न घुम-वाय दूं तो असल यादव नहीं। बोल···।"

"ई का बोलेगा यादव जी, बहुत बहक कर बात कर रहे हो, हम फिर कहते

हैं कि हैसियत समझ लो। पुलिस सब कुछ नहीं होती। पुलिस के ऊपर भी डी० आई० जी०, आई० जी० होते हैं। उनके ऊपर भी गृह सचिव हैं, और उनके ऊपर मंत्री हैं, मुख्यमंत्री हैं, गवर्नर हैं, राज्यपाल हैं। वहां से भी ऊपर केन्द्रीय मंत्री हैं, प्रधान मंत्री हैं, मैं बंसल साहिबा को बता कर रहूंगा यादव साले कि ठाकुर का मतलब क्या होता है।"

"शुक्ला ?"

"हुजूर, यह पुरुषोत्तम बंसल को बताए इसके पहले मैं बता देती हूं इसे। हटाओ रायफल वाले को। मैं इसे बताऊंगी आज कि औरत क्या होती है···।"

"हुजूर!" शुक्ला बोला—"हम खुद काफी हैं, इस कमीने के लिए।"

"नहीं मर्द मर्द के लिए काफी नहीं होता क्योंकि तब दुश्मन को लगता है कि लड़ाई बराबरी की थी। औरत जब भारी पड़ने लगे, तभी रास्ता खुलेगा।" बंसल इस तरह कूदी, प्रेमू को लगा हाई जम्प कर रही है। तभी उसके दोनों तलवे पुरुषोत्तम की छाती पर चौचक बैठे। इतनी जोर से आवाज हुई कि धमाके के साथ पुरुषोत्तम लुढ़क गया। बंसल ने उसके जबड़े पर इस कदर मुट्ठी मारी की उसका जबड़ा हुलस गया। टूटा दांत खून के साथ थूकते हुए पुरुषोत्तम उठा—"तो तू उतर आई नंगई पर।" वह क्रोधी सांड़ की तरह दौड़ा हुर्र करते हुए, बंसल अपनी जगह से छिटक गई। वह भहरा कर गिर पड़ा। दुगुने गुस्से के साथ उठा तभी—एक अजीब घटना हुई प्रेमू···।

"क्या घटना ?"

"यार, बंसल साढ़े छह फीट वाले पुरुषोत्तम से कम से कम पांच इंच छोटी थी। पता नहीं कैसे उसने पैर को इस तरह झटका दिया कि बूट पुरुषोत्तम की नाक पर लगा और वह हाय-हाय करता गिर पड़ा। मेरी समझ में यह नहीं आता कि बहुत छरहरी औरत हो तो भी एक पैर जमीन पर और दूसरा पैर छः फीट से ऊपर उठकर नाक पर सीधे लगे—कैसे हो सकता है यह···?"

"अरे यार इसीलिए तो कहता हूं कभी-कभी शिवाजी हाल में जिमपनास्टिक भी देखा करो। तुमने रूसी सर्कस तो देखे होंगे? यह करिश्मा नहीं है। प्यारे कमांडो प्रशिक्षण है। हैरत में डाल देने वाला यह करिश्मा औरतें ज्यादा अच्छा करती हैं क्योंकि उनके जिस्म की लोच के कारण पैर अपने सिर की ऊंचाई तक तो उठ सकता ही है। उसके ऊपर उठना मुश्किल होता है। चूंकि बंसल लगभग छह फीट की थी, इसलिए उसके बूट की ठोकर पुरुषोत्तम की नाक पर लगी अगर वह साढ़े छह फीट की होती तो पुरुषोत्तम की आंख फूट सकती थी अथवा ललाट में गुमटे निकल सकते थे।"

"खैर सुनो पुरुषोत्तम तो भैंसा है, दुबारा उठा। जोर से घूसा बंसल के चेहरे पर मारा, बंसल झटके से झुकी और मुट्ठी उसके गाल पर लगी तभी बंसल झुकी

और उसकी मुट्ठी पुरुषोत्तम के पेट में धंस गई। वह दुहरा होकर गिर पड़ा। 'औरत चरित्रहीन होती है।' बूट की हर ठोकर पर वह यही कहती रही— 'औरत चरित्रहीन होती है—औरत चरित्रहीन होती है···' वह जैसे पागल हो गई थी। हर औरत नंगइ करती है। हर औरत···तड़ाक् तड़ाक् के साथ वह पीटती रही जब वह थक गई तो बोली—"शुक्ला इस हरामी के हाथ में हथकड़ी पहना दो।" वह दरी पर बैठ गई। तमाम लोग आंखें नीची किये बैठे थे। "मजबूरी का नाम है अहिंसा···कीचड़ में धंसी औरत का नाम है गाय···" वह थकी सांस के साथ कहती रही, पता नहीं कौन सा विन्दु था···जहां उसकी आंखें टिकी थीं—लगता था वह पुरुषोत्तम को नहीं तमाम जालिम, नीच, धोकेबाज मर्दों को कह रही थी। पता नहीं किसी परिचित घटना की याद आ गई हो उसे···।

"बेटी !" जहूर चाचा बोले—"बेटी, तू हमें गुनहगार क्यों बना रही है। ले आ रोशन अपनी आपा को पानी पिला।"

"आपा, दीदी" बंसल ने उसकी ओर देखा—"लो यह पानी पी लो आपा। मुंह धो लो।"

"ऊंय" बंसल ने कहा—"प्यास तो नहीं है। फिर भी आप लाई हैं तो पी लेती हूं।" वह खाली ग्लास होंठों से लगाते ही वाली थी कि रोशन बोली—"आपा हम गरीब हैं, पर शराफत भी बची है हममें। यह मिसरी की डली तो खा लो पहले।"

"क्या नाम बताया था चाचा आपने ?" उसने जहूर चाचा की ओर देखा।

"रोशन।"

"वाह मैं तो सचमुच बहुत खुश हूं रोशन। रोशन अब औरतों के अंधेरे चेहरों को रोशनी देना तुम्हारा काम है। शराफत तो गांव में ही जन्मी थी। लाखों गांवों में शराफत के पालने टंगे रहते थे। यह तो हिन्दुस्तानी किसान की जोड़ुवां बहन है। पर आज उस शराफत का गला, शहर से भी अधिक घिनौने तरीके से गांवों में घोंटा जा रहा है। शुक्रिया।" उसने पानी पी लिया।

"सुनो शिवेन्द्र, मैं पुरुषोत्तम और उसके बेटे को अड़तालिस घंटे के लिए हिरासत में बन्द रखना चाहती हूं, तुम वह फोटो दो मुझे। मैं बता दूंगी पुरुषोत्तम को कि कांस्टेबिल से लेकर राष्ट्रपति तक जिस कानून की मुट्ठी में हैं, उस कानून को तोड़ने वाले की क्या दुर्गत होती है। लाओ, वह फोटो हमें दो।"

फोटो का नाम सुनते ही तिवारी के अलावा बाकी सब लोग बड़ी उत्सुकता से मेरी ओर देखने लगे।—"लाओ जल्दी हमें देर हो रही है। वह फोटो ही सुमंगल और पुरुषोत्तम की मौत का वारंट है।" मैंने फोटो दे दिया।

"हुजूर !" पुरुषोत्तम का भाई सुमेर सिंह खड़ा हुआ—"हुजूर मैं पुरुषोत्तम का भाई सुमेर सिंह हूं। हुजूर मेरे खानदान को बदनाम होने से बचा लीजिए हुजूर।

मैं माफी मांगता हूं।"

"इस फोटो के आधार पर सुमंगल और पुरुषोत्तम को ताउम्र कैद की सजा होगी। मैं आपको क्या बचाऊंगी।" बंसल आगे बढ़ी और सुमंगल के पास पहुंची, उसने कहा—"देखो, पहचानते हो इस फोटो को।"

सुमंगल कांपने लगा—"हुजूर मैंने प्यार के कारण राजी के कंधे पर हाथ रखा था। मेरे मन में उसे बदनाम करने की कभी इच्छा उठी ही नहीं।"

"क्यों हुजूर !" जहूर मियां बोले—"क्या हम भी उस नामुराद नज़ारे को देख सकते हैं ?"

"क्यों नहीं चाचा, नामुराद नजारा आपकी ही बेटी के साथ हुआ है, जरूर देखिए।"

"नहीं, हुजूर नहीं," सुमंगल ने बंसल के पैर पकड़ लिए। "अपनी इज्जत की परवाह नहीं है मुझे। पर मेरी पत्नी की इज्जत बचाइए, हुजूर आप भी औरत हैं। आप औरत का दर्द नहीं जानेंगी तो और कौन जानेगा।"

"ठीक है, चाचा माफ करना। सुमंगल जब नहीं चाहता। उसने खुलेआम आप लोगों की बेटी राजी को अपनी पत्नी माना। इसलिए अब यह उसकी अन्दरूनी जिन्दगी की तस्वीर हो गई। मैं दिखा नहीं पाऊंगी आप लोगों को। और देखना भी नहीं चाहिए।"

"हां अब बोलो सुमंगल, क्या इरादा है तुम्हारा। अपने बाप के साथ हिरासत में चलोगे या कोई और भी तरीका है तुम्हारे पास···?"

"हम तुरन्त लड़की के भाई के चरणों पर गिरकर माफी मांगेंगे हुजूर। हफ्ते भर के भीतर शादी हो जायेगी।" सुमेर सिंह ने कहा।

"और उसके बाद उस लड़की को तुम जलाकर मार डालोगे, या गला घोंट कर खुद फंसरी बनाकर उसमें लटकाकर कहोगे—हाय, हाय, यह क्या कर लिया मेरी बहू ने ?"

"कैसी बात करती हैं हुजूर, पुरुषोत्तम बम्बइया होय गए हैं हुजूर सुमेर सिंह तो गांव के ही हैं। हुजूर हमारी भी कुछ इज्जत है। उसे बचाइए।"

"तो सुनो मैं अभी राजी के भाई को बुलाती हूं। तुम लोग पुरुषोत्तम का चेहरा धोकर होश में लाओ। तुम सबको यहां के सब लोगों के सामने माफी मांगनी होगी और इकरारनामे पर दस्तखत करने होंगे कि राजी के खिलाफ कोई भी जुर्म हुआ तो हमें जो सजा मिलेगी हम कबूल करेंगे। चलो ले जाओ उसे उठाकर, बाहर ले जाओ···।"

"मैडम !" शिवेन्द्र बोला—"एक कप कॉफी। ताकि सांस अब नार्मल हो जाय।"

"तो क्या नारायण जी को पुलिस का आना मालूम नहीं था ?"

"नरैन को ही क्यों गांव के आठ और सीतापुर के तीन लोगों को भी नहीं पता था कि वहां पुलिस आयेगी। कोई मामूली सी पंचायत होगी, यह समझ कर आए थे लोग।"

"फिर ?"

हरीश नरैन के पास गया और बोला—"नरैन भइया हो घर में ?"

कोई आवाज नहीं आई।

उसने सांकल पीटी तो नरैन झल्लाया हुआ आया—"क्यों बहुत बड़े नेता हो गए। एक हाथ दूंगा कि तुम्हारी कामरेडी रफू चक्कर हो जायेगी।" हरीश कह रहा था कि ऐसी थकान और कालिमा नरैन के चेहरे पर उसने कभी नहीं देखी।

"नरैन भैया।" हरीश ने कहा था—"आपसे मैंने कभी कामरेडी दिखाई है क्या ? गुस्सा हो तो कोई और बहाना ढूंढ़ कर मारो। मुझे तुमसे पिटते हुए सुख मिलेगा। मारो···"

"अच्छा बोलो।" वह हंसा—"बात क्या है ?"

"यह सब तो मैं नहीं जानता भैया, हां पुलिस अधीक्षक प्रतिभा बंसल आई हैं। उन्होंने तुम्हें बुलाया है। कह रही थीं कि अगर नारायण जी न आना चाहें तो मैं खुद उनके घर जाऊंगी।"

"मैंने कुछ समझा नहीं यार, ई पुलिस अधीक्षक और नाम औरत का प्रतिभा ···मामला क्या है।"

"मैं नहीं जानता नारायण भैया मैं तो केवल संदेशिया हूं। जो कहो उन्हें कह दूं।" हरीश ने कहा था।

"अब कहोगे क्या, रुको कपड़ा बदलकर चलता हूं।"

तभी मेरी छोटी चाची आई—"के हौ नरैन ?"

"ऊ शिबू भाई का दोस्त हरीश···"

"ई का करे बदे आया है। जाओ कह दो हम लोग शिबू जैसे दुश्मन लोगन के दोस्त-फोस्त से नहीं मिलते।"

"धीरे बोलो अम्मा बिना जाने-बूझे किसी को दुश्मन कहना तुम्हें शोभा नहीं देता। मैंने कहा था न कि शिबू को बात इतनी चोट कर गई है कि वे बिना कुछ किये गांव नहीं आयेंगे। वहां एक बहुत कड़ी पुलिस अफसर आई हैं। वह औरत है। उसने बुलाया है। तू क्या सुन रही है पगली।" राजी से नरैन बोला—"तुम्हें भी शिबू भाई दुश्मन लगते हैं ?"

"शिबू भाई सारे परिवार की इज्जत के रखवैया हैं, दुश्मन नहीं। मैं जानती हूं वे सरसू से भी ज्यादा प्यार मुझसे करते हैं। वे सौ जनम में भी दुश्मन नहीं बन सकते।"

"अच्छा-अच्छा जो जो भावे तू भाई बहिन को उहै करो।" चाची कुड़मुड़ाती चली गयीं।

"आइये नारायण जी !" बंसल दरी से उठी।

नरैन एकटक चारों ओर देख रहा था। गांव के तमाम बूढ़े राजपूत, यादव, मुसलमान, शिवशंकर तिवारी, सोबरन राय सभी बैठे थे। जहूर चाचा, तिवारी और यादव के अलावा किसी की नजर ऊपर नहीं थी तभी उसने देखा कोने में मुंह लटकाए सुमंगल, पुरुषोत्तम और सुमेर सिंह बैठे थे और शर्म के मारे उसकी ओर देख नहीं पा रहे थे।

"मैडम, मुझे यहां क्यों बुलवाया आपने ?"

"इसलिए नारायण जी की आपके समधी लोग और बहनोई आपसे क्षमा मांगना चाहते हैं। चलो सुमंगल, अपने पिता और ताऊ को भी लेते आओ।"

तीनों नरैन के पैर पर गिर पड़े—"मुझे माफ कर दो नरैन बेटा।" पुरुषोत्तम बोले—"मैं अंधा हो गया था। इस सोबरना ने हमसे सब कुछ छीन लिया। दस हजार घूस देकर। उसने हमसे ऐसा गन्दा काम कराया कि हम अपनी गंगा जैसी पवित्र बहू के चेहरे पर कालिख पोतने लगे। माफी दो भइया, माफी दो···।"

नरैन खुद हिचक-हिचक कर रोने लग पड़ा—"मैं माफी देने वाला कौन हूं ठाकुर। मैं तो परिवार का अदना सदस्य हूं। मेरे चाचा देवेन्द्र से माफी मांगो, चाहे मेरे भाई शिवेन्द्र से। वही परिवार के मुखिया हैं। मैं क्या माफ करूंगा आपको। आपने मेरी बहन पर जो कालिख पोती है ठाकुर, वह माफी कह देने से नहीं धुलेगी। मेरी आत्मा में एक बहुत बारीक बर्छी घुस गई थी ठाकुर। जिस बड़े भाई को हम अपना देवता मानते थे मैंने उसी पर शक किया। मैं तो समझता था राजी को चरित्रहीन कहवाने वाले शिबू भाई हैं, मैंने उन्हें गालियां दीं, अपमान किया, आज-आज मेरे भीतर का भगवान कह रहा है कि मैं आत्महत्या कर लूं। राजी कहती है कि शिवेन्द्र भइया ऐसा कर ही नहीं सकते। वे मुझे अपनी सगी बहन सरस्वती से भी ज्यादा प्यार करते हैं। जिसे चरित्रहीन कहा गया, वह अबोध मुझसे लाख गुनी अच्छी है कि वह आदमी पहचानती है। मैंने तो अपने खून के रिश्ते पर ही थूक दिया। मैं किस मुंह से माफ करूं आपको। आज मालूम हुआ कि यह काम भी हमारे परिवार के बुजुर्ग सोबरन राय ने ही कराया। क्या-क्या आश्चर्य घटता है किसी की भी जिन्दगी में। सोनवां के मर जाने पर रुपवा ने कुछ वाक्य कह दिये थे बड़े भाई को। उसने क्षमा मांगी थी उनसे, पर मैंने अंधे की तरह कह दिया कि आपको रुपवा और नरैन में किसी एक को चुनना होगा। अगर रुपवा के यहां जाना है तो नरैन को छोड़ देना होगा।

"यहां रुपवा है, हरीश है। तो जाहिर है कि इन लोगों ने राजी की मदद की होगी, वरना बुरा चाहने वाला होते हुए भी हरीश मुझे बुलाने क्यों आता? उसके चेहरे पर ऐसी खुशी और चमक क्यों थी। वह तो किसी मुजरिम के चेहरे पर कभी उभर सकती ही नहीं।" बंसल ने सहारा दिया।

"हरीश और रुपवा दोनों ने मिलकर यह अनमोल सबूत प्राप्त किया, जिसके कारण आपके बहनोई और बाबा पुरुषोत्तम को थूक कर चाटना पड़ा। यह फोटो न होता तो मैं शिवेन्द्र से कह देती कि मैं इस बिगड़ी बात को बनाने में असमर्थ हूं। मैं नहीं आती।" बंसल ने सहारा दिया।

"यह कैसी फोटो है मैडम, क्या कोई मुझे ब्लैकमेल करना चाहता था?"

"नहीं नरैन जी, हम पढ़े-लिखे लोगों की यह बहुत बुरी और खतरनाक आदत हो गई है कि शुभेच्छु अशुभेच्छु को समझे बगैर बुरे अंजाम की कल्पना करके हैरानी में डालने वाले किसी शब्द की दुम पकड़ लेते हैं। जैसे फोटो की बात हुई तो ब्लैकमेल, किसी ने लड़की को पत्र लिख दिया तो चरित्र में अविश्वास, किसी ने आपको आगाह किया तो उसमें छिपे रहस्य को ढूंढ़ना शुरू हो जाता है। सही है, जमाना बदला है, उलझनें बढ़ी हैं, पर अच्छे लोग रहे ही नहीं इस दुनिया में? फिर यह जगत ठहरा क्यों है। इसे रसातल में चला जाना चाहिए था अब तक। यहां जहूर मियां जैसे फरिश्ते हैं, हम सबके आदरणीय वृद्ध पुरुष यादव जी हैं, यह लोग हमारे बीच में हैं, नरैन जी। जो बुरे हैं, उनसे भागो मत, उन्हें बदलो, अगर अकड़ते हैं वे, झुकते नहीं तो बेशक तोड़ दो। हम निरर्थक लोगों को साथ लेकर बहुत दूर तक नहीं चल सकते। यह फोटो और उसका निगेटिव दोनों लीजिए। यह फोटो ब्लैकमेल के लिए खींचा गया होता तो अब तक आप पर हजारों की चपत लग चुकी होती। यह फोटो हरीश ने खींचे हैं—अरे कहां गये हरीश, शिवेन्द्र, रुपवा भी नहीं है। चले गए सब क्या?"

नरैन भागा हुआ बाहर आया। हम लोग मुश्किल से दो सौ गज गए होंगे वह चिल्लाता हुआ आ रहा था। "रुक जाइए शिबू भइया, रुक जाइए शिबू भइया, मैं छूरा मार लूंगा। यह देखो।" सचमुच उसके हाथ में छुरा था। हम तीनों उसकी ओर दौड़ पड़े।

" 'यह क्या बचपना है नरैन।' मैंने कहा था—'सब ठीक हो गया। राजी की शादी करो। हंसी-खुशी बिदा करो। मेरे पीछे-पीछे कहां तक चलोगे। जिसका कोई ठौर न ठिकाना। उसे मंजिल मत मान लो नरैन। तुमने रुपवा के यहां जाने से मना किया था। एक शर्त भी रखी थी। मैं रुपवा के यहां गया इसलिए वह शर्त पूरी कर रहा हूं। यानी नरैन को छोड़कर जा रहा हूं। इसमें परेशान क्यों हो?'

" 'मैं कुछ नहीं सुनना चाहता, कुछ नहीं' वह रोने लगा। तुम तीनों को लौटना होगा। नहीं लौटोगे तो लाख पहरे के बावजूद मैं चोरी-चोरी भागकर रेल

के नीचे कट जाऊंगा। मैं जिन्दा नहीं रहना चाहता।'

" 'क्या करते यार प्रेमू। हम तीनों लौट आए।'

" 'इस तरह भागकर जान नहीं बचेगी शिवेन्द्र—'अभी काम खत्म नहीं हुआ। इसे पूरा करके ही चलना है। अभी इकरारनामा कराते हैं।'

" 'हां तिवारी जी···।'

" 'हुजूर !' बंसल जी मुस्कुराईं। 'पंडित हैं तो कुछ तो पोथी-पत्रा देखते होंगे। जल्दी से बताइए कि कल का मुहूर्त कैसा रहेगा ?'

" 'हुजूर, ज्योतिषी तो मेरे पितामह थे। हां, उस परिवार का हूं तो कुछ लौछार (जन्मजात प्रभाव) तो पड़ेगी ही। हुजूर कल मुझे कुल नौ शादियों के न्यौते मिले हैं। कुछ लड़कों की हैं, कुछ लड़कियों की। हुजूर जब इतना शुभ मुहूर्त है तो दसवीं शादी कैसे रुक सकती है।'

" 'लेकिन हुजूर, एक ही लड़का है, बड़ा अरमान है मन में। इतनी जल्दी कल ही···'

" 'सुनिए बाबू पुरुषोत्तम सिंह गांव के भाई-बन्धु, नाते-रिश्तेदारों को आदमी भेजकर बुलवा लीजिए। और बहुत अरमान है तो पैसे जाया न करके राजी-सुमंगल के नाम बैंक में ज्वाइन्ट खाता खोल दीजिए। जो हो, कल तो शादी होगी ही। क्योंकि बिना शादी सम्पन्न कराये मैं तो जा नहीं सकती। अब देखना यह है कि मुझे घराती न्यौता देते हैं कि बाराती ?'

" 'पहला नेवता सारे करमूपुरा की ओर से हम घराती दे रहे हैं सरकार। हमारी दावत कुबूल करें।'

" 'हो गया पुरुषोतम जी फैसला। मैं तो जरूर चाचा के साथ रहूंगी। जाइए आप लोग। तैयारी करिये।'

"रिसर्चर मैंने इस छोटी-सी जिन्दगीमें ढेर सारी तोहमतों की गठरी उठाए, बार-बार रोते-हंसते जो कुछ भोगा है वह सब सीकड़ा है, कंकड़-पत्थर है। पर इसी के बीच कभी वेदना की लहरें किनारे पर शंख, सीपी और बीरबहूटी के रंग वाले मूंगों के दाने भी फेंक जाती हैं। यही तो मेरे संबल हैं। यही तो पाथेय हैं। यही तो जीने के सहारे हैं। यही तो निराशा के अंधकार में टिमटिमाते दीये हैं।

"नरैन मुझे अंकवार में भरे बखरी में आया—'अम्मा, लो तुम्हारा दुश्मन खड़ा है। तुम खुद ही इन्हें सजा दे दो। मेरे पास एकदम फुर्सत नहीं है। कल ही राजी की शादी है। मुझे सांस लेने का भी वक्त नहीं दिया इस दुश्मन ने। पीटो इसको ? मारो, मारो···।'

"नरैन हिचक-हिचककर रो पड़ा।

" 'कल शादी तै हो गई। अरे ई सब लड़कों का खिलवाड़ समझते हो का ?' चाची आईं। मेरी आंखों से आंखें मिलाने में झेंपती बोलीं—'सिवेन्दर, बड़का

अपराध हो गया बेटा। मैं देहातन, गंवार तुम्हें समझ नहीं पाई भैया, तेरे पांव पड़ती हूं। तू चाहे ठुकरा दे, चाहे छिमा कर दे। जो भी हूं तेरी चाची हूं। आज मेरी बहिनी जी होतीं तो उनके पांव पर नाक रगड़-रगड़कर चिरौरी-मिनती करती। पर बेटा मुझे तो भंवर में छोड़कर वे चली गईं। अपनी बिथा किससे कहूं। तू ही बता।'

"तभी राजी आई। 'अम्मा शिवेन्दर भैया को कितना रुलाओगी। जाओ, चाय छानकर ले आओ। तैयार है। तुम यह भी भूल गई का? अरे सारा देहात जानता है कि ई जब गुस्सा करते हैं तब पानी से नहीं गरम चाय से ठंढे होते हैं। भइया,...' वह मेरे पास आकर एक क्षण छलछलाए नेत्रों से देखती रही; फिर मुझसे लिपटकर हिचक-हिचककर रोती रही...। मैं उसके आंसू पोंछ रहा था वह मेरे। निर्वैयक्तिक प्रेम का अनुपम सुख कितना मादक होता है रिसर्चर, और यदि इस सुख की भागीदार कोई नारी हो तो अचानक लगता है कि मेरा उत्तरदायित्व इतना अनादि, अनन्त और अछोर बन गया, उसे क्या मैं निभा पाऊंगा। मेरी तो धारणा है रिसर्चर कि औरत न हो तो पुरुष आदिम पशु से ऊपर उठ ही नहीं सकता।

"एक बात और ध्यान रखने की है। खास कर हमारे पूर्वांचल में शादियां टूटती हैं, या कटती हैं, तो लड़कियों की ही। लड़कों में एकाध की कटती हैं तो भी परम आश्चर्य के साथ। किसी गावदी लड़के की शादी कटती है तो जानते हो क्यों?"

"नहीं।"

"इसलिए कि उस निरक्षर भट्टाचार्य को जितना दहेज मिल रहा था उससे कई गुना ज्यादा देने वाले दूसरे आ गये।" वह ठहाका लगाकर हंसा।

सोनवां की मौत ने मुझे धक्का मारा था। मैं लड़खड़ाया, पर संभल गया। रुपवा की कहानी दूसरी थी। रुपवा सोनवां की तरह भावुक नहीं थी। मैं तुम्हें बता चुका हूं प्रेमू कि सोनवां की मौत को भी उसने बहुत व्यावहारिक धरातल पर ठोक-पीटकर समझने की कोशिश की और रूमानियत के वह सख्त खिलाफ थी। सोनवां और रुपवा जैसी लड़कियां अपने दीन-हीन परिवार की व्यथा जानती थीं, दोनों ने सिर्फ हाईस्कूल तक ही पढ़ाई की पर सोनवां मेरे साथ के कारण और रुपवा हरीश के सम्पर्क में आने से इतनी समझदार तो हो ही चुकी थीं कि हरिजनों की जिन्दगी को गहराई से देखना, उसके कारणों की तलाश करना, और जैसे भी हो—उन्हें दूर करने की लड़ाई में आगे-आगे रहना अपना उद्देश्य मान चुकी थीं। सोनवां आरम्भ में अपनी सुख-सुविधा में इतनी खो गई कि कहां सो गई। जगी जरूर, पर बहुत देर हो चुकी थी। रुपवा ही थी अब जिससे मुझे आशा

थी। वह हरीश से प्यार करती थी। उसकी हमसफर भी थी और हम-बिस्तर भी।

राजी की शादी के छः-सात महीने बाद ही बटेसर में रुपवा और हरीश ने माहौल इतना गरम बना दिया कि शिवशंकर तिवारी जैसे खूसड आदमी की नींद भी हराम कर दी। लड़ाई के कारण बहुत सही थे। तिवारी जी और बन्ने मियां को मैं पुराने अर्थों में जमींदार नहीं कहूंगा, पर बड़े काश्तकार जरूर थे। उनके सोचने का तरीका अलबत्ता सामन्ती था। वे अकड़बाज किस्म के ऐंठू थे। राजी की शादी में तिवारी को सोबरन से अलग कर देने के लिए मैंने उनकी लड़की शकुन्तला को इस तरह जोड़ दिया कि तिवारी भावुकता में बह गए। यह सही है कि तिवारी और मेरे सम्बन्ध ठीक थे। ठीक इसी अर्थ में कि मैं बटेसर में कोई दिलचस्पी नहीं लेता था और तिवारी को मुझे बेगाना समझने से नुकसान ही होता। अतः वे मुझसे खूब जुड़े रहे। पहले से भी ज्यादा करीबी होने की पहल उन्होंने खुद की और हर अवसर पर इस तरह की प्रगतिशील बातें करते मानो वे रातों-रात बदल कर दुर्योधन की जगह सुयोधन बन गए हों।

एक दिन मैं अपने डेरे पर बैठा अखबार पढ़ रहा था। वाराणसी और आस-पास वाले पन्ने को देखकर बड़ी उत्सुकता जगी। समाचार था—बटेसर में काश्तकारों और हरिजनों में संघर्ष। दो मरे दो घायल। मैं गम्भीर होकर समाचार में खो गया। खबर पढ़ने के बाद पता चला कि हरीश घायल है, पर मरने वाले दोनों लोग तिवारी जी की दायादी के थे। दोनों उनके भतीजे थे।

"शिवेन्दर भइया हो क्या ?" आवाज तिवारी जी की थी।

"आइए तिवारी चाचा।" मैं बरामदे में गया। प्रणाम किया। बोले, "अब सकुशल रहने का आशीर्वाद नहीं दूंगा। हमारे साथ ऐसा विश्वासघात करौगे तुम शिवेन्दर ई तो हम सपने में भी नाहीं सोचे कभी।"

"क्या ?" मैं इस वाक्य को सुनते ही तुनक गया—"किसी के आशीर्वाद से तिवारी चाचा न तो आदमी कुशल से रहता है, न तो आशीर्वाद बिना वह अकुशल से रहने को मजबूर होता है। आप मेरे और अपने पुराने सम्बन्धों को तोड़ना चाहते हैं, या तोड़ चुके हैं तो मैं पैरों पड़कर उन्हें जोड़ नहीं सकता। चाहे कारण जो हों, आपने मुझ पर बहुत गन्दा आरोप लगाया है, मैं जिस चीज के बारे में एकदम अंधेरे में हूं, न कुछ जानता हूं, न कुछ समझ पा रहा हूं, मैं तो अभी बटेसर की हालत पढ़कर इतना परेशान हो गया था कि शायद आप न आते तो रो पड़ता। अभी मुझे कल्पनाथ तिवारी और रमानाथ की मौत ने मथ दिया है। वे मेरे लिए भाई से भी बढ़कर थे। कल्पनाथ मेरा सहपाठी था। मैं रमानाथ को भी जानता हूं, पर उतना नहीं जितना कल्पनाथ को। कल्पनाथ मेरा यार था, दोस्त था। उसे अपने भाई की तरह प्यार करता था। हमारे बीच बाभन-राजपूत का नहीं, भाई-भाई के

रक्त की गरमाहट का रिश्ता था। कल्पनाथ पांच दिन पहले मेरे डरे से गया। चार दिन वह यहां रुका। खूब अन्तरंग बातें हुईं। पुरानी यादों में हम खोये रहे। आप जानते हैं—चाचा कि कल्पनाथ की एक आदत है। हर महीने एक फिल्म देखना उसकी कसम थी। वह भी अकेले नहीं मेरे साथ। दो टिकट लेकर ही वह मेरे डेरे पर आता था। अभी मुश्किल से एक हफ्ते ही हुए हैं। हमने साथ-साथ 'साहब बीबी गुलाम' देखी। यह सब क्या हो गया।" तिवारी चाचा रोने लगे—"अब का बतावैं भइया। दोनों पतोहुओं का रोना सहा नहीं जा रहा है। पुलिस रात को बटेसर पहुंची। कल्पनाथ और रमानाथ की लाश आई है तोहरे अस्पताल के चीर-फाड़ घर में। भइया अब चीड़-फाड़कर लाशन की जो दुर्गत होने जा रही है उसे रोको। हमने बेटा पगलाय के जो मन में आया बक दिया, छिमा कर दो। मुझे ऐसा दोष नहीं लगाना चाहिए था। कल्पनाथ के प्रान नहीं छूट रहे थे भइया, उसने बड़ा जोर लगाकर कहा—'शिबू से कहना। संभालें वे।' बस, इहै तीन-चार शब्द बोलकर हमरे कल्पनाथ चले गए भइया।"

मेरी आंखों से आंसू गिर रहे थे। "बैठिए चाचा···" मैंने सिसकते हुए कहा—"मैं तो अजीब उलझन में फंस गया चाचा। चीर-फाड़ को तो कोई रोक नहीं सकता। वह तो पुलिस के बड़े अफसरों के हुकुम से ही रुक सकती है। और रोक-कर करिएगा भी क्या। केस चलेगा। पुलिस से पोस्टमार्टम की रपट मांगी जाएगी। इसलिए जो करना है पुलिस और डाक्टर को वह होने दीजिए। हां, पोस्टमार्टम के बाद लाशें इस हालत में मिलें कि देखने वालों को, औरतों को, रिश्तेदारों को, बहुत मानसिक क्लेश न हो। मैं जिम्मा लेता हूं चाचा कि लाशें विकृत नहीं लगेंगी। कौन-कौन लोग आए हैं आपके साथ। कहीं कल्पनाथ की पत्नी तो नहीं है न ?"

"काहे ? काहे ? का एक विधवा चिता पर जाए के पहले अपने आदमी की लासौ नाहीं देख सकत ?"

"आप बहुत गुस्से में हैं चाचा" मैंने होंठों को दबाते हुए, बहुत मुश्किल से कहा—"मैं लाश देखने, न देखने की बात नहीं कर रहा था चाचा। मैं इसलिए पूछ रहा था कि मैं कैसे झेल पाऊंगा। कल्पनाथ की पत्नी की ओर देखने का साहस मुझमें नहीं है।"

"तू का जानत हौ कल्पनाथ की पत्नी के बारे में। तू कल्पनाथ के दोस्त थे। उसकी पत्नी के नहीं।"

"चाचा आपको आज क्या हो गया है। इतना तनाव मत पैदा करिए अपने दिमाग में। जब बाती जलने लगे, धुवां उठे तो दिमाग को शांत कर लेना चाहिए चाचा कि दीये में तेल पहुंचने लगे। बिना खून के अगर ऐसे ही जलता रहा आपका दिमाग तो नसें फट जाएंगी। ऐसा धुवां उठेगा कि आपको कुछ भी नहीं

दिखेगा न सच, न झूठ। दुःख को शान्ति से सहिए। शान्ति से जो घट रहा है उसे देखिए। बहुत मुश्किल होता है चाचा। शोक में संभलना तो देवताओं के लिए भी कठिन होता है। कल्पनाथ की औरत उसके साथ मेरे डेरे पर बीसों बार रही है। मैं उसे जानता हूं। वह मुझे जानती है। मैंने इसलिए कहा था।"

"मैं पगला गया हूं शिवेन्दर बेटा। हां याद आया खुदै उसी ने कहा था कि शकुन्तला की दवा-दारू में समय लगे तो शिबू भाई के हियां छोड़ देना। वहां सब ठीक रहेगा। परेशानी हो काका तो चन्द्रा को भी लेते जाओ। शिबू न भी हुए तो उनके डेरे पर चन्द्रा सबकुछ संभाल लेगी। दोनों एक-दूसरे के अभिन्न मित्र हैं। मैं ही भूल गया भइया।"

"झूठ बोलने का प्रयत्न मत करो चाचा। तुम अभी उसी सड़ांध में सड़ रहे हो जिसे मैं पूर्वांचल का नाबदान कहता हूं। कल्पू की मृत्यु हुई है उसकी लाश लेकर आये हो पर दिमाग में नाबदान का असर ज्यों का त्यों है। शकुन्तला एक महीने रही। चन्द्रा बीसियों बार आई। कल्पू ने कह दिया था कि दोनों अभिन्न मित्र हैं, फिर···फिर···तुम दुर्वासा की तरह तुनक क्यों गए? इसलिए कि मैं कुजात हूं, इसलिए कि मैं बाभन नहीं हूं, इसलिए कि बिना भरोसे के आदमी के पास बहू-बेटी छोड़ना ठीक नहीं था। क्या है मुझमें कि हर जरूरत पर मैं ठीक लगता हूं। और हर बार तुम यही सोचते हो कि एक कुजात, नीच, कामुक, बदमाश को अपना कहने में तुम्हें झिझक होती है। मैं कभी आदमी हूं या नहीं? इसका कोई अवसर भी तुम्हारा इलाका शायद नहीं देगा मुझे। तुम्हें घृणा है कि बाभन की बहू को एक नीच राजपूत की मित्र कह दिया कल्पू ने। तुम लीपा-पोती कर दो। तुम अपने जनेऊ को दो-तीन बार मुट्ठी में बांधकर रगड़ दो 'यज्ञोपवीतं परम पवित्रम्'···रगड़ दो। यह तुम्हें वह सारा 'बलमस्तुतेज' प्रदान कर देगा। तुम इसे कान पर चढ़ाकर जैसे लघुशंका से शुद्ध हो जाते हो, वैसे ही कान पर चढ़ाकर कहो भीतर-ही-भीतर कि इस नीच राजपूत की संगति से जो पाप लगा वह नष्ट हो, नष्ट हो, नष्ट हो।"

"भैया ऐसा दंड मत दो। शिवेन्दर, अपराध तो कभी तोहरे बाप देवेन्दर भी कर देते होयेंगे, उन्हें भी छिमा नहीं देते तुम?"

"क्षमा क्या होती है तिवारी चाचा, एक झूठा तिनका जो गालियों के समुद्र में डूबते के सामने फेंक दिया जाता है। यही तिनका पकड़कर मैं आज तक तुम्हारे लिए, तुम्हारे इलाके के लिए बार-बार डूबता हूं, बार-बार उतराता हूं। खैर छोड़ो।"

मैंने दो कप चाय मंगाई। नहा-धोकर मैं तिवारी जी के साथ नर्सों के शिक्षण केन्द्र को लांघकर चीड़-फाड़ घर की ओर चला। वहां सोबरन राय थे, जहूर चाचा थे, ये सब मेरे गांव से आए थे। बाकी बीसियों लोग थे बटेसर के। मुझे देखते ही बालों को मुट्ठी से नोचती चन्द्रा दौड़ी और मेरे पैरों पर गिर पड़ी—

"शिबू, यह देखो," उसने माथे से पल्लू खींच लिया—"यह बिना सिन्दूर की मांग देख लो। तुम उनके सबसे नजदीकी दोस्त थे। मरते वक्त भी यही कह गए—शिबू से कहना। संभाले वे। क्या संभालोगे मुझे? विधवा का पति लौटा सकते हो? बोलो, बोलो? तुम रो रहे हो। तुम पत्थर हो गए हो। जो करना हो करो। तुमसे कुछ और न हो सके तो उनके शव के साथ चिता पर बैठा देना। मान लूंगी कि तुमने संभाल लिया। अब उनसे अधिक नजदीकी तुम्हारे लिए हरीश हो गया है।"

"चन्द्र···" मैंने उसके सर पर हाथ रख दिया—"चन्द्र, मेरा भगवान जानता है। मैं पवित्र अग्नि की शपथ लेकर कह रहा हूं, चन्द्र, जो शपथ मरते समय भी नहीं लेता, वह शपथ ले रहा हूं, चन्द्र तुम्हारी शपथ, तुम्हारे महान् व्यक्तित्व की शपथ चन्द्र, मैं कुछ नहीं जानता था। हरीश मेरा दोस्त है। हां, है मात्र पच्चीस प्रतिशत, कल्पू मेरा भाई था, मेरा अभिन्न हृदय मित्र था, वह भी हजार प्रतिशत, हजार प्रतिशत। मैं अपनी सीमा जानता हूं चन्द्र, तुम जिस सम्बन्ध को कृष्ण और कृष्णा का सम्बन्ध कहा करती थीं, मुझे उस सम्बन्ध की शपथ है चन्द्र, मैं कुछ भी नहीं जानता था।"

"तो मुझे छूकर शपथ लो कि तुम हरीश से और रुपवा से इस मौत का बदला लोगे।" चन्द्रा बोली, "शपथ लो, चुप क्यों हो···"

"शपथ लेता हूं चन्द्रा कि जिसका भी अपराध होगा उससे बदला लूंगा।"

"खैर ठीक है। तुम हरीश को शतप्रतिशत अपराधी नहीं मानते, ठीक है। पता लगा लो क्योंकि तुम्हें मैंने अपने सम्बन्धियों के कुकृत्य पर चुप होते, और जानने के बाद भयंकर दंड देते देखा है, इसलिए तुम्हारी शपथ को स्वीकार करती हूं। अब नहीं रोऊंगी।"

तभी सोबरन राय, जहूर मियां, बन्ने मियां हमारे पास आए। साथ ही बटेसर के तीन-चार लोग गुस्से में भरे हाथ में लाठियां उठाए मेरी ओर बढ़े।

"ई का नाटक करत हौ शंकर काका। दुश्मन के दोस्त के पैर पर चन्द्रा बेटी गिर पड़ी एक कुजात रजपुत के गोड़े पर। धिक्कार है तोहें। तोहें लाज नहीं लगी। हम हरीश से बाद में निबट लेवेंगे, वाकिर एकर काम इहें तमाम कर देवेंगे।" उन्होंने लाठियां उठाई ही थीं कि चन्द्रा खड़ी हो गई—"चन्द्रा बाभन की लड़की है; पर शिबू मेरे भाई हैं। वे भी आज होते तो आप लोगों पर थूकते। कैसे मान लिया कि शिबू ने हरीश के साथ मिलकर यह काम करवाया?"

"अभी आप नहीं जान पायेंगी ए घुन्ना सांप को।" सोबरन राय बोले—"एक बाभन को अइसने डोम के पैर पर गिरे के नाहीं चाही। आप नाहीं जानतीं कि रुपवा दुसाधिन एकै जीजा कहती है। ई सार, जो न लीला कराय दे। हमरी अइसी बेहुरमती कराई इसने पुलुसिया रांड़ से कि आज तलक हम भूले नहीं।

जब दो लाशें गिरैं पड़ीं, तो तीसरी पर एतना सोच-विचार काहे। मारो भइया सुदर्शन तिवारी एह से अच्छा मौका नाहीं मिलेगा।"

"ठीक कह रहे हैं, सोबरन राय।" बन्ने मियां बोले—"वे सब साले रुपवा, हरीसवा तो सिपाही हैं, हुकुम देने वाला कमीना तो यही है।"

"बन्ने मियां।" जहूर चाचा बोले—"खुदा कसम, अगर मैं जानता कि आप इतने गिरे इंसान हैं तो मैं आपके साथ न आता। किसी फर्द को बिना जाने गुनाहगार कहना, दर्द की बात कहकर लोगों को उकसाना कुफ्र है। मैं जानता हूं शिवेन्दर एक बहादुर इंसान है। वह बेइंसाफी से लड़ता है, हमसे ज्यादा उसे जानने वाला यहां कोई माई का लाल नहीं है। सोबरन राय दो दो जवान लड़कों के मौत के सदमे को नया मोड़ दे रहे हैं। अपनी बेहुर्मती की वजह शिवेन्दर को समझते हैं, कभी वे खुद अपने गिरहबान में झांक कर नहीं देखते। मैं रुपवा और सोनवां की असली दास्तान सुनाने लगूं तो सोबरन राय यहां से भाग जायेंगे। जिस पुलिस अफसर को यह रांड कह रहे हैं, उसी के पास चलिए आप सब लोग। वह चंडी माता है। औरत पर होने वाले जुल्म को वह कैसे जड़ से उखाड़ फेंकती है, आंख से देखते आप लोग तो जान जाते कि शिवेन्द्र हैं क्या? देखते रहिए। सुखिया चमारिन की मौत कौन सा गुल खिलाती है। देखत रहिए।"

"छोड़िए, जहूर चाचा अगर सुदर्शन तिवारी को लगता है कि मेरे कतल से बटेसर का मामला सुलझ जाएगा, तो मुझसे बड़भागी दूसरा कौन होगा, चलाइए लाठी।···"

"कोई आगे बढ़ा तो मैं उसका मुंह नोंच लूंगी···" चन्द्रा उठी—"हट जाओ सुदर्शन तिवारी। इस सदमें को जन्म देने वाले तुम हो। तुमने जमींदारी शान में सुखिया हरिजन के साथ गलत सलूक किया। तुमने एक औरत के साथ बलात्कार किया, एक कली को मसल दिया, तुम्हारा पाप हमारे सिर टूटा। अब अगर शिवू का कुछ हुआ तो मैं तिवारी परिवार को सड़क पर नंगा कर दूंगी। चले जाओ यहां से, चले जाओ···"

"अरे वाह रे बेसवा।" सुदर्शन तिवारी की पतोहू बोली—"ई चनवां अइसी बेहयाई करी। ई तो हमहन सोचो नाहीं सकते थे। हम तो रांड़ हो गईं, पर ऐसी बेसरमी नाहीं कर सकती। एक रजपुत के खातिर ई अपने बस के पगड़ी उछाल रही है। हुंह, हियां सुखिया रंडी के बात का कौन परसंग रहा?"

"खालिस गन्दा बोले खातिर ई हियां सुखिया हरिजन के नाम लेइ रही है। ई सब आपके बड़के भइया आ बटेसर के सरपंच साहब कराय रहे हैं। उहै जाइके शिवेन्दर को बुलाई लाए। जइसे हमें चनवां कै करतूत मालूम नहीं है। रजपुतवा के साथ चनवां त चनवा हमरी ननद संकुतलियो डेरा डालित रही हैं। हेंह, अइसे नीचन के साथ रउरा काहे खड़ा हुंई। चलिए ओहर। लाश लेके हम लोगन

के साथ छोड़ के चल पड़ीं। इनके साथ में रहने से और चेहरा पर कालिखै लगी, हां···। बी० ए० पास हो चनवां। ये कुतिया के बाप गलत जगह विभाह कै देलस। ये के राउर बड़का भइया सीता का अवतार कहे लें। वह रे सीता, रावन के घरे से पेट में गरभ लेइ के आय गई। का पता कि सुनीता कल्पू भाई साहब के बेटा हौ कि एह रजपुतवा के। खुद मियां मंगन दुवार दरवेस अरे ई आया रहा अपने गांव त सुनीतवा के हाथै में दस-दस के दुई नोट दिए रहा। का समझ के दिया। अपन बेटै न समझा? खुदै कहा कि ले बेटा···"

"आप कितनी नीच औरत हैं।" जहूर चाचा बोले—"शिवेन्दर के हियां मेरी बेटी रोशन भी जरूरत पड़ने पर जाती है। वह यहां तक कहती है कि शिवेन्दर भाई साहब अजीब इन्सान हैं। अपने मन में मामूली शक भी हो, खूब छुपाये भी रहो, एकाएक ऐसा बोल देंगे कि लगता है मैं कितनी गुनहगार हूं। बोले रोशन जरा गिलास में पानी देना और चौके में जाकर देखो दाल जली तो नहीं। मैं तो शरम से गड़ गई अब्बा। मैंने गलत सोचा था। मैं सोच रही थी कि क्या शिवेन्दर भाई हमारा छुआ पानी पीयेंगे। हमारा छुआ खाना खायेंगे···और उन्होंने जब पानी और दाल की बात की तो लगा कि यह आदमी नहीं फरिश्ता है। पता नहीं क्या जादू है कि वे सब कुछ छुपा ढंका तुरन्त भांप लेते हैं। ऐसे आदमी को नीच रजपुतवा कह रही हैं। तिवारी जी की पतोहू पर कालिख लगा रही हैं। चन्द्रा बेटी को बेइज्जत कर रही हैं। मुझे तो यह सब मालूम नहीं था। शिबू ने बीस रुपए दिए होंगे तो यह पक्की बात है गांठ बांध लीजिए, चुपचाप मुंह लटकाए वे वहां से भाग गए होंगे। उनकी जेब में उतना ही रहा होगा। अगर सौ होते तो शायद शिवेन्दर रुककर उस लड़के के गाल को चूम लेते। और उसे आशीर्वाद देकर आते। वे तो कहते हैं जहूर चाचा। मिहनत करता हूं रोजीरोटी चल जाती है। कुछ ज्यादा हों तो दूसरों के काम आ सकते हैं। आजकल दस-बीस की बिसात क्या। इतना तो गरीब भिखारी को भी दे देते हैं। रोशन की विदाई पर मैं सिर्फ इक्कीस रुपए दे पा रहा हूं। आप इसे रोशन से लौटवाइए नहीं। बड़ी भलेमानस बनती हो तुम और तुम्हारे ससुर सुदर्शन। एक शरीफ को गाली ही काफी है। शिवेन्दर गरीब है, पर शरीफ है। शिवेन्दर पर लड़कियां जान देती हैं। आगे पीछे नाचती हैं···पर शिवेन्दर एक दुसाध कन्या का हाथ पकड़ चुके हैं। इसलिए बार-बार हठ करने पर भी देवेन्द्र ठाकुर उनकी शादी नहीं करा पाए।"

"चुप रह, मियां मुकड़ी।" रमानाथ की औरत बोली—"तू हमहन के उपदेस करत है। बाजा में हुरुक, आदमी में तुरुक।"

"ठीकै कहा है। दोनों पर थू-थू।" सोबरन ने कहा।

"सुनो सुदर्शन, इसे मना कर दो। मौका ठीक नहीं है। तुम्हारे चेहरे पर खुशी होनी चाहिए सुदर्शन तिवारी कि तुम्हारी प्रापर्टी में आधे का हिस्सेदार रमानाथ

चला गया। और यह औरत है अभागिन जिसकी कोख में बच्चा नहीं आया, बे-औलाद इसी से उस हर औरत से यह घृणा करती है जिसे औलाद का सुख मिला। बोलो सुदर्शन चाचा।" मैंने आरजू के साथ हाथ जोड़कर कहा—"अगर कल्पू ने गलती कर दी। सुखिया कांड से चिढ़ कर उन्होंने दो-चार कड़वे वाक्य बोल भी दिए तो आपको गोली हरीश को मारनी चाहिए थी। कल्पू तो आपके भतीजा थे। उन्हें समझा देते। गोली मरवा दी आपने? क्यों? क्या कल्पू, रमानाथ, महेन्द्र सबकी सम्पत्ति पर नजर है आपकी?"

"चुप रहो नीच कहीं का," सुदर्शन गुर्रा कर बोला, "के कहत है कि हमारी और कल्पू बेटा की लड़ाई भई रही है।" वह हकला कर बोला।

"बात ई है सुदर्शन चाचा कि बटेसर में मेरे साथ के हरीश और रुपवा ही नहीं, और भी आदमी हैं। शिबू के गण घूमते रहते हैं। तुम्हारे जैसे दक्ष का विनाश भी करते हैं और पतोहू के साथ रंगरलियां मनाने वालों का नारद-मोह भी देखते रहते हैं। हमरे पास सब खबर है। सुदर्शन तिवारी।"

"अबे जा, ओहर। नीचै है न? का सोचेगा? तेरे गन साले घूमत हैं तो पूछ कि का सबूत है कि हमार और कल्पू का झगड़ा हुआ रहा? चलो जी सोबरन ठाकुर। ई हरामी नम्बर एक है। देखो का बोल गया रमा के मेहरारु को।"

"यह तो चक्काबान की सुलेखिया डोमन से भी गई गुजरी है तिवारी।" मैंने कहा—"नहीं मुझसे गलती हो गई। सुलेखिया गरीब है, गन्दी है तन से भी, मन से भी, पर ऊ औरत है। तुम्हारी पतोहू सब है तिवारी, सिर्फ औरत नहीं है।"

मैं खिलखिला कर हंसा—"यार तुम्हारा यह जुमला हर संगीन मौके को कुछ देर के लिए हल्का बना देता है, फिर···?"

"अरे रिसर्चर, फिर, फिर की रट कब तक लगाता रहेगा। थोड़ा आराम कर ले।" शिबू ने कहा।

"मेरी किस्मत में पहली बार कुंभ का मेला लगा है। अमृत छलक रहा है, खूब नहा लेने दो शिबू मास्टर," मैंने छेड़ते हुए कहा—"बोलो आगे।"

"आगे क्या!" उसने थोड़ा चिढ़कर कहा—"आपको मेरी तारीफ करने का यही मौका मिला था। मैं पहले कल्पू का दाह-संस्कार करा लूं तो बताता हूं नीच लोगों को कि एक शरीफ औरत को बेवा बनाने का अंजाम क्या होता है। मैं इस बार अगर इसके पीछे नरैन भी हुआ तो माफ नहीं करूंगा। मैं इस बार यमराज को भी नहीं बख्शूंगा। देखिएगा आप लोग। चलो तिवारी चाचा उधर बैठें। हम लोग नीच हैं, सुदर्शन काका हमें अपने साथ बैठाने में तौहीन समझेंगे।"

"चलो भइया।" मैं, चन्द्रा, कल्पू का छोटा भाई महेन्द्र एक जगह घास पर बैठ गए। जहूर चाचा बन्ने मियाँ के साथ आए तो थे, पर उनको भांपते ही वे किनाराकशी करके हमारे साथ आ बैठे।

"क्यों ? हो शिवेन्दर।" तिवारी चाचा बोले—"तुमने कइसे कह दिया प्रापटी के हिस्से के बारे में, भैया ? कुछ एक तरह का गड़बड़ झाला भी है का ? कल्पू कहते थे कि काका हंसना मत मेरे दोस्त शिवेन्दर के दिमाग में एक फिरकी लगी है, ऊ तुरन्त भांप जाते हैं कि फिरकी पुरुवा से हिल रही है कि पछुवा से। कल्पू से झगड़ा हुआ रहा, ई सभ कइसे कह रहे होरे बचवा ?"

"मैं भी समझ नहीं पाई शिबू साहब उसे गुस्सा होना चाहिए था उसका चेहरा काला क्यों पड़ गया। यह तो एक नई खिड़की खुल गई, इस मामले में…।"

"सुनो…चन्द्रा चुपचाप बैठो। शान्त हो जाओ। धीरज रखो। कितनी खिड़कियां खुलती हैं। मैं देख लूंगा।"

कल्पू की लाश मिली। डा० सुभग मौर्य ने कहा—"क्यों शिवेन्द्र जी, क्या यह आपके रिश्तेदार थे ?"

"हां, डाक्टर।"

मौर्य ने कहा, "जरा मिल लीजिएगा हमसे। आपको कठिनाई तो नहीं होगी ?"

"किस बात में ?"

"अरे भाई एक मामूली डाक्टर का घर खोजना तो कठिन होता है न। फिर समाज शास्त्री डा० शिवेन्द्र के लिए तो मौर्य का घर आजकल पराया हो गया है। आपकी बहन रजनी पूछ रही थी कि कहीं मेरा आपसे झगड़ा तो नहीं हो गया। आइएगा। इफ यू आर इंटरेस्टेड।"

"ठीक है डाक्टर आऊंगा। रात गए आऊंगा, क्योंकि घाट पर काफी देर लग जाएगी।"

"ठीक है, मैं इन्तजार करूंगा।"

"यह सब क्या हो रहा है शिबू जी।"

"देखो चन्द्रा तुम्हारी यह बहुत बुरी आदत है कि किसी छेद से जरा सी पूंछ दिखी बस उसके आधार पर तुम सोच लेती हो कि छेद के भीतर बैल भी होना चाहिए।"

चन्द्रा हंस पड़ी। "कौन बात करेगा बाबा आपसे।" अचानक वह हिचक हिचक कर रो पड़ी—"शिबू साहब, अब अपना है ही कौन ?"

दाह संस्कार के बाद मैंने तिवारी जी से कहा—"चाचा, आपने अभी देखा, सुदर्शन तिवारी रमानाथ का दाह संस्कार कर रहे थे। वे आपसे उम्र में छोटे हैं। उन्हें दोनों भतीजों में फर्क नहीं करना चाहिए था। भाई-भाई के बीच खिचाव के लिए मैं ही जिम्मेवार हूं। इसलिए आपसे विनती कर रहा हूं कि एक पराए आदमी के नाम पर भाई-भाई का अलगाव उचित नहीं है। वे चिढ़े हैं मुझ पर तो मुझे गालियां देते रहें, मुझ पर कोई असर नहीं पड़ेगा। लेकिन आपको तो सटी-सटी

बरखी में रहना है। आपके परिवार में कल्पू ही था। एक युवक है महेन्दर आपका बेटा। आज तुम बहुत अकेले हो गए हो चाचा। इस पर सोच लो। बाद में तुमको पछताना न पड़े। लोग मुझ कुजात के साथ तुम्हें और तुम्हारी बहू चन्द्रा को जोड़-कर जाने क्या-क्या बकेंगे। चाचा तुमने अपने आप सोचा ना? तुम बोले थे—तुम्हारे दोस्त कल्पू थे। तुमसे चन्द्रा से क्या वास्ता?"

"ऊ तो भाई किरोध में मुंह से निकल गया। ओकरे खातिर हम तोंहसे छिमा मांग चुके हैं।"

"चाचा, छमा मांगकर मुझे छोटा मत बनाइए। यह दोष केवल आप में ही नहीं है। यह पूरे हिन्दुस्तानी समाज का है कि एक औरत अगर चौकठ बाहर जाती है तो उसे सन्देह से देखा जाता है। मैं तो यहां तक देख चुका हूं चाचा कि मैं सरस्वती के साथ जा रहा था तो एक ने पीछे से कहा—'क्या माल उड़ाए जा रहा है।' 'बड़ा भाग्य वाला लगता है।' दूसरे ने कहा। यह सब विष पीना पड़ता है। यही अच्छा रहेगा कि आप अपने गांव वालों के साथ चले जाइए…।"

"हूं, तो उनके मरते ही तमाम सम्बन्ध टूट गए।" चन्द्रा बोली—"चलिए काका। हम अब शिबू साहब के लिए भार हो गए।"

"तुम हर बात पर गलत ढंग से क्यों सोचने लगती हो। हिम्मत है, और सब कुछ को सुनने और सहने का धीरज हो मन में तो चलो। सुदर्शन तिवारी भी किसी ट्रेन के लिए बस अड्डे पर या स्टेशन पर रुक कर रात काटेंगे ही। गाड़ी तो सुबह को ही मिलेगी। बस भी अब नहीं जाएगी कोई। दस बज गया है। मेरा डेरा आपके स्वागत के लिए तैयार है।"

"बोलो बहू, डेरे पर चलें या नहीं?"

"काका आप यह सवाल करके मुझे अपमानित कर रहे हैं। मुझे एक दो क्या एक हजार सुदर्शन तिवारी हों और बकें कि मैं कुलटा हूं, तो बकें। इस तरह का जीना बोझ लगता है। जो हमारे हैं, वे हमारे रहेंगे। बदनाम होंगे तो भी साथ-साथ रहेंगे, यश मिले तो भी साथ-ही-साथ रहना है। जो आदमी हमारे लिए सुदर्शन तिवारी के सामने खड़ा होकर बोलता है कि अगर मेरी मौत से बटेसर का मामला सुलझ जाता है तो मारो लाठी…हम उसको छोड़ेंगे तो चाहे निन्दा से बच भी जाएं, पर अपनी आत्मा के धिक्कार से तो नहीं बच पाएंगे।"

"चलो बाबू जी," महेन्द्र बोला—"भाभी एकदम सच कह रही हैं। सुदर्शन चाचा से अच्छे व्यवहार की आशा कभी नहीं पूरी होगी, चाहे शिबू भइया के डेरे पर जाएं तो, न जाएं तो। गालियां तो रमा भैया के मौत के पहले भी दी जाती रही हैं। अब कौन-सी नई बात हो जाएगी। चलो शिबू भइया, चलो भाभी, आओ बाबूजी चलो डेरे पर।" महेन्द्र ने नेतृत्व सम्भाला और डेरे पर पहुंचे।

"अरे शिवेन्दर!"

"हां, चाचा बड़े अचंभे से बोल रहे हो क्या बात है ?"

"अरे भइया तोहरे डेरे के दोनों फाटक दो ओर खुले हैं, कोई लूटकर ले गया सब कुछ और तू मुस्कुरा रहे हो।"

"चलिए चाचा," मैंने पुकारा—"अरे हर्षनाथ पाण्डे जी।"

हर्ष दौड़ा हुआ आया—"क्यों शिबू भइया, बहुत क्रोध में हो क्या? आज जिन्दगी में पहली बार बेरुखी से बोले। मैं पाण्डे जी कब से बन गया आपके लिए ?"

"अरे यार, वैसे ही बक गया। एक नीच राजपूत के साथ हो तो जात-पात तो बचा के रक्खो।"

"सुन रहे हैं काका !" चन्द्रा बोली—"ई सब व्यंग्य आप पर बोला जा रहा है।"

"फिर वही पुराना ढर्रा···। बैठो चाचा। काठ की चौकी ही है।"

"दाह संस्कार किए हो। इसलिए पाण्डे से कह दिया था कि एक चौकी लगवा देना।"

"यानी हमारे रुकने का पूरा प्रबन्ध करके, परीक्षा लेने के लिए पूछा जा रहा था कि गांव जाओगे या डेरे पर रुकोगे।"

तिवारी चाचा, महेन्द्र और मैं उस गम की रात में भी ठठाकर हंस पड़े। चन्द्रा तिनक कर बगल वाले कमरे में चली गई। अच्छे दही में चीनी का शरबत बनाकर पाण्डेजी रखे हुए थे।

"शिबू भाई !" पाण्डे ने कहा—"ले आऊं ?"

"हां भाई, इसमें पूछने की क्या बात है ? वैसे ही चाचा के गले में एक बूंद पानी भी नहीं उतरा, चौबीस घण्टे हो गए महाराज। और आप पूछ रहे हैं ले आऊं ?"

"क्या लेने की बात है शिबू बेटा ?"

"कुछ नहीं चाचा। इस गम के मौके पर कोई अन्न तो छू नहीं सकता। पीड़ा तो पीड़ा है। पर उसी के साथ यह भी तो सोचना ही चाहिए चाचा कि आप अब वृद्ध हुए। बिना जल कितने दिन निर्जला रहोगे। और शरबत तो जल ही है। लाओ पाण्डे जी पहला गिलास हमारे चाचा को दो।"

तिवारी चाचा नाहीं-नाहीं करते रहे। मेरे आग्रह को मान गए। "यह दही वगैरह भइया तुमने कब मंगवा लिया ?"

"जो आदमी चौकी मंगवाकर रख चुका है, वह क्या शरबत दही नहीं मंगवाये होगा। इन सज्जन को धीरे-धीरे पहचानोगे काका। जब यह पूरा गला हलाल कर देते हैं तब पूछते हैं कि हिंसा बुरी है कि अहिंसा। आप लोग जल्दी गिलास उतारिये गले के अन्दर वरना कोई विचित्र चीज आती होगी तश्तरी में। आपसे जल्दी तो महेन्द्र जी जान लेंगे इन्हें। आपके बेटे जानते थे इन्हें। सो तो रहे

नहीं।" चन्द्रा कह रही थी। सहसा मेरी आँखों से झरझर आंसू गिरने लगे। मैं मुश्किल से हिचकी रोकने की कोशिश करता दालान में चला आया।

"का हुआ बहू ?"

"मेरी गलती से हो गया काका! मुझे इस तरह नहीं कहना चाहिए था।" उसने कहा और रोने लगी। दो मिनट के बाद वह मेरे पास आई—"क्षमा कर दो शिबू जी, मुझसे अपराध हो गया।"

"इसमें तुम्हारा क्या अपराध है चन्द्रा तुम तो मुझे इस स्थिति से बचाने के लिए लगातार झूठा प्रयत्न कर रही हो। इस तरह की बातें करती हो कि मुझे दुख न लगे। तुम कल्पू की चर्चा भी नहीं करना चाहती हो। तुम इस तरह बनावटी आचरण करती रहीं कि रमानाथ की पत्नी जैसी गलीज महिला की गालियां भी सह गईं ? क्यों ? इसीलिए न कि मैं तुम्हारी चिन्ता करना छोड़ दूं। अपने पति को भूल जाने का नाटक करके तुम मुझे बेवकूफ कब तक बनाओगी चन्द्रा। तुम रो लो पूरा। खूब रो लो। झूठी हंसी मत हंसो। रो लोगी तो भार कम हो जाएगा।"

"मेरा भार अब कहां है मेरे ऊपर। शिबू जी जब आपने बदला लेने का दायित्व खुद ले लिया। तो रोने से क्या होगा। रोने से मैं सधवा हो जाऊंगी क्या ? आप यह शरबत पी लीजिए। लाइए, पाण्डे जी मुझे दीजिए।"

"पाण्डे !" मैंने कहा—"यह गिलास चन्द्रा के लिए है, मेरे लिए दूसरी वाली लाइए।"

"पी जाओ देखती क्या हो, मीठे पानी में दो बूंद खारे आंसू गिर भी पड़ेंगे तो क्या अन्तर आयेगा।"

"आप एक तरफ रोने की आज्ञा देते हैं शिबू जी दूसरी ओर ऐसे वाक्य भी बोल देते हैं कि हंसी के मारे शरबत···" वह खांसने लगी, फिर आंसू पोंछकर धीरे-धीरे शरबत पी गई।

"यह क्या है ?" वह गुस्से से बोली, "मुझे शरबत पिलाकर अपना गिलास पाण्डे जी को लौटाने का मतलब क्या है ? हम सब गधे हैं ? आप बहुत ज्यादा नजदीकी बनने का नाटक कर रहे हैं ?"

"देवी, हर बात में क्रोध नहीं आना चाहिए। मेरा मन नहीं हो रहा है, पीने का। फिर भी लाचारी है। लाइए पाण्डे जी, नहीं पीऊंगा तो इस घर में अब युद्ध इस बात पर होगा कि शरबत में दही नहीं थी। एक कटोरी मलाई भी थी।"

"तो श्रीमान् आप समझते हैं कि हम लोग दही और मलाई में अन्तर नहीं कर सकते ? मैं तो मलाई बहुत कम लेती हूं, लेकिन जान गई कि शरबत में मलाई है। हमारे काका और महेन्द्र जी से पूछ लीजिए। वे जान गए होंगे, एकदम से तुरन्त भांप लेंगे क्योंकि दोनों मलाई के चट्टन हैं।"

"हां बेटे," महेन्द्र ने हमारी ओर आंख मारी। हम इशारे से कहे—"जो है पी जाओ !"

"अच्छा चाचा, आप लोग अब आराम करें। ड्राइंग रूम में पाण्डे जी सोयेंगे। कुछ जरूरत हो तो उनसे कह देना। मैं आता हूं अभी।"

बाद में पाण्डे ने श्वसुर, वधू और देवर की पंचायत का विवरण दिया।

"बाबू जी !" महेन्द्र ने शुरू किया—"आप सुन रहे हैं कि नहीं ?"

"सुन रहा हूं रे पर मन में बड़ी ग्लानि है। जब शिबू प्रापर्टी की बात किये तो सुदर्शन का चेहरा काला काहे पड़ गया ? नम्बर दुइ ये कि वह अपने सगे बेटों के साथ दाह संस्कार में काहे नहीं आया। उनकी जगह बन्ने मियां और ऊ साले नम्बरी चोर कलुआ अहीर को लेकर क्यों आया। भाई, समझ में नहीं आता। कहीं ऐसा न हो कि हमें धोका कौनो और ने दिया और क्रोध और पर उतार रहे हैं।"

"देखिए काका चोर की दाढ़ी में तिनका। आप ही बता रहे थे और महेन्दर जी भी कह रहे थे कि लड़ाई के समय वहां हरीश था ही नहीं। वह भीड़ के पीछे खड़ा था। सवाल है कि सुदर्शन काका जी ने जो रपट लिखवाई उसमें दोनों मौतों के लिए हरीश को जिम्मेवार कहा गया। जब सुदर्शन चाचा पुलिस को बयान दे रहे थे तो उनके मुंह से निकला था—हम हरीश को खोजने लगे, वह दिखा और मैंने गोली चलाई पर गोली सीने में नहीं लगी। पैर में लगी और घिसटते-घिसटते भाग गया। है न यही रिपोर्ट ?"

"हां, है तो !" शिवशंकर तिवारी ने कहा—"तुम खुलासा कहो, बहूरानी हमरी समझ में नहीं आय रहा है।"

"इसमें ऐसे टेढ़ी बात कहां है। हरीश जब पिस्तौल से मार रहा था तब वह सामने खड़ा होगा। उसको ढूंढ़ने की क्या जरूरत थी। सुदर्शन काका कहते हैं हम हरीश को खोजने लगे···यह सब कुछ उलझा-उलझा नहीं लगता ?"

"बिल्कुल लगता है भाभी। लगता ही नहीं दाल में काला है। एकदम है। क्योंकि कल्पू भइया को बुलाने के लिए सुदर्शन ने अपने लड़के किशोर को क्यों भेजा ? और भैया उसके साथ गए। उन्हें ले जाकर आगे खड़ा करके किशोर वहां से भाग क्यों गया ?"

"क्या, क्या कहा, किशोरवा हुआं नहीं था ?" तिवारी जी ने पूछा।

"हां, बाबूजी, वहां नहीं था। इस घटना के बाद ही मैंने किशोर को घर में घुसकर पकड़ा। मैंने कहा—क्यों किशोर भाई साहब, मेरे भैया को ले आकर आपने बलि चढ़ा दिया, और खुद घर में छिपे बैठे हैं। वे बोले—यह तिवारी परिवार की प्रतिष्ठा का सवाल है। मुझे उन्हें बुलाने का हुक्म आया, मैंने बुला दिया। अगर

आपके कल्पू भैया को प्रतिष्ठा की परवाह नहीं थी तो यहां आए क्यों ?"

"गदहे तुमने यह बात हमें बताई क्यों नहीं ?"

"अब जाने दीजिए बाबू जी। मैं कुछ कहूंगा तो आपको बहुत दुःख होगा। आपकी चाल-चलन···"

"चुप रहिए महेन्द्र जी, आपको बात करने का ढंग भी नहीं आता ? अपनी जीभ पर लगाम दीजिए। अभी आप बच्चे हैं।"

"भाभी जी आप गलत अर्थ लगा रही हैं। मैं अपने बाप के चरित्र पर कुछ नहीं कह रहा था। वह एकदम निर्मल है लेकिन इनके मित्रों में अक्सर चोर, घूस-खोर, डाकू, अत्याचारी, बेईमान लोग ही क्यों हैं ? सोबरन राय से इनसे क्या वास्ता है। क्या देगा वह इनको। सोनवां चमाइन के पेट में सोबरन का बच्चा था, वह जानती थी। उसने सबके सामने कुबूल किया, किन्तु इन्होंने शिबू को कुजात कहते समय एक मिनट के लिए सोचा कि अगर शिबू का अपराध होता तो क्या वे खुली सभा में अपने को अपराधी मान लेते। कोई इतना बड़ा विद्वान आदमी, ईमानदार आदमी ने अगर ऐसा किया तो सिर्फ इसलिए कि सोनवां की आत्महत्या की बात और उसके चरित्र की नीचता खुले नहीं, क्योंकि शिबू भाई साहब उससे प्यार करते थे। कल्पू भाई साहब ने कहा था—महेन्द्र, काका इतने राक्षस बन जायेंगे, मैंने तो ऐसी कल्पना भी नहीं की। वे शिबू को समझते क्या हैं ? शिबू चरित्रहीन दो कौड़ी का आदमी नहीं है, उसे समझने के लिए शिवशंकर तिवारी को तीन जन्म लेना पड़ेगा।"

"गदहे, तूने तब बताया क्यों नहीं ?"

"छोड़िए बाबू जी, बता देने से ही रातों-रात क्या आपका कायाकल्प हो जाता। खैर आपने जिन्दगी में एक पुण्य किया है, वही हमारे परिवार की रक्षा करेगा।"

"तू अपनी भौजाई की तरह पहेली मत बुझा, कौन-सा पुन्न किया है मैंने ?"

"वही शिबू भाई साहब की चचेरी बहन राजी का विवाह··· ।"

"फिर ?" मैंने पूछा—"यार यह तुम्हें हो क्या गया है। जब सुनने को दिल तड़पता है, तभी तुम चुप हो जाते हो।"

"मुझे तुम पर दया आ रही है रिसर्चर कि तुम्हें यह सब जो मेरे द्वारा, भोगा, देखा, जिया और खुद अपने को ही लहूलुहान करके सहा गया था, एक सस्पेंस में डाल रहा है। तुम कहानियों की दुनिया में रहने वाले हवाई इंसान हो दोस्त, तुम पूर्वांचल की औरत को समझ ही नहीं सकते क्योंकि जो तुम सुन रहे हो। वह सब अब तुम्हारी एरिया के लिए पुराने जमाने की कहानी हो गया है। शायद नहीं, एक

सस्ता मनोरंजन क्योंकि तुम्हें सोनवां और प्रतिभा बंसल में बहुत फर्क लगता है, लेकिन ध्यान से सुनते रहे हो, तो पूछो अपने से। बंसल की थकान और हर ठोकर के साथ औरत चरित्रहीन होती है, औरत चरित्रहीन होती है,···सोचो, यह पढ़ी-लिखी बंसल की आवाज है या इसमें कहीं तुम्हें पूर्वांचल की सोनवां की सिसकियां भी सुनाई पड़ रही हैं। औरत धन-दौलत से, गहनों से, आभूषणों से लाद भी दी जाये तब भी वह अकेली ही रहती है। समाज ने उसके इर्द-गिर्द जो दीवालें खड़ी की हैं, वे धन-दौलत से ढह नहीं जातीं। बंसल परिवार ने धन-दौलत को भी मंजिल नहीं समझा। उन्होंने अपनी बेटी के सामने की दीवालें तोड़ देने का प्रयत्न किया होगा। वह पुलिस अफसर बनी। एकदम खुद पे खड़ी, खुद पे निर्भर। लेकिन वह औरत बार-बार चरित्रहीन-चरित्रहीन चीख-चीखकर कहना क्या चाहती है कौन-सी···अनकही पीड़ा है जो उसे थककर बैठ जाने और बेसुधी की हालत में बार-बार एक ही सवाल दुहराने के लिए लाचार कर देती है—औरत चरित्रहीन होती है···औरत चरित्रहीन होती है। सोचो, अब रात के एक बज रहे हैं, सो जाओ। प्यारे।''

''नहीं बन्धु, यह बिल्कुल असंभव है। इस स्थिति में नींद नामुमकिन है। इसमें अगर लेटा भी तो लगेगा कि किसी ने बहुत अंधेरे टीले से मेरी छाती में गोली मार दी है। भैया कल जाने क्या हो? कौन जानता है? अब तक का हाल सुनकर तो लगा कि तुम बहुत भयंकर आदमी हो। जब भी करमूपुरा आते हो, एक-न-एक उत्पात खड़ा हो जाता है। बोलो मित्र। चलो, आगे चलो।''

मैं रात दो बजे लौटा था। इसलिए दबे पैर आगे बढ़ा।

''इस तरह दबे पैर चलने की कोई आवश्यकता नहीं है शिबू भाई साहब, हम बिल्कुल जगे हैं। बल्कि कहिए कि अब तक एकटक आपके आने की बाट निहार रहे हैं।'' महेन्द्र ने कहा। चन्द्रा और तिवारी जी भी बैठ गए। चन्द्रा जमीन पर लेटी थी। वह बिना बोले कहीं खोई रही। तिवारी जी ने कहा—'' 'शिबू भैया एक छिन भी देर नाही करो बेटे। हम बहुत अधीर होय गए हैं बेटा?''

''क्या सुनने को अधीर हो चाचा।''

''अरे भाई तुम उस डाक्टर के घर से तो आय रहे हो?''

''इसमें इतनी अधीरता की क्या बात है चाचा। वह तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा की थी न कि पोस्टमार्टम तो रुक नहीं सकता, शव में विकृति नहीं दिखेगी। यही मौर्या ने कहा कि लाश देखकर किसी को मालूम भी नहीं हुआ होगा कि गोली कलेजे से निकाली गई?''

''बस?''

"हाँ !"

"आप इन्हें जानते नहीं काका। ये सीधे आदमी नहीं हैं। आप इन्हें बिल्कुल बम भोला मत मान लीजिये। कहने को शिव हैं, असल में ये···"

"रावण हैं, यही न कहने जा रही हो चन्द्रा।"

"नहीं मैं शिव को रावण कभी मजाक में भी नहीं कह सकती, पर मुचुकुन्द जरूर कहूंगी। जब तक ये जगते नहीं शत्रु मर नहीं सकता। अच्छा शिबू साहब आप सुनीत की शपथ लेकर कहिए कि डॉ० मौर्या ने कुछ विशेष नहीं बताया आपको ?"

"भई चन्द्रा तुम्हारा हठ हमें बराबर बहुत चिन्ता में डाल देता है। मान लो कि मौर्या ने कुछ बताया ही हो तो उसे जानकर क्या करोगी ? या आप सब जानकर क्या कर लेंगे ? सिवाय इसके कि समय के साथ कदम मिलाते सावधानी से चलते रहना है। स्थितियों को भांपना है। अवसर की प्रतीक्षा करनी है। और क्या हो पायेगा ?"

"श्रीमन्" चन्द्रा ने कहा—"ये तीनों जन आज से आपके हो गए। हम कोई चीज, कोई सूचना कभी भी प्रकट नहीं करेंगे। आप जैसे सुनीत की शपथ से हिल जाते हैं वैसे ही हम भी आपकी शपथ ले रहे हैं कि हम मरकर चिता पर चले जायेंगे तब भी इस बात को किसी से नहीं कहेंगे। क्यों काका ? हम शपथ ले रहे हैं न ?" चन्द्रा बोली।

"बहू तूने ठीकै कही। कौन की हिम्मत है भइया कि हमरे गले से ई रहस्य निकाल सके ?"

"ऐसा है चाचा कि कल्पू और रमानाथ की छाती से जो गोलियां यानी बुलेट्स निकले हैं, वे पिस्तौल की नहीं रायफल की हैं। थ्री नाट थ्री की।"

"हे भगवान्" चन्द्रा छाती पीट कर रो पड़ी—"अपने खून के अटूट रिश्ते वाले लोग अपने ही सगे भाई का खून करेंगे। यह सब किस पाप का दण्ड दे रहे हो भगवान्। जब वे उनके रास्ते का कांटा थे तो वे सुनीत को भी मार डालेंगे। हमारे काका और देवर को भी मार कर सब कुछ छीनने का जतन करेंगे। हाय रे ईश्वर···।"

"क्या हुआ शिबू भइया," पाण्डे दौड़कर आये—"अब क्यों रो रही हैं सुनीत की माता जी। चुप हो जाइए बहन जी। सबका रखवाला राम है। जी छोटा मत करिये बहन जी। आपको शिबू भइया ने संभाल लिया···"

"रुको पाण्डे," मैंने टोका—"क्यों चन्द्रा, पहले चुप हो जा वरना हम सोच भी नहीं सकेंगे। हां चाचा—कल्पू ने मरते वक्त संभालना···क्या कहा था। पाण्डे ने संभाल लिया कहा तो अचानक···मगर—बोलो चाचा क्या कहा था···कल्पू ने ?" मैंने बदहवास की तरह पूछा ?

"मैं बताती हूं अक्षरशः। कहा था···'शीबू से कहना। संभालें वे'।" चन्द्रा बोली।

"हूं। क्यों चाचा अगर कल्पू को सन्देह न हुआ होता, वह अगर रिवालवर की गोली से घायल हुआ और जैसी रिपोर्ट है सब लोगों ने दौड़कर हरीश को पकड़ा, गोली मारी पर वह भाग गया···फिर किसको संभालने की बात कह गया मेरा यार। संभालना, संभालना···हुह···यानी कल्पू को साजिश का पता था। गलत आदमी पकड़ा जा रहा है, उसे लग रहा था···ठीक है दोस्त मैं संभालता हूं सुदर्शन के गुंडों को। तिवारी वंश के दीये को मैं बुझने नहीं दूंगा। सुदर्शन। तुम नाम के सुदर्शन हो। कातिल कभी नहीं बच सकता। मैं अपने सुदर्शन से तुम्हारी गर्दन काट कर ही दम लूंगा सुदर्शन तिवारी। कुत्ते की मौत मरोगे तुम।"

"एतना अन्याव" शिवशंकर तिवारी बिलख पड़े—"सुदर्शन को हमने अपने कलेजे का खून पिला कर पाला था रे भैये। इन लोगन के खातिर हम कौन-कौन पाप नहीं किये प्रभू, नरक दे देते हमें, पर मेरे आंख का तारा काहे छीन लिया···?"

"चाचा क्या औरतों की तरह रो रहे हो।" मैंने कहा—"तुम लोग अब चलो। तैयारी करो। जल्दी भागो यहां से। घर पर सुनीत के लिए किसी को सरेख के आये हो कि नहीं?"

"अरे बाप रे। चल बहू। जल्दी चल। एकसर सकुन्तलिया का कर सकेंगी हुवां। जब दुश्मन अपन भाइयै होय गया तो जमाना का करेगा अपने वास्ते।"

"पगलाइये मत बाबू जी" महेन्द्र बोला—"हम सुमिरन यादव को बैठा कर आये हैं। वहां कुछ नहीं हो सकता। जो होगा वह बाद में ही होगा। हम लोग भी देखेंगे। शिबू भइया आप स्टेशन मत जाइए। हम इन्हें ले जायेंगे। आप वह करिये जो हमारे बड़के भइया कह गए हैं। हमें बताइए कि इस षडयन्त्र में हैं साले कौन-कौन?"

"वाह महेन्द्र जीओ प्यारे। यह हुई न मरद की बात। घर छोड़ना मत। या छोड़ना पड़े ही तो किसी को बैठा कर जाना। हमें अगर जरूरत हुई तो तुमको संदेश भिजवायेंगे। कभी भी खुलना मत। कोई क्रोध नहीं, कोई आंसू नहीं। बिल्कुल तैयार चौबीसों घण्टे। और हां, मैं जानता हूं कि तुम्हारी भाभी खुद बहुत समझदार और साहस वाली महिला हैं, इनके मन पर अगर ठेस लगी महेन्द्र, तो मेरा काम बहुत बढ़ जायेगा।"

"आप शिबू भइया हमें क्या किशोर और सुदर्शन समझते हैं। यह मात्र भौजाई नहीं है भइया, यह मेरी मां भी है। मां का प्यार कब मिला। मां तो यही हैं।"

"तुम गलत समझ रहे हो, ठेस तुमसे या तुम्हारे पिता से नहीं, बीच की

चहारदीवारी के उस पार रहने वाली उस जलील औरत की बातों से लगेगी।"

"हम उसकी दवा जानते हैं शिबू भइया। कुछ कचाई है अभी, पर मैंने अपना गुरु पा लिया है।"

"कौन है रे तेरा गुरु ?"

"आप नहीं हैं क्या ?"

"तुमको भी बनारसी हवा लग गई ?"

जब वे चले तो मैं बाहर तक पहुंचाने गया।

अचानक चन्द्रा रुकी और मेरे पैरों की ओर झुकी···।

"नहीं" मैं पीछे हट गया—"चन्द्रा, क्या हो गया है तुम्हें। एक ब्राह्मण बहू हो तुम। मेरे मित्र की पत्नी हो। मैं बहुत छोटा हूं चन्द्रा···।"

"मित्र की पत्नी ब्राह्मण ही होती है और मित्र का मित्र सगा भाई रहता है। ठीक है शिबू साहब, जब आप मुझे पैरों में झुककर प्रणाम करने योग्य भी नहीं मानते तो नहीं छूऊंगी। आप उस जंगली असभ्य औरत से डर गए हैं। उसने कहा न कि सुनीत आपका बेटा है। आप नहीं चाहते कि दुबारा कोई ऐसा कहे। लेकिन आपके भाई ने यही तो मजाक में कहा था न कि देख शिबू मेरे सुनीत का मुखड़ा तेरे जैसा है···"

"नहीं···नहीं चन्द्रा···वह सब याद मत दिलाओ···" मैंने जेब से रूमाल निकाली और उमड़कर आती हुई रुलाई भरी हिचकियों को रोकने की कोशिश करता लौट पड़ा।

वह चुप हो गया। ठीक है शिबू प्यारे, आज यहीं विराम दे दो इस कहानी को। अब मेरे भीतर भी वह ताकत नहीं बची कि इसके आगे की व्यथा झेल पाऊं। चलो सो जायें। मैंने कहा और हम दोनों लाइट बुझा कर सो गये।

लेटे लेटे कमर अकड़ गई। दस-बीस बार करवटें बदलीं। दिमाग को झटका दिया। अब कुछ नहीं सोचूंगा। सो जाना चाहिए। कल जाने क्या हो···मन में उत्सुकता थी, पर इस तरह तो मैं पूरी तरह थक जाऊंगा। मैं जबर्दस्ती कुछ न सोचने के लिए आंख मूंदे अंधेरे रंग को देख रहा था। मैं सच कह दूं कि मैं अक्लमंद आदमी कभी नहीं रहा, न हूं। मुझे शिबू से कोई न जलन थी न चिढ़। शिबू बड़ा साफ आदमी है। हमेशा जब मुझे मूर्ख कहना होता है तो वह कहता है रिसर्चर··· मैं समझ जाता हूं कि इसके बाद वह एक व्यंग्य भरा सेंटेंस कहेगा। मैं उसे सुनने को तैयार रहता हूं। इसलिए मुझ पर उसके सेंटेंस का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं शिबू को एक दूध से जला शक्की किस्म का आदमी जरूर समझता था क्योंकि सोनवां के बारे में कुछ न जानते हुए भी शिबू के विरोधियों ने उसके कुजात होने

की बातें मेरे कानों में फुसफुसा दी थीं, पर आज मैं अपने को बहुत छोटा और तुच्छ समझ कर शर्म से गड़ा जा रहा था। क्या जरूरत थी बिना जाने यह कहने की। मैंने एक दिन अपनी कक्षा की लड़कियों के छिछोरपन की बात की तो उसने कुछ नहीं कहा। उसकी तटस्थता से मुझे गुस्सा आया था। मैंने व्यंग्य में कह दिया था। घाट घाट का पानी पीए हो गुरु। बड़े घाघ हो। तुमने अगर सुषमा जौहरी को देखा होता तो इस तरह अलग-अलग नहीं रह सकते थे। उसकी अदाओं पर विस्तार से कुछ सुनने को ललचाते। उससे मिलने का कोई बहाना पूछते। हम दोनों मिलकर उसे ऐसा पाठ पढ़ाते कि वह तुम्हारे पैरों पर गिर पड़ती। शिबू ने कहा था, रिसर्चर जो प्राणी आज से पांच हजार वर्ष पहले से मर्दों के पैरों पर गिरता रहा है, उनकी ठोकरें सहता रहा है, उनके बहकावे में फंसता रहा है, लाचार होकर बाजार में कोठे पर बैठता रहा है, जरा सी सहानुभूति की झलक पाते ही फिसल जाता रहा है। व्यर्थ की व्यक्तिवादिता के कारण अपनी ही तरह के इतर प्राणियों से झगड़े ठानता रहा है, एक दूसरे पर रीझे भौंरों को अकेले अपना बनाने के लिए सीमा तोड़कर नीचता पर उतरता रहा है, उसे मर्द के पैरों पर गिराने के लिए इतनी लम्बी-चौड़ी योजना की क्या जरूरत है। तुम जब चाहोगे, ऐसा प्राणी तुम्हारे पैरों पर गिर पड़ेगा। क्योंकि इस प्राणी के साथ एक ऐसा सपना सट गया है जो बहुत अच्छा नहीं है पर यह प्राणी वही बनने के लिए मरता है। इस प्राणी को दारा कहा जाता था। 'दारा' का मतलब होता है चींथ-फाड़कर फेंक देने लायक चीज़। सारे इतिहास को देख जाओ। जहां सीता चिथड़े-चिथड़े कर दी गई, ईश्वर-पुत्र को जन्म देने वाली औरत इसलिए ठोकरें खाती फिरी क्योंकि बिना विवाह के पुत्र जना था उसने। यशोधरा का सब कुछ लूट कर महामानव उसे तृष्णा कहकर चला जाता है। भैया प्रेमू ऐसे प्राणी के लिए पिंजड़ा बनाकर उसमें रोटी का टुकड़ा टांग दो, वह जिन्दगी भर के लिए तुम्हारा होकर उसी पिंजड़े में बन्द रहने के सुख का सपना देखता रहेगा। एक दिन भविष्य में सार्थक होने वाले सपने की आशा लगाये वह वक्त की मार से खंडहर बन जायेगा। वह जानता है कि ऐसा ही होगा। पर जाने कौन सा रस है, कौन सा स्वाद है जिसे चखने के लिए वह धीरे-धीरे मार डालने वाला विष निगलता रहता है और एक दिन पंछी उड़ जाता है, पिंजरा हड्डियों के ढांचे की तरह, पंजर की तरह यहीं पड़ा का पड़ा रह जाता है।

मैं शिबू से उस समय इतना परेशान हो जाता हूं जब वह मेरे निकट होते हुए भी पता नहीं कहां होता है। कौन सा हृदय होता है क्या मंजर है कि यह आदमी मेरी बेइज्जती कर रहा है, अपमान कर रहा है, ऐसा लगता है कि वह मेरी मित्रता को एक कौड़ी के बराबर भी महत्व नहीं दे रहा है। मैं उसकी पीठ पर हल्की सी थपकी देते हुए गुस्से में पूछता हूं—"कहां हो, क्या किसी से प्यार

हो गया है ? कौन है वह बोली यार। मैं तुम्हारे लिए आसमान के तारे भी तोड़ कर ला सकता हूं। वह हंसता है। इतनी व्यथा में डूबी हंसी मैंने नहीं देखी है। वह मुस्कराते हुए कहता है, प्रेमू मैं जिस तारे को प्यार करता था वह तो आसमान से टूटकर धरती में विलीन हो गया। तुम कौन से तारे तोड़ कर लाना चाहते हो मुझे बताओ, अगर जौहरी ही है वह तो बेझिझक कह दो, मैं हमेशा दूसरों के द्वार पर ही दीप जलाता रहा हूं। मेरे घर का द्वार तो सर्वदा के लिए अंधेरे में डूब गया है। वहां कभी न खत्म होने वाली अमावस्या है। तुम बताओ, मैं तुम्हारे द्वार पर दीपक जला दूंगा।

सच है दोस्त, तुम इसी तरह के आदमी हो। तुमने किस तरह से गैरों के द्वारों पर दीप जलाये हैं आज मैंने जाना है। मित्र क्षमा कर दो। मैं तुम्हें कभी समझ नहीं पाया। कभी तुमने यह सब बताया भी तो नहीं। शायद आज सोबरन राय से तुम झगड़ते नहीं तो ऐसा ताप न तो झेलना पड़ता न तो व्यथा इस तरह पिघलती। तुम वह सब जो छिपाकर छाती से चिपकाए रहते हो उसे कभी मैं जान भी नहीं पाता।

सुबह बहुत सुहानी थी। दक्खिनी हवा में अधपकी फसलों की खुशबू भरी थी। नित्य क्रिया से निबटकर नहा-धोकर हम लोग बाहर की चौकी पर बैठे थे। तभी नरैन जी का बेटा मोहन नाश्ता लाया। पीछे-पीछे बाल्टी भर पानी लिए नरैन जी खुद आए।

"भैया प्रेमू" वे मुस्कुराते हुए बोले—"मेरे शिबू भैया की नकल मत करना। ये तो एक अजूबा प्राणी हैं। इन्हें भूख लगती है, प्यास भी लगती है, पर उसे कोई जान नहीं सकता। राजी रहती थी तो भांप लेती थी। बिना पूछे जो कुछ भी खाने लायक होता था ले आकर इनके हाथ में थमा देती थी। तब भी ये इस धरती पर नहीं होते थे। वह इनकी पीठ में अपनी उंगली गड़ा देती थी—'भइया, कहां हो ? यह लो दूध में पका चिउरा लाई हूं। यह तुम्हें बहुत पसंद है न ?'

" 'अयं, अरे राजी, तू कब से खड़ी है यहां ?' ये बोलते थे।

" 'एक युग बीत गया।'

" 'मतलब ?'

" 'यानी यही कि शिव भगवान ने भी सती के मर जाने के बाद आधा युग बीतने पर दूसरी शादी कर ली। पार्वती को ब्याह लाये। परन्तु मेरे भैया तुम तो ऐसे शिवजी हो जो कभी सोचते ही नहीं कि घर में भौजी आ जाए तो तुम्हें बनारस में ठीक समय से नाश्ता-भोजन तो मिला करेगा ? कम-से-कम किताबों की धूल झाड़-पोंछकर कोई तुम्हारी मेज-कुर्सी तो ठीक कर दिया करेगी।'

" 'बहुत तेज हो गई है' हमारे शिबू भैया हंसते और उसकी चोटी पकड़कर झटका देते। राजी का चेहरा इनकी आंख के ठीक नीचे हो जाता···।"

"चुप करो नरैन।" शिबू बिगड़ गया था—"पुराने मुर्दे क्यों उखाड़ रहे हो। क्या लाभ ? तुम यह कहानी क्यों सुना रहे हो ? लो मैं ही पूरी कर देता हूं। उस वक्त मेरी आंख से आंसू की एक बूंद टपकती थी और राजी की आंखों में खो जाती थी। बस हो गई न पूरी। अब आराम से बैठ जाओ।" शिबू ने मुंह फुला लिए।

"आप ही समझाइए प्रेमू भैया।" नरैन ने मोहन की ओर इशारा किया। लड़का हलुवे की कटोरी उसके हाथ में रखकर बोला—"काका, नाश्ता कर लो जल्दी। हमें होरहा खाने भी तो चलना है सीवान में।"

"ओह, हां रे मोहन ले आ, नाश्ता कर लें, होरहा खाने तो चलना ही है। पूरे गांव में जितने भी लोग होरहा का शौक रखते हों सबको न्यौता दे आ। आज अकेले में होरहा नहीं खायेंगे हम। थोड़ी देर हो गई वरना बटेसर से लेकर अलमखातोपुरा तक सारी दायादी को होरहा का न्यौता देता। आज से हमारी होली शुरू हो गई। संवत् जलने में तो पांच दिन की देर है, लेकिन आज हम ऐसा संवत जलाएंगे कि लपट आसमान को छू लेंगी।"

नरैन के सारे बदन में सिहरन दौड़ गई। मैंने देखा उनकी बांहों के रोयें कांटों की तरह खड़े हो गये। मोहन स्वयं ही परेशान था, पर शायद अपनी बुआ राजी की तरह वह भी शिबू को जानता था। बोला—"वाह काका, मुद्दत बाद आपका आना हुआ। देर से आए पर ठीक वक्त पर आये। जल जाये होली काका। लेकिन वादा करो मुझे अपने साथ ले चलोगे।"

"तुम्हें अपने साथ कल-परसों कभी बाद में ले चलेंगे मोनू। आज का होरहा तो सिर्फ मेरे और प्रेमू के लिए है। उसके बाद ईख का रस भी तो पीना है न ? उसमें तुझे साथ लेकर चलेंगे।"

शिबू कटोरी से हलवा निकाल कर खाने लगा। "खाओ न प्रेमू। क्या घूरकर देख रहे हो उल्लू की तरह। मैं कोई अजायबघर नहीं हूं। कोई नई चिड़िया दिख रही है क्या ? मेरी ओर इस कदर चुगद की तरह देखना बन्द करो।"

हम सब चुप रहे। मैं भी उसकी ही तरह कटोरी से हलवा निकाल कर खाने लगा। बोला—"क्यों रे मोनू ! जहूर चाचा तो नहीं आए थे न ?"

"जहूर चाचा !" मोनू ने पूछा।

"जहूर चाचा !" नरैन जी बोले—"उन्हें आपने बुलाया था भैया ?"

"और नहीं तो क्या पागल हूं कि सुबह-सुबह जहूर चाचा का सपना देख रहा हूं। जहूर चाचा ने खुद कहा था भाई आने को।"

"मैं आ गया बेटे" जहूर चाचा गली से नरैन जी की दालान की ओर मुड़ते

हुए बोले—"तुम्हारी अंग्रेजी में कोई कहावत है शिबू साहब कि शैतान का नाम लो और शैतान हाजिर। दो मिनट देर हो गई। असल में रोशन ने नाकों दम कर दिया है।"

"रोशन ने ?" शिबू ने कहा। "पागल हो गए हो क्या। बूढ़े हुए तो होश-हवाश भी खो बैठे। रोशन तो इस कदर की लड़की नहीं है कि किसी की नाक में दम करे। हां, उसे करना पड़ा तो वह किसी और का जीना जरूर हराम कर सकती है। क्या हुआ, बन्ने मियां का सदरू आया है क्या ?"

"सुनो शिबू, तुम सीधे क्यों नहीं समझा देते। खुलासा कहो। न रोशन कुछ साफ बता रही है न तो तुम। आखिर तुम लोगों ने जहूर मियां को क्या अगमजानी समझ लिया है। मेरे दिमाग में कोई फिरकी-सिरकी नहीं लगी है कि जरा-सा मौसम बदला तो जान जाऊं कि बारिश कब होगी और कहां होगी। भैया मैं देहाती इंसान हूं। थोड़ा पढ़ा-लिखा हूं। वक्त को जरूर पहचान कर चलता हूं, पर तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि सदरू आया है। बड़े तड़के जब तुमने होरहा पार्टी की दावत दी तो मैंने कुबूल कर ली। पर उस वक्त सदरू तो दूर कोई नन्हा-सा परिन्दा भी नहीं था मेरे दरवाजे पर। फिर सदरू के जिन्न को कैसे देख लिया तुमने ?"

"सुनो जहूर चाचा, तुमने यह शेर सुना है—

मैंने माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
ख़ाक हो जाएंगे हम तुमको ख़बर होने तक"

"देखो बरखुरदार शेरो शायरी से मेरा कोई वावस्ता नहीं। लेकिन तुमने जो चीज सुनाई है उससे मेरी परेशानी बढ़ गई है ? कौन गफलत नहीं करेगा। कौन है जो तगाफुल न करेगा। ख़ाक कौन होने जा रहा है ? शिबू।" जहूर मियां ने उसके कालर पकड़ कर कहा—"मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूं बेटे, अब और मत छुपाओ। क्या होने जा रहा है ? तुम गांव जब भी आते हो एक न एक वजह होती है। सोबरन राय ने बदतमीजी की। मुझे परेशानी नहीं है। तुम होली जला दो मैं तुम्हारे साथ हूं। पर रोशन की परेशानी का सबब तो दिल में छुपा कर मत रखो। जहूर मियां की कोई दूसरी औलाद नहीं है। रोशन अगर ख़ाक हुई शिबू तो याद रखना तुम जहूर मियां के ताबूत में कंधा भी नहीं लगा सकते। हमको खबर दो। ख़ाक बनने के पहले ख़बर दे दो शिबू। रोशन के बिना मैं जी नहीं सकता। मैं घर-बार छोड़कर भाग जाऊंगा। मैं अपनी आंख के सामने रोशन को ख़ाक होते देखने की ताकत नहीं रखता। मैं खुदकुशी कर लूंगा।"

"चाचा तुम इस तरह की कायराना हरकत करोगे, यह तो मेरे अन्तर्यामी ने भी नहीं सोचा। तुम हर मुहिम में आगे-आगे चलते रहे हो। इंसाफ की हर लड़ाई की तुम अगुवाई करते रहे हो। बस एक बौछार गिर पड़ी खुद अपने ऊपर तो मोर्चा छोड़कर भागने की बात कर रहे हो ? इसी दम-खम से तुम बन्ने मियां जैसे शैतान

से लड़ोगे ?" उसने कहा और चुप हो गया। मैं अजीब गोरखधंधे में फंस गया। यह सुबह चार बजे कब जहूर मियां से मिल आया। बातें करने के लिए आठ बजे बुला भी लिया और सारी रात करवट बदलने वाला मैं जागते रहने का वहम लिए लेटा रहा, और यह आदमी सबकुछ कह चुकने पर जहूर मियां की ओर इस तरह मासूम चेहरा बनाए देख रहा है कि नरैन जी परेशान हैं। मैं परेशान हूं। मोहन अलबत्ता बड़ा खुश लग रहा था। शायद वह अपने काका के हैरत भरे कारनामों को देखने की उत्सुकता छिपा नहीं पा रहा था।

"बात क्या है शिबू भाई ?" नरैन जी ने पूछा।

"कुछ खास बात नहीं है नरैन। गोरखपुर की बड़ी जान, छोटी जान को जानते हो ?"

"वो रंडियां ?"

"हां, वे रंडियां ही। आजकल बन्ने मियां उन्हीं के कोठे पर आराम कर रहे हैं। साठ साल पूरे करके उन्हें अब जाकर ज्ञान मिला है कि रोशन और सदरू उनके दुश्मन हैं। खैर रोशन से वह चिढ़ा है, इसकी तो वजह साफ है। दो कारण हैं। नम्बर एक यह कि रोशन एक बार जब बहुत बीमार थी मेरे यहां ठहरी थी। मेरे जैसे नीच राजपूत के साथ। चाहे मैं उसे बहन ही मानूं, एक नौजवान लड़की का ठहरना पाप है। इससे बन्ने मियां की पगड़ी उछाल रहे हैं उसके दुश्मन। कह रहा है कि इस तरह की खानगी लड़की को वह अपने घर में नहीं रहने देगा। दूसरा कारण भी घूम-फिरकर मुझसे ही जुड़ा है। बटेसर वाले कतल में सुदर्शन तिवारी ने बन्ने मियां को समझाया कि करमूपुरा से सोबरन राय तो चल ही रहे हैं लाशों के साथ, अगर जहूर को भी बुला लो तो यह मामला थोड़ा मजबूत हो जाएगा। हरीश कामरेड हिन्दू मुसलमान में अन्तर नहीं करता। बन्ने मियां को यह काम सुदर्शन तिवारी ने सौंपा कि दो मुसलमान साथ हुए तो हरीश को आसानी से दुहरे चरित्र का आदमी सिद्ध किया जा सकता है। पुलिस अफसरान पर जोर पड़ेगा कि इस आतंकवाद के खिलाफ हिन्दू मुसलमान एकजुट होकर लड़ रहे हैं। जहूर चाचा को इस दोतरफी मार करने वाली शमशीर की जानकारी नहीं थी। चीर-फाड़ घर के बाहर जब सुदर्शन के गुंडे मुझे मारने चले, सोबरन राय और बन्ने मियां ने कहा— रुक क्यों गए। खतम कर दो इसे। उसी वक्त जहूर चाचा शमशीर की जद में आ गए। उन्होंने मेरी तारीफ के पुल बांध दिए और गुस्से में बन्ने मियां को गिरा हुआ इंसान कह दिया। अब अगर बन्ने मियां उस बेइज्जती का बदला चुकाना चाहता है तो उसको क्यों दोष दे कोई ? बोलो नरैन, सारी समस्या और परेशानी की जड़ तो मैं हूं न ? गलती मेरी है और सजा रोशन और जहूर चाचा को दी जा रही है। यह क्या इंसाफ है ?"

"हूं तो मेरी ईमानदारी की सजा मेरी बेटी को दी जा रही है। शिबू के सामने

मैंने कहा था कि रोशन उन्हें फरिश्ता कहती है। मैंने कहा था। जब जरूरत होगी तब कहूंगा। यही कहूंगा। मेरे बदन के टुकड़े-टुकड़े काटो, हर टुकड़ा यही कहेगा? शिबू फरिश्ता है, शिबू फरिश्ता है···।" जहूर चाचा कह रहे थे कि उसने डपट कर कहा—"तुम मूर्ख हो। चुप रहो।"

शिबू के मुंह से ऐसे अलफाज कभी नहीं निकले होंगे जहूर चाचा के प्रति। वे मार खाए बच्चे की तरह शिबू को देख रहे थे।

"माफ कर दो चाचा। गुस्सा रुक नहीं पाया। मैं शर्मिन्दा हूं।" उसने कहा और आंखें नीची कर लीं। सभी चुप रहे।

"जहूर चाचा।" शिबू ने कहा—"आप घर जाइए। सदरू तो रुकेगा ही। आप तीन आदमियों के लिए खाना भी बनवा लीजिएगा। या रहने दें, मैं नरैन से कहकर अपने यहां ही बनवा लूंगा।"

"नरैन से क्यों बनवाओगे। मेरे घर क्या तीन लोगों के लिए खाना भी नहीं जुट पाएगा?"

"चाचा अब शान्त हो जाओ। तुम्हारे यहां खाना खाने हमारे गेस्ट्स तभी जाएंगे जब तुम मुझे माफ कर दोगे। नम्बर दो यह कि अब तुम किसी के खाक होने, किसी के तगाफुल करने, किसी को खबर होने, न होने पर कुछ नहीं सोचोगे। तुम्हें पांच घंटे इस तरह गुजारने होंगे जैसे फिल्म में खामोशी का नाटक होता है।"

"मैं फिलम-सिलम नहीं देखता," जहूर चाचा बोले—"खामोशी तो जाने कब से मेरी बीबी बन गई है बरखुरदार। इससे सच्च कुछ भी नहीं है आज की दुनिया में। चलता हूं। कितने बजे आएंगे तुम्हारे दोस्त।"

"ठीक ग्यारह बजे।"

"तुम और तुम्हारे साथ वाले दोस्त भी आज मेरे यहां ही खाएंगे।"

"क्यों जहूर चाचा," नरैन जी बोले—"मुझे न्यौता नहीं दोगे। मैं वहां हर हालत में रहना ही चाहता हूं। कुछ बोलूंगा नहीं।"

"पूछ लो इस सिरफिरे लौंडे से। यह कहे तो आ जाना।" जहूर चाचा चले गए।

साढ़े दस बज रहे होंगे। सहसा जहूर चाचा के बरामदे पर बन्ने खान नमूदार हुए। आते ही बोले—"कहां हो जी जहूर मियां। तुमसे हमारा कोई न कोई रिश्ता रहा न कोई मेल-जोल। इस गन्दी जगह पर क्यों बुलाया गया हूं। बोलो, किधर हो। हुंह, कुछ सोचना न समझना। चिट भिजवा दिया कि चले आओ करमूपुरा। क्यों भाई कहां हैं जहूर मियां?"

"आपके स्वागत की तैयारी कर रहे बन्ने खान। आकर बैठ जाओ यहां कायदे से।" शिबू ने कहा।

"हूंह तुम हरामी की औलाद यहां भी टांग अड़ाने आ गए।"

"सुन ले स्साले बन्ने···।" नरैन खड़ा हो गया—"तू क्या समझता है कि हमारे रगों में सुभग सिंह का खून बहना बन्द हो गया है। तूने हमारे बड़े भाई को हरामी कहा है, मैं बताता हूं दोजख के कीड़े···।" नरैन जी जूता निकाल कर दौड़े।

"नरैन जी" जहूर चाचा बीच में आ गए—"ये आपके रिश्तेदार हैं नरैन जी। इन्होंने गुस्ताखी की है। इनके दादा सुभग सिंह के सामने तीन बार झुक कर सलाम किया करते थे। और सुभग ठाकुर उन्हें गले से लगाकर बगल में अपनी चारपाई पर बैठाते हुए कहते थे—मकबूल मियां जमाना बदल गया। न तुम जमींदार रहे न मैं। अब भाई-भाई के बीच यह दिखावटी सलाम बन्द करो। जब मिलो तो गले मिलो। यह सलाम, यह प्रणाम तुम्हें हमें बहुत अलग कर देता है।"

"अपनी तकरीर बन्द करो जहूर मियां। हम तुम्हारे नापाक दरवाजे पर एक आवारा सख्श की तारीफ सुनने नहीं आये हैं।"

"नहीं आए हो तो जाओ।" जहूर मियां ने कहा—"ये लोग मेरी वजह से कुछ कह नहीं रहे हैं। तुम बार-बार गालियां बक रहे हो। तुमको मैंने नहीं बुलाया था। मैंने दावतनामा नहीं भेजा था तुम्हारे पास।"

"किसने भेजा था तब?"

"मैंने अब्बा हुजूर, मैंने।" सदरू ने कहा।

"क्यों बे तू बिना मेरे हुकुम के यहां कैसे आ गया? बहुत शातिर बनता जा रहा है आजकल। तुम्हें शर्म नहीं लगती। इन गिरे हुए इंसानों के बीच अपने बाप की बेइज्जती देख रहा है। तेरी आंखों से शर्मोहया जाती रही।"

"अब्बा हुजूर आप उसी पाक जगह पर रहिए जहां छोटी जान की जूतियां पोंछते हो। बड़ी जान की कदमबोसी करते हो।"

"हूं तो तुम सबों ने मिलकर मुझे बेइज्जत करने का मंसूबा बनाया है। मैं ऐसे ठगों के गिरोह से डरने वाला नहीं हूं। मैं पुरुषोत्तम नहीं हूं बन्ने हूं, बन्ने।"

तभी घरघराती हुई जीप की हार्न सुनाई पड़ी। बन्ने मियां उछल कर शिबू के पास आए—"शिबू बेटा, कहीं वो प्रतिभा बंसल तो नहीं आ रही है? वह तो जहूर को बहुत मानती है। मेरा कोई कसूर नहीं है बेटा। मैंने गुस्से में बक दिया। मेरी बहू तो हीरा है हीरा। मुझे बचा लो शिबू बेटा। मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूं।"

शिबू ने शरारत से कहा—"बन्ने चाचा यह तो प्रतिभा बंसल की मां है?"

"अयं? या खुदारा गर बेटी ऐसी चढ़बांक है तो उसकी मां तो आफत की परकाला ही होगी।" बन्ने मियां चारपाई से कूदकर बरामदे के भीतर के कमरे की

ओर बढ़े।

"भागो मत अब्बा हुजूर, जरा मिल तो लो। मैं भी देखूं। मुझे भी पता नहीं है अब्बा। कसम खुदा की। आइए। रहिए यहीं। चुपचाप देखते चलिए।"

तभी दो नौजवान मर्द और एक बूढ़ी औरत बड़ी शालीनता से चलते हुए बरामदे के पास आए—"नमस्कार गुलशन बुआ," शिबू ने कहा।

"जीते रहो बेटे, कहां है वह बन्ने। अरे वकील साहब आप बाहर क्यों खड़े हैं। हनीफ बेटे, तुम भी आ जाओ यहां। चारपाई पर बैठ जाओ। भई तुम्हारी आफिस की तरह कूलर की ठंढक तो यहां है नहीं।"

"आइए बुआ जी, हमारे पास ताड़ की पंखियां हैं। कोई तकलीफ नहीं होगी आप लोगों को।"

"क्यों शिबू बेटे ये क्या तेरे भाई हैं। चेहरा बहुत मिलता-जुलता है?"

"ठीक कह रही हो बुआ, मेरा छोटा भाई है नरैन। आपका भतीजा।"

"जीते रहो बेटे, तुम्हारे इलाके को तो अब तक बहुत से मरहले पारकर चुकना चाहिए था। मगर आपसी रंजिश की वजह से मेरा गांव बटेसर और तमाम इर्द-गिर्द के लोग चालीस साल बाद भी जहां के तहां हैं। कोई तरक्की नहीं हुई।"

"पानी लो बुआ। हनीफ भाई तुम आधे घंटे में घबरा गए गांव से। अरे यार तुम्हारे सपने कहां गए?"

"मैं कहां घबराया हूं बिरादर सिवेन्दर, मेरा तो इरादा अब भी वही है। मैं तो बटेसर में अपनी जमीन पर अस्पताल बनवाऊंगा।"

"कौन है रे सदरू।" बन्ने मियां बोले—"ई हमारी जमीन को अपनी कहने वाला कहां से आ गया?"

"छिप कर क्या बैठा है रे बन्ने।"

"गुलशन आपा···।" बन्ने मियां बोले।

"शुकर है खुदा का तूने पहचान तो लिया। मैं तो सोचती थी कि सामने आते ही पूछोगे कि यह बुढ़िया कौन है।"

सहसा बन्ने मियां भावुक होकर अपनी बड़ी बहन के पैरों में गिरना ही चाहते थे कि बूढ़ी औरत ने पांव सिकोड़ लिए बोली—"ना···ना···ना दूर रह मुझसे। तूने डोमनों के कोठे पर जाके हमारे खानदान की नाक कटवा दी। इस उमर में तुझे अजमेर में ख्वाजा की दरगाह जाना चाहिए था, हज पर जाने का फैसला करना चाहिए था लेकिन अहमक तूने तो हमारी ऐसी मट्टी पलीद कराई कि शहर में मुंह दिखाने के काबिल भी नहीं रहे। क्यों रे तूने यह कैसे कह दिया कि बटेसर की सारी जमीन तेरी है। मेरा और नरगिस आपा का बाप की जायदाद में कोई हिस्सा नहीं बनता?"

"हिस्सा तो है बुआ, पर···आप लोगों ने तो छोड़ दिया था।" सदरू बोला।

"तू कौन है ? यह कौन है सिवेन्दर ?"

"अरे बुआ तुम्हारा सगा भतीजा और जहूर मियां का दामाद है सदरुद्दीन ।"

"हूं, क्यों रे सदरू तेरा बाप सारी मौरूसी जायदाद डोमनों के नाम रजिस्टरी करने जा रहा है। तुझे मालूम भी है कुछ ? हम तो अपना हिस्सा अब भी नहीं मांगते। उस पर अगर बन्ने की औलाद काबिज रहती तो कोई बात भी थी, मगर जब यह डोमनों को तोहफे में सारी जमीन दे रहा है तो बेटे तू ही बता, हम अपना हिस्सा मांगें या नहीं ?"

"यह तो बुआ मुझे मालूम भी नहीं था कि इस दोजखी कुत्ते ने हमारे दादा की मौरूसी जमीन रंडियों के नाम कर दी है।"

"कर नहीं दी है, करने जा रहा है। अरे सलीम मियां···"

"हां चाची ।"

"जरा बन्ने को रजिस्टरी का वो मसौदा तो दिखाओ जिसे डोमनों के वकील सूरजभान ने बनवाया है, दिखाओ सदरू को। और समझा दो कि इसके नाम एक बित्ता जमीन भी नहीं बचेगी। देख भाई सदरू देख ले ।"

"क्यों रे कमीने, तू बाप है कि दुश्मन है ? बोल···।"

"रुक जाओ सदरू," हनीफ ने कहा—"यह जमीन जायदाद का मामला है। इसे ठंडे ढंग से सलटाओ। तुम यह मत समझना कि बटेसर की जमीन में हिस्सा लेने के लिए मैं ऐसी बातें कर रहा हूं। नहीं। वह अगर तुम्हें मिल जाती है और रोशन पर जो तोहमत तुम्हारे बाप ने लगाई है वह वापिस लेकर उससे माफी मांगते हैं तब तो हम हिस्सा नहीं मांगेंगे। वरना पूरा हिस्सा लेंगे। यह देखो नरगिस आपा की सर्टिफिकेट है। उन्होंने मेरी मां और अपने हिस्से का वारिस भी मुझे ही मुकर्रर किया है। एक बटा तीन बचेगा। तुम अपने बाप से हिस्सा लो या उसे रंडियों को नजराना में देने दो···हमें उससे कोई मतलब नहीं हैं। हम इस खानदान की इज्जत से जुड़े हैं। जग हंसाई हमारी हो रही है। लो, तुम भी देखो। यह कल के अखबार में छपा है। तुम्हारे बाप की सारी कारगुजारियां पढ़कर हम इतने शर्मिंदा हो रहे हैं कि दो दिन से मरीजों को देखने नहीं गया···मैं···।"

"और मैं रात भर उलटियां करती रही।" गुलशन आपा बोलीं—"छिछोरे-पन की भी कोई हद होती है। हनीफ की बहन रजिया शिवेन्दर के यहां अक्सर जाती है। राखी पर वह सबसे पहली राखी रजिया से बंधवाता है। तेरा बाप कहता है कि रोशन शिवेन्दर के डेरे पर रही, इसलिए गन्दी हो गई। तेरा बाप बिल्कुल तोताचश्म मुजरिम है। उसने बटेसर में क्या-क्या कर्म कराये हैं, यह सब लिखा है इस अखबार में। पढ़ ले तू भी। बन्ने पढ़ ले, हिंदी न आती हो हनीफ उर्दू में बता देगा। ले पढ़ और देख। या परवर-दिगार जिस खानदान को लोग-बाग शेखों से भी ज्यादा पाक-साफ कहा करते थे वही पठानी मायका मेरे सीने में बर्छी की तरह

घुसा है। क्या हुई वह इज्जत, कहां गई हमारी आदमीयत।"

सब लोगों ने साथ बैठकर खाना खाया। रोशन खिला रही थी। वह बन्ने मियां से दूर दूर रही।

"क्यों रोशन अपने ससुर को रोटी के लिए नहीं पूछ रही हो। यह कौन सी तहजीब है?" शिबू ने कहा।

"तहजीब नहीं भाई साहब, यह डर है, कहीं अब्बा मुझ गन्दी औरत के हाथ की रोटी थाली से निकाल कर बाहर फेंक दें तो?"

"अब माफ भी कर दो बेटी, मुझसे गलती हो गई।" बन्ने मियां बोले—"फुल्के बहुत अच्छे बने हैं।"

"अब्बा, बेकार की तारीफ क्यों कर रहे हो रोशन की। फुल्के अच्छे तो छोटी जान बनाती होगी।" सदरू ने कहा।

"चुप करिये···बाप से बोलने का यही तरीका होता है?" रोशन ने कहा।

"लड़के की गलती नहीं है रोशन। बाप बेटे के साथ सही तरीके से पेश नहीं आयेगा तो लड़का क्या करेगा? तुझे शर्म आनी चाहिए बन्ने। एक तहजीब है रोशन की जो अपने मर्द को डांट रही है कि अब्बा से ऐसे नहीं बोलते और एक है तेरी जो डोमनों से सीखी है। देख हनीफ, यह है गाय-सी सीधी-सादी, गुड़िया जैसी औरत···।"

"अम्मी अगर आपने यही बात एक साल पहले कही होती तो आपके घर में मैं यह चांद लाकर सजा देता।"

"जाइए हनीफ भाई, आप तो मजाक करने लगे।" रोशन भाग गई।

चार बजे के आसपास इकरारनामा हो गया। सारी जायदाद रोशन और सदरू के नाम दर्ज कर दी गई। चलते वक्त बन्ने मियां ने शिवेन्दर के सामने हाथ जोड़कर पूछा—"क्यों भई बटेसर के लोगबाग आज भी पूछते हैं। इतने संगीन जुर्म के बाद भी तुमने मुझे बख्श क्यों दिया?"

जहूर चाचा मुस्कुराए—"बन्ने मियां इसलिए कि यह आपकी बहू का असली भाई है।"

"खुदा हाफिज।" सभी विदा हो गए।

हमलोग बन्ने मियां को लौटाकर आ रहे थे कि जहूर चाचा, नरेन जी और मैं एक साथ बोल पड़े—"इन लोगों से ऐसा गाढ़ा परिचय कैसे हुआ शिबू। बोल इनसे अचानक तुम कैसे जुड़ गए।"

"बात यह है जहूर चाचा, आप या मेरा नरैन या दोस्त प्रेमू सभी धीरे-धीरे उस बीमारी की गिरफ्त में जा रहे हैं जिसे गीता में औंधे मुंह लेटा पेड़ कहा है। यह तो इस दुनिया के लिए कहा था अच्युत ने, योगेश्वर कृष्ण ने, यह दुनिया अपनी जड़ें अन्तरिक्ष में रखती है। इसीलिए वह दुनिया को खुदा से जोड़ती है। लेकिन जब इन्सान अपनी जड़ों को उलट देता है, रिश्ते हवाई हो जाते हैं, खाली आसमान में लटक जाते हैं, तो नतीजा एक ही होता है, खालीपन, अकेलापन, और निर्वासन। आज की हालत देखकर हमें रोना आता है तुम पर। हमारे बचपन तक ऐसी हालत नहीं थी। हम जैसे गांव में रिश्तों से जुड़े रहते हैं, वैसे ही कहीं जाओ तो तुम्हें लगेगा कि इलाके के रिश्ते भी प्रेम की डोर में बांध लेते हैं। हम गांव वाले पता नहीं कितनी पुरानी वंशावली के रिश्तों में बंधे हैं। रघू गोंड को मैं दादा कहता हूं। रघू गोंड मेरे चाचा से उमर में छोटे थे। चलो मान लिया कुछ बड़े थे, पर वे मेरे दादा क्यों हो गये। बाकी लोगों की तरह चाचा ही रहना चाहिए था। लेकिन नहीं, कोई वंशावली है, हमारे दादा को वे भाई कहते रहे होंगे, मैं पूछूं तो यह मालूम हो जायेगा कि मेरे लकड़दादा उनके दादा को चाचा कहते थे? वे बताएंगे कि मेरे लकड़दादा उनके दादा को चाचा कहते थे। है न विचित्र। यानी गांवों में बसने के समय के रिश्ते नीचे ऊपर होते रहते हैं। नरैन मेरा भाई है, पर उत्तर टोली के बुड्ढे लोग उसे बाबा कहते हैं। हमारी बखरी के सामने एक जायसवाल परिवार है प्रेमू! उसके मुखिया बांके बिहारी बोले—अरे भैया शिबू जरा हमारी पतोहू का खियाल किया करो। मैं आश्चर्य से बोला—किस पतोहू का?—अरे तुम्हारी मां है भाई हमारी पतोहू और कौन पतोहू है मेरे घर में। वे बोले। अब बताओ मुझे तुरन्त गलती महसूस हुई। मैंने कहा—दादा जी, वह मेरी सुनती ही नहीं। आप समझा दें। मैं उसे शहर ले जाना चाहता हूं। अब दादा आपी कहो मैं शहर की नौकरी छोड़ दूं तो खाऊंगा क्या? वह कहती है नौकरी-चाकरी रजपूत के लिए नहीं होती।—नाहीं भैया, नौकरी छोड़े के राय मूरख लोग देते हैं। तुम इस वियाबान में रहकर करोगे क्या? तोहें तो नौकरी मिल गई। ई तो समझो पुरखों के पुन्न-परताप का फल रहा, वरना कौन पाता है नौकरी। मैं कहूंगा भइया। कल, समझाऊंगा कि हठ छोड़ के जा शहर में बस जा। हियां का रखा है। खैर बहुत समुझाया-बुझाया बांके बिहारी दादा ने, पर वो नहीं तैयार हुई। हमको आपसे कहना सिर्फ यह है कि अगर उस बूढ़े ने मेरी मां को अपनी पतोहू बताया तो वह मेरा दादा हुआ कि नहीं, और इस घटना से अलग होकर सोचो कि उसी रिश्ते के बढ़ने पर उनके लड़के हमारे चाचा हो गए। उनकी बहुएं मेरी चाचियां हो गईं। अब उनमें से एक चाची बनारस की कचौड़ी गली के मिठाई वाले साहु हरनन्दन की बेटी है। मुझे पता नहीं था। मैं बाबा विश्वनाथ को नमस्कार करता सरस्वती के फाटक के सामने उत्तर ओर चला तो एक छोकरे ने रोक

लिया—आप शिबू हैं ?

" 'हूं तो यार, बात क्या है ?'

" 'मेरी बुआ जी आपसे मिलना चाहती हैं।' उसने उंगली पकड़ ली—'चलिए गली में ऊपर की सीढ़ी से जाना होता है।' पहुंचा तो मेरे सामने सामान्य कपड़े में लिपटी एक औरत थी जो उम्र में मुझ से पांच सात साल छोटी थी, बोली, 'अरे शिबू बाबू, मुझे पहचाना नहीं आपने ?'

"मैं परम मूर्ख की तरह ताकता रहा। न हां करते बनी, न ना करते। वे ही बोलीं—'मैं आपकी चाची हूं। आपके गांव वाले घर के सामने हमारा परिवार रहता है। मैं साहु जी की मझली पतोहू हूं। आप चाची ही तो नहीं पुकारेंगे न ?'

" 'ओफ, माफ करियेगा। कभी देखा नहीं था न। इसलिए पहचान नहीं पाया। छमा करना। आप ठीक-ठाक हैं। कोई संदेसा भेजना हो गांव पर तो बताइये। मैं गांव का रसम कैसे तोड़ सकता हूं। आप तो चाची लगती हैं।'

" 'पहले ये मिठाइयां खाइये, सुना आपको खीरमोहन बहुत अच्छे लगते हैं।' वे हंसीं।

" 'ई सब किसने बताया आपको। आप मेरे मीनू में क्यों रुचि लेने लगीं।'

" 'भार लगता है क्या ?'

" 'नहीं भार तो नहीं, एक सुख ही मिला। इस अजनबी शहर में कोई नजदीकी निकल आया। अच्छा लगा। पर खीरमोहन की बात तो अपने गांव में भी कोई जानता नहीं।'

" 'गांव में तो कोई नहीं जानता। जानना संभव भी नहीं है। मेरे डाक्टर हैं बांस फाटक पर हनीफ मियां। उनकी बहन रजिया मेरी सहेली थी, जब मैं आर्य महिला में पढ़ती थी। रजिया ने कहा कि तुम्हारी दूकान पर सुना खीरमोहन बहुत अच्छा बनता है ? मैंने पूछा, हंसियेगा मत, यह औरतों का चोंचला ही सही—'पूछ बैठी किसे दिल दे बैठी।' वह बहुत गुस्से में बोली—'क्या अपने भाई को दिल देना मजाक की बात है ?' मैंने माफी मांग ली तो बोली—'मेरे भाई को खीरमोहन बहुत पसन्द है। वे यहां प्रोफेसर हैं। उसी ने आपका नाम बताया। जब करमूपुरा में करम खींच कर ले गया तो मेरी दोस्ती राजी और सरस्वती से हो गई। वे दोनों बोलीं—'यार वो मुसलमान लड़की बाजी मार ले गई। हम तो खाली लड्डू देकर सौ सौ के नोट झटकते रहे।' वे लोग कहने लगीं।' हमारे भैया अबकी राखी पर आएंगे तो उन्हें सरप्राइज देंगे। हमें खीरमोहन मंगा देना।' तब से मैं आपको जान गई।'

" 'ओफ् तो आप मेरा नाम ही रख दीजिये खीरमोहन के चट्टन श्री शिबूजी महाराज।' हम दोनों हंस पड़े। अब बोलो आप लोग। क्या करूं। गांव की बेटी होती और जानती-मानती तो समझ में आता अपने पुराने पनघट को छोड़कर

करमूपुरा के पनघट पर आई अपरिचिता के रिश्ते को क्या नाम दूं। बोलो, जहूर चाचा ?"

"लेकिन रजिया मुसलमान है, अचानक तुम हनीफ और रजिया से कैसे मिल गये।" मैंने पूछ दिया।

वह बोला—"कभी-कभी रिसर्चर तुम्हारी अकल पर बहुत तरस आता है। आई एम सीरियस।" बहुत गंभीर हो गया वह। फिर बोला—"इलाके के रिश्तों पर ही अब तक बातचीत होती रही और तुम हो गावदी कि पूछ रहे हो कि रजिया और हनीफ से कैसे परिचय हो गया। भलेमानस, बटेसर की लड़की यानी हमारे खासमखास खून से जुड़ी गांव-देहात की बेटी गुलशन बुआ मेरे लिए तलाश करने की चीज थीं। बन्ने मियां की बहन क्या मेरे बाप की बहन नहीं है ? यार तुम लोगों के इस अलगाव भरे नजरिये से मुझे बड़ी कोफ्त होती है। जानेमन जब रजिया बारह साल की थी, बहुत ज्यादा बीमार हुई। हनीफ की दौड़-धूप का कोई असर नहीं हुआ। उसे इस तरह का टायफायड था कि शिनाख्त भी नहीं हो पा रही थी। एक दिन एक मोटी-तगड़ी, अधेड़ औरत मेरी उम्र से कुछ साल छोटे लड़के के साथ आई। दरवाजे पर दस्तक पड़ी। मैंने दरवाजा खोला। बाहर वह महिला खड़ी थी। बोली—'क्यों भई, आप क्या करमूपुरा के सुभग ठाकुर के खानदान के हो ? आपका ही नाम सिवेन्दर है।'

" 'आइये माता जी, भीतर बैठिये,' मैंने हाथ जोड़कर कहा—'मैं उसी खानदान का हूं, पर मानता नहीं उनको।'

" 'किनको ?'

" 'सुभग ठाकुर को।'

" 'क्यों भला, अपने ऊंचे खानदान को झुठलाने की वजह बताइएगा ?' वह महिला थोड़ी सी मुस्कुराहट के साथ बोली—'दुनिया तो अपने अपने खानदान की पुरानी इज्जत भुनाकर चैन की बांसुरी बजा रही है, बरखुरदार और एक तुम हो···अजीब बात है, सुभग सिंह के खानदान के होकर भी, उनसे जुड़ना नहीं चाहते ? आखिर क्यों ? भला मैं भी तो सुनूं ?'

" 'आप हैं कौन, आपका क्या रिश्ता है सुभग ठाकुर से। वे क्या आपके बाप थे। क्यों मैं उनके नाम का पट लगाकर बाजार में घूमूं। चिल्लाऊं कि देखो मैं हूं सुभग ठाकुर का पोता। आपसे क्या मतलब सुभग सिंह के परिवार से। मैं नहीं मानता उन्हें।'

" 'नहीं मानते ? आखिर क्यों ?'

" 'इसलिए कि मैं उस लायक नहीं हूं। मैं जात-पात, धर्म-मजहब किसी को

नहीं मानता। मैंने एक हरिजन लड़की से मुहब्बत की, शादी भी करता अगरचे जीती रहती, पर वह मर गई। कहो मार डाली गई। मैं तब से कुजात हूं। फिर सुभग ठाकुर के नामपट्ट को अपने लिलार पर लटकाये क्यों घूमूं? बताइए आप ही।'

" 'इन हालात में तो बरखुरदार उस नामपट्ट को लटकाना और भी जरूरी है।'

" 'क्यों?'

" 'क्योंकि सुभगसिंह ने भी वही काम किया, जो तुमने किया है बल्कि मैं तो कहूंगी कि तुम सुभगसिंह के सामने फिसड्डी लगते हो।'

" 'मैं समझा नहीं?'

" 'समझ लो। उन्होंने एक मुसलमान लड़की से मोहब्बत की, सुना है?'

" 'हां सुना है, पर उन्होंने उसके साथ शादी कब की?'

" 'यही तो दुनिया नहीं जानती। उन्होंने न केवल शादी की बल्कि उस मुसलमान औरत के लिए बनारस में घर बनवाया। साल के छह महीने वे यहीं, इसी शहर में रहते थे। उस औरत से एक लड़का हुआ जो मिलिटरी में था और लड़की जोहरा तो पिछले बरस मरी। अस्सी साल की होकर।'

" 'आपको कैसे मालूम?'

" 'भाई मैं बटेसर में जन्मी बनारस में ब्याही गई। इसकी वजह से क्या मेरा हक नहीं बनता बरखुरदार कि मकबूल मियां के जिगरी दोस्त की बातों की जानकारी रखूं।'

" 'ओफ् अरे बुआ जी, आपने बताया ही नहीं कि बटेसर की हैं वरना मैं अब तक...।'

" 'तारे तोड़कर ला देते? देखो बरखुदार। यह है तुम्हारा भाई डा० हनीफ। अलीगढ़ से डाक्टरी पढ़कर आया है। इसकी छोटी बहन रजिया बहुत बीमार है। बुखार है जो हटने का नाम नहीं ले रहा है। मेरा बेटा खुद डाक्टर है मगर थक कर बैठ गया। कोई फायदा नहीं। अब तुम्हारी यूनिवर्सिटी के अस्पताल में ले आए हैं। उसे देखकर डॉ० बैनर्जी ने कहा कि यह एक नए किस्म का जानलेवा बुखार है। इससे दिमाग की नसें फट सकती हैं। बहरहाल उनके हुकुम के मुताबिक आज ही रजिया को हम भरती कराके यहां आए हैं। हनीफ कहता है कि जेनरल वार्ड बहुत गंदा है। वहां तो रजिया दो दिन भी रही तो कोई दूसरी बीमारी हो जाएगी। एक आदमी मिल गया वहीं। सीतापुर का। उसी से मालूम हुआ। तुम स्पेशल वार्ड में कोई कमरा दिला सको तो हमें बहुत सुकून मिलेगा।'

" 'सुनिए बुआ जी, जेनरल वार्ड रोगी के लिए गन्दा है कि उसकी तीमारदारी करने वालों के लिए।"

"हनीफ हंसा—, 'भई वाह, भई, मान गए। बात एकदम सही है।'

" 'सुनो हनीफ मियां तुम मुझसे पांच साल छोटे लगते हो। मैं आज के छोटे डाक्टरों को भी जानता हूं और दीगर लोगों को भी। मान लीजिए, एक मिनट के वास्ते कि स्पेशल वार्ड में कमरा नहीं मिलता तब ? क्या आप मां-बेटे उसकी बीमारी में साथ छोड़ दोगे ? आप रात में वहां नहीं रह सकते। क्योंकि वह औरतों वाले वार्ड में होगी। बाहर बरामदे में सोना होगा, उस खिड़की के पास जहां से उसकी बेड दिखाई पड़ती है, आप बरामदे में तो सो सकते हैं न ?'

" 'देखो यार कभी ऐसा किया नहीं, वहां बदबू ही बदबू है। मुझे तो रातें जगकर बितानी पड़ेंगी।'

" 'सुनिए जनाब ?' मैंने गुस्से में कहा—'वह इसलिए परेशान कर रही है। आपको कि रजिया एक लड़की है। अगर वह रमजान होती तो आपकी मां सोती उस जगह पर। सच कह रहा हूं हनीफ मियां, हंसिए मत। यह हंसने की बात नहीं है। रोने की बात है। क्या आदमी हैं आप। अपनी बहन से ज्यादा प्यारी आपकी नींद है। गुलशन बुआ आप लोग जाइए। मैं समझ गया। इस हिन्दुस्तान में चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान किसी के मन में औरत के लिए जगह नहीं है। मैं ऐसे छोड़ने वाला आदमी भी नहीं हूं, हनीफ मियां। मैं लेक्चरर हूं। मेरी भी कोई इज्जत है। लेकिन आज अगर मेरी बहन सरसू या राजी या रोशन भी होती तो मैं लुंगी बांधकर बिना दरी के वहां सोता। हर जरूरत पर उठता। बीमार के हाल-चाल पूछता। पर हुजूर आपने अलीगढ़ से एम० बी० बी० एस० कर लिया तो नवाब वाजिद अली शाह बन गए। आपके बाथरूम में इत्र छिड़का जाएगा ? क्या समझ लिया है अपने को ? अभी क्लीनिक खोलोगे तो दस रुपए के लिए बदबूदार किसानों के मवाद भरे घाव को रुई के फाहे से धोओगे। खुद गन्दे फाहे को उठाकर कूड़ेदान में डालोगे। जाओ, बख्श दिया। ठीक रात नौ बजे पहुंच जाना यहां। मेरे साथ सोना पड़ेगा तुमको। समझे ?'

" 'मान गए बेटे !' गुलशन बुआ बोली—'यह तल्खी सुभग ठाकुर के खून में ही हो सकती है।'

" 'सुनो बुआ, सुभग ठाकुर का खून और भंगी कल्लू जमादार का खून एक जैसा है। तुम समझ रही हो बुआ कि तुम पठान हो, मकबूल मियां की बेटी हो, मेरे बटेसर की उपज हो, मैं तुम्हें खुश करने के लिए सुभग ठाकुर का नाम सुनते ही तुम्हारी मिहरबानी के लिए शुक्रिया कहूंगा। जी नहीं। हर्गिज नहीं। मैं रजिया के बेड के सामने जमीन पर सोऊंगा सिर्फ इसलिए कि वह बदकिस्मती से लड़की बनकर आई है इस दुनिया में। जाओ बुआ, सुभग ठाकुर के नीच खानदान में जन्मा हूं इसलिए हनीफ मियां जब मरते रहेंगे तब भी इन्हें परेशान करने कभी नहीं आऊंगा तुम्हारे दरवज्जे पर, हां।'

" 'अरे मुआफ कर दो बेटे, हनीफ जरूर आएंगे। लेकिन तुम जरूर रहना वहां।'

"बस यों जुड़ा मेरा और गुलशन बुआ का रिश्ता।" वह हंसा।

मैं बहुत देर तक सोचता रहा कि एक के बाद एक हादसा शिवू की जिन्दगी में आता रहा। और हर रिश्ते के पीछे कहीं न कहीं पूर्वांचल की संस्कृति और जमीन से जुड़े रहने का बोध उसे हिम्मत बंधाता रहा। उसने ऐसे रिश्तों को कभी भी अपने लिए, अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए साधन नहीं बनाया। रजिया बहन बन गई तो शिबू के किसी काम नहीं आई। उसके रिश्ते की पवित्रता बनाए हुए उसके जब इस्तेमाल की जरूरत पड़ी तब भी अपने लिए नहीं, रोशन के लिए ही उस रिश्ते का प्रयोग किया। बताइए आप। मैं समझ रहा हूं पाठक कह रहे हैं कि जानबूझकर उसे इतना पाक-साफ क्यों कह रहे हो? यह झूठ है। नकली आदर्शवाद लगता है। लगता होगा आपको। पर मैं प्रेम स्वरूप इतना मूर्ख नहीं हूं कि अपने को आधुनिक कहलाने के लिए इन पाक रिश्तों में कल्पना की गिरह लगा दूं। मैं बाकायदा कहानी प्रशिक्षण लेकर कहानियां नहीं लिखता। मैं तो नौकरी के लिए ललचाने वाला एक छोटा आदमी हूं। शिवेन्द्र मेरे गाइड हैं। दोस्त हैं। मैंने उनकी हर कलई को लपट में झोंकने की कोशिश की है अब तक। आगे भी करूंगा।

उसके भीतर शरारतों का इतना बड़ा समन्दर है कि अन्यत्र ढूंढ़े नहीं मिलता। जहूर मियां जब चले गए तो पास-पास वैसे ही बैठे रहे। हमारी आंखों में उसके लिए आदर था। वह कभी-कभी कहा करता था—आदर दिखावा है। जिसे दिया जाता है वह फूल कर वैलून की माफिक हवा में उड़ा-उड़ा फिरता है। उसने आदर पाने की कभी चाहत नहीं की। वह जब एम० ए० के छात्रों के बीच आदर नहीं समानता के व्यवहार की अपेक्षा करता था तो हम लोग इसे छंटा कांइया कहकर उसकी अनुपस्थिति में नकल उतारा करते। कहो मि० प्रेम आप कक्षा में कभी-कभार प्राध्यापक पर कृपा करके दोस्ताना हरकतें भी चाहें तो कर सकते हैं, उसके लिए छिपकर दोस्तों से सहायता लेकर किसी पिंजरे की चिड़िया के सामने आटे की गोलियां क्यों फेंकते हैं। हरिनाम के साथ आटे की गोली में रामनाम लिखकर मछलियों को भोज देने से सुनता हूं अच्छी पत्नी मिलती है।

सारी कक्षा ठहाके में खो जाती थी। और वह इतना रिजर्व्ड रहता उस वक्त जैसे मुस्कराने की बहुत कीमत है। वह ऐसे नहीं हंसना चाहता। आज फिर हम छात्रों की तरह उसके चेहरे की ओर आदर से देख रहे थे तो वह सह नहीं सका और बोला—

"क्यों मूर्खों की तरह देख रहे हो। तुम लोग इतने सीधे हो कि तुम्हें कोई भी ठग सकता है। सच कह रहा हूं। मुझे उम्मीद नहीं थी प्रेमू तुमसे। कम से कम तुम शहर के कांइयों को जानते हो। सारी बातें स्पष्ट मत कराओ। कभी सोचा तुम लोगों ने आखिर ऐसी सारी घटनाएं औरतों को लेकर ही क्यों होती हैं। कभी आप लोगों ने यह नहीं सोचा कि सोनवां का अतृप्त प्रेमी निश्चय ही जाल बिछाकर चिड़ियों का शिकार करता होगा। आखिर क्यों नहीं सोचते। सोनवां, रुपवा, चन्द्रा, रोशन, रजिया यानी सभी औरतें ही क्यों जुड़ीं मेरे जैसे कांइयों के साथ। तुम्हारे भीतर साहस ही नहीं है सही पूछने का।"

"कौन सा साहस, कैसा साहस!" मैंने और नरैन ने एक साथ पूछा।

"अरे तुम लोग इतने मूर्ख हो कि मृग के चमड़े में छिपे भेड़िये को पकड़ नहीं सकते। सुनो पुरुष नारी-सुख के लिए क्या-क्या नहीं करता पर नारी छुपा कर करती है। बोलो तुम लोग? इज्जत के लिए ही तो बड़े लोग मरते हैं। अपने को बहुत चालाकी से समाज के सामने सजा कर पेश करते हैं। अगर यह पेश किया हुआ गन्दा रुमाल से ढका न होता तो लोग अब तक थू-थू कहकर पैर से ठोकर मारकर चकनाचूर कर दिए होते। कितना झूठ है। भला तुम्हीं कहो नरैन। एक हरिजन लड़की पर जान देने वाला अपने को कुजात क्यों कहता है? तुम लोगों को अचंभा नहीं होता। सोनवां के लिए जिसने अपने परिवार की इज्जत दांव पर लगा दी उसे तुम लोग क्षमा करते। अगर मैंने इस 'कुजात' शब्द को बतौर प्रमाण पत्र अपने ललाट पर लगाया न होता तो तुम मूर्ख बनते? दुनियां को मूर्ख बनाने के लिए कभी-कभी अपने को ही गालियां देनी पड़ती हैं। नकली आंसू बहाने पड़ते हैं। दिखाना होता है भाई कि मैं लाख गन्दा हूं, कुजात हूं, पर अपने प्रेम के प्रति सच्चा हूं। ईमानदार हूं। लोग इसी चाल में उलझ गए। चन्द्रा जब भी आती, मैं उसकी कलाई पकड़कर अपनी चारपाई पर खींच लेता था। वह इतनी चुम्बक जैसी ताकत रखती थी कि मैं बिना उसके शरीर से सटे कभी शान्त हुआ ही नहीं। सच तो यही है कि सुनीत कल्पू का बेटा नहीं है। वह मेरा बेटा है। न होता हमारा और चन्द्रा का तो कल्पू के दाह संस्कार के बाद चन्द्रा मज़ाक करती? वह कहती रही कि काका आप इन सज्जन को नहीं जानते। ये बहुत टेढ़े हैं। सही कहा था उसने। हम अगर टेढ़े न होते तो क्या दो साल तक चन्द्रा का भोग कर पाते? रोशन तो मेरी आंखों में उसी दिन गड़ गई थी। मैंने मन ही मन कसम भी खा ली थी। बिना रोशन को हम-बिस्तर बनाए मैं हरारत में मर जाऊंगा। अरे भई वही जब राजी वाले केस में आया था। प्रतिभा बंसल को जब वह पानी दे रही थी, मैं तो उसकी अदाओं पर फिदा हो गया।"

"और राजी पर क्यों फिदा हुए बड़े भाई?" नरैन ने कहा।

शिबू ने तड़ाक से एक थप्पड़ नरैन के गाल पर जड़ दिया—"हरामी, इसमें

राजी कहां से आ गई ?"

नरैन जी मुस्कुराए--"बोलो शिबू भैया कौन हो आप ? राजी के भाई। या चन्द्रा के प्रेमी···कौन हो आप। दूसरों को एकदम मूर्ख ही मत समझा करो शिबू भैया, कभी सामने नरैन भी श्रोता बनकर बैठ जाते हैं। तब झूठ को सत्य में बदलने की कोशिश नाकाम हो जाती है।"

"भई नरैन माफ करना, जीवन में पहली बार थप्पड़ उठ गया तुम पर।"

"चलो, इसी बहाने नरैन को अपना तो मान लिया। बिना राजी के पत्ते के आप सही जमीन पर नहीं उतर सकते थे, इसीलिए हुकुम का इक्का लगा दिया।" सभी लोग खिलखिला कर हंस पड़े।

चार बज रहे थे। बन्ने मियां को विदा करने जब मैं सबके साथ आया था इधर, तभी एक चीज़ मेरी आंखों में धंस गई। हमारे पश्चिमी इलाके में खेती और हरित क्रांति की हवस ने धरती को वीरान बना दिया है। करमूपुरा का सीवान कदम-कदम पर बौराए आमों की मोजरों की खुशबू से भरा था। उसने कहा था एक बार कि अचानक कोई जवान औरत अगर आम की गाछ को अंकवार में भर ले तो वह मंजरियों से लद जाती है। जब एक जनपद की धरती जवान औरत की तरह अपने सीने से जुड़े पेड़ों को चूमती होती है तो शायद पूरा सीवान गमक उठता है। आज करमूपुरा को मैंने आंख भर भरकर देखा, फागुनी गंध को जोर से सांस के साथ खींचकर अघा गया। हाय, डियर करमूपुरा। तभी वह बोल पड़ा—"अरे नरैन, जरा किसी मजूरे को बुलाओ। तिसवट तो होगा न ?"

"तिसवट का तो पूरा गांज लगा है सामने खलिहान में। अब तीसी (अलसी) तो धन बरसाने वाली फसल हो गई है बड़े भाई। तमाम लोग पहले से भी अधिक तीसी उपजाने लगे हैं, मगर यह समझ में नहीं आ रहा है शीबू भैया कि तिसवट से होरहा का क्या रिश्ता है ?"

"यह सब बाद में पता चलेगा। एक बोझ तिसवट और दो तीन पुल्ले पटेढा लेकर चलो तुम लोग मेरे वाले खेत पर, बस मैं दो मिनट में पहुंच रहा हूं। बस कोई प्रश्न नहीं, कोई जवाब नहीं। जो कहा गया करना है। चलो, आ रहा हूं मैं···"

मैं, नरैन जी और मोनू अजीब अचंभे से शिबू को देखते रहे। वह सामने की गली में मुड़ गया।

"क्यों नरैन जी, क्या हो गया है मेरे यार को ?"

"कुछ नहीं प्रेमू भाई, आप उनके चेहरे को थोड़ा ध्यान देकर देखा करें। अगर आंख में लाली है तो समझ लीजिए कुछ भयानक घटने वाला है। और अगर

होंठों पर हल्की मुस्कुराहट हो तो समझ लीजिए कोई हास्य रस का नाटक होने ही वाला है मगर इस बार मामला गड़बड़ है। आंख में लाली भी है, होंठों पर मुस्कान भी। मैं आप ही की तरह डूब-उतरा रहा हूं। हां, एक चीज तो मुझे बिना पूछे करनी पड़ेगी। मोनू बन्दूक ले आ जल्दी।"

"वो तो बाबू जी, मैं तभी लाऊंगा जब मुझे साथ ले चलने का वादा करो।"

"भई पता नहीं तुम्हारे बड़े काका ले जाना न चाहते हों···न चाहते हों ?"

"काका तो कहकर गए ही हैं चलो तुम लोग···कहा है न प्रेमू चाचा ? अगर मुझे न ले जाना होता तब वे ऐसा थोड़े ही कहते। तब कहते कि रुक जा मोनू। तुझे नहीं जाना है। उन्होंने हरी झंडी दिखा दी है। मैं अभी बन्दूक लेकर आया। कारतूसों वाली पेटी भी ला रहा हूं।"

हम लोग खेत पर पहुंचे।

"अरे हरखू बिरादर चलो आपको देखकर मन जुड़ा गया। मैंने नरैन से कह दिया था कि कुछ भी हो जाय, हरखू बिरादर को मत हटाना अपने से दूर।"

"ई तो भइया, तुम्हारा बड़प्पन है। हरखू सरदार जौन हैं तौन बहुत बुढ़ाय गए। अब हमसे मसक्कत का काम नहीं होत हो शीबू बेटा। ई तो तोहरे दोस्त के होरहा खिआवै के रहा। नरैन बोले बस चला आया। कहो भैया नरैन ऊ तोहरे वाले चक पर जो झरबेरी और बब्बुर की बाड़ लगी है, वो ही में से निकाल कर ले आवै न, एक बोझा।"

"हां काका, उहैं से लाओ। हम तो शिबू भइया से कहे रहे कि हमरे चक से ही अधपक्के चने के पौधे उखाड़ो तो बोले—जब अपना है ही तो तोहरे चक से क्यों उखारें।"

"लेकिन भइया, देवेन्दर मालिक का ई चक तो रेहन है न सोबरन के पास ?"

"अब कहां रेहन है हरखू बिरादर जब कल एक हजार दै दिया सब सूद-मूर तो ई अपुन न हो गया हो बिरादर ?" वह हरखू सरदार के कंधे थपथपाते हुए बोला।

'मूर तो दियै भइया, ई जायज बात है लेकिन सूद काहे को दिए। मूर में तो खेत रेहन रहबै किया ?"

"इस पर तो हरखू बिरादर तुम्हीं सोचो। जब शिवेन्दर से सोबरन सूद मूर दोनों वसूल कर सकता है, खेत रेहन है तो कहता है कि परती जोतने में मेरा ट्रैक्टर टूट गया···अब इस सोबरन राय का हम करैं का। विरोध करैं तो साला आस-पास रोता है जाकर कि शिबू ने ई करा दिया ऊ करा दिया, चुप रहैं तो

नाकों दम कर देता है। हमरे बाबू का जीना हराम कर दिया है साले ने। बिरादर आज परीक्षा की घड़ी है। हमरे चक के जिधर सबसे बढ़िया फसल हो, उखाड़ दो और चार पांच बोझ चना फूंक दो। चलो, नरैन लग जाओ सब लोग।"

चना उखाड़ कर झरबेरी के कांटों पर चारों ओर से छोप दिया गया। पटेढ़ो (धान निकालकर बचे पौधे) में दियासलाई की कांटी लगा दी। लपटें उठने लगीं।

दस मिनट हुए होंगे कि सोवरन राय, अपने सहयोगी ननकू पहलवान और तीन-चार लठैत लिए गांव से निकले। कटकटाए हुए लम्बी-लम्बी फाल बढ़ाते, गुस्से में पागल हाथी की तरह सूंड़ से फों-फों की आवाज करते खेत के पास पहुंचे। दूर से चिल्लाये—"कौन है स्साला हरामी जो हमरी फसल में आग लगाय रहा है।"

"यह तेरी फसल कब से हो गई सोबरन!" शिवू बोला—"पिछली बार घर की लड़की का मामला था, सूअर घरना बंसल पुरुषोत्तम से भी जियादा तुझसे चिढ़ी थी। छोड़ दिया कि जो हो, हो तो अपने खून के। वह रिश्ता तू ने कल तोड़ दिया। हरामी जब तूने मूल का सवाया सूद जोड़कर एक हजार ले ही लिया तो यह फसल तेरी कैसे हो गई?"

"हम एहके जोते-बोये रहे। बीया लगी। खाद लगी। का मुफुत में ऐसी फसल होय सकत है कहीं?"

"कल तो कह रहा था कि वह जाकड़ी परती है। उसमें फसल होती ही नहीं।"

"कहना और होत है। साला कुजात गुंडा, करना कुछ औरे पड़त है।"

"तो तू लड़ने आया है? उठाओ बन्दूक नरैन।"

"रुक जाओ, असल के रजपुत हौ साले तो रुक जाओ, दो मिनट में हम बुलाय लेत हैं अपने बन्दूकचियों को।"···उसने हाथ हिलाया। "दौड़ो हो ननकू कह दो मनकुवा को कि रायफल के साथ चले आओ···"

"जरा पीछे हटकर चलो सोबरन मालिक। चलो। तोहें हथियार के साथै आना चाहिए था।" ननकू बोला—"रायफल है स्सालों के हाथ में।"

"अबे हम का करें। हमें तो ऊ सारे कांगरेसी चोर घूरे पंडित ने खबर करी।"

"ठीक है उत्तर कोने चलकर जोहते हैं, रायफल के आते ही मजा चखाय देंगे आज ई अपने को सुल्ताना डाकू समझ रहा है सार शिबूआ। तीन ठो मनई हैं एकरे साथ। चलो आज तीन लाश गिराय ही देंगे हम। चलो···" सोबरन को लिए ननकू उत्तरी मेड़ तक पहुंचा। तभी शिबू बोला—"नरैन तुरन्त तिसवट में पटेढ़ा रखकर जला दो। जलाओ जल्दी।"

तिसवट का कड़ुवा धुवां चारों ओर फैलने लगा। सामने सोबरन ननकू और

उनके अमले के लोग थे। उनका बेटा जगजीत राय रायफल लिए दो-चार और लठैतों के साथ दौड़ा चला आ रहा था। तभी शिबू ने अपना गमछा हिलाया। सारे दल बल के साथ सोबरन मोर्चाबन्दी किये हमारी ओर को चला तभी अजीब दृश्य खड़ा हो गया। झुंड की झुंड मधुमक्खियां सोबरन पर टूट पड़ीं।—दक्खिन ओर बढ़ने का सवाल ही नहीं था। तिसबट के धुवे के कारण उनका एक जत्था आया पर लौट पड़ा और दोनों जत्थों ने मिलकर हमला बोल दिया। सारे लोग अजीब बदहवासी में आंखें, गाल, नाक, गर्दन, पैर, छाती, पेट से मधुमक्खियों को नोंचते इधर-उधर भागना चाहते थे लेकिन वे जिधर भागते थे मधुमक्खियां उधर ही झुंड बनाकर टूट पड़ती थीं। नरैन और मैं तो ठहाकर हंस रहे ही थे। मोनू लोट-पोट करने लगा—'अरे वाह, वो दौड़ीं स्साली, ओ देखो, इस बार जगजितवा पर टूटी हैं, वो देखो ननकुवा साले का जमीन पर लोट रहा है, साला पहलवानी करने आया था। ऊ कौन है हो बाबूजी, अरे ओह अपनी दायादी का मनवोरवा है—समझ के आगा होगा कि लड्डू बंटेगा। साला लालची, जब भी किसी के घर शादी ब्याह हो बिना बुलाये पहुंच जाता है, बड़ा लार टपकाता है हरामी। जब तक कोई उसकी मुट्ठी में एक लड्डू ठूंसकर झोंक नहीं देता, हटता ही नहीं, ले साले लड्डू।'

"अरे बचाओ भइया···सोबरन···हम तोहरी होरहा पाल्टी से बाज आए।"

"हाय, हाय बचाओ दीन बन्धु।" सोबरन चिल्लाता हुआ नाच रहा था।

"मैया रे मैया। अरे बप्पा रे···ऐसी लड़ाई कभी जिनगानी में नहीं देखे रहे। ई साली मधुमक्खियां तो सेना की तरह अगाड़ी-पछाड़ी बन्द करके बींध रही हैं। अरे भइया ननकू, ई देखीं, भइया हमारी तोंद लग रही कि साली फट जायेगी। मारो रे साली फुलाकर गुब्बारा बनाये दे रही हैं।" सोबरन फेंकर रहा था। "हाय रे मैया। कैसे लड़े, केकरे ऊपर गोली चलाये। साली पलकैं नहीं उठतीं। हे गोरया वीर रोको स्वामी···ई वानरी सेना को संभालो महावीर-कौन सो संकट मोहीं गरीब को जो तुमसे नहिं जात है टारौ···रोको संकटमोचन, रोक लो रे··· अरे, यह देखो साली जांघ के बीच में घुस गइन। हाय रे दैया ई तो हियां बींध कर फोड़ा बनाय रही हैं।"

"देख प्रेमू", शिबू बोला—"जानता है यह किसकी सेना है ?"

"होयगी किसी देवी की। तू तो हर चीज़ जो तेरी ओर से लड़ती है देवी माता को यश देकर चुप हो जाता है। पता नहीं ई कौन देवी हैं। मधुकटनी माई कहूं क्या इनको ?" मैंने कहा

"अबे मूरख रिसर्चर ई सेना आजकल में शिबू के लिए थोड़े ही बनी है कि तुम्हारे जैसे रिसर्चर इसका नामकरण करेंगे। अरे भई ई हिन्दुस्तान की कोतल

सेना है। इसकी कमांडर प्रतिभा बंसल नहीं उसकी अठरानियों को भी जनम देने वाली दुर्गा माता हैं। जब ई सेना हमला करती है तब दुर्गा माता का नाम भ्रामरी देवी हो जाता है। तूने दुर्गा सप्तशती तो देखी नहीं, तू क्या जाने भ्रामराम्बा का रूप। कुछ नहीं समझेगा।"

"आओ जहूर चाचा।" शिबू चहककर बोला—"बहुत बढ़िया होरहा पका है। खाओगे तो उंगलियां चाटने लगोगे।"

"अरे अहमक उंगलियां होरहा में गीली होती हैं क्या कि चाटूंगा। मान गए लौंडे, तू बहुत खतरनाक आदमी है। क्या दुर्गति हुई सोबरन की।"

"कल तक तो ठीक हो जायेंगे सब ?" शिबू बोला।

जहूर चाचा उत्सुकता से शिबू की ओर देख रहे थे—"ठीक हो जायेंगे ? कल मचेगा महाभारत। तैयारी कर ले। तू कभी नहीं मानता मेरी बात। इस बार फंस गया न ?"

"अरे चाचा, एक मधुमक्खी काट दे तो तीन दिन में दर्द चला जाता है। तुम नहीं जानते। एक बात ख्याल से सुनो मधुमक्खी जहां डंक मारती है वहीं उसकी डंक टूट जाती है। इन लोगों को मधुमक्खी के डंक निकलवाने और ठीक होने में पन्द्रह दिन लगेगा। ई सब लद-लदाकर जायेंगे, कबीरचौरा। तब डाक्टर डंक निकालेंगे। और कहां-कहां से निकालेंगे। सोबरन के सुथने के भीतर से डंक निकालेंगे ?" वह हो-होकर हंसा—"ससाले को भेंड़ा बनाने के लिए बंसल पूछ रही थी, मैंने कहा नहीं सुपरिटेंडेण्ट, उस हालत में पुरुषोत्तम और सोबरन दोनों करीब हो जायेंगे। मैंने अभी राजी के मामले के अलावा किसी दूसरे मामले को न उठाने का निश्चय कर लिया है। राजी राजी-खुशी चली जाए, फिर साल-दो साल के भीतर बताऊंगा सोबरन को। उस वक्त तमाम गवाहियों के बावजूद उसे दबाये रहे, पिटाई नहीं होने दी। है साला नारी द्रोही, पर दण्ड बाद में। मेरी आरजू मैडम ने मान ली। आज मौका आ गया। घूरे पंडित ! दौड़कर जाइए, सोबरन की कोठी पर। देखिए क्या क्या हो रहा है वहां पर ?"

"चले जायेंगे भैया, पहले होरहा तो खा लेने दो।"

"होरहा लीजिए गमछे में, ना, ना ऐसे नहीं, झोली बना लो।" शिबू ने तीन अंजुरी भरकर झोली में डालीं। "भागिए तुरन्त। होरहा घर पर रखकर जाइयेगा।"

"जरा नमक लहसुन तो दे दो, होरहा बिना नमक मिर्चे के अच्छा नहीं लगता।"

"हां लो यह नमक मिर्च, लेकिन याद रखना नमक मिर्च लगाकर ऐसा पिलाना सोबरन को कि खुदै बताए कि क्या तै किया उन लोगों ने। कब जा रहे हैं शहर। समझ गए न।" शिबू हंसा। घूरे पंडित चले गए।

"क्यों जहूर चाचा, नमक मिर्च तो लो।"

"अबे तेरा नमक मिर्च छूना बहुत महंगा पड़ जाता है। आज तुझे हो क्या गया है। बन्ने मियां को ऐसा उल्लू बनाया कि साला कयामत तक तुझे भूल नहीं पायेगा। या परवरदिगार इस शातिर से बचाओ हम लोगों को। क्यों नरैन ऐसा वाकया होगा, तुम्हें मालूम था कुछ !"

"शीबू भइया !" सिचन्ना तेली मधुमक्खियों का बक्सा उठाए आया। "तकरीबन एक हजार नहीं लौटीं भैया।"

"ई तो हम तुम्हें पहले ही कह चुके थे कि यह सौ रुपये रख लो। जाने कितनी लौटें न लौटें। तुम ही तो अड़ गए कि नहीं इसके वास्ते हम रुपये नहीं लेंगे। लो···।" शिबू ने गमछे में अपना हाथ पोंछा। ऊपर के पाकिट से सौ का नोट निकाला और थमाते हुए बोला—"रखो रखो। नया छत्ता खरीद लेना। और हां यह बोरा है इसमें ढंक कर घुसना गांव में और बाहर से फाटक बन्द करके घर में भीतर रहना दो चार-घंटे।"

"अच्छा तो पूरी तैयारी के साथ यह मनसूबा बना था ?" जहूर चाचा मुस्कुराए—"देखो सिचन्ना। गांव में सिर्फ तुम्हीं हो मधुमक्खी-पालक। इसलिए शक सबसे पहले तुम पर आयत होगा। इसलिए शिबू ठीक कह रहा है। तुम्हारे घर में सही जगह न मिले तो बेखौफ चले जाना मेरे यहां। रोशन से कह देना, वह सब समझ जायेगी, और एक हज़ार सोबरन राय भी तुम्हें ढूंढ़ नहीं पायेंगे। बोरे में बक्से को ढंको और भाग जाओ यहां से ?"

शाम हो गई थी। मुझे समझ में नहीं आया कि अचानक शाम इतनी खूबसूरत और खुशियों से भरी-भरी क्यों लग रही है। मन में कुछ बातें उठ रही थीं। जैसी यही कि जब किसी अत्याचारी की दुर्गति होती है, प्रकृति हंस कर, प्रसन्न भाव से उसमें साझीदार क्यों बन जाती है ? चाहे इस बदलाव को कोई भांपे, न भांपे, मन में गुद्‌गुदी होने लगती है। तमाम उदासियों के बीच झींगुरों की शहनाई मन को मोह रही थी। मैंने सोचा ये झींगुर कहां हैं। होली के आस-पास यानी फागुन में झींगुरों की आवाजें मैंने कभी नहीं सुनी थीं। मैं मूर्ख की तरह पूछ बैठा—"नरैनजी, बिना बरसात के झींगुरों की शहनाई क्यों बज रही है ?"

"प्रेमू भइया ई तो आपकी जीत पर खुशियां मनाई जा रही हैं। उधर मेरे चक में बहुत बड़ा लम्बा-चौड़ा गड्ढ़ा है। कल ही पानी भरवाया था, ट्यूब-वेल से। वह जो गुमटी है न वहीं मेरा ट्यूबवेल है।"

"अबे घोंचू।" शिवेन्द्र बोला—"साले नाक कटा दोगे मेरी ! कितनी तारीफों के पुल बांध दिये हैं मैंने। लोगबाग कहते हैं कि शिबू तो आफत है, पर उसका

दोस्त तो आफत का परकाला है। जाने दोनों क्या-क्या बतियाते रहते हैं। कल रात भर दोनों जगकर घुसुर-पुसुर करते रहे। ई होली भगवान सकुशल बिताय दें तो समझो कि गांव के डीह बाबा की किरपा होगी। आज तो गजब हो गया। तुम्हारी चर्चा से गांव के न्यूज-बुलेटिन रंगे होंगे। सब यही कह रहे होंगे कि भैया ऐसी शरारत तो मूर्ख लड़के भी नहीं करते। ऐसा शिबू क्यों करेगा। हो न हो यह उसके दोस्त का पैंतरा है। आज तक शिबू ने कभी भी, किसी से ऐसा बदला नहीं लिया। पुरुषोत्तम ने तो केवल बूट की ठोंकरें सहीं, ई साले सोबरन राय को तो उसने नंगा करके हंटर से पिटवाया होता तब भी इतनी शरम नहीं आती। देखा नहीं बेचारा गरीब किस तरह बदहवास था और पागल जैसा रो रहा था।"

"अबे लौंडे," जहूर चाचा बोले—"कोई गांव वाला प्रेमू का नाम नहीं लेगा। गांव तुम्हें खूब पहचानता है। बन्ने मियां जाते वक्त भी थरथर कांप रहे थे। मैंने रोशन से पूछा कि शिबू को यह मालूम कैसे हुआ कि तुझे बन्ने ने घर से निकाल दिया है। बोल क्या उसे चिट्ठी लिखी थी।"

" 'मैं क्यों चिट्ठी लिखूं अब्बा। अलबत्ता जब मेरे ससुर बेइज्जती करके घर से निकल जाने का हुक्म दे रहे थे तो किसी ने खबर पहुंचा दी होगी। चन्द्रा भाभी को मालूम था सिर्फ।'

" 'तू चन्द्रा के यहां गई थी?'

" 'नहीं अब्बा, मैं क्यों जाऊं चन्द्रा भाभी के पास। ई जरूर सुनती रहती हूं कि बटेसर में कोई भी वाकया होता है तो बारह घंटे के अन्दर शिबू भाई साहब को खबर पहुंच जाती है।'

"अब बोल तुझे खबर कैसे मिली। मिली तो तू रोशन को बचाने कैसे आ पहुंचा इतनी जल्दी। तूने मुझ तक को यह नहीं बताया कि तेरे गेस्ट···यही न कहा था—हां तो तेरे गेस्ट यहां आयेंगे। मान ले। अगर मेरे घर में पांच-छह लोगों के लिए राशन-पानी न होता तब?"

"तब क्या चाचा, शिबू भाई साहब ने कहा था न कि रहने दो चाचा, नरैन के यहां ही खाना बन जायेगा—" नरैन बोले।

"सवाल खाने-पीने का नहीं है नरैन बेटा, इसने पहली बार मुझे मूर्ख कहा, चलो इसे भी माफ कर दिया, सवाल इसके तरीकों का है। यह तो ऐसे ऐसे हथकंडे दिखाने लगा है कि मैं भी घबराने लगा हूं इनसे। अजीब शख्स है यह।"

"सुनो जहूर चाचा, तुम्हें अगर अब भी सामन्ती ज़माने की रईसी सता रही है तो बेशक कहकर अलग हो जाओ मुझसे? मैं पूछता हूं बोलो क्या एक औरत को जबर्दस्ती लठैतों से पिटवाकर, लाश की माफिक जमीन पर घसीटते हुए कोठी में ले जाना, उसके हाथ-पैर बांधकर बलात्कार करना। ठहरे हुए गर्भ को दूसरे के सिर पाप कहकर मढ़ना, यही शराफत है। यही इंसानियत है। जितनी बदतमीजी

और बहशीपन से भरा वाकया होता है, शिबू उससे भी भयानक, उससे भी अमानवीय ढंग से दंड देना चाहता है। अभी मैं कमजोर हूं चाचा। अभी तो जो कुछ कर पाया, वह तो किये जाने का पचीस फीसदी भी नहीं है। अभी तो तुम्हें वह मंजर दिखाऊंगा कि कंपकपी होने लगेगी। मलेरिया हो जायेगा। अभी राजी का बदला बाकी ही है। यह तो शुरुआत है। मैं सोबरन राय को बताऊंगा कि तुम अगर गरीब और मासूम औरतों के लिए नरक बना सकते हो तो मैं तुम्हारे लिए कुंभीपाक बनाऊंगा। तुम हंटर चलवाते हो तो तुम्हें असिपत्र बन में झोंक दूंगा। जहां हर पत्ते शमशीर होते हैं और वे तुम्हारे बदन को धीरे-धीरे छेदते रहेंगे जब तक तुम उसमें स्वाहा नहीं हो जाते। मैं बहुत क्रूर आदमी हूं जहूर चाचा। समझ लो।"

यह शिबू का एक नया रूप था, जिसे कभी न तो नरैनजी ने देखा था, न तो जहूर चाचा ने, न तो मैंने। मोनू को छोड़कर हम तीनों ने गरदन झुका ली। मोनू अलबत्ता गुरु-भक्त चेले की तरह आदर के साथ अपने काका को देखता रहा। छोटा सा लड़का बोल पड़ा—"काका राजी बुआ का जब बदला लेना तो मेरे वास्ते भी दो चार सांपों की हांड़ियां और महुअर बाजा लेते आना। हम लोग मंतर बोल कर मतवाले गेहुंअन पर पीली सरसों छांटेंगे—जा बेटे स्साले सोबरन की तोंद को छेद दे। और गेहुअन चलेगा सरसराते—" उसने हथेली नचाते हुए बताया—"हम उसके पीछे-पीछे हरामी सोबरन की लाश देखने चलेंगे, है न ?"

"हां बेटे। गोली मार इन वाहियात लोगों को। बड़े आए शराफत सिखाने। यह नरैन, यह जहूर, यह प्रेमू सब डरपोक और सुविधापसन्द लोग हैं। हों भी क्यों नहीं। इनके दादा भी तो सुभग सिंह के ही दोस्त थे न। जो हर चोर से चाहे वह मकबूल मियां हों चाहे अशरफ मियां, प्रेम की बात करते थे। प्रेम कोई जिन्स नहीं होती जहूर चाचा। यह बाजार में लाखों लुटाने से भी नहीं मिलती, इसे तो वही पाता है जो दूसरों के लिए अपनी खुद की गर्दन काटकर लहूलुहान सिर को थाली में रखकर प्रेम की वेदी पर चढ़ा देता है। यह खाला का घर नहीं है कि हाथ हिलाते आए और भीतर घुस गए। इस प्रेम नगरी में घुसने के लिए हाथी का हिरदा होना चाहिए। तोहमतें, पाप-कथाएं, गालियां, सब कुछ को जहर की तरह पीकर शान्त रहना पड़ता है तब मनसूबे बनते हैं, तब सोबरन जैसे लोग मधुमक्खियों के व्यूह में घिर जाते हैं। पागल कुत्ते के काटने, विच्छू के डंक मारने, मधुमक्खी से बुरी तरह छिद जाने वाले की एफ० आई० आर० कभी दर्ज होती है क्या ? पेनेल कोड में इस तरह की घटना को कहीं जुर्म कहा गया है ? इसे क्या थानेदार या उसके अमले रोक सकते हैं। कौन सी मूर्ख सरकार है जो ऐलान करे कि पीली बर्रे, मधुमक्खी या कुत्ते का काटना संगीन जुर्म है। हुजूर आप लोग निश्चिन्त रहिए। सोबरन साला मर भी जाये, चाहे घूस से

थानेदार को लाद दे, उसकी एफ० आई० आर० की कहानी सुनकर थानेदार हंसेगा और उसकी बेवकूफी पर लानत भेजेगा। हो सकता है कि सोबरन ज्यादा अड़े तो वह सिपाहियों से धक्के मारकर निकलवा भी दे।"

हम लोग टुकुर-टुकुर देखते रह गए उसे।

जहूर चाचा मुस्कुराये —"अरे हम इतने डरपोक नहीं हैं। हम तुम्हारे भले के लिए सोच रहे थे। अपना हितू, अपना सगा मानकर। अब तुमने यह बात बताई तो मन को शान्ति मिल गई। यह सच है कि मैं मूर्ख हूं। तुमने ठीक कहा था। वाकई सोबरन के पास वजूहात नहीं हैं। वह चाहे भी तो फर्स्ट इन्फारमेशन रिपोर्ट में कौन सा जुर्म दर्ज करा पायेगा। वह तो एक तरह का खुदाई हादसा है। उसके लिए न कोई गुनहगार है न कोई जिम्मेदार।"

वह चुप हो गया। एकदम चुप।

"अब तो हंस दो बेटे—" जहूर चाचा बोले।

"मान भी जाओ यार—" मैंने कहा

"क्षमा कर दो बड़े भाई—" नरैन ने कहा

"कैसी क्षमा, कैसी दया? जाओ जहूर चाचा, घर जाओ। अब घूरे पंडित आते होंगे। मैं सोबरन के हालात सुनने के लिए अधीर हो रहा हूं—चलो, बोलो जय बजरंगबली···तोड़ दो दुश्मन की नली।"

"बाप रे!" घूरे पंडित इधर-उधर देखते हुए, बड़बड़ा रहे थे। "अइसा तमाशा तो सत्याग्रह में भी नहीं हुआ था। का दरद है, का विथा है।" उन्होंने गली में ताक-झांक की। कोई नहीं दिखा। वे फुदककर नरैन के बइठके में आए—"कहां हो भई।"

"इधर आइए नेताजी।" शिबू बोला—"हम जाने कब से आप ही की बाट जोह रहे हैं। हमारी तो आंखें पथरा गईं। चलिए आप बहुरे तो भला। कहिए क्या सुसमाचार हैं।"

"भइया, अब क्या कहें। पुरानी बातें सोचते हैं, तो मन में हरख भी होती है। बाकी जो आज देख के आ रहे हैं, उससे तो ऐसे कांप गए हैं कि अंधेरे में बड़ा डर लगेगा। हे भगवान्···" उन्होंने अपनी गांधी टोपी उतारी और मुंह के सामने हिला-हिलाकर पसीना सुखाया।

"अब कहो भी पंडत, तुम तो हमेशा तिल का ताड़ बना देते हो। खुदा कसम कभी-कभी तो ऐसा जी होता है कि तुम्हारे कुर्ते के कालर पकड़ कर ऐसा हिलायें कि तुम्हारी सांस न निकले तो जान ही निकल जाय।"

"अरे जहूर भाई!" घूरे पंडित बोले—"पहुंचते ही पांचों को चारपाई पर

फेंक कर लोग हांफते हुए बैठे। साला ई भी अजीब हाल है, कहा कि सहारा देकर पहुंचा दो कोठी पर, और इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो बदन पर मुर्दे की तरह लद न गया हो, छि: अबे तलवे तो बचे हैं। सीधी रीढ़ करके चलो तो देख लेंगे शिबू और जहूर को ?"

"अच्छा फुन्नन भी आय गया था !" जहूर चाचा बोले—"हम भी कहें कि ई खलोस जवान बिना फुन्नन मियां के और कौन बोल सकता है। फिर क्या हुआ ?"

"अरे भाई मैंने कहा कि यह बड़ी गड़बड़ लग रही है। इस आसरे कि मधुमाखी काटे हैं तो अपने आप ठीक हो जायेगा—भाई लोगो मैंने मधुमाखी को काटते कई बार देखा है···पर आपने ऐसा देखा है कि सबके बदन फूल कर गुब्बारा ही नहीं हुए कितने तो ठीक से सांस भी नहीं ले पा रहे हैं, अरे यारो गांव का मामला है। आज सोबरन ठाकुर और छोटे जगजीत ठाकुर दोनों एक साथ खटिया पकड़ लिये हैं। कोई दौड़कर भइया समाज कल्याण वाले डाक्टर को ही बुला लाओ।"

" 'अरे हां रे, अरे भैया घूरे पंडित आपै-आपै ढुलकते चले जाओ हुवां। हमारे वंश का तो नामो निसानै मिट रहा है। कहना डागदर से कि जितना कहोगे गिन देंगे, हमरी जान तो बचाय दो···' सोबरन बोले।

" 'अभी जाते हैं सरकार,' मैंने कहा और डाक्टर को सारी बातें बताईं। डाक्टर बोला—भैया ! एक दो जगह काटतीं तो कोई मलहम लगाते, पर भाई यह तो बड़ी मुश्किल केस है। तुम नहीं जानते होगे घूरे पंडित। मधुमाखी जहां काटती हैं उसी में उनका डंक भी उलझकर टूट जाता है अगर वक्त पर निकले नहीं तो बहुत नुकसान हो जाता है।

"डाक्टर की पेटी उठाये मैं आगे-आगे चला। बारे पहुंचे सोबरन की कोठी पर। डाक्टर को देखते ही सोबरन ने कहा—'अरे भइया सीरीवास्तव जी हमरी जान बचाय लो। हम तोहें मुंहमांगा इनाम देवेंगे।'

" 'इनाम की जरूरत नहीं है ठाकुर साहब, ई तो अपना फर्ज है।' डाक्टर बोले—'चिन्ता की कोई बात नहीं है, ठाकुर साहब जान को खतरा नहीं है, पर रोगी की दशा बिगड़ रही है। छोटे ठाकुर को तो ठीक से सांस लेने में भी दर्द हो रहा है। बात ई है घूरे पंडित कि बात कुछ भी नहीं है। यह कोई समस्या नहीं है। इसका दर्द असह्य नहीं होता, पर भइया मधुमाखी के डंक जो टूटे हैं भीतर उनको निकलवाने के लिए तो कबीरचौरा जाना ही होगा। इहां ऊ सब औजार भी नहीं हैं। बहुत छोटी-छोटी चिमटियां चाहिए। जिनसे टूटी डंक का सिरा पकड़ कर खींच दें और काम हो जाय। अगर बिना डंक निकाले रहने दें तो बदन में फफोले हो सकते हैं। डंक खींचकर निकाले तो एक एक आदमी पर

चार घंटे लगेंगे।'

" 'ई डंक निकलवाने तो भैया डागदर हम सबेरे ही जा सकेंगे। तुम हमें रपट लिखके दे दो कि दुश्मनों ने जानलेवा हमला किया···।' सोबरन राय ने हाथ जोड़कर कहा।

" 'यह कैसे हो सकता है ठाकुर साहब', श्रीवास्तव बोले—'जानलेवा हमला तो आदमी करेगा, जिसकी हम सर्टिफिकेट देते, हालांकि वह भी कोई कीमत नहीं रखती। वह रपट तो कबीरचौरा के डाक्टर ही दे सकते हैं। क्योंकि मक्खी के हमलों को आदमी का हमला बताना मेरे हाथ की चीज़ नहीं है। मुझे क्षमा करिये ठाकुर साहब, नमस्कार!'

" 'अरे भाई घर के आदमी हो, सौ दो सौ बोलो तो कुछ, मुंहमांगी रकम दूंगा।'

" 'आप पागल हो गए हैं ठाकुर साहब, पहले किसी वकील को बुलाकर पूछिये कि मक्खियों के खिलाफ कचहरी कौन सा फैसला देगी। मैं कमअक्ल हूं ठाकुर साहब, पर इतना जानता हूं कि यह केस कभी चल नहीं सकता। केस तो दूर आप थानेदार के यहां मक्खियों के विरुद्ध दावा करेंगे तो वह ताली पीट कर हंसेगा। आपकी बेवकूफी की मखौल उड़ायेगा। हं, हं, हं, हं—अरे ठाकुर ई तो दैवी हमला है, इंसानी नहीं है यह।'

"पता नहीं भैया डाक्टर की बात से निराश होके या पीड़ा से थक कर सोबरन ने अपनी धोती खोल कर फेंक दी। कुर्ता तो पहले उतार ही दिया था, बनियान भी उतार दी। लगे माजा पिये मछली की तरह तड़पने—'हाय रे, दोनों जांघों के भीतर का ई दरद सहा नहीं जाय रहा है। हे संकटमोचन, हाय रे···मुझे अब मौत दे दो परभू। हाय रे सारी देह छरछरा रही है, मेरे जख्म पर मिर्चे की बुकनी छिड़क दी सिऊआ ने। हे राम, ऐसा बेदरदी आदमी नहीं देखा। अरे जान से मरवाय देता, ई घुलाय-घुलाय के काहे मार रहा है। अरे बप्पा रे···हाय रे मइया···'

"मुझे बड़ी दया आई शिबू भाई," घूरे पंडित बोले—"उसकी जांघ का दरद उसे तड़पा रहा है। अब उसे माफ कर दो।"

"चुप हरामी स्साले। नेता बनता है और दुश्मन की रक्षा चाहता है? इस नीच आदमी ने जांघों के सुख के लिए कितनी गरीब औरतों से बलात्कार किया, तू तो जानता है पंडित, मैं उन्हीं जांघों में सुई चुभा-चुभाकर मारूंगा। यह तो अभी शुरुआत है पंडित। तू कायर था हरामी कांग्रेसी, तूने सत्याग्रह पर बैठी औरतों की रक्षा के लिए कौन सा इन्तजाम किया? जब वह हंटर से हरिजन औरतों को पिटवा रहा था तो कोई था माई का लाल इस गांव में जो उनकी दर्दभरी चीत्कार सुनकर बचाने आया हो? तूने क्या कर लिया पंडित जब वह सोनवां को खींचकर

अपने फाटक के भीतर ले गया। जब वह जांघों को सुख देने के लिए शैतान बना तो तूने रहम दिखाया सोनवां पर। तू गया समझाने सोबरन को? बोल आज तू कह रहा है माफ कर दो। चाचा जहूर कह रहे हैं छोड़ दो, मैं तुम लोगों के आदर्श-वाद पर थूकता हूं, लानत भेजता हूं। जा वहीं और आधे घंटे में लौटकर बता कि आगे कौन सी कारवाई करेगा सोबरन। सही-सही पता लगा के आ जा वरना सोबरन के बाद नम्बर दो पर तू ही है। समझा।"

"इतना क्रोध नहीं करते बेटा।" जहूर चाचा बोले—"देखो तुम्हारा चेहरा गुस्से से लाल हो रहा है।"

"क्रोध, जहूर मियां क्रोध का वजूद न होता तो तुम और तुम्हारी नूरेचश्म रोशन आज गांव में दुखड़ा सुना-सुना कर मर जाते। कोई तुम पर, तुम्हारे लाल चेहरे पर जूठन भरा कुल्ला भी नहीं करता। बन्ने मियां और सोबरन अच्छे सलूक के हक़दार नहीं हैं। इनसे आदमी जैसा सलूक करता तो मुझ पर हैवानियत हंसती। व्यंग्य करती। तुम लोग धरमराज बनो। औरत की कीमत ही क्या है इस समाज में। वह चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान। वह चाहे हरिजन हो या पठान सबकी एक नियति है। आप जाओ यहां से जहूर चाचा। मेरे मुंह से बहुत गन्दा निकल जायेगा कुछ। तुम्हारे लिए मेरे दिल में जगह है। उसे तोड़ो मत। जाओ यहां से।"

जहूर चाचा की आंखें छलछला आईं। "ठीक है बेटे जा रहा हूं। लेकिन यह मत सोचना कि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूं। तुमने रोशन के बारे में जो कुछ कहा है वह सच है। वैसा ही सलूक करता यह गांव, पर बेटे यह गांव तुम्हारी भी मां है, और मेरी भी। इसे बचाना बेटे।" वह चले गए।

तभी एक बड़ी तश्तरी में तीन बड़े-बड़े गिलास लिए मोनू आया—"काका, माई ने कहा है कि बड़े काका को यह शरबत दे आओ···" मोनू थाल लिए चुपचाप खड़ा था। शिबू ने उसे देखा—"ला भई···"

तीनों गिलासों में दही पड़ा था।

अपना गिलास शिबू ने मुंह से लगाया ही था कि हिचक कर रो पड़ा।

"क्यों यार यह क्या करने लगे। तुम्हारी आंख में पानी।" मैंने कहा

"दो तीन बूंद खारा पानी दही के शरबत में गिर भी जाय प्रेमू तो क्या फरक पड़ता है।" वह बोला और चुपचाप शरबत पीने लगा।

"इसमें मलाई नहीं है शिवू।" मैंने कहा

"ओह, तो रिसर्चर कभी-कभी तुम भी अक्लमंद लगते हो" वह बोला—"नरैन के घर में सिर्फ एक भैंस है। मुझे पता नहीं उसकी अक्ल बड़ी है या तेरी।"

सभी लोग ठठाकर हंस पड़े। मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी थी। सच है कि

दही का शरबत देखकर वह अपने को संभाल नहीं पाया। वह चन्द्रा को कितना मानता था, यह अपने आप उसके आंसुओं में लिखा था। मैं दही और मलाई वाली बात कहकर चन्द्रा प्रसंग पर से गोपनीयता की चादर खींचने की गलती करने जा रहा था। तभी उसने अक्ल बड़ी या भैंस कहकर मुझे आगाह किया। भूल मेरी थी। हो गई। मैंने कहा—"यार नरैन जी की भैंस ऐसा ही दही मैं तो बना नहीं सकता, जिसकी भाषा नहीं जमती उसका दही क्या जमेगा। आखिर भैंस से अक्ल हार ही गई।"

लम्बी परेशानी के बाद नरैन जी हंसे।

"चलो बड़े भैया, आखिर मोनू ने तुम्हें हमारे धरातल पर ला ही दिया। मेरी जान में जान आई। अब चलता हूं, जरा मैं भी जान लूं सोबरन के प्रोग्राम को। फिर मिलकर सोचेंगे।"

"हां जाओ!" शिबू ने तश्तरी में गिलास रखते हुए कहा—"मोनू बेटे आज तबीयत ठीक नहीं है। तुम भी अम्मा के पास जाओ। इस बार सांपों की हाड़ियां जरूर लाऊंगा।"

"और महुअर भी।" मोनू ने कहा

"हां, हां महुअर भी लाऊंगा। बहुत से कालिया नाग पैदा हो गये हैं करमूपुरा जनपद में। हम और तुम महुअर बजाकर नागनथैया करेंगे। ठीक···?"

"हां, एकदम ठीक," मोनू हंसा और तश्तरी के तीनों गिलासों को टनटनाते हुए गली में खो गया।

अभी मामला गरम है। अचानक प्रसंगवश चन्द्रा का चेहरा भी झांक गया है शरबत के भीतर तो क्यों न इस तपी-तपाई कील को हथौड़े से पीटूं···वह खुद बोलता चलेगा। मैंने साहस करके कहा—"दोस्त, तुम जो भी हो। आदमी बहुत बड़े हो। चूंकि शरबत पीते वक्त तुम्हारी आंखों से भी खारे आंसू आ ही गए। तो बता दो क्या हुआ चन्द्रा का।"

—रिसर्चर, चन्द्रा की बात शुरू करते मैं बहुत परेशान हो जाता हूं। वह शायद सोनवां, राजी, रोशन सबसे अलग किस्म की औरत है। वह बहुत साहसी महिला है। ये तीनों उसके सामने गुड़िया जैसी लगती हैं। ये तो पुतलियां हैं जिन्हें भाग्य नचाता रहा और ये कभी भी मंच पर अपना सही किरदार दिखाने में सफल नहीं हुईं। इनके लिए मुझे घेरे में रहकर ही जितना हो सका, करना पड़ा। चन्द्रा प्रतिभा बंसल नहीं थी। प्रतिभा से भी ज्यादा कठोर थी। प्रतिभा को शादी का सौभाग्य नहीं मिला। जहां तक मुझे पता चला प्रतिभा जिस युवक को चाहती थीं, वह पुलिस में नौकरी करने वाली आफिसर से शादी रचवाने को तैयार

नहीं हुआ क्योंकि वह मानता था कि आंगन के बाहर निकलकर काम करने वाली हर औरत चरित्रहीन होती है। इससे जो ठेस लगी थी प्रतिभा के मन पर वह ज़रा-सा छेड़ देने से प्रतिशोध में बदल जाती थी। वह गलत काम करने वाले हर जालिम को पीटते वक्त वही कहती जो उसे ठुकराते वक्त कहा गया था, यानी औरत चरित्रहीन होती है, औरत चरित्रहीन होती है—यह दर्द प्रतिभा के साहस को तोड़ देता था। किन्तु चन्द्रा को कोई चरित्रहीन कहे तो वह तिनककर चंडी नहीं बनती थी। प्रतिशोध के लिए साहस बटोरती रहती थी।

एक पखवारा बीत गया। मैं सारी कोशिशें करके भी हरीश और रुपवा से सम्पर्क नहीं कर पाया। अचानक एक दिन नरैन आया। मैं डेरे पर ही था। 'शीबू भइया', आवाज नरैन की थी। 'आ जाओ नरैन' मैंने जोर से कहा—'दरवाजा खुला है आ जाओ।'

नरैन को तेतरी ने एक चिट्ठी दी थी।

नरैन ने बताया कि कल रात नौ बजे तेतरी आई। बोली—'नरेन जी! मैं आने का परमिट मांग रही हूं। आ जाऊं।'

नरैन हंसा, 'क्यों रे आने का परमिट क्या होता है?'

बोली, 'क्यों नरैन जी गड़बड़ बात है। हमारे तो टीचर ने कहा था किसी के यहां जाने के पहले उससे परमिट मांगनी चाहिए।'

'परमिट नहीं, परमिशन कहा होगा।'

'हो सकता है। आपने परमिसन दे दिया है न?'

'ठीक है बाबा बोलो, शिबू भइया के लिए कोई सन्देसा हो तो तुरन्त कहो।'

'क्यों नरैन जी, आप तो अगमजानी हो। ई तो अच्छा नहीं हुआ।'

'बको मत, बोलो क्या अच्छा नहीं हुआ?'

'नरैन जी वह महिला बोली थी कि खबरदार कोई जानने न पाए कि चिट्ठी शिबू भाई साहब के लिए है। आप तो जान गये नरैन जी। मैंने बताया तो नहीं पर आप तो अपने आप जान गए। गड़बड़ हो गई।'

'लाओ-लाओ कोई गड़बड़ नहीं हुई है। जाओ मैं उसे सही जगह भेज दूंगा।'

'लो आप तो यह भी जान गए कि इसे सही जगह भेजना था।'

'हे तेतरी चिट्ठी दे और भाग यहां से, नहीं देंगे एक झापड़...।'

'हे भगवान्...' वह बोली—'औरत का कैसा भाग होता है। ठीक है। जा रही हूं नरैन जी।'

हम दोनों ठठाकर हंस पड़े।

नरैन ने जेब से चिट्ठी निकाली और मुझे दी। चिट्ठी बन्द थी। मुझे नरैन की यह आदत बहुत अच्छी लगती रही है। मैंने कहा—"नरैन कोई व्यक्तिगत चिट्ठी हो तो न खोलना शराफत है लेकिन जब लिखने वाले की समस्या को तुम

जानते हो तो चिट्ठी खोलकर पढ़ लेने में हर्ज क्या है। हो सकता है कि उस चिट्ठी में जल्दी से जल्दी सहायता की पुकार हो…"

"यह सब ठीक है बड़े भाई" नरैन हंसा—"रुपवा की चिट्ठी पढ़कर तुमने जब दी और मैंने क्रोध में कह दिया कि अब तुम्हें नरैन और रुपवा में कोई एक चुनना होगा—उसके बाद जो काम रुपवा और हरीश ने किए…उससे इतना लज्जित हुआ कि अब साहस नहीं होता। आप किसी नक्शा-नवीस की बात कर रहे थे न एक बार। वही जो एक हज़ार घूस लेकर किसी भी ब्राह्मण के घर में एक न एक मन्दिर खड़ा कर देते हैं। क्या कहते हैं—हां रूट, उनका कहना है कि अंतरंग परिक्रमा रूट में गलती के कारण अगमजानीश्वर महादेव को जनता भूल गई। मध्यकाल में बहुत जाग्रत और मंगल प्रदाता माना जाता था यह मंदिर। जहां लोग वर्तमान तो वर्तमान भविष्य में आने वाली विपदाओं के निवारण के लिए भी मनौतियां मानते थे। भैया, तेतरी मुझे अगमजानीश्वर महादेव बना चुकी है। पर तेतरी को यह पता नहीं है कि करमूपुरा के इलाके को नक्शा-नवीस की जरूरत नहीं है, उस सेवक की जरूरत है जो जिन्दगी भर इस जनपद के सुख-दुख को अपना व्यक्तिगत सुख-दुख मानकर जी रहा है। लड़ रहा है। करमूपुरा का नक्शा उस आदमी के दिल में है। बाहर मत ढूंढ़ो उसे। अतः चिट्ठी खोलो और बताओ कि बटेसर के हादसे का सही समाचार क्या है।"

चिट्ठी बहुत ही मुख्तसर थी। कुल पांच लाइनें। पर उसके साथ एक छोटा-सा फोटो था। साथ में निगेटिव कापी भी थी।

उस धुंधले फोटो में सुदर्शन तिवारी का चेहरा साफ था, नीचे होने के कारण शायद कैमरा सुखिया के चेहरे की झलक मात्र पकड़ सका था। मैं कूद पड़ा। "वाह, यह मारा।"

"क्या बात है?"

"लो देखो।"

नरैन देखता रहा। "बड़ा गन्दा आदमी है सुदर्शन। लेकिन बड़े भाई सुखिया के चेहरे में तो सबकुछ कुहासा जैसा लग रहा है।"

"नहीं, यह कुहासा साफ हो जाएगा" मैंने कहा। "यह है न निगेटिव, साधन नहीं रहा होगा हरीश के पास। मैं इसे यहां धुलवाकर आता हूं। तुम बैठो कुछ देर।"

"नहीं, हम भी चलेंगे।"

लंका के वी० छायाचित्र से निगेटिव धुला तो कुहासे में नाखून से छिले, लहू और पसीने से विकृत सुखिया का चेहरा झांकने लगा।

"अब देखो।" मैंने नरैन से कहा। "हां, ई तो बड़े भाई बड़ी धांसू शुरूवात हो गई।"

नरेंन दूसरे ही दिन गांव लौट गया। मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा ही था कि बोला—"एकदम गोपनीय रहेगा। शतप्रतिशत गोपनीय। यही न कहना चाहते थे बड़े भाई।"

"तुम अब बहुत ज्यादा करीब होते जा रहे हो नरेंन। मेरे लिए यह खुशी भी है और परेशानी का सबब भी।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि तुम बीबी-बच्चे वाले गृहस्थ हो। मैं सबकुछ झेल लेता हूं। हमारी भोजपुरी में है न—बीबी न लरिका, चले दुअरिका। सो भैया हम तो जेल जाने में द्वारका की यात्रा का सुख पाएंगे। पर तुम्हें मैं इसमें शामिल नहीं कर सकता। जाओ, फिर मिलेंगे।"

चिट्ठी थी। कामरेड ग्रैंग्रीन पीड़ित हैं। हालत बहुत ही खराब है। आपके अनुमान लगभग सच हैं। सुखिया से सम्पर्क करें। उचित सहायता की आतुरता से बाट देख रहे हैं।—रूपनाथ।

"फिर ?" मैंने कहा—"भाई घूरे पंडित से कौन-सा क्लू मिल जाएगा। आएंगे तो सुन लेना। चलो, आगे बोलो।"

मैं फोटो लेकर सीधे प्रतिभा बंसल के पास पहुंचा।

"आइए श्रीमान् खतरनाक !" मैडम हंसकर बोलीं—"सोबरन ने राजीवाले केस को लेकर होम सेक्रेटरी से शिकायत कराई थी।"

"क्या शिकायत ?"

"यही कि तुम बहुत खतरनाक आदमी हो और मैं दुश्चरित्र औरत हूं। किसी भी शरीफ को कभी भी बेइज्जत कर सकती हूं।"

"फिर क्या आपके पास नोटिस आ गई मैडम बनारस छोड़ देने की ?"

"नोटिस क्या आएगी। मैं कानून के बाहर कभी जाती ही नहीं। नोटिस नहीं। फरमान आया है कि चार जून को बनारस छोड़कर गोरखपुर में सर्विस ज्वाइन कीजिए।"

"ओह कितना अच्छा संयोग है। खुदा का शुक्र है। आज तो अभी दूसरी जून है। दो दिन में तो मैडम आप पूरा नक्शा बदल सकती हैं। इस बार आपकी प्रेस्टीज पर ही नहीं इंसानियत पर खतरा बेखबर टूट पड़ा है मैडम।"

"मैं समझ गई शिवेन्द्र, बोलो, छः महीने बाद प्रतिभा के पास आने का मतलब तो मैं तुम्हें नहीं बताऊंगी, पर इतना कहूंगी कि तुम बहुत स्वार्थी हो। काम बताओ। प्रमाण लाओ।"

"नहीं, मैं आपको अन्तिम नमस्कार करके घर चला जाऊंगा मैडम। मैंने कभी अपनी मां से भी स्वार्थ सिद्ध नहीं किया। मुहब्बत हुई एक हरिजन लड़की से तो वह स्वार्थ सिद्ध होने के पहले आदमखोर हवस का शिकार हो गई। एक महिला

थी, जिसे मैं हमसफर मानता था यानी प्रतिभा बंसल आज वह भी मेरी तकदीर से हट गई, स्वार्थ था, पर जब परमार्थ ही नहीं रहा बीच में तो कहने की ढिठाई कैसे करूं। मैं अपना स्वार्थ अपने ही हाथों तोड़ क्यों न दूं। नारी-मुक्ति का ख्वाब किसके सहारे, किसके लिए—प्रतिभा बंसल को शिबू जैसे हजारों प्रशंसक मिल जाएंगे, पर शीबू के लिए प्रतिभा बंसल···।" मैं उठ पड़ा। "थैंक यू मैडम।"

"रुको, चले कहां? यू हैंडसम डेविल। मैं तुम पर जान निछावर कर सकती हूं। क्योंकि···?"

"क्योंकि···?"

"तुम मर्द हो और ईमानदार भी!"

हमने साथ-साथ बैठकर सारी योजनाएं बनाईं।

मैंने हर्ष की व्यवहारकुशलता की हमेशा कद्र की है। हर्ष ने कभी ऐसा कार्य नहीं किया जिससे उन्हें या मुझे कभी लज्जित होना पड़ा हो। हर्ष छिपकर वहाँ नहीं गए थे वे एक निश्चित संकल्प लेकर गये थे इसलिए उस स्थिति का विवरण मैं हूबहू उन्हीं के शब्दों में कहूंगा। वे जब बटेसर पहुंचे तो उन्होंने सुदर्शन तिवारी का नाम लिया। लेकिन जब किसी से मालूम हुआ कि बटेसर में प्रतिष्ठित तिवारियों के दो परिवार हैं तो उन्होंने खुलेआम कहा—"देखिए साहब", हर्ष ने कहा—"मैं दोनों परिवारों के बारे में सुन चुका हूं। दोनों परिवार मिलाकर तिवारी वंश में दो पुत्र हैं एक किशोर और दूसरे महेन्द्र। अत. शादी तो यहां हम करेंगे ही, मेरी बहन कभी यह सह नहीं पाती कि कोई उससे अपने को श्रेष्ठ कहे। इसलिए निर्णय जो भी हो बात छिपकर ही तै की जाए। हमें दोनों लड़के पसन्द हैं। पर हम भी तो जानें कि किस लड़के के पीछे तिवारी वंश हमसे सारी गृहस्थी, टी०वी० कूलर, फ्रिज, वीडियोकान वगैरह की मांग कर रहा है? कौन-सा बड़भागी है जो अपनी सारी जायदाद के साथ ही मेरी बहन का हाथ ग्रहण करेगा।"

वे ज्यों ही गांव में घुसे एक कोयले में रंगा आदमी अपनी लाठी लिए हर्ष के सामने आया। बोला—"कहो, कौन हौ तुम तंग मोहरी वाले लफीफा···?"

"यह लफीफा क्या होता है श्रीमान्!"

"श्रीमान् की दुम। ई कौनो सहर नाही है कि हियां तू बिना पता बताये घुस जाउगे। समझे। लफीफा माने होते हैं जोकर। बूझ लो।"

"हां, हां सब समझ गया। तुम लंका की लंकिनी हो। अरे भाई हम कोई विलायत से नहीं आ रहे हैं। हम यू० पी० के ही हैं। गोरखपुर अपनी फैक्टरी है।

आधा हमारी आधा गवर्नमेंट की। उसमें शीशे के बल्ब और मरकरी ट्यूब वगैरह बनते हैं। मुझे पता चला श्रीमान् जी कि इस गांव में तिवारी वंश में दो विवाह योग्य लड़के हैं। मेरी बहन है सुधा। वह फैक्टरी में पचीस प्रतिशत की साझीदार है...''

''अरे भाई, तूफान मेल रोकौ। रुककर बतावौ। समझाय कर कहो। तुम्हारी बहन है कौनो सुधा। हां भइया तो ऊ का हैं ?''

''ऊ हमारी फैक्टरी की हिस्सेदार हैं। कहा न आपसे। आधा हमार है आधा गवर्नमेंट का। जो आधा है हमारा वाला, उसमें हमारी बहन आधे की हिस्सेदार है।''

''अच्छा, जरा ई हौ बताय दो कि तुम्हरा जो आधा है, उसमें कितना रुपया लगा है ?''

''दो करोड़।''

''मज़ाक मत समझ्यौ कि कुछ औरों बतावैं।''

''आप तो अजब घनचक्कर हैं। मैं मज़ाक क्यों करूं। एक करोड़ की हिस्से-दार है हमारी बहन।''

''सालाना केतना मिलत है तोहरी बहन के हिस्से में ?''

''मुनाफा ?''

''हां, हो मुनाफा ?''

''यही दो लाख पा जाती है वह।''

''तो भइया हियां कइसे रास्ता भूल के आय गए।''

''यहां आने का कारण है। हम तो महीना भर पहले ही आने वाले थे। लेकिन किसी ने कहा कि तिवारी परिवार में गमी पड़ गई है। यह भी सुना कि चार बेटे थे। दो की शादी हुई थी और दो कुंवारे हैं। भइया हम उन कुंवारे लड़कों को देखने आये हैं। तिवारी वंश का बड़ा यश सुना है।''

''फिर लगे चक्कर मारने जब मालूमै था कि गमी पड़ गई है तो आए क्यों ?''

''देखो भाई, हम लोग खानदानी आदमी हैं। आपके घर लड़के की शादी हो तो हम किसी काम में फंसने की वजह से हो सकता है न पहुंचें। पर जो सगा सम्बन्धी गमी में नहीं जाता उसे हम लोग नीच कहते हैं। गमी में आने वाले ही तो अपने होते हैं न भैया ?''

''वाह धन्न हो, धन्न हो। भइया हमैं माफ करौ। आपका नाम का है ?''

''हम तो श्री हर्ष पाण्डे हैं।''

''लड़के हैं भइया, और दुइ हैं पाण्डेजी। अपने खानदान की छिपी बात है भइया एसे कहनों में भी जियरा फटत है पांडे जी। बाकिर करैं का। भइया शिव-शंकर तिवारी के बेटा हैं महेन्दर। ऊ बन्दरै हैं। समझे। ऊ अपनी बड़की भौजाई

से फंसे हैं। उन्हीं लोगन ने अपने चचेरे भाई कलपनाथ के मरवा डाला। भइया कलपनाथ के मेहरारू है ऊ रंडी है। एक ठो रजपुत है हो, बगल के गांव के रहवइया है। वोही से फंसी है।"

"अरे महाराज आपका नाम क्या है?"

"हमार नाम पूछ के चुगली करे आए हो।"

"आप हर चीज़ को उल्टा क्यों देखते हैं। मैंने अपना नाम बताया तो यह सोचूं कि न बताऊं क्यों आप मेरी चुगली करेंगे। आदमी आदमी पर विश्वास नहीं करेगा तो कब तक जिन्दा रहेगा। आपके बयान से तो लगता है कि महेन्द्र की भौजाई दो लोगों से फंसी है।"

"वाह भैया बिलकुल पानी का पानी आ दूध का दूध कर दिये पांडे जी। हां ऊ दूनों से फंसी है। हमरा नाम याद कर लो भइया पांडे जी। घनसाम अहीर केहू से डरते नहीं। हम सुदरसन तिवारी के जन हैं, अउर रहैंगे। देख लेंगे बोह रजपुतवा को। अब हीं घनसाम से पाला नहीं पड़ा है ऊ का। हां भैया ई तो कहो कि सुधा के शादी खातिर तू केतना तक जाय सकत हो?"

"क्या?"

"भाई कछु देनदारी के अनुमान बतावौ तो हम सुदरसन से बतिआंये।"

"ओह देनदारी का अनुमान, यही पांच लाख तक।"

घनसाम आंखें फाड़े देखता रहा बोला—"ई तो सुदरसन का हुआ। हमरा कमीसन बतावौ।"

"कमीशन, अरे घनसाम भइया। कमीशन काहे कह रहे हो। जइसे हमरे लिए सुदरसन वैसे घनसाम। एक लाख आपौ के···।"

"आवौ भई, चलो!" घनसाम बोला—"जब अपन मानके आप कह दिये तो हम अब तोसे मोल-चाल का करैं। दूसर होत तो रगड़ा करते। कछु अउर मांगते। खैर, अब तो घरै के बात होय गई। चलो।"

"सुनो भाई घनसाम ई मालूम ना होवै के चाही कि गमी में हम तिलकहरू बनकर आये हैं? हम अपने घर के आदमी हैं। हमारी खातिरदारी में बेकार का टण्ट-घण्ट मत कराइयेगा।"

"अरे चलो भैया।"

सामने शिवशंकर के दरवाजे पर तिवारी और महेन्द्र बैठे थे। हर्ष पाण्डे ने दोनों को इशारतन बता दिया।

"यह सामने कौन बुज़ुर्ग बैठे हैं घनसाम भाई।"

"अरे गोली मारौ, उहै भौजाई वाला···।"

"अरे भाई, एक मिनट रुकिये। कभी-न-कभी दोनों परिवार एक रहे होंगे। गमी दोनों परिवारों में हुई है। हमारी इनके भाई के घर रिश्तेदारी होगी। हमारे

लिए बहनोई सबसे बड़ा है। पर भैया मानवता भी तो कुछ होती है न। जरा अफ़-सोस प्रकट कर दें। सहानुभूति के दो बोल कह देने में नुकसान क्या है? चलिए, दो मिनट।"

"भइया हमने कह दिया न? अइसे लोगन के हम मुंह देखना पाप मानत हैं। तुम जाओ हम इहें गली में खड़े हैं। दुइ मिनट से ज्यादा वख्त नाहीं है हमारे पास।"

"ठीक है अभी आते हैं।" पाण्डे शिवशंकर के पास गए और पैर छूकर बोले, "सुखिया हरिजन कहां रहती है?"

"गांव के एकदम दक्खिन। पोखरा किनारे। सावधान होकर जाइयेगा।" महेन्द्र ने कहा।

"अब क्या करेंगे तिवारी बाबा। दुःख तो दुःख है। हमारे बड़े भाई ने कहा है कि मेरी ओर से अफसोस व्यक्त कर देना।"

"ठीक है बेटा, ठीक है। कहां के रहने वाले हो?" शिवशंकर तिवारी जोर से बोले।

"अब अता-पता बताने का वखत हमरे पास ना हौ पाण्डे जी, आ जाओ इधर। ई लोग अंगुरी पकरि के पहुंचा पकड़त हैं। चलौ।" घनसाम बोला।

हर्ष को साथ लिए बिहंस-बिहंस कर बतियाते, सुदर्शन की पक्की बखरी दिखाते वह सुदर्शन तिवारी के दरवाजे पहुंचा।

"अर किसोर भइया, चलो रहर।" घनसाम ने सुदर्शन के चरन छुए। बोला—"तिवारी बाबा, हम तोहरे खातिर जग जीत के लाय रहे हैं। पाण्डे भइया, ई हमरै तिवारी वंस के दीपक, सुदरसन तिवारी। आ तिवारी जी महाराज ई है गोरखपुर के रहवैया पाण्डे जी। इनकर हुवां गोरखपुर में वलब के फैक्ट्री हौ। इनके बहिन के हिस्से में दू करोड़ के कीमत लगी है। हर साल दो लाख के कमाई हौ। ई अपने किसोर भइया के सादी वास्ते आये थे। सरवा उमाशंकरवा पकड़ रहा था इन्हें। ठेल-ठाल के भगाए हुवां से। अब तू इनके जलपान कै तैयारी करो—हम ज़रा भैंइसियन के नाद बोझ के आय रहे हैं दुइ मिनट में।"

सुदर्शन तिवारी बखरी में चले गये। आधा घण्टा के अन्दर देसी घी में भुजे किसमिस पड़े हलवे की कटोरी उठाये आ रहे थे। उनका लड़का किशोर भर बाल्टी पानी और गिलास लिए आया।

"लो भइया, जरा जलपान करिलौ। खाना बन रहा है। बखत पर सब होइ जायेगा। का नाम बताए हो, घनसाम। का नाम है भइया?"

"हर्ष पाण्डे।"

"अरे किसोर पाण्डे जी के पैर छू। ई तेरे साले बनने वाले हैं। पढ़-लिखकर बॉस होइ गया। और बाभन के घर का होइके सिस्टाचारो नाहीं सीख सका।"

लजाते हुए किशोर ने पैर छूकर कहा—"अभी तो हम लोग गमी मना रहे हैं पाण्डे जी।"

"हमें भी बताये घनसाम जी, उन्होंने कहा भी कि ठीक वक्त पर नहीं आए। मैंने समझाया उनको। जो रिश्तेदार गमी में शरीक न हो वह तो नीच कहलाएगा। हम अभी शादी रचाने तो आये नहीं हैं। बातचीत हो जाय। लड़का तै हो जाये, शादी तो जब समधी चाहेंगे तभी होगी। भइया, हम लोग इतने बेवकूफ नहीं हैं कि चट मंगनी पट ब्याह की बात कर दें। हमारी एक ही बहन है। दो करोड़ की हिस्सेदार है बल्ब फैक्टरी में। उसकी राजामन्दी भी तो चाहिए न ?"

"आपकी बहन केतना पढ़ी है भइया पाण्डे जी !" सुदर्शन तिवारी ने पूछा।

मामला परीक्षा का था। पाण्डे ने कहा—"यही तो कमजोरी है अपनी। तिवारी बाबा उसने मैट्रिक पास करके पढ़ना छोड़ दिया बोली—हमें क्या पढ़कर नौकरी करनी है। हाई स्कूल हो गई बहुत है।"

"ठीक है भैया, सादी तै होय गई समुझ लो। हमें बी० ए० पास रण्डी नाहीं चाहिए। एक आई है जब से, घर में चैन नाहीं मिलत। हां, हमें तो भइया हाइ-स्कूलै वाली पसन्द हौ। केतना तक देन-लेन के बात कहके भेजे हैं आपके बाबू जी ?"

"ऊ तो घनसाम को हमने बताय दिया था। ऊ बहुत ज्यादा कमीशन मांग रहे हैं। इस तरह से तो तिवारी बाबा एस्टीमेट बिगड़ जायेगा।"

"ऊ कौन होते हैं बोलने वाले ? कमीशन मांगने वाले ?" किशोर ने कहा।

"भाई साहब घनसाम जी का कहना है चार लाख तिवारी जी को और एक लाख हमको मिलना चाहिए। हमारे बाबू जी ने साफ-साफ हुक्म दिया है कि हम किसी भी प्रकार पांच लाख के ऊपर नहीं जा सकते। दूसरे यह भी तो बात है तिवारी बाबा कि हम सब जब तिलक में आयेंगे, बाबू जी को अगर मालूम हो गया कि चार लाख ही चौके पर दिये गये तो वे बहुत चिढ़ जायेंगे। पुराने विचार के आदमी हैं। उनको लगा कि एक लाख कमीशन दिया गया तो वह बहुत चिढ़ेंगे। शंका की बात है न ? आखिर लड़के में दोष को छिपाने के लिए कमीशन दिया गया—वे ऐसा सोच लेंगे, तिवारी बाबा तो चौके से उठ जायेंगे। हमारे फूफा दीक्षित जी, डी० आई० जी० हैं। ग्यारह जिले उनके मातहत हैं। वे भी बहुत तिनक जाते हैं। यह तो आप जानते ही हैं तिवारी बाबा कि डी० आई० जी० क्या होता है। वह चाहे तो काले को सफेद और सफेद को काला कर दे। उनसे तो जिले भर के इन्सपेक्टर्स, सुपरिटेण्डेण्ट तक कांपते हैं। उनका दबदबा ऐसा है कि उनकी बात कोई टाल नहीं सकता।"

"अच्छा, अरे बेटवा, दीक्षित जी तोहार फूफा हैं। धन्न भाग, धन्न भाग। भइया हमें तो गोसांई बाबा कै चौपाई याद होय गई—

सखिन सहित हरसी अति रानी।
सूखत धान परा जिमि पानी।।

भइया आज जाके तिवारी परिवार के कुलदेवता लोग जागले हैं। आज जाइ के लगा कि ऊ इहै परिवार हौ जेम्मे एक-से-एक बड़ा, आचारज, ज्योतिसी, गाना गवैया अरे का कहत हैं हौ···संगीतकार···हां-हां भइया संगीतकार···सब कर पुन्न आजॅ चरचराय के दुनिया भरै के खुशी लेके छप्पर फार के बरस रहल है। हाँ, भइया, जियरा में शान्ती आय गईल।"

"इतनी खुशी मौज की बात क्या हो गई तिवारी बाबा?" पाण्डे बोले—"कौनो थाना पुलिस वालों ने आपका अपमान कर दिया था क्या?"

"हां, बेटवा अपमानै कहौ। अउर का कहैं ओके। हम एक है दुखियारी सुखिया चमाइन कै हाल-चाल पूछे गइल रहैं और दू तीन ठो साले लुच्चन ने हमको वोही के कमरे में बन्द कर दिया। चिल्लाएं सब। मारो इसे, ई साला चरित्तरहीन है। अब तोही बताओ बेटवा। ई साला जमाना अइसा है कि होम करत हाथ जलत है।"

"ई हरिजन सुखिया कौन काम करत है बाबा?"

"अरे हरजाई है।"

"आप इसके साथ पकड़े गये थे तिवारी बाबा। का रिपोर्ट कराये रही ऊ साली सुखिया। डाक्टरी मुआयना हुआ रहा, ऊ साली सादीसुदा है कि कुंवारी कन्या है?"

"ऊ का चीज है भइया।" सुदर्शन तिवारी बोले।

"जब कौनो औरत का मुआयना होत है तो पता लग जात है तिवारी बाबा कि ओह कन्या के साथ बदफेली हुई रही कि नहीं।"

"ऊ कुंवारी तो है बेटवा, देखे में भी साली परी लगत है। ई डागदरी मुआयना से का मालूम हो जात है कि एकरे साथ बदफेली भई रही?"

"हां तिवारी बाबा बिल्कुल साफ-साफ मालूम हो जाता है। क्यों, आपका चेहरा फक क्यों हो गया। यह तो बड़ी गड़बड़ बात हुई तिवारी बाबा। अगर पता चला कि यह दुष्करम में आपका हाथ है तो बाबा, तुम्हें तो दीक्षित जी भी नहीं बचा सकते? एक तो हरिजन दूसरे कुंवारी कन्या का शील भंग, बाबा आपको पहले से कह देना चाहिए था। हम वह बयान बदल कर दूसरा पेश करा देते।"

पाण्डे जी दोपहर का खाना खाकर आराम कर रहे थे। उनके बगल में सुदर्शन तिवारी और घनसाम खुसुर-फुसुर कर रहे थे कि घनसाम का लड़का भगेलू दौड़ आया चिल्लाते हुए, "अरे पुलुस—अरे पुलुस···"

"का बात है रे भगेलुआ!" घनसाम बोले—"कहां है पुलुस?"

"अरे ऊ सुनो !" तभी घरघराती हुई जीप सुदर्शन तिवारी के दरवाजे पर पहुंची।

"भागने की कोशिश मत करना तिवारी···पूरा रिवालवर लोडेड है। मैं नहीं चाहती कि इस गांव में तीसरा मर्डर हो, हाथ ऊपर उठाओ···क्यों शिवेन्द्र··· किधर है सुखिया···।"

"वह लीजिए मैडम, इंस्पेक्टर लखन पाल के जीप में बैठी है वह।"

"इंस्पेक्टर ?"

"यस मैडम।"

"सिपाहियों को दोनों तरफ छोड़ आए ?"

"यस मैडम, दोनों रास्ते बन्द कर दिये गये हैं।"

"कितने आदमी हैं तुम्हारे साथ।"

"छह सिपाही हैं मैडम।"

"कह दो कि चारों कोनों पर खड़े हो जाएं।"

"आप हैं कौन देवी जी !" पाण्डे बोला—"आप किसी भी शरीफ आदमी को बिना सबूत इस तरह जलील नहीं कर सकतीं। मेरे फूफा दीक्षित जी डी० आई० जी०···हैं।"

"लेकिन डी० आई० जी० तो दीक्षित नाम के···" लखनपाल बोला।

"दीक्षित जी हैं इंस्पेक्टर, यह सज्जन ठीक कह रहे हैं। दीक्षित जी अभी आए हैं वो बड़े सख्त आदमी हैं।

"कहिए श्रीमान् आपको कैसा सबूत चाहिए। इस भेड़िये ने एक कुंवारी हरिजन लड़की के साथ बलात्कार किया। उसकी अस्मत लूटी। उसे पूरे एरिया में बदनाम कर दिया। वह मजदूरी भी करने योग्य नहीं रही, भूखों मर रही है क्योंकि इस एरिया वाले उसे गाली देते हैं। रण्डी कहते हैं। चरित्रहीन कहते हैं। यह सब इस बदतमीज आदमी की करतूत है। आप यह मत सोचिए कि डी० आई० जी० आंख मूंद कर हरिजन लड़की का मामला दबा लेंगे। सारे अखबार रंग जायेंगे। आपके फूफा की शान में बट्टा लग जायेगा जनाब। आप अभी प्रतिभा बंसल को नहीं जानते ?"

"ओह प्रतिभा बंसल।" एक साथ वहां खड़े मर्द और औरतें बोल पड़ीं—"यह तो बहिनी जी मरद लोगन के नाक पर बूट से मार देती है। इसके बदन में तो हड्डी है ही नहीं। सुनते हैं कि कूदती है तो बांस बराबर हवा में उड़ जाती है।"

"प्रतिभा बंसल !" घनसाम यादव धीरे से लुकते घिसटते चले तो एक सिपाही ने बूट से ठोकर मार दी—"भाग कहां रहा है रे घनसमवा। हमें चिन्हले कि नाहीं।"

"कौन बोल रहा है, कौन कांसटेबल कुछ बोल रहा था···।" बंसल बूट की एड़ी पर खड़ी होकर थिरकी।

"क्यों कांसटेबिल। कौन है यह आदमी जो भाग रहा था।"

"हुजूर ई एरिया का पक्का डाकू है गरीब परवर। ई तो दफा आठ में चार्ज-शीटेड है हुजूर थानेदार साहब जियादा बतइहैं एकरे बारे में हुजूर।"

"क्यों लखनपाल कौन है यह ?"

"हुजूर, ई नामजद डाकू है। अभी साल भर पहले सजा काट कर छूटा है।" लखनपाल ने कहा।

"अजीब बात है लखनपाल, तुम्हारे जैसा तेज अफसर इतनी गफलत कैसे कर गया। मर्डर केस में यह गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया ? पहले इसकी खाना-तलाशी लो।"

"हम खानातलाशी नाहीं लेबैं देब सुन ली ?"

लखनपाल ने अपने रिवाल्वर के साथ उसके सर पर जोर से मुक्का मारा।

"मार डालो, कसाई लोगो !" घनसाम बोला—"हम जानत है कि सबूत है हमरे खिलाफ लेकिन तुम पा नहीं सकोगी ? हमरा सबूत तो उस आदमी के साथै दरिया में चला गइल रे, हां ओके तो करमनासा लील गई रे।"

"कौन था वह आदमी ?"

"हरीशा था। हरीशा। एह शिउवा का दोस्त।"

"तुमने खुद मारा था उसे ?"

"हम बुद्ध हैं कि खुदै कतल करैं। सुखिया के दरवज्जे पर हम खड़े रहै जब हरीसवा फोटो लेइ रहा था। ऊ जो फोटू है तेरे हाथ में ऊ तो सही है। सुदरसन और सुखिया को नंगा फोटूत ऊ ले लिएस, बाकी घनसाम का नाही ले पाया।"

"लखनपाल !" प्रतिभा गरजी, "इसे बांध कर मुर्गा बना दो और इसकी तब तक पिटाई करो अपनी कमर पेटी से जब तक वह खूनी का नाम न बताए।"

"देखिए देवी जी, आप जान बूझकर इज्जतदार लोगों की पगड़ी उछाल रही हैं···?" हर्ष बोले।

"तो आइए, मैं दिखाऊं आपको।"

"सबके सामने दिखाइए।"

"पूछिए अपने शरीफ रिश्तेदार से कि यह सबको दिखायें···।"

"हां हां, देखाव तू। एह बार तोर रंडीपना काम न करीं। अइसै गुपचुप फोटो की बात करिके तू फंसावती है बड़े लोगन के। हम पुरसोतम सिंह नाहीं हैं।"

अचानक प्रतिभा अपनी जगह से उछली और उसके दोनों बूट सुदर्शन तिवारी की छाती पर लगे, जैसे कोई छत भहरा कर गिर पड़ी हो—"तूने सरकारी काम करने वाली महिला को रंडी कहा।" उसने बड़ी तेजी से लपक कर

सुदर्शन की बांह पकड़ी और पीठ पर ऐंठ कर चढ़ा दिया—"मैं रंडी हूं !" उसने एक पैर से तिवारी की पीठ पर जोर से धक्का मारा और वो जमीन पर लुढ़क गए।

"देखो भइया, ई है साली बेसबा।"

"चुप हो जाइए तिवारी बाबा। आप तो जायेंगे ही। मेरी भी लुटिया डुबोयेंगे। आप इतनी बड़ी पुलिस आफिसर को रंडी कह रहे हैं, बेसवा कह रहे हैं···शर्म की बात है। इसे डी० आई० जी० तो क्या प्रेसिडेंट भी माफ नहीं करेंगे। एक तो औरत, नम्बर दो इतनी बड़ी सरकारी अफसर। आपको रो-गाकर सफाई देनी चाहिए थी। वह तो खुद ही सबूत दिखाने के लिए मुझे बुला रही थीं। दिखाइए हुजूर···क्या है सबूत।"

"सुनो क्या नाम है तुम्हारा ?"

"हर्ष पाण्डे नाम है मैडम !"

"आपको कहना पड़ेगा दीक्षित जी से कि इस नीच आदमी ने मुझे रंडी और वेश्या कहा। बोलिए कहिएगा कि नहीं ?"

"हुजुर···!"

"बोलिए ?"

"कहूंगा हुजूर !"

"लो देखो···।"

"हे भगवान।" पाण्डे ने अपना सर थाम लिया। "हे ईश्वर ! तिवारी बाबा आपने इतना नीच काम किया कैसे ? आपकी आत्मा ने आपको धिक्कारा नहीं। अब क्या कहूंगा फूफा जी से।"

"का है हो फोटू में पाण्डे भइया।" घनसाम बोला।

"सुखिया चमाइन के साथ हमारे तिवारी बाबा बलात्कार कर रहे हैं। अरे घनसाम भइया आपने कहां लाकर पटक दिया हमें। यह सब करतूत मालूम होती तो हम क्यों आते भला ऐसे गन्दे गांव में।"

"आप गांव को क्यों गाली दे रहे हैं पाण्डे जी।" मैंने हस्तक्षेप किया—"आप दो चार नीच लोगों की करतूत को गांव की करतूत क्यों कह रहे हैं। हमारे जनपद करमूपुरा का यह बड़ा नामी ग्राम है। इसी तिवारी वंश में एक से एक महान् विद्वान हुए हैं। उनकी आत्मा क्यों दुखा रहे हैं साहब।"

"हूं।" सुदर्शन तिवारी बोले—"सुना हो पांडे बेटवा ! इहै ऊ सरवा कुजात रजपुत। एही नै पुरुसोतम के आबरु मटियामेट किया, एही नै सोबरन राय को फंसाया, इहै सरवा बन्ने मियां के भी फंसायेस।"

"ई क्या हो गया है तिवारी बाबा। आप अपने किसी साथी का नाम क्यों बक गए।" पाण्डे बोला।

"नोट इट लखनपाल। यह बहुत बड़ा क्लू है। दो सिपाहियों को भेजो और बन्ने मियां को हाज़िर कराओ यहां।"

"यस मैडम !" लखनपाल ने एक सिपाही को इशारा किया। उसने टर्न किया और सलूट मारा और बन्ने को पकड़ने चला—"चल रे लड़के, बोल बन्ने मियां का घर किधर है ?"

"इधर से आओ सिपाही जी, इधर से हां।"

दस मिनट में सिपाही बन्ने मियां को खींचता आया और जोर से प्रतिभा बंसल के सामने झोंक दिया। "अबे सैलूट कर मैडम को।" सिपाही ने कहा।

"पीछे हटो।" बंसल ने रूल हिलाते हुए सिपाही को अलग किया और बोली —"बन्ने मियां !"

"हां हुजूर !"

"आपके जिगरी दोस्त सुदर्शन ने झटके में आपका नाम ले लिया। अब आप बताइए कि इनकी बदफेली में आपका क्या रौल था ?"

"मेरा नाम ? क्यों जी तिवारी तुम दीवाने हो गए हो क्या ? मेरा तुमसे क्या वास्ता ?"

वे गिड़गिड़ाए, "हुजूर तिवारी का दिमाग बेकार हो गया है। ये पागल हैं। इनकी बात पर यकीन मत करिएगा। सुखिया चमारिन के केस से मेरा क्या ताल्लुक हुजूर।"

"क्यों सुखिया।" बंसल बोली—"तू इनके बारे में कुछ कहेगी ?"

"पता नहीं। ओह समै में हुई रहै कि नाहीं, वाकिर बाद में हमसै बन्ने मियां बोले न कि जो भया सो भया। अब सुदरसन कै गलती माफ करौ। जेतना रुपया चाहो मांग लौ। तोहैं दिलवा देवेंगे हम।"

"क्यों बन्ने मियां, सुदर्शन अपने बयान में आपका नाम डाल रहे हैं। उधर सुखिया से आपने तिवारी को माफ करने को कहा—उससे तो केस बिगड़ गया आप भी झटके में कह गए सुखिया से कि जेतना कहो रुपए दिला देंगे। इतनी मिहरबानी क्यों करने गए थे आप। बोलो, जवाब दो।"

"हुजूर हमने कुछ नहीं किया न कुछ कहा।"

"सच बोलो, तुम्हारे पास रायफल है ?"

बन्ने मियां के बदन में जैसे झुनझुनी चढ़ गई हो। बोले—"हां हुजूर, है तो गरीब परवर ?"

"बोलो, कतल के दिन तुमने अपनी रायफल कहां रखी थी ?"

"मैं कुछ नहीं बोलूंगा। अब जो कुछ बोलना होगा, अपने वकील से पूछ कर ही बोलूंगा।"

"ठीक है, लखनपाल इन्हें हिरासत में ले लो।"

"मेरी गलती ?" बन्ने मियां अकड़कर बोले।

"आपकी रायफल थ्री नाट थ्री की पुरानी डिजाइन की है ?"

"है तो, नहीं, नहीं, पता नहीं मुझे।"

"फिर सच निकल गया न बन्ने मियां ? थ्री नाट थ्री की रायफल अभी तक जब्त क्यों नहीं हुई लखनपाल ?"

"हुजूर हमारे पास केस की पूरी फाइल आई ही नहीं। यहां तो लग रहा है कि सारा मामला ही बदल गया है। हुजूर।"

"शट अप। इट इज़ नाट टु बी डिस्कस्ड इन पब्लिक।" बंसल बोली।

"गलती हो गई मैडम, माफ करें।"

"भेजो उसी सिपाही को और रायफल कब्जे में लो।"

"जी हुजूर।"

रायफल के साथ रोशन और सदरू भी आए।

"क्यों रोशन तुम कहां से आ गईं ?"

"ये मेरे अब्बा हैं हुजूर और ये हैं मेरे शौहर।"

"इनसे बात मत करो। तुम जानती हो कि यह सब तुम्हारे गांव का कुजात शिबू करा रहा है। तुम कुछ मत बताना।" बन्ने मियां बोले।

"आप बहुत ज्यादा बोला न करें अब्बा हुजूर !" सदरू ने कहा—"आपसे क्या वास्ता है तिवारी से। दो एक दिन गोस्त और दारू का इन्तजाम कर देगा सुदरसन और आप फूलकर कुप्पा हो जायेंगे। डींगें हांकना तो आपकी लत है। आपका नाम शिबू भाई साहब ने लिया ? आपकी रायफल थ्री नाट थ्री है। यह सब शिबू भाई साहब ने बताया। खुदा के नाम पर अब डींगें हांकना छोड़िए। बहुत जुबान मत चलाइए।"

"बंसल जीजी !"

"बोल रोशन !"

"मेरे लिए माफी मांगने की जरूरत नहीं है।" बन्ने मियां फिर तिनक कर बोले।

"पर हमारे लिए है। आप मकबूल मियां के पठानी खून पर दाग लगा रहे हैं।" सदरू बोला—"हुजूर यह आदमी गुनहगार नहीं है। सिर्फ बेवकूफ है, रोशन और मेरे नाम पर इसे हिरासत में मत ले जाइए। रायफल अलबत्ता ले जाइए। लगता है कि यह रायफल रातोंरात बहुत बेशकीमती हो गई है। इसे ले जाइए मैडम। और इस बेवकूफ बुड्ढे को हमारी जमानत पर छोड़ दीजिए।"

"बैठो तुम लोग एक मिनट। जरा मैं तफ्तीश कर लूं। अभी चन्द सवाल बाकी हैं।"

"ले आओ हो महेन्दर !"

आगे-आगे शिवशंकर तिवारी और उनके पुत्र महेन्द्र लम्बी ट्रे में पांच कप कॉफी लेकर आए।

"नमस्कार हुजूर।"

"अरे तिवारी जी। मुझे बड़ा दुःख हुआ कि आपके दो भतीजों का कतल हुआ। आपको तो अब इस सदमे को सहना ही होगा। मुझे बड़ा अफसोस है।"

"अब जो हुआ हुजूर। उसे का कहें। ईश्वर हमारे वंश पर बहुत रुष्ट हो गए हैं हुजूर। चाहे चित कहूं तो चाहे पट कहूं तो। आज भरी सभा में तिवारी वंश का चीर हरण होय रहल है हुजूर। जे परिवार के पूर्वजन के सामने बड़े-बड़े राजा बाबू झुक के प्रणाम करते रहे हुजूर वही वंश के लाज कौड़ी के भावै बिकाय गई है। हुजूर ई कॉफी हौ। पी लें हुजूर। आप जब से इहां आई हैं हुजूर खड़ीयै हैं। थकान होगी। कॉफी पी लें।"

"नहीं तिवारी जी हम यहां किसी की चाय-कॉफी पीने नहीं आए हैं। आप इसे ले जाइए। शुक्रिया।"

"हुजूर एमे हौ का? हम तो खुदै लज्जा से झुक रहे हैं। एक चम्मच दूध आ बाकी गरम पानी। इसे पी लीजिए। हम पर कोई एहसान मत करिएगा। नाहीं ही करना। एक गिलास पानीय मंगाय देत हैं।"

"अरे ई कोढ़िया के देख रे। ई बंसलवा के मक्खनबाजी करत हौ। जैसे हम-हन के एकदम बेवकूफै बूझत है। एकरे पतोह चनवा का मरद है, शिबुआ। ई हमहन के हुरवावे आइल ह कि हमरा से कौनो रिस्ता ना है इनहन से। अरे हमहन कुल बुझत हई सबै। आवै द पटना के कक्का जी के। हम तोहन लोगन के मिली भगत जग जाहिरै कराके अन्न पानी लेइब।" रमानाथ की औरत बोली।

"देख रहे हैं तिवारी जी आपकी पतोहू हमें बंसलवा कह रही है। शिबू तो खुद भाग रहे थे कि वहां मत ले जाइए। हम तो सुखिया कांड को सुलझाने आए थे। हरिजन महिला की बेइज्जती का सवाल है। लेकिन इस औरत की बात सुन-कर तो लग रहा है कि कतल और सुखिया कांड दोनों में कोई गहरा रहस्य है। लाइए कॉफी, लाइए। जब बंसलवा एकतरफा बना ही दी गई तो कॉफी क्यों न पीयें। घूस में एक कप कॉफी ही बहुत है। उस गंवार औरत को अभी बताती हूं कि बंसलवा है क्या?"

तभी लट्ठ लिए बीस-पचीस लोगों ने सुदर्शन तिवारी के बइठके को घेर लिया। बंसल कॉफी पीती रही—बोली—"आप लोग हमें पीटने आए हैं झुंड बांधकर। सुन लीजिए बंसल साक्षात काल से भी नहीं डरती। बोलिए, क्या बात है। कौन हैं आप लोग?"

"हुजूर हम राजपूत पट्टी के वाशिन्दे हैं। मेरा नाम दीनदयाल सिंह है। अभी हमको खबर मिली कि इस कमीने तिवारी की खानगी बहू ने हमारी जात के हीरा

को गन्दी गालियां दी हैं। इस नीच औरत की हम जीभ खींच देंगे सड से। एक चुटकी राख मलकर पूरी जीभ उखाड़ न दूं हुजूर तो थूक दीजिएगा मेरे मुंह पर। ई साले पत्तल चाटने वाले बाभन शीबू को क्या समझ रहे हैं। यही सोचा न उस गंवारन ने कि शीबू की ओर कोई बोलने वाला नहीं है। हम ई बखरी जलाय के रहेंगे आज। तुम अफसर हो चलवा दो गोली। ले आ रे लुक्का···" तीन-चार लड़के लुक्का लिए बढ़े।

"ई क्या कर रहे हो दीना चाचा। पागल हो गए हो क्या? तुम अगर एक गंवारन को पहचानते हो, उसकी बातें तुम्हें अच्छी नहीं लगीं। तुम कहा करते हो बार-बार सबसे कठिन जात अपमाना—काका मारो गोली। तुम इतने बड़े आदमी हो, नीच से नीचता करोगे। तब तो दुनिया तुम्हें भी गंवार कहेगी। प्रतिभा जी यहां न्याय करने आई हैं। इहां तो हर आदमी को अपनी बात कहने की छूट है। तुम यह सब मत करो।"

"तू हमेशा हमें दोद देता है। तेरे कारन हम खून का घूंट पीकर रह जाते हैं। ई स्साले सुदर्शन से कहो कि हाथ जोड़ कर ठकुरान से माफी मांगें नहीं तो आज इहां खून की नद्दी बह जाएगी।"

"मैं हाथ जोड़कर माफी मांगता हूं दीना भाई! छमा करो भइया। बिपत काल है। ऊंच-नीच छमा करो। हम खुदै ई सब बातें सुनकर दुखी हैं। भइया येह जनपद में कौन नहीं जानता कि शिबू बहुत बड़ी हस्ती है। उसका मजाक उड़ाने वाला बिला जाता है। दीना भाई खुदै सोचो। कौन है इस जवार में जो शिबू से टकराया और बच गया। नहीं है न कोई? भइया ऊ ठकुरान का ही हीरा नहीं है। ऊ सबका हीरा है भइया। गलती होय गई माफ करो।"

"जाओ शिवशंकर छोड़ दे रहे हैं इस बार। बनो धरमराज और भोगो। अभी का हुआ है आगे देखना। कहे जा रहे हैं तुम्हारा बंस बिला जाएगा। जा रहे हैं। हर हर महादेव, हर हर महादेव।"

सब लोग चले गए।

"अरे भाई शिवेन्द्र इस देहात से तुम लोकसभा के लिए क्यों नहीं खड़े होते?" बंसल व्यंग्य करती हुई बोली—"मैं नहीं जानती कि भारत के किसी लोकसभा क्षेत्र में एक व्यक्ति को चाहने वालों की इतनी बड़ी भीड़ होगी। बन जाओ भई एम० पी० इस बार।"

"मैडम आप भी व्यंग्य करने लगीं।" मैंने कहा—"आप जानती हैं कि मैं हमेशा विपक्ष का आदमी हूं। शाश्वत विपक्ष।"

"यह क्या चीज़ है भाई? राजनीति में मैं पहली बार यह मुहावरा सुन रही हूं। तुम आज विपक्ष में हो माना, कल तुम्हारा दल अगर जीत जाए तो तुम सत्ता में आ जाओगे। फिर यह शाश्वत विपक्ष क्या है?"

"मैडम, मैं जनता के लिए हूं। जब मेरे मन का कोई दल सत्ता में आ जाएगा तो विपक्ष सत्ता पा जाएगा। लेकिन शिवेन्द्र उस वक्त विपक्ष के साथ चला जाएगा, यह देखने कि दोनों में सिर्फ नारों का ही फर्क है या काम का भी। कौन जनता का है कौन चोरों और तस्करों का। इसके लिए मैं उसका पहरेदार हूं। पहरेदार तो दिन रात द्वार पर ही रहता है न मैडम, द्वार से सिंहासन की ओर जाने वाले चौकठ बाहर कुछ होते हैं, भीतर जाकर जाने क्या बनें—पर शिवेन्द्र तो उस वक्त भी जनता के द्वार का ही प्रहरी रहेगा। यही है अर्थ इस नए नारे का यानी शाश्वत विपक्ष का।"

"अच्छा भई, सुखिया तू क्या चाहती है ?"

"अरे तुम कइसी मेहरारु हौ तुम हमसे पूछत हौ कि का चाहत हौ। औरत के नजदीक में अस्मत से बड़ी भी कौनो चीज़ होत है का। माफ करना बीवी तोहरे साथ ई सब हुआ होता, तो तू का करती ? बोलो दरोगाइन। बताओ ई राक्षस लोगन को। ई बड़ा घण्टा वाले बाभन लोगन से पूछो कि औरत के इज्जत का मोल का है ? हमके ई सबके ओतना दुख ना है कि हम भूखन मरत हैं। दुख है तोहरे पर बीबी जी कि तू औरत होइके औरत से पूछत हौ।"

अचानक बंसल काठ की मूरत की तरह जड़ हो गई। "ठीक कहती हो तुम।" वह बड़बड़ाई, "सुखिया और बंसल में कोई फर्क नहीं है। दोनों की इज्जत का क्या मोल है ? बंसल को चरित्रहीन कह दो तो सुखिया की इज्जत लूट लो तो क्या फर्क पड़ता है।" उसकी आंखें भर आयीं। वह तेजी के साथ उछली। इस बार सुदर्शन तिवारी बेमौके फंस गए। वे सोचकर चुप बैठे थे कि जो होना था वह होय गया कि उनके सिर पर दोनों बूटों की इतनी जोरदार टक्कर हुई कि उनके मुंह से चुल्लू भर खून निकल गया।

"आप उन्हें गोली क्यों नहीं मार देतीं।" सुदर्शन का लड़का किशोर बोला—"इस तरह रेत-रेत कर जबह करने से क्या मिलेगा आपको ?"

"तुम कौन हो, इसके बेटा हो ?"

"हां, इनका बेटा हूं। किशोर नाम है।"

"तुम्हें अपने बाप की करतूत पर लज्जा नहीं आती। इस गांव में क्षत्रिय, ब्राह्मण, यादव लोगों के घर में भी जवान और कंवारी लड़कियां होंगी, पूछो अपने बाप से। उसने उनके साथ ऐसा क्यों नहीं किया ?"

"इसलिए कि मेरे बाप पेशवर अपराधी नहीं हैं जैसा आप बना रही हैं।" किशोर ने कहा।

"गलत, बिल्कुल गलत। यह पेशेवर से भी गया-गुजरा नीच मुजरिम है। यह उन औरतों को छेड़ता तो वही होता जो दीन दयाल सिंह करने आए थे। तुम्हारे घर को लुक्का से जला देते छत्री, यादव वगैरह। इसने हरिजन लड़की के साथ मुंह

काला इसलिए किया कि उसका कोई रक्षक नहीं था। उसके भी बाप-भाई होते तो यह हिम्मत नहीं करता। गरीब की गाय को सब दूहना चाहते हैं कमजोर को सभी सताते हैं। अगर हरिजन ताकतवर होते जैसे करमूपुरा में हैं तो तुम्हारा बाप यह पाप करने के पहले बीस बार सोचता। उसे लगता कि उसकी पूजा लाठियों से होगी।''

''वह तो हम करेंगे ही मैडम !''

''कौन बोला ?''

''मैं हूं मैं, एक हरिजन। मुनीस नाम है मेरा ?''

''तुम क्या हरीश के साथी हो ?''

''साथी हुआ होता मैडम तो क्या सुखिया की यह हालत होती ? हम हरिजन पढ़-लिख कर बड़ा आदमी बनने के सपनों में खोकर गरीबों को भुला देते हैं, जब तक वामन छत्री अपने साथ चारपाई पर बैठाते नहीं, जलपान नहीं कराते तब तक हरिजन युवक को लगता है कि वह अभी वह नहीं बना जो पढ़-लिखकर होना चाहिए। हम बड़ी जात के आगे दुम हिलाते कुत्तों की तरह खड़े होते हैं कि वे जरा सा प्यार के साथ हमें सहला दें। हमें धन्य कर दें। हाय रे नीचता। हम अपनी ही कौम के गद्दार खुद बन गए हैं। हरीश के साथ मैं नहीं गया। आज लगता है कि हरीश बनना मुनीस जैसे नीच हरिजनों के लिए असंभव है। कौन एक गरीब लड़की की लाज बचाने के लिए जान पर खेलता है ? कौन है जो पैर में गोली लग जाने पर भी कैमरा बचाने के लिए उसे छाती से चिपकाए नदी में कूद जाता है। न मुनीस में ताकत और ताव है कि वह हरीश बने न तो सुखिया में वह ताकत है कि वह रुपवा बने।''

''मुनीस !'' बंसल ने मेरी ओर आंख मारी और कहा—''तुम यह बता सकते हो कि हरीश के पास जो कैमरा था उसमें केवल एक यही फोटो था कि उसने कोई और भी चित्र लिये थे ?''

''और चित्र न होते हुजूर तो घनसाम जैसा पेशेवर डाकू उसके पीछे क्यों पड़ता। हुजूर घनसाम झूठ बोल रहा है। या हो सकता है कि इसे गलतफहमी हुई हो। वह घनसाम के चित्र के लिए क्या गोली खाता और नदी में कूदता ? उसके पास बहुत संगीन किस्म के सबूत होंगे मैडम जिन्हें बचाने के लिए उसने जान बाजी पर लगा दी। नदी में कूदते वक्त वह चिल्लाया···।'' मुनीस चुप हो गया।

''बोलो क्या चिल्लाया था ?''

''यही कहा हुजूर कि क़तल मैंने नहीं किये हैं। कतल करने वालों को हम जानते हैं। घनसाम तू हरीश से बच नहीं पायेगा। यही कहा था। मैं कल्पू की मौत का बदला लूंगा घनसाम। वरना शिबू भाई के सामने कौन सा मुंह लेकर

जाऊँगा।"

"फिर ?"

"फिर हम बतावत हैं बंसल ! हम बहुत बड़ा पत्थर उठाय के उस पर फेंके और वह वहीं डूब गया। खून से लहर रंगाय गई। ऊ मर गया। समझ गइ तू ?"

"हुंह, लखनपाल !"

"मैडम !"

"सुदर्शन और घनसाम के हाथों में हथकड़ियां डाल दो। इन्हें छह पुलिस मैन के साथ कड़े पहरे में थाने भेजो। हम उस जगह की तहकीकात करेंगे। याद रहे लखनपाल की इनमें से अगर एक भी गया तो या तो तुम जाओगे, या तो मैं जाऊंगी। टेक इट सीरियस।"

"मैडम, अब तक मुझे···"

"ठीक है, ठीक तुम्हें अब पता चल रहा है कि जुर्म बहुत संगीन है। हम पुलिस वालों को जब तक पूरा बना-बनाया मसाला नहीं मिल जाता, फाइल बढ़ाना आता ही नहीं। लेकिन याद रखो लखनपाल, मैंने अभी बहुत कम वक्त गुजारा है इस सर्विस में। तुम मुझसे ज्यादा अनुभवी हो सकते हो, पर याद रखो जब तक जनता खुद आगे बढ़कर मुजरिम के पकड़ने में, उसकी गिरफ्तारी में साथ नहीं देती पुलिस अफसर को तब तक जनता के साथ-साथ चलते रहना चाहिए। पुलिस और जनता के बीच की खाई पाटनी होगी हमें। मेरे पास क्या सबूत था। जो था, वह एक फोटो था। अब तुम खुद देख रहे हो कि जनता ने तुम्हें मामूली से छेद के भीतर छिपी पूरी दरिंदगी को दिखा दिया। खैर, इन्हें तो रवाना कर दो सैयदराजे···"

"और बन्ने मियां को हूजूर ?"

"बोलो," किशोर ने कहा—"बन्ने मियां के बारे में चुप क्यों हो ?"

"तू बहुत गावदी किस्म का आदमी है लड़के। बंसल अपने अपराधी बाप को तो बखशती नहीं, बन्ने मियां किस खेत की मूली हैं। लेकिन सोच ले लड़के तेरे बाप ने जिस मनसूबों की तरह दो युवकों की हत्या कराई है उसका राज बंसल के सामने खुद-ब-खुद नंगा खड़ा हो गया है। बोल लड़के तेरी वह गंवारन भाभी औलाद वाली है ?"

"औलाद का और क़तल से क्या सम्बन्ध ?"

"सम्बन्ध है, सम्बन्ध है।···" वह गरदन हिलाती रही। "तेरी भाभी के हिस्से में कितनी जमीन आती है ?"

"बीस एकड़।"

"हुंह, बीस एकड़, यानी कम से कम बीस लाख। कम से कम बीस लाख।

कितने आदमी तो पांच हजार लेकर भी मर्डर को तैयार हो जाते हैं। बीस लाख क्या बीस हजार भी दे दें तो मर्डर तो क्या पूर्वांचल में सामूहिक हत्या करने वालों की भीड़ तैयार हो जायेगी। अय्याश दरिन्दे रुपये में कैसे खरीदे जाते हैं, यह अब रहस्य नहीं है लड़के···मैं तुझे बीस केस बता सकती हूं कि इसी पूर्वांचल में रुपये, शराब और औरत के बदले किसी का भी कतल कराना बायें हाथ का खेल है। इस खेल के जिम्मेवार कौन हैं, यह अभी सोचना है हमें।"

"अरे ई देक्ख, ई देक्ख अरे बहिन जी, ई तिवरिया त अपने भतीजवत के खुदै मरवा डालेस। हे भगवान कइसा जमाना आयल है। अपने पतोहिया के विधवा ओकर ससुरे बना देहलस।"

"अरे कौनो गड़बड़ झाला होई ससुर-पतोह में। ऊ पतोहिया का आंख मुदले रहल, जब ई सब होत रहे। जरूर न जरूर कुछ औरों छिपावत होई। देखा ई मामूली औरत ना है। बंसल चंडी माता कहात है हमरे पुरबी इलाकन में। ई सब गड़ा मुरदा उखाड़ के दम लेही।"

"हमके समझ में नाहीं आ रहा है बहिनी जी कि ई अपने भतीजवा के कतल करायेस जायदाद के वास्ते लेकिन कल्पू देवर के हत्या काहे बदे करावत गयल ?"

"समझ में भोजपुरी आ रही है मैडम। आपको तो पूर्वांचल चंडी माता कहकर पूजने लगा है।" मैंने कहा।

"तुम बहुत खतरनाक आदमी हो शिवेन्द्र। तुम थोड़ी कृपा क्यों नहीं करते मुझ पर तुम इस तरह मुझे चंडी माता न बनाते, अखबारों में मेरी जय-जयकार न छपवाते तो शायद मुझे तुम्हारे साथ काम करने का थोड़ा और समय मिल जाता।" बंसल बोली।

"आप जहां भी जायेंगी न मैडम वहीं आपको कोई न कोई शिवेन्द्र मिल ही जायेगा। शिवेन्द्रों को आपकी सरकार न्याय के लिए लड़ने का मौका ही कहां देती है। यदि एक तरफ प्रतिभा बंसल हैं तो दूसरी तरफ बेनाम के दीक्षित लोग। आपने अगर शिवेन्द्र को तरजीह न दी होती तो नारी का चंडी रूप जमाना देख ही नहीं पाता। मैंने तो पूजा के लिए ढेर सारी मालायें गूंथ रखी थीं। मात्र दो बार की पूजा से कहीं दुर्गा के सम्पूर्ण रूपों का कोई साक्षात्कार कर पाता है ?"

"अच्छा अब वकवास बन्द करिये, बहुत से काम हैं मुझे। आपकी मालाओं के लिए मन ललचा तो रहा है, पर वार्निंग भी दिल दे रहा है कि धोकेबाजों से बचो···।"

"ठीक है हुजूर, किनाराकशी कर लीजिए। शिवेन्द्र को तो यही मिलता है हर बार। बस यही।"

"जल्दी करो लखनपाल। कहां है दूसरी जीप ?"

"वह सामने है मैडम।"

"ले जाओ इन्हें, हथकड़ी देख लिया है न, ठीक से। भेजो इन्हें। और यहां बन्ने मियां तो हैं ही दीनदयाल सिंह को बुलवाओ···"

"दीना चाचा को इसमें डालना ठीक रहेगा मैडम। आप क्या खुद अपने को शरारती तत्वों के हाथ में सौंप दीजिएगा? दीना भी तो शिबुआ की तरह ही रजपुतवा हैं।" सभी ठठाकर हंस पड़े।

"नहीं, उन्हें बुलाओ लखनपाल, क्यों दीक्षित जी के भतीजे, आप भी चलेंगे वहां, शायद आप साथ-साथ रहें तो पूरी बातें सुनेंगे और अपने फूफा को वाकया की सही रिपोर्ट दे सकेंगे।"

"आप अब मुझे क्यों घसीट रही हैं इसमें मैडम। मैंने जो देख लिया वही रात भर चैन से सोने नहीं देगा। इतने डरावने चेहरे मैंने तो पहली बार देखे हैं।"

"ऐसा तो कोई नहीं था यहां कि आपको रात में डरा सके।" बंसल बोली?

"हुजूर बाहर वाले चेहरों से मैं थोड़े ही डर रहा हूं, उनके भीतर के आदमखोर के जहरीले जबड़े भी तो देख लिए मैंने।"

"आप जाइए पांडे जी। आपको जाना ही पड़ेगा। यह औरत क्या-क्या खुराफात करती है। इसके गवाह तो आप ही बनेंगे।" किशोर ने कहा।

"तेज लड़का है पांडे जी। चलिए मेरे साथ। बिना आपको कटघरे में खड़ा कराये आपके भविष्यत् बहनोई शान्त नहीं रहेंगे। चलिए आप।"

दीनदयाल सिंह आए, "मुझे आपने बुलाया है हुजूर।"

"हां ठाकुर साहब।" बंसल ने कहा—"आपके मुंह से निकले एक जुमले के कारण आपको बुलाना लाजिमी हो गया है। आपने आग न लगाने की विनती तो मान ली बड़े तिवारी की, पर आपने कहा था कि बनो धरमराज, शिव शंकर तुम्हारा बंस बिला जायेगा। कहा था न आपने?"

"हुजूर वह तो गांव वालों की अटकल-पच्चू बातें हैं। उनको सही मान लेंगी आप यह तो मैंने सोचा ही नहीं।" दीना चाचा ने कहा—"हमें गुस्सा आया था उस नट्टिन पर, मैं बक गया वह सब।"

"नहीं, नहीं बाबू दीना सिंह, मैं चेहरे से मन की बातें पहचानना जानती हूं। आपके लिए जो अटकल-पच्चू है वह पुलिस के लिए क्या मूल्य रखता है, आप नहीं जानते। मैं जानती हूं। यहां सब तो अटकल-पच्चू ही कह रहे थे। अब अटकल-पच्चू के पेट से हैवानियत बाहर आ गई। यह सब बहुत बहुत मानी रखता है ठाकुर साहेब। आइए चलिए। कहां गया लड़का मुनीस। किधर है?"

"मैं यहां हूं मैडम। आपके साथ चलना चाहता हूं।"

"मैं तुम्हें लिये बिना जाती भी नहीं। या तो तुम झूठ बोल रहे हो या तो कुछ छिपा रहे हो। तुम्हें उससे कहीं अधिक मालूम है, जितना तुमने बताया। अब मैं

मौके पर तुमसे सवालात करूंगी। सुखिया को भी लेते चलो अपने साथ।"

"यस, मैडम !" मुनीस ने कहा और चला गया।

"हुजूर !" शिवशंकर तिवारी बोले—"आप सुदरसन की ओर से पांडे जी को ले जा रही हैं तो मेरे चलने में आपको एतराज नाहीं होवे के चाही।"

"आपकी ओर से तो शिबू दुसाध जा ही रहे हैं।" किशोर ने कहा।

बंसल अचानक मुड़ी तभी किशोर ने हाथ जोड़ लिए—"गलती हो गई मैडम।"

"हुंह, छोड़ रही हूं। यह जुमला कभी फिर निकला तो आंत निकाल कर हाथ में रख दूंगी।"

"छोड़िये मैडम, बकने दीजिए इसे। यह बेचारा निर्दोष है। इसे तो यकीन ही नहीं आ रहा होगा कि सच क्या है ? इसका दिमाग इस वक्त ठीक नहीं है मैडम। जाओ किशोर आराम करो।" मैंने हंसते हुए कहा।

"यू हैव डेवेलप्ड योरसेल्फ इन टु ए काइन्ड सेंट। (तुमने दयालु साधु के रूप में अपना विकास कर लिया है)।" बंसल कुटिल ढंग से बोली—"महात्मा आप इन जैसे लोगों के बीच कैसे घिर जाते हैं। सारे शहर या जनपद के अंदेसे से काजी जी दुबले क्यों होते रहते हैं ? कभी तो चुपचाप आराम किया करें। तुम सचमुच ग्रेट हो शिवेन्द्र। मैं तुम्हारी आदमियत से बहुत मुत्तासिर हूं।"

"थैंक्स लेडी, आपके लिए विंडमिल से टकरा सकता हूं।" मैंने कहा

"धूर्त," वह आगे बढ़ गई, "डानक्विक्जोट ही तो बनोगे। और आता ही क्या है तुम्हें ?"

गांव से बाहर आते ही उसने एक नजर चारों ओर दौड़ाई। "वह वहां पेड़ों के बीच क्या नज़र आ रहा है ?"

"ऊ एक टीला है हुजूर।" दीना चाचा बोले।

"सुदर्शन के मकान से टीले का फासला क्या होगा बन्ने मियां।"

"जी हुजूर होगा कोई दो सौ मीटर। मुझसे क्यों पूछ रही हैं हुजूर ?" बन्ने बोले—"हमें ठीक नहीं मालूम है हुजूर।"

"तुम्हें सब मालूम है बन्ने मियां। तुम ड्रामा कर रहे हो। समस्या यह आ गई कि तुम रोशन के ससुर हो। उसने एक दिन सब्जी और फुलके खिलाये थे मुझे। उस लड़की के चेहरे की घबड़ाहट देखकर वहां कुछ नहीं किया तुम्हारे खिलाफ। तुम अब भी होशियार हो जाओ बन्ने मियां। सच बोल दो। मैं तुम्हें बचा लूंगी। सोच लो। झूठ बोलोगे तो फांसी, सत्य बोलोगे तो बाइज्जत रिहाई। चुन लो इसमें जो तुम चाहो। बस पांच मिनट का मौका दे रही हूं तुम्हें। सिर्फ पांच मिनट···।"

"हुजूर मैं सच बोल रहा हूं। सुदरसन तिवारी और घनसाम ने मुझसे आठ

घण्टे के वास्ते रायफल मांगी थी। इसके अलावा मैं कुछ नहीं जानता हुजूर।" बन्ने मियां ने हाथ जोड़कर कहा—"हुजूर, मैं बिल्कुल बेकसूर हूं।"

"कसूर साबित न हो पाने के पहले मैं तुम्हें बेकसूर समझ कर ही सफाई का मौका दे रही हूं। जब तुम्हें नहीं मालूम था कि आठ घंटे के बाद क्या हुआ तो यह रायफल तुमने चुरा कर रखी क्यों? कतल के बाद तुम्हें सोचना चाहिए था कि कहीं इस रायफल का गलत इस्तेमाल तो नहीं हुआ। तुमने न केवल रायफल दी, बल्कि सुदरसन के साथ साजिश में शामिल हुए...।"

"इसका क्या सबूत है हुजूर?" बन्ने मियां अकड़े—"मैं कुछ नहीं कहूंगा अब?"

"तुम सब कुछ कहोगे और पूरी तफसील से कहोगे।"

"ठीक है मार डालो मुझे। लोग ठीक कहते हैं कि तुम एक कातिल संगदिल और जल्लाद किस्म की औरत हो। पता नहीं किस मर्द ने तुम्हारे साथ बुरा सलूक किया है जिसका बदला तुम हर रईस आदमी को पीट-पीट कर लेती हो।" बन्ने बोल गया।

अचानक प्रतिभा की आंखों में गुस्सा, क्षोभ, ग्लानि और बेबसी एक में मिल-घुलकर काले बादल की तरह छा गई। दो बूंद और आंसू बरबस छलक पड़े। उसने पाकेट से रूमाल निकाल कर आंखों को ढंका और एक ओर भागती चली गई।

"दीना चाचा!" मैंने कहा।

"हां बोलो। शिवेन्द्र!"

"दो स्साले बन्ने को चार थप्पड़।"

दीना काका के झापड़ के साथ ही बन्ने गिर पड़ा। उसका चेहरा बदसूरत लग रहा था। वह उठा तभी मैंने उसके सीने में एक लात मार दिया। वह फिर गिर पड़ा।

"छोड़ दो इसे" प्रतिभा बंसल बोली—"इसका कसूर नहीं है। इसने तो सायकालोजी का नाम भी नहीं सुना होगा। यह शिवेन्द्र जैसे किसी बुद्धिजीवी के शब्द को दुहरा रहा है।"

मैंने गर्दन झुका ली। वह मुड़ी और टीले के छोर की ओर चली गई।

"क्यों क्या तुमने औरत चरित्रहीन होती है, चरित्रहीन होती है वाली बात किसी से कह दी थी?" मैंने कहानी में अचानक ब्रेक मारते हुए पूछा। शिवेन्द्र गंभीर हो गया।

"हां यार प्रेमू, मैंने यह गलती कर दी थी, पर इस उद्देश्य से नहीं कि कोई

बंसल से कहे और उसके अन्तर्मन में इतनी ठेस लगे। मैंने मजाक में यह बात सीतापुर के वाशिन्दे रामकरन से कह दी थी। वह राजी के विवाह में बाराती बनकर आया था। वह मेरा बचपन का सहपाठी था। उसने मज़ाक में एक धौल देते हुए कहा था—तुम्हारी प्रतिभा बंसल तो लगता है पूरे इलाके से कमीने लोगों का सफाया करके ही रहेगी। पर एक बात मेरी समझ में नहीं आई शिबू ! रामकरन शरारत से मेरी ओर देखते हुए बोला—वह हर बदमाश को पीटते वक्त यह वाक्य क्यों बोलती रहती है कि औरत चरित्रहीन होती है, औरत चरित्रहीन होती है। लगता है काफी गहराई में कहीं न कहीं से वह घायल हुई है। तुम उसकी मरहम-पट्टी जरूर करना। तुम्हारा और उसका दोनों का दर्द समान है फिर एक दूसरे में डूब क्यों नहीं जाते ?

"तुम्हारी बातें विचारणीय हैं। मैंने व्यंग्य में कहा—पर तुम यह मत भूलना कि शिवेन्द्र हों या प्रतिभा अपने प्रेम को ठोकरों के डर से नीलाम नहीं होने देंगे। लगता है अब कि रामकरन ने उस जुमले को बहुत लोगों से कहा होगा। रामकरन पहले ही बहुत काइयां किस्म का आदमी है, मैं जानता था, उसने मेरे और सोनवां के संबंध पर भी ऐसी ही अफवाहें उड़ाई थीं, उसे कोई नारी क्यों नहीं पूछती—यह थी कलक जो रामकरन को भीतर-भीतर चाला करती थी। वह प्रेम करने वालों की बातें सुनकर ईर्ष्या से जल जाता था। उसे जो नहीं मिला, वह दूसरों को क्यों मिल रहा है—यह थी रामकरन की सोच और भीतर ही भीतर मन को तोड़ देने वाली पीड़ा। उसी का नतीजा था कि उसने वह बात चारों ओर फैला दी। मैंने चाहा कि रामकरन को ठोकवां दूं और सूचित कर दूं उसे कि इस तरह की बात फिर हुई तो इससे भी भयानक सजा मिलेगी उसे, पर वह पुरुषोत्तम के साथ नौकरी खोजने बंबई चला गया। साला इतना भ्रष्ट, पतित मार्बिड (खुदगर्ज) किस्म का आदमी होगा मैं सोच भी नहीं सका था।"

"खैर जो हुआ सो हुआ, अब तुम कहानी को आगे बढ़ाओ···"

"जाने दो यार, अचानक तबियत बहुत भारी लग रही है, फिर सुनना इसे···"

"नहीं, चलो।"

"थोड़ी देर में प्रतिभा लौटकर आई। उसके चेहरे पर पुरानी शरारती मुस्कान थी।"

"डोण्ट टेक इट सीरियसली शिवेन्द्र। मैंने वैसे ही नाम ले दिया। सामने देखो, इतना दुःखी होने की क्या बात है इसमें। यह आरोप मैंने पहली बार नहीं सुना है। सब तो यही कहते हैं। सभी दूसरों के मनोविज्ञान की जांच-पड़ताल को

अपना फंडामेंटल राइट (मौलिक अधिकार) मानते हैं; पर खुद अपने ही गिरहबान में कभी झांकने की कोशिश नहीं करते । अविवाहित पर सन्देह करना तो हक है पर विवाहित होने के लाइसेंस की वजह से क्या उनको यह हक प्राप्त है कि दूसरों के साथ हम-बिस्तर होना, दूसरों के हस्तक्षेप पर खुलेआम विरोध न करके अपनी पत्नी के आचरण पर गुस्सा होना, उसे पीटना, किसी और नारी को ठगना, पुरानी औरत को अपने योग्य न मानकर किसी युवती पर डोरे डालना, अपने को अविवाहित बताकर उसे लूटना और वादा करके मुकर जाना, घूस के रूप में रुपयों की अपेक्षा किसी की बहन-बेटी की इज्जत की परवाह न करके उसे भेजने की मांग करना, न आने पर फाइल पर गलत रिपोर्ट लगाने की धमकी देना, कभी भी औरत के साथ बराबरी के स्तर पर बात न करना और हमेशा नारी मुक्ति के नारे लगाना और इन चीजों के जग-जाहिर हो जाने पर हाथ जोड़कर गिड़-गिड़ाना कि ये सारी तोहमतें गलत हैं, मैं बीबी-बच्चों वाला आदमी क्या कभी ऐसी गलती कर सकता हूं, अथवा यह तो मुझे बदनाम करने की मंशा से रचा हुआ जाल है जिसमें मैं अपनी रिपोर्ट के कारण फंस गया— यही है न पुरुष की खासियत । क्यों बन्ने मियां अब मैं आपको बताती हूं कि आपको तफसील में क्यों बताना पड़ेगा ।"

उसने हम सभी को इशारा किया और हम धीरे-धीरे टीले पर चढ़े ।

"लखनपाल !"

"यह मैडम !"

"सारा सामान जो मैंने तुम्हें सौंपा था, अभी चाहिए । जीप पर है कि साथ लेकर आये हो ।"

"जीप पर ही है मैडम !"

"उसे झोले में रखकर मंगाओ ।"

एक सिपाही के कान में लखनपाल ने कुछ कहा और तेजी से टीले से उतर आया ।

"हां आइये बन्ने मियां ।"

उसने टीले का मुआयना किया । सामने दो पेड़ थे जो टीले को ढंक रहे थे । उनके सामने सौ मीटर की दूरी पर उसकी नज़र थी । एक कोण से देखा, शायद असफल रही । तुरन्त फुर्ती के साथ दूसरे कोण से देखने लगी ।

"लखनपाल ।"

"मैडम ।"

"दूरबीन हमें दो, रायफल वाली नहीं, सामान्य वाली "

उसने दूरबील से देखा । चिल्ला पड़ी—"वाह क्या सटीक है । आइये बाबू दीना सिंह जी जरा आप इसे आंख के पास लगाकर देखिए और बताइये कि क्या

दीख रहा है ?"

दीना चाचा देखने लगे। उन्हें दूरबीन पकड़ना नहीं आता था। वह उछली—"ऐसे नहीं, ऐसे देखिए···"

"हुजूर मुझे तो सुदरसन की बखरी साफ दीख रही है।···"

"और वह दरवाजा जहां कल्पू और रमानाथ खड़े थे ?"

"वह तो एकदम आंख का देखा ही है, वह तो इस दूरबीन से देखने पर लगता है कि ढगर कर टीले के पास आ गया है। हुजूर।"

"लखनपाल रायफल बन्ने मियां को दो।"

"यस मैडम !"

रायफल बन्ने मियां को थमाकर वह बोली—"जरा निशाना लगाइए बन्ने मियां। बोलिए, बखरी का दरवाजा दिख रहा है कि नहीं ?"

"आप हुजूर कुवां क्यों झंका रही हैं। दरवाजा एकदम नहीं दिख रहा है। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। किसी को भी रायफल थमाइए और अगर वह असल माई का बेटा है तो बोल दे कि सुदरसन तिवारी की बखरी के दरवाजे को देख रहा है।"

"ठीक बात है बन्ने मियां। दरवाजा नहीं दिख रहा है। नहीं दिखेगा ऐसे। आप रायफल वैसे ही लिये रहिए।" उसने लखनपाल से दूसरी दूरबीन लेकर बन्ने-मियां की रायफल के मुंह पर लगा दिया—

"बोलो बन्ने मियां···"

"या खुदा·· हुजूर अब तो दरवाजा क्या उस पर जड़ी एक-एक फुलिया भी दिख रही है।" बन्ने मियां को गश आया और रायफल के साथ गिर पड़े।

"घबड़ाइए नहीं आप लोग, इन्हें मालूम नहीं था कि दूरबीन क्या कर सकती है। ज़रा इनके मुंह पर मेरे थर्मस से पानी लेकर छिड़क दो इन्स्पेक्टर···।"

"यस मैडम।"

पानी का छींटा पड़ते ही वे होश में आ गए। उन्होंने अजीब ढंग से चेहरा बनाया और बोले—"हुजूर मुझे गिरफ्तार कर लो। मेरे रायफल का गलत इस्तेमाल हुआ है। यह मेरा जुर्म है कि मैंने बिना सोचे-समझे सुदरसन तिवारी की दोस्ती की खातिर यह भी नहीं पूछा कि रायफल किस मकसद से मांग रहे हो।" बन्ने मियां बोले।

"मैं तुम्हें गिरफ्तार नहीं करूंगी बन्ने मियां ! मैं कातिल और संगदिल सबके लिए नहीं हूं। मैं तुम्हारे व्यंग्य के बावजूद तुम्हें तड़फा-तड़फा कर पीटती कि तुम हर शाम-सुबह दर्द से दुहरे होते रहते और पूरी जिन्दगी तुम्हें याद रहता कि झूठ बोलने का क्या अंजाम होता है। पर मैं जानती हूं, तुम्हें सुदर्शन तिवारी ने छला है। तुम्हें बुद्धू बनाया है और इस तरह से फांस लिया है कि तुम सत्य छिपाने के

लिए मजबूर थे। तुम्हें मालूम है कि दोषी कौन है, या हो सकता है कि वह नाम जो तुम्हें बताया गया था, गलत हो, पर एक बात बिल्कुल सच है, सौ फीसद सच है बन्ने मियां कि तुमने रायफल देकर एक ऐसी गलती कर दी थी कि तुम्हें लाचार होकर उनके साथ जुड़ना पड़ गया। तुम इस रायफल से बरुनी नाले के पास जो बड़ा खड्डा है उसमें रहने वाले मगर और घड़ियालों का शिकार करते हो। उनके चमड़े बहुत मंहगे होते हैं। यह तुम्हारी कमाई का जरिया है। इससे किसी को तुम पर जुर्म आयत नहीं करना चाहिए। वह तुम्हारा हक है, तुम मेहनत करते हो, पैसा कमाते हो। सब ठीक है। तुमने दो सौ मीटर तक की दूरी के बाहर कभी शिकार किया ही नहीं। इसलिए तुम बेगुनाह हो लेकिन बन्ने मियां तुम कतल के असलाह के, हथियार के मालिक होने की वजह से जुर्म में फंस गये हो। मैं तुम्हें इससे भी बरी कर दूंगी…"

"नहीं हुजूर !" बन्ने मियां बोले—"आप रोशन की खातिर अपनी इज्जत पर दाग मत लगवाइए। दीक्षित साहब के भतीजे आपके खिलाफ अपने फूफा से रपट करेंगे। आप अपनी नौकरी बचाइए।"

"नौकरी बचाऊंगी तो तुम फंसोगे। तुम मुझे संगदिल कहोगे, न बचाऊं तो अपने को मैं ही संगदिल कहूंगी, मैं तो बड़े घनचक्कर में फंस गई बन्ने मियां। खैर तुम्हारा हाथ नहीं है कतल में, इसलिए मैं अपनी नौकरी पर लात मारती हूं, पर एक चीज जो तुमने बार-बार पूछकर सुदर्शन से उगलवाई थी, वही बता दो। रमानाथ की मौत की वजह थी उसकी प्रापर्टी और उसकी औरत का ससुर से गलत रिश्ता भी मगर कल्पनाथ का कत्ल क्यों कराया गया ? तुमने बार-बार यही पूछा था सुदर्शन से, फिर क्या कहा था उसने ?"

"उसने कहा हुजूर कि कल्पनाथ को सुखिया कांड में दिलचस्पी थी। कल्पनाथ ऊपर-ऊपर सुखिया कांड से जुड़े तिवारियों की इज्जत का सवाल बताकर सुदरसन की हामी तो भरता था। पर दिल से वह हरीश की मदद कर रहा था। रुपवा सुखिया के यहां ठहरी ही थी। रुपवा को मालूम हुआ कि कल्पनाथ उसके सगे बहनोई के दोस्त हैं तो वह कुछ परेशान हुई। एक ओर उसके मन में शिबू के खिलाफ कुछ न करने का संकल्प था, दूसरी ओर वह हर तरह से तिवारियों को बर्बाद कर देना चाहती थी। वे दोनों करमूपुरा से भी ज्यादा बड़े पैमाने पर जनपद के शोषक, पंडा-पुरोहितों, घूसखोरों, बदमाशों को एक साथ समझ लेने का घमंड लेकर चले थे। इस सूरत में कल्पू की मौत एक अटल चीज बन गई। यदि हरीश कुछ करता है तो कल्पू के कारण रुपवा को मुंह सिल लेना होगा और वह नहीं करता तो सुदरसन को करना ही पड़ेगा क्योंकि हरीश और रुपवा क्या गुल खिलायेंगे, यह सब वह जानता था। हरीश और रुपवा बाहर से चुप रहा करते थे पर भीतर ही भीतर तमाम नक्शे भी बनाते जा रहे थे। तिवारी

जब सुखिया की कोठरी में पकड़ गए तो रुपवा और हरीश ने इस मामले को जग जाहिर करा देने का मनसूबा बनाया। सुदरसन ने तुरन्त भांप लिया कि दोनों ही हालातों में कल्पू को तो बीच से हटा देना ही होगा। इसलिए सुदरसन और घनसाम ने एक किराये का निशानची कातिल तलाश किया जिसके द्वारा दोनों भतीजे मारे गये।"

"कहिए बाबू दीना सिंह!" प्रतिभा बोली—"आपको यह कहानी कैसी लगती है? आपको इससे कुछ अलग किस्म की जानकारी है क्या? आप अपनी समझ से बताइए कि यह क्यों हुआ।"

"बात तो बन्ने मियां बता ही चुके हैं हुजूर, दो एक चीज हमें भी मालूम भई। सो वह भी सुन लीजिए। उसमें हुजूर एक और प्रानी है जिसको बलि वेदी पर चढ़ाने का मनसूवा था। ऊ प्रानी है सरकार शिवसंकर की बड़की पतोहू। चनवां। यही कहते हैं हियां के लोग। वह गंवई गांव में खपने लायक महिला ना है हुजूर। बीए पास है। बीए कइले से ही कोई बड़ा नाही बन जात है हुजूर। ऊ जेतना सुन्दर है उतना ही समझदार भी है। वह केहू औरत के साथ अतयाचार की बात सुनके लपट की तरह धधक जाती है सरकार। जब सुदरसन को पता लगा कि कल्पू ही नहीं चनवां भी हरिजन लड़की के बेआबरू करने से चिढ़ी है तो ऊ गुस्सा के मारे हुजूर बटलोई के ढक्कन के तरह फों-फों करते उलट गए। चनवां के रहते कल्पू की हत्या मुश्किल हो जाती हुजूर। चनवां को पता नहीं था कि खडयन्तर केतना गहरा है। इस बार कल्पनाथ भी धोखा खाय गए हुजूर। धोकै तो हुआ। कल्पू अपनी जिनगानी में पहली बार ई गलती कर गये। यानी हुजूर उन्होंने चनवां को यह नाही बतलाया कि सच्ची स्थिति का है। मरते बखत उन्हें अपनी भूल का पता चला हुजूर इस वास्ते कोशिश किये बताने की, मगर खाली इतनै बोल पाये—शिबू से कहना संभालो···। का संभालना है शिबू को ई भी नाहीं बता पाये। ई तो हुजूर आपकी पैंज है और शिबू की कसम कि बदला लेंगे, सो अब धीरे-धीरे लोग जाने लगे हैं कि संभालना का मतलब इहै था—सुदरसन बहुत नीच और गन्दा आदमी है। आपने खडयन्तर के परदे को चीड़-फाड़ कर जग जाहिर कराय दिया। हुजूर हमरी उमर पैंसठ साल भई। हमने आप जइसी नियाव के लिए लड़वैया पुलिस नाहीं देखी। हुजूर आपको भगवान लम्बी उमर दें आप एह इलाके का पाप मिटाय दीजिए, हां।"

"अरे दीना चाचा।" बंसल बोली—"ई सब आपके जनपद के इस हीरे की बजह से हुआ। मुझे तो सजा हो गई है दीना चाचा। मैं तो अब जा रही हूं गोरखपुर। बस महीना भर ही रहूंगी वाराणसी में। सो करना तो शीबू को ही है। वही जनपद को संभालें। और क्या कहूं आपसे?"

"हुजूर एक बात पूछूं!" दीना चाचा बोले। "आप ई सज्जन के सामने काहे

सब सच-सच बात बताय रही हैं। ई आपके धोखा देवेंगे। हां जब ई सुदरसन जइसे बदमास के हियां अपने बहिनिया के विआह करावे आय सकत हैं तो ई आपके धोखा भी देय सकत हैं।"

"कहो हर्ष पाण्डे अब तुम चाचा को बता दो कि भाई तुम शिबू के दोस्त हो और यहां सुदरसन को फंसाये रखने के लिए आये थे ताकि वह पुलिस के डर से भागने न पाये। चाचा, यह सब इसी बदमाश शिवेन्द्र का बनाया हुआ व्यूह है। जब इसमें मैं फंस गई तो पाण्डे जी क्यों न फंसे। ये आपके सगे आदमी हैं चाचा। कहिये इनका नाटक कैसा लगा आपको ?"

दीना चाचा उखड़ गए—"हुजूर ऐसा नाटक मत कराइयेगा दुबारा। हमरी ठकुरान के लोग तो इन्हें ठोंक देने का पोरोगराम बनाये थे।"

पांडे को कंपकंपी होने लगी। बोले "चलो चाचा बच गया मैं। शिवेन्द्र भाई मेरे सब कुछ हैं। दोस्त, भाई, मार्गदर्शक और गुरु। जो हुकुम होता है चाचा ऊ करता हूं। पाण्डे की दुर्गति होती या मौत—उन्हें तो गुरु का आदेश मानना ही था।"

"अच्छा अब आगे की बात करें। बनारस नहीं पहुंच पायेंगे वक्त पर," मैंने कहा।

"कहानी खतम होने के पहले मैडम आपने ससपेंस बिगाड़ दिया है।"

"मैं झूठी कहानियां नहीं बनाती। ससपेंस बड़ी चीज नहीं है शिवेन्द्र। लड़ाई बड़ी चीज है। सही-गलत का विवेक करके जो भी अत्याचार से लड़ता है उसके जीवन के हर क्षण में ससपेंस होता है। यह ससपेंस तोड़ा क्यों गया इसे समझने की कोशिश करिये। सातवें फाटक की लड़ाई का नक्शा मैंने बदल दिया है। मैं बटेसर से ही बनारस नहीं लौटूंगी। मैं कर्मनाशा के किनारे-किनारे करमूपुरा तक चलूंगी। अपने गांव दुबारा ले जाने में तुमको डर तो नहीं लगता ?"

"नो लेडी," मैंने कहा—"यह जरूर समझ गया कि करमूपुरा की यात्रा मेरे नक्शे में नहीं थी। मैं तो यहीं से सुखिया से हरीश का पता पूछकर लौट जाना चाहता था।"

"क्या, क्या हरीश अभी जिन्दा है ?" एक साथ बन्ने मियां और दीन दयाल सिंह पूछ बैठे—"वह मरा नहीं ?"

"क्यों मुनीस !" बंसल बोली—"कैमरा बचाने के लिए वह नदी में कूदा। घनसाम कहता है कि उसने बहुत बड़ा पत्थर उस पर फेंका। वह मर गया। डूब गया। सोचने की बात थी चाचा कि जब हरीश मर गया तो उसके कैमरे का यह फोटो शिवेन्द्र को मिला कहां से। ठीक है इसे रुपवा ने शिवेन्द्र तक पहुंचाया। मुझे बहुत डर लग रहा है। हरीश आसपास ही है कहीं और अब उसपर खतरा भी बढ़ गया है। क्योंकि असली कातिल अब भी फरार है।"

"फिर क्या हुआ, बोलो यार ?"

"फिर यह हुआ कि तुम बुद्धू और बेवकूफ हो, यह जग जाहिर हो गया। अजीब बात है। तुम्हें अपने को गर्व के साथ कहानीकार कहने में लाज नहीं लगती। हर आदमी वही सोचता है कि राजनीतिक लड़ाइयों में भी कितना मजा आता होगा। इन लड़ाइयों में बड़ा लुत्फ आता होगा। प्रतिभा बंसल और शिबू के बीच इस तरह की खुशियों भरी मित्रता का ऐसा संयोग जहां होता है, वहां अपने आप पाठक उछल जाता है। यानी उसे लगता है कि प्रेम कितनी आनन्ददायक चीज है। रामकरन जैसा लार टपकाते हुए पाठक को भी लगता है कि प्रेमिका द्वारा ठुकराया शिबू और प्रेमी द्वारा ठुकराई प्रतिभा जब एकाकार हुए होंगे तो निश्चय ही पीछे से मुहम्मद रफी की आवाज सुनाई पड़ी होगी—बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है—है न रिसर्चर ! तुम प्रतीक्षा कर रहे हो कि कब इस जासूसी कांड का पर्दा गिरेगा और तुम कुछ नहीं तो कम से कम प्रतिभा बंसल की शरारती आंखों की चमक का लुत्फ उठाओगे। सुनो दोस्त इस मुल्क का दुर्भाग्य है कि बिना स्वार्थ के गरीबों और मजलूमों की सच्ची मदद करने वाले बहुत थोड़े लोग हैं। इसीलिए सुदर्शन तिवारी अगर घनसाम को खरीद लेते हैं तो मुझे अचंभा नहीं होता। अचंभा तो बन्नेमियां जैसे शरीफ लोगों के सरे बाजार बिकने पर होता है। मैं क्या करूं। वैसी हालत में। रिसर्चर, कहानी सुनने की भी एक तहजीब होती है। मैंने कहानी लेखन शिक्षण केन्द्र से डिप्लोमा नहीं लिया है। पर तुम तो सत्य और तथ्य का फर्क जानते ही होगे। मैं बाकायदा तुम्हें बता चुका हूं कि तेतरी से मिली चिट्ठी को नरैन मेरे पास ले आया। मैंने बताया था कि उसमें लिखा था। आपके अनुमान बहुत हद तक ठीक हैं। फिर तुम्हें पूछना चाहिए था कि हरीश और रुपवा को मेरे अनुमानों की जानकारी कैसे हुई थी। तुम एक बनावटी ससपेंस में खो गये। और तुम्हें लगने लगा कि सरकारी डाकुमेंटरी की तरह तुम अब शिबू के कारनामे सुनकर बोल पड़ोगे—बोली अनेक, संस्कृति अनेक···मगर हम एक हैं। मैं इसको बुरा नहीं कह रहा हूं। हमारी सरकार को मालूम ही नहीं है। जमीन को फाड़कर पेड़ नहीं उगता है। क्या ? पेड़ उग कर अपनी जड़ों का ऐसा जाल रच देता है जमीन के गर्भ में, भीतर जो सारी ऊपरी सतह को फटने या विलगाने की ताकतों को हमेशा के लिए खत्म कर देता है। और ये जड़ें हैं क्या। पंडा-पुरोहित, सामन्त-महाजन भूतपूर्व या अभूतपूर्व जमींदार इन जड़ों से नहीं जुड़ते। कभी जुड़े नहीं। क्योंकि ये तो फल खाने वाले और फूल मसलने वाले लोग हैं। सरकार तो इनसे इतनी जुड़ी है कि इनकी रक्षा का उसने ठेका ले लिया है। तोड़ने वाली ताकतों को जोड़ने वाली बताकर जात-पांत में बंटे लोगों से ही ईमानदारी की आशा लगाए बैठी है। इन्हीं पर टिकी ही है वह। जो चोर हैं वे दूसरे को चोर बताते हैं, नतीजा यह है कि आज के हिंदुस्तान में चोर को चोर कहने के लिए कोई ईमानदार तैयार नहीं है। जो जितना

बड़ा चोर है वह उतना ही बड़ा ढंढोरची भी होना चाहिए। बेचारी जनता अब यह न पूछकर कि कपड़े का भाव आसमान क्यों छू रहा है, हरित क्रान्ति तो आ गई लेकिन सब्जियों के लिए चार लोगों के परिवार को बीस रुपया खर्च करना क्यों पड़ रहा है। हर ऐलान के पहले चीनी कहां गायब हो जाती है, राशन गरीबों के नाम पर आता है और उसको उठाने वाले कोटा परमिट की दूकानों के लोग आधा से अधिक खुले बाजार में क्यों बेच देते हैं—नहीं अब अखबारों में सिर्फ एक सवाल है कौन चोर बड़ा है, कौन चोर छोटा है। यानी जनता समझौता कर चुकी है कि छोटा चोर ज्यादा ईमानदार होता है—अब बोलो रिसर्चर, ऐसे में बताओ—कि कल्पनाथ और रमानाथ का कत्ल क्यों हुआ? यह भी बताओ कि जड़ों को जब खाद पानी नहीं मिलता तो पेड़ उकठ जाता है। उकठ कर पेड़ जब गिरने को होता है तब धरती स्वतः फट जाती है। उसे फाड़ने के लिए जुलूस नहीं चाहिए। भीड़ नहीं चाहिए। पेड़ की जड़ों को सींचो। गरीबों को खाद-पानी दो, समाज की एकता अपने आप बनी रहेगी।"

"अजीब घोंचू हो तुम!" मैंने उसे लताड़ते हुए कहा—"यार मेरे गल्ले की मंहगाई का सवाल जब सुदरसन के यहां नहीं है, उनके घर अपने आप ढेर सारी उगाई सब्जियां मिलती हैं, दोनों परिवार आर्थिक तौर पर मजबूत हैं तो मंहगाई और कतल में क्या रिश्ता है भला? कमाल है भई तुम एकदम ही घोंचू और बेवकूफ समझते हो मुझे? यार तुम्हारी याददाश्त की तारीफ करता हूं, तुम चीर-फाड़कर अच्छी तरह साफ-साफ लफ्जों में बात समझा सकते हो किन्तु इसके मान लेने का मतलब यह तो नहीं प्यारे भाई कि तुम्हारी घमंडों भरी तकरीर को सुनने के लिए मैं मजबूर हूं।"

"सुनो दोस्त, तुम सुनने के लिए मजबूर नहीं हो क्योंकि तुम ईमानदार बनने से डरते हो। ठीक है, मेरे भीतर कहानी सुनने की बेचैनी कहां थी और कहां है, और क्यों होगी। आज तक नहीं सुनाई किसी को तो क्या मैं मर गया? नहीं सुनाता।"

जब शिवेन्द्र उठकर चलने को हुआ तो मैंने दौड़कर उसे पकड़ा। "यार गुस्सा मत करो। चलो सुन लेते हैं तुम्हारी एनालसिस भी जानना चाहता हूं।"

हम बैठे वह बोला—"सुनो प्रेमू, कोई कौम जब हजार साल तक लड़ती है तो उसे आजादी मिलती है। लड़ाई जारी रहती है तो डेमोक्रेसी जन्म लेती है। डेमोक्रेसी जब हथियार बनती है तब पता लगता है कि समाजवाद जरूरी है। इस देश को यह न्यामतें मिलीं। यह हिन्दुस्तानी आबोहवा का कमाल है कि आसपास डेमोक्रेसी मर गई, हम उसे जिलाये रहे। इन दोनों की हिफाजत के लिए नेहरू ने बलिदान दिया। वह तानाशाही गुंडावाद के खिलाफ जिसे चीन कहते हैं, लड़ते रहे। उसी में चले भी गए। उस डेमोक्रेसी का आज के हिन्दुस्तान में कौन सा रूप है?

सुनो, ध्यान से सुनो ! आज की डेमोक्रेसी का एक मापदंड है वोट । बहुमत होना चाहिए । मैं पूछता हूं प्रेमू कि प्रतिभा बंसल की क्या गलती थी कि उसने कमीने पुरुषोत्तम को पीटा, परम कमीने सोबरन राय को चेतावनी दी । बोलो, एक औरत बहुत हिम्मत करके गुंडों के खिलाफ, चोरों के खिलाफ लड़ने चली, नतीजा यह कि उसे अयोग्य कहकर एक सड़ियल जगह पर 'डंप' कर दिया गया । क्यों ? क्यों, क्यों ? बोलो रिसर्चर । तुम नहीं बोलोगे । क्योंकि प्रतिभा बंसल की ईमानदारी आज की डेमोक्रेसी के खिलाफ है । और साफ सुनो प्रतिभा बंसल को शह देना अपराध है, उसे दंड मिला क्योंकि पुरुषोत्तम सिंह, सोबरन राय के हाथों में दस हजार वोट हैं । दस हजार ठाकुरों के वोट के लिए एक औरत के सही और सच्चे ईमानदार प्रयत्न को कुचलना जरूरी नहीं है ? अब तो चुनावों के दिन आ रहे हैं । और सुनो डाकू होते हुए भी घनसाम अहीर अपनी जात के सारे वोट लोकदल को देने की धमकी दे सकता था, इसलिए वाभन वोट के लिए सुदरसन, राजपूत वोट के लिए पुरुषोतम और अहीर वोट के लिए घनसाम और मुसलमान वोट के लिए बन्ने मियां कभी सजा नहीं पा सकते । नोट कर लो । तुम कहते हो कि हिन्दुस्तान की युवा पीढ़ी गुमराह है । युवा पीढ़ी क्या करे ? उसे लगा था कि नेहरू समाजवाद ले आयेंगे । उसे गलतफहमी थी कि लेनिन का रूस या चीन का माओ सही होगा । एक जगह पेरेस्त्रोइका आ गई और दूसरी जगह हजारों युवा पीढ़ी के बेटे-बेटियों को अपने ही स्वदेशी टैंकों ने कुचल दिया···बोलो, क्या करे युवा पीढ़ी ? आज का बर्निंग टापिक है प्रेमू दोस्त—हिन्दुस्तान में क्या डेमोक्रेसी है ? जनता जान गई है । कह रही है नहीं, बिल्कुल नहीं है । हमें अपना काम करना है । हमारी जात का आदमी उठाओ । हम उस पर भरोसा करके अपनी जात का सारा वोट दिला देंगे । वह हमारी हर फरमाइश पूरी करता रहे । बस हमें सिर्फ यह गारंटी चाहिए ।"

वह एकदम चुप हो गया । "चलो यार भूख लगी है, बुलाता हूं मोनू को ।"

"अबे ई क्या मजाक है ।" मैंने कहा—"अरे ऐसे घने जंगल में मुझको छोड़कर कहां भाग रहा है यार । बताओ तो आखिर हुआ क्या ? रुपवा कहां गई । बोलो भाई ? मुझे बंसल, हरीश या किसी में दिलचस्पी नहीं । दिलचस्पी है तो रुपवा में क्योंकि सोनवां रुपवा पर सोबरन का व्यंग्य मेरे दिमाग में टकरा रहा है । कैसे कर दिया उनका उद्धार ? अब मान जाओ यार मैं चंडीगत प्रेम-राग में फंस गया था । ससपेंस ढूंढ़ रहा था । यह जानते हुए कि रुपवा मर गई होगी । वह सोनवां की तरह भावुक और रोमांटिक नहीं थी । क्या हुआ उसका ? मरी लाश को मैं अब नुमायश नहीं बनने दूंगा शिबू ! लो मैं तुम्हारे पैर छूता हूं । चूल्हे-भाड़ में जाये बंसल । मेरा क्या लेना-देना । मैं बहेतू की तरह बह गया, कहानी का सारांश जानने की जगह प्रेम की मृगमरीचिका की ओर दौड़ पड़ा । बोलो अब ?"

"यार इसमें बोलना क्या है ? मुनीस भी सीतापुर का हरिजन नवयुवक है ।

बनारस में पढ़ता है। मैं उसकी थोड़ी-बहुत आर्थिक मदद कर दिया करता हूं। मैं कतल के तीसरे ही दिन उसे करमू जनपद की यात्रा का हुकुम दे आया। लड़के की पहली मुहिम थी यह। पर खुशी है कि वह कामयाब रहा। कर्मनाशा में बरसात को छोड़कर कभी इतना पानी रहता ही नहीं कि वह लाश बहा कर ले जाये। मुनीस ने सुखिया से सम्पर्क किया। हरीश से मिल नहीं पाया! पर उसे यह पता चला कि हरीश से कैमरा लेकर रुपवा करमूपुरा गई है। मैंने मुनीस को पुकारा। वह बोला—"मुझे पुकारा आपने शिबू चाचा?"

"हां, तुझे पुकारा," मैंने तिरछी आंखों से प्रतिभा को देखते हुए कहा—"बता दो भाई अपना आंखों देखा, कानों सुना, हाथों किया सब मैडम को वरना वह करमूपुरा के लिए चल पड़ीं तो हमारी तुम्हारी सांसत हो जायेगी। मैडम का गुस्सा मैंने देखा है। वह ठोकर मारकर मेरी भी नाक तोड़ देंगी।"

"इज देयर एनीथिंग एल्स?" वह सचमुच गुस्से में उबल पड़ी—"शिवेन्दर जी आपने मुझे धोखा दिया? आपने हमारे रिश्तों में खुद दरार डालने की पहल की? यह क्या है? मुनीस के बारे में आपने पहले से कुछ बताया ही नहीं।"

"मैं माफी मांगता हूं हुजूर! आप जैसी लड़वैया पुलिस आफिसर को पूरा विवरण नहीं दिया, यह अपराध है मेरा। पर मैं विवश था। मुनीस की बातें सुन लीजिए। आप जान जायेंगी कि यह गलती जरूरी थी या नहीं।"

"बोलो मुनीस।" उसने मेरी ओर विद्रूप चेहरा बनाकर देखा—"आल राइट।"

"बोलो मुनीस।" उसने लम्बी सांस ली।

"मैडम, मैं कतल के तीसरे ही दिन बटेसर आ गया था। बटेसर में दर्जन भर घर हैं हमार हरिजनों के। सभी परिचित हैं। मुझे पता चला कि कतल के समय वहां हरीश थे ही नहीं। वे तो सुखिया के दरवाजे की भीड़ में भी सिर्फ पन्द्रह मिनट रुके। उन्होंने कैमरे में नई रील लगवाई थी और हंसते हुए मेरे मामा बसावन हरिजन से बोले—काका, आज कतल का दिन है। मैंने अपना हथियार धो-पोंछकर तैयार कर लिया है। आज यह कैमरा एक दर्जन बार दुश्मन पर हमला करेगा। मैं उसके छावनी को, उसके मोर्चे को, सबको डायनामाइट से उड़ा दूंगा। मामा कह रहे थे कि उनकी बात सुनकर हरिजन युवकों का जत्था उनकी सुरक्षा के लिए साथ-साथ चलने लगा। हरीश जी बोले—काका, तुम यह सब मोह कब तक ढोओगे। तुम अगर हरीश के मोह से तोड़ नहीं सकते तो अपने ऊपर नकली ममता दिखाने वाले इन पंडा-पुरोहितों को कैसे लड़ोगे। लड़ाई है, सब एक साथ चलने लगें तो सब मारे जायेंगे। सारी लड़ाई बेकार हो जाएगी। बसावन मामा उनकी घुड़की सुनकर सुखिया के दरवाजे की ओर चल पड़े। लाठियों के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं था। सुखिया की कोठरी में सुदरसन

बन्द हैं, यह खबर रुपवा बुआ दे चुकी थी। पूरी भीड़ ने दरवाजे को घेर लिया। बड़ी जात के लोग भी काफी तादाद में आए थे। किसी के मन में सुदरसन के लिए सहानुभूति नहीं थी। सभी उस नीच को देखने ही आए थे। हरीश जी ने छोटे रास्ते से आकर बलात्कार के समय का फोटो ले लिया था। वे भीड़ का फोटो लेना ही चाहते थे कि घनसाम के भाई मुन्नन ने उन पर लाठी चलाई। भीड़ में हरीश जी खो गए और मुन्नन को हरिजनों ने लाठियों से बहुत बुरी तरह घायल कर दिया।

"रुपवा बुआ और हरीश चाचा अकेले झाड़ियों में छिपते इसी नाले के पास आ गए। उन्होंने हमारे मामा को कह रखा था कि सुदरसन के निकलने और अपने घर की ओर जाने के आधा घंटा बाद हरिजन-एकता का नारा लगाते हुए उधर जाइएगा। याद रहे आधा घंटा बाद। इस आधे घंटे में क्या होने वाला है, इसे कई हरिजनों ने पूछा, पर हरीश का एक ही उत्तर था—यह रणनीति का सवाल है। हम जब तक उसमें कामयाब नहीं होते तब तक कोई नहीं जान पाएगा। मेरे गुरु भी नहीं। मेरे बड़े भाई भी नहीं।

"गुरु का नाम छिपाना है तुमको तो छिपाओ। पर बड़े भाई का तो पता बता दो, ताकि जरूरत पर उनको खबर करें।

"हरीश जी ने कहा—बड़े भाई यह अपने आप जान जायेंगे, जितना करना होगा, उतना वे खुद कर देंगे।

"दोनों चले गए।

"हरिजनों को एकदम पता नहीं था कि आज दो कतल होंगे। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि वहां रमानाथ तिवारी रहेंगे। उन्होंने तो कभी सोचा ही नहीं कि इस मसले पर सुदरसन का साथ देने कल्पनाथ जी को बुलाया जाएगा। कल्पनाथ हरिजनों के लिए हरीश के बाद नम्बर दो के सिम्पेथाइज़र थे। पहले रमानाथ तिवारी गिरे तो किसी को पता ही नहीं चला कि कौन गिरा, क्यों गिरा। उसी वक्त किसी ने पीछे से दो फैर किया। और कल्पनाथ भी गिर पड़े। तभी बसावन मामा फैर करने वाले को पकड़ने के लिए भीड़ चीरकर दौड़े—वह मुन्नन था। बसावन मामा को पछियाते देखकर उसने एक फैर और किया। वह टीले की ओर भागा। बसावन मामा का माथा ठनका। वे समझ नहीं पाए कि टीले की ओर क्यों जा रहा है। शायद नदी में कूद कर परसिया के जंगल में छुपना चाहता है—यही सब सोचते वे टीले के पास पहुंचे तो वहां दो आदमी उतर रहे थे। घनसाम और बन्ने मियां।"

"नहीं, नहीं यह गलत है।" बन्ने मियां बोले। "मैं टीले के नीचे था। टीले से खाली बसावन उतरा। मैं तो शर्त के···।" वे चुप हो गए।

"बोलो!" प्रतिभा दहाड़ कर उठ खड़ी हुई। "मैंने रोशन के खातिर तुम्हें

बख्शा था। जलील मैं सोचती थी कि शायद तुम्हारी रायफल का गलत ढंग से, तुम्हारे अनजाने में इस्तेमाल हुआ। अब तो तुम खुद कबूल रहे हो कि तुम टीले पर थे। अब सारा सच उगल दो। मैं बेगुनाहों को बख्शती हूं। गुनहगार को नहीं। बोलो, बन्ने मियां बोलो, अभी नाक नहीं टूटी है। मैं तोड़ दूंगी अगर बोले नहीं तो? बोलो।"

"हुजूर मुझे दस हज़ार रुपयों के साथ रायफल टीले के नीचे आकर घनसाम देने वाला था।"

"रायफल तो है रुपए क्या हुए?"

"हुजूर मैं तो गुनाह बेलज्जत मारा जा रहा हूं। घनसाम ने रुपए नहीं दिए। बेरहम चेहरा बनाए उसने रायफल मेरे सीने पर लगा दी—एक पैसा भी नाहीं लिखा है तोरे करम में। का हथेली फैला रहा है। एकदम चुप रह। बोलबे त जवान काट लूंगा। ले ई रायफल और भाग जा यहां से। छोड़ देते हैं समझ ले? हमके कौनो ताकत छू नहीं सकत है। यह बार कौनो सबूत ना मिली पुलिस के। जान ले भाग हियां से। तभी उसने टीले से देखा कि दो आदमी भाग रहे हैं। उसको समझते देर नहीं लगी कि चाहे जो भी हों, हमारे दुश्मन हैं। वह रायफल मुझे दे चुका था। वहां एक पल रुकना उसे गवारा न था। वह जानना चाहता था कि टीले के नीचे कौन लोग थे। वह बड़ी फुर्ती के साथ कूदा। उसने ठीक सामने मुन्नन के पीछे भागते बसावन हरिजन को देखा और ललकारा। घनसाम की आवाज सुनते ही मुन्नन का खोया साहस लौट आया। उसने मुड़कर बसावन पर गोली चला दी। गोली उनके पैर में लगी और वे लंगड़ाते हुए नदी के अरार की ओर भागे। दूसरी फैर करने ही वाला था कि वे सुड़िया खार में कूद पड़े।"

"यह सुड़िया खार क्या है?" बंसल बोली।

"मैडम गर्मी में धारा लगभग सूख जाती है, किन्तु इस इलाके में धारा के बीच दो बहुत लम्बे-चौड़े खार हैं यानी गहरे गड्ढे। एक है मेरे गांव करमूपुरा के पास बरुनी खार और दूसरा है बटेसर के सामने का यह सुड़िया खार...।"

"ओह तो गड्ढे में हरीश नहीं कूदा था?"

"जी हुजूर!" मुनीस बोला—"हरीश जी के लिए तो खार का कोई महत्व ही नहीं था। उनकी योजना में तो टीले के पश्चिम की ओर जाकर फोटो लेने की बात थी। टीले का पश्चिमी हिस्सा है हुजूर जो सुदरसन तिवारी के ठीक सामने है। पूरब से वे फोटो लेते भी तो बेकार होता। क्योंकि उस वक्त घनसाम का मुंह और रायफल की नली सुदरसन तिवारी के दरवाजे की ओर थी। पीछे तो...।"

"ठीक है", बंसल ने टोक दिया—"आगे बढ़ो, पीछे से फोटो लेने पर घनसाम का चेहरा नहीं आ सकता था उसमें। ठीक है आगे...।"

"उसी वक्त बसावन काका ने खार में से देखा कि हरीश जी और रुपवा बुआ

परसिया के जंगल की ओर भागे जा रहे थे। दो मिनट वे घनसाम का ध्यान बंटाने के लिए चिल्लाए—अरे भइया, घनसाम जी, हमारी जान काहे बदे ले रहे हो। हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। हमें मालूम होता कि ई साले तिवारियन पर तोहरो दीठ लगी हौ, तो हम तो हुवां गए भी नहीं होते। हम तो हरिजन टोली के साथ सुदरसना को धमकाने पहुंचे थे मालिक। आज हियरा जुड़ाय गया। हमें अब विसवास होय गया घनसाम भैया कि लोग तोहे निराधारै तोहमत देत हैं। तोहरे जस चमारन के रच्छक को कौन साला हौ कि डाकू कहे के हिम्मत करी। हम लोग तो भइया हरिजन हैं तो, पिछड़ा वरग हौं तो, तोहरे साथै हैं।

" 'अच्छा रे बसवना, तोकें छोड़त हुई, लेकिन सोचिहे। तोकें इहै कहे के परी कि हरीश ये ही खारे में डूब के मर गइल ?'

" 'अरे भइया, हम तो इहौ कहे बदे तैयार हैं कि हमरे सामने ऊ मरा। अपनी आंख से देखा है मने ?'

" 'ठीक है जे। हरीसवा कहां गयल ?'

'हरीसवा और रुपवा के तो भइया हम नाही देख सके। हां, एक मनई और एक ठो जनाना सकूटर से कंदवा वाली सड़क से भागे जरूर। अब ऊ कौन थे भइया, हम नाहीं जानत हैं।' "

"हरीश को जब गोली लगी ही नहीं तो गैंग्रीन की बात···?" बंसल ने बहुत बेरुखी के साथ कहा—"मिस्टर शिवेन्द्र यू आर ए लॉयर। झूठ की भी कोई हद होती है। आप हमेशा मेरा गलत इस्तेमाल करते रहे हैं।"

"मुझे दुःख है मैडम कि आपको ठेस लगी। शिवेन्द्र ने आपके यश को कभी चुराया नहीं। आपको एक न्यायपसन्द पुलिस आफिसर एवं दुःखी महिलाओं के लिए सब कुछ कुर्बान कर देने वाली देवी की तरह पूजा। कभी एक शब्द भी नहीं आया बनारस के समाचार पत्रों में कि मैंने आपके साहस भरे कार्यों का श्रेय लेना चाहा मैंने तो ईमानदारी से सहयोग किया। आपका इस्तेमाल कभी भी आपकी प्रतिष्ठा की कीमत पर नहीं किया। सोचता था कि शायद एक ऐसी भी धड़कन होती है जो समान उद्देश्य वालों के दिलों में अपने आप भ्रम को मिटा देती है। मैंने गलती की। आपको बुरा लगा यह मेरी बदकिस्मती है। आप झूठा फरेब रचने वाले के रूप में मुझे गिरफ्तार कर लीजिए।"

"मैं दूध पीती बच्ची नहीं हूं। आप चैलेंज मत कीजिए। आप समझते हैं कि आपके खिलाफ एक्शन लेने से मैं डर जाऊंगी ? मुझे सिंहासन नहीं चाहिए। अपनी बुद्धि से काम करने की आजादी चाहिए।"

"ठीक है, मैं सामने खड़ा हूं। मुझे अंग-भंग की चिन्ता भी नहीं है। न कोई

दु:ख है न सुख है। मैंने कभी मामूली चींटी का भी अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल नहीं किया है। नारी का इस्तेमाल तो मेरे लिए मां बहन को दी गई गाली से ज्यादा तकलीफदेह लगा। नारी के अस्तित्व और सम्मान को बचाने का दंड मुझे मूर्ख जमींदार देते रहे, सामंती नज़रिए से देखने वाले बौद्धिकों ने भी यही गाली दी थी। मैं समझता था तब कि यह गाली अपनी कारगुजारियों में नाकाम होने के कारण बौखलाए धन लोलुप, सेठ-साहूकार, महाजन-बनिए और ऐंठन भरे ठाकुर लोग देते हैं। आज लग रहा है मेरे सोचने की दृष्टि में कोई बेसिक कमज़ोरी है। मैंने एक अपने लड़के मोनू के सोचने की आजादी में दखल देने के जुर्म में नरैन को थप्पड़ मार दिया कि अपने ही बेटे की दिमागी तरक्की को क्यों रोक रहा है। मैं इतना टुकड़हे किस्म का घमंड लेकर नहीं चलता मैडम। एक आदमी की जिन्दगी का सवाल था। उसे बचाने के लिए मुझे यह आवश्यक लगा कि कुछ दिन उसे अज्ञातवास में डाल दूं। इसलिए हरीश की चिन्ता के कारण ऐसा हो गया···। नमस्कार मैडम।" मैंने कहा और टीले से नीचे की ओर चला।

"रुक जाइए बड़े भाई," हरीश सामने खड़ा था—"मैडम अपराध मेरा है और आप गुस्सा किसी और पर उतार रही हैं। नागफनी की झाड़ में उलझ जाने के कारण मुझे ग्रैंग्रीन हुआ था। फंगस की वजह से घुटने के नीचे का पूरा पैर सड़ रहा था। मैंने बार-बार बड़े भाई से कहा कि इसी सूरत में पुलिस के सामने समर्पण कर देने दीजिए। वे नहीं माने। बोले यह फोटो मैडम को जब दूंगा तब उनसे क्षमा मांग लूंगा। डाक्टरों ने कहा है कि यदि तुरन्त आपरेशन नहीं हुआ तो पैर काटना पड़ेगा। लगता है मैडम बड़े भाई को इतनी काइन्डनेस दिखाने की जरूरत नहीं थी। गिरफ्तार मुझे करिए मैडम···। बड़े भाई मानवता को अंधे न्याय से ऊपर मानते हैं। कहते हैं—एक न एक दिन वह समय आएगा जब गरीबों, शोषितों और अपमानित औरतों को बचाने के लिए अंधे न्याय को मानवीयता के सामने झुकना पड़ेगा। मैं यही बार-बार कहता हूं मैडम कि अंधा न्याय गरीबों के साथ न कभी मानवीय हुआ है न होगा। आज मैं खुशियों से पागल हो गया हूं। आज बड़े भाई को पता चल गया कि अंधा न्याय हमेशा अंधा ही होता है। आज बड़े भाई को मैंने मात दे दी। आप हथकड़ी डाल दें।"

मैं टीले से धीरे-धीरे उतर रहा था। अचानक प्रतिभा तेजी के साथ दौड़ती हुई टीले से उतरने लगी तभी ठोकर लगने से फिसल गई। वह एक पुतले के मानिन्द लुढ़कती मेरे पास आ गई। मैंने सहारा देकर उठाया।

"मैडम मैं भाग नहीं रहा था···।" मैंने रुंधे गले से कहा—"आप अपनी तहकीकात पूरी कर लें। इंसपेक्टर लखनपाल को भेज दीजिए। हथकड़ियों के लिए हाथ हाजिर हैं।"

"यू चीट, यू ब्लडी बास्टर्ड···।" उसकी आंखों से आंसू बरस रहे थे। वह

कुछ नहीं बोली। एक सेकेंड मेरी आंखों में देखती रही—फिर हल्के मुस्कुरायी—"यू हैंडसम डेविल !" और लौट गई। ठीक किया था उसने। आज सोचता हूं तो लगता है प्रेमू कि बंसल की कमजोरी थी उसकी मानवीयता।

थोड़ी ही देर में लखनपाल आया। "शिवेन्द्र जी आपको मैडम बुला रही हैं।"

वह एक मशीनी रोबोट की तरह मेरे बायें आकर खड़ा हुआ—"मैडम का हुक्म है कि आप हिरासत में लिए जाते हैं।"

मैंने दोनों हाथ बढ़ाए।

उसने पत्थर की मूरत की तरह मेरी ओर देखा—"नहीं। उनका हुक्म है कि बिना हथकड़ी पहनाए ले आओ।"

"खैर इस फोटो ने दोनों बातें स्पष्ट कर दीं।" प्रतिभा बिना मेरी ओर देखे बोली—"पहली थ्री नाट थ्री की गोली से रमानाथ और कल्पनाथ की हत्या घनसाम ने की। इसी से यह भी साबित हो गया कि बन्ने मियां हत्यास्थल से दूर थे।" उसने अपनी आंखें मुनीस पर गड़ा दीं—"रूपा कहां है ?"

मुनीस चुप रहा।

"मैं पूछती हूं कि रूपा कहां है ?"

"यह नहीं जानता मैडम।"

"मैं बताता हूं।" हरीश ने कहा—"वह अब नहीं है।"

"क्या ? क्या कहा ? उस निर्दोष औरत की हत्या किसने की।"

"आपने ?" हरीश उसकी ओर एकटक देख रहा था।

"होश में बात करो, उसकी हत्या किसने की ?"

"मैंने कहा न मैडम कि उसकी हत्या आपकी पुलिस ने की। आपने की ?"

"विस्तार से कहो।" उसने हुक्म दिया।

"मैडम, मेरे पैर का गैंग्रीन खतरनाक रूप ले रहा था। मैं चलने में बिल्कुल असमर्थ था। भयानक दर्द से मेरा सिर्फ पैर ही नहीं दुख रहा था बल्कि पूरा शरीर विषैला होता जा रहा था। कतल के चौथे दिन जब मैं दर्द सहने में असफल हो गया तो मैंने अपने झोले में से चाकू निकाल लिया। मैं उसे पैर में घुसेड़ना ही चाहता था कि उसने हाथ पकड़ लिया।—कोशिश करो हरीश, हिम्मत से काम लो। मैं अरंगी-कंदवा सड़क के नुक्कड़ पर जो चाय परचून वगैरह की दूकान है, जा रही हूं। शायद वहां कोई दवा मिल जाए। एनासिन, एस्प्रो, कुछ भी। मिल सकती है। मुझे कोशिश करने दो।

"वह दो घंटे बाद लौटी। उसके पास एस्प्रो की दस टिकियां थीं। मैंने बिना

कुछ पूछे-पाछे दो गोलियां मुंह में डालकर पानी से निगल गया। जब कुछ शान्त हुआ तो बोली--कामरेड बहुत बुरी खबर है। अखबार तीन दिन पुराना है। नमकीन लेने के लिए मैंने इसी पन्ने को दूकानदार के सामने दिखाया और कहा पुराना अखबार है। इसी में आप नमकीन दे दो।

" 'हां, हां ले जाओ, कहां से आ रही हो ?' उसने पूछा---'अरंगी से ?'

" 'हां भइया !'

" 'कौन जात हो ? कहारिन हो ? '

" 'नाहीं भइया हम त गोंड़ हैं। अपन भौजाई ने भेजा है नमकीन के वास्ते। तूं तो भइया खुदै जानत हौ कि अइसने में मेहरारून के ई टाइम में बड़ा बटर-पटर खाए के मन करत है।"

" 'अच्छा-अच्छा, बेटवा होवे वाला है। ले जाओ।'

"वह बोली---'कामरेड कल्पनाथ जी भी मारे गए।'

" 'क्या ?'

" 'हां कल्पनाथ जी भी मारे गए।'

" 'वे वहां आए क्यों ? कल्पनाथ भाई तो कभी हरिजनों के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोलते। ई सब अनर्थ उसी घनसाम का है। अब क्या करें। मैंने माथा पीटा। अपने पास उस तरह का कैमरा होता तो मैं एक रील खर्च कर देता। तीन चार मूविंग सीन पकड़ लेता तो दूसरे कतल का सबूत भी मिल जाता। क्षमा करना बड़े भाई। मैंने समझा ही नहीं कि कल्पनाथ वहां होंगे।"

"खाली क्षमा की बात नहीं थी हरीश। अपने मन में चोर नहीं था। कल्पनाथ के प्रति हम कहीं से बेईमान नहीं थे, पर कल्पनाथ और रमानाथ की हत्या का सारा दोष पुलिस ने तुम्हारे मत्थे मढ़ दिया। एक संकेत तो यह भी है कि करमूपुरा के रईस सोबरन राय को जिन लोगों ने पिछले दो साल से परेशान कर रखा है, वही गैंग इस कतल के पीछे भी है। जिसका सरगना हरीश नामक एक गुमराह युवक है।" उसने कहा और अखबार प्रतिभा को दे दिया।

वह चिह्नित अंश पढ़ने लगी।---"तो यह है कारगुजारी सोबरन राय की। सारे कुराफात की जड़ आप हैं मिस्टर शिवेन्द्र।"

"मैं नहीं हूं यस० पी०। इस कुराफात के पीछे आपको नंगा नाच नचाने के इच्छुक आपके हमउम्र या वृद्ध पुलिस आफिसर्स हैं। पूछिये अपने सिटी सुपरिन्टेडेंट से इस खबर को छपवाने वाले कौन हैं ? अगर यह रिपोर्ट हरीश को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से छापी गई तो मेरा ख्याल है भारत से निकम्मी दुनिया की कोई दूसरी पुलिस नहीं होगी। गैंग लीडर का नाम दिया है, सोबरन का जिक्र है, करमूपुरा का जिक्र है, दो साल पहले की घटना का जिक्र है, दो साल पहले करमूपुरा में सिर्फ एक घटना हुई थी। राजी के विवाह को सुभग सिंह के वंश की

नीचता और भाई-भाई के बीच झगड़े का कारण बताकर नरैन और मुझे बदनाम करने की कोशिश, जिसमें आपके और सैयद राजे के थानेदार के अलावा कौन से लोग थे। कौन गैंग था। वह गैंग अगर था ही तो इसी अखबार ने दो साल पहले आपके कार्यों पर जय-जयकार की थी। और आज जब सोबरन राय थैली शाही अन्दाज में बेशुमार दौलत, शराब, गोश्त और गरीबों के घरों की जवान बेटियों को सुगन्धित साबुनों से नहला-धुलाकर बड़ी खुशनुमा भेंट की तरह पेश कर रहे हैं तो अचानक गैंग सामने आ गया। मैं 'दैनिक' के सिटी रिपोर्टर से सारी तफसील लिखवा कर लाया हूं। यहां सभी बातें कहना न आपके हक में है न मेरे। इसे शान्त भाव से एकान्त में पढ़िएगा। लीजिए...।"

"जब इतना घपला चल रहा था वहां तो तुमने मुझे बताया क्यों नहीं। मैंने तुम पर विश्वास किया और करमूपुरा गई तो क्या तुम्हारा मुझमें विश्वास नहीं था ? तुम मेरे यहां क्यों नहीं आए ?"

"विश्वास नहीं था, क्योंकि औरत के पास किसी मर्द का जाना यह समाज सह नहीं पाता। मैं जाता मैडम तो आपके नाम के साथ सोबरन की ही तरह दूसरी रिपोर्टें नत्थी हो जाती जिसके मकसद अलग-अलग बताए जाते पर निशाने दो ही रहते।"

"आई सी।" तभी प्रतिभा बंसल ने पूछा—"बोलो लखनपाल, रिकार्डिंग चल रही है न ?"

"हां मैडम !"

"कितने कैसेट्स हुए।"

"दो हो चुके हैं मैडम और तीसरा आधा घण्टा और चल सकेगा।"

"ठीक है लेट अस प्रोसीड। हां, हरीश। अब बोलो मुख्तसर बताओ, क्योंकि उसकी मृत्यु तो तभी निश्चित हो गई थी। जब वह तुम्हारे साथ टीले से उतरी थी। पक्की कर दी उस बसावन की बेवकूफी ने। एक मनई और जनाना उसके लिए मतलब नहीं रखते थे, घनसाम के लिए तो बहुत मतलब था उसका।"

"ठीक कह रही हैं मैडम, मैंने भी बसावन मामा से यही कहा था। उन्हें बताना ही था तो दो मनई या दो जनाना कहते ''उन्होंने गलती कर दी मैडम।" मुनीस बोला।

"तुम चुप रहो। आगे बोलो हरीश ?"

"फिर हमने और रुपवा ने बैठकर एक योजना बनाई। शिबू भाई को खबर देने का कोई उपाय नहीं था। मैंने पांचवें दिन रुपवा से कहा कि जब तक एक संकेत भरी चिट्ठी और सुखिया के साथ बलात्कार करते हुए सुदरसन की ली गई तस्वीर शिबू भाई के पास नहीं पहुंचती। कुछ भी नहीं हो सकता। निगेटिव धोने और डेवलप करने की उसकी जानकारी केवल बाहरी थी। वह मुझे धोते हुए

देखती रहती थी। टेकनीक तो देखी थी। लेकिन कभी सीखा नहीं था। मैंने कहा कि बिना फोटो के वे कुछ नहीं कर पायेंगे हमारे लिए। तुम करमूपुरा जा तो सकती हो किन्तु चित्र निकाल पाओगी इसमें सन्देह है।

"वह बोली—सन्देह तो है। ठीक कहते भी हो। परन्तु बहुत अच्छी न भी आए तब भी वे समझ तो सकते हैं। और वह निगेटिव भी उसी में रख दूंगी तो वे जरूर-न-जरूर उसे डेवेलप करा लेंगे। जा रही हूं। यहां से निकलना मत। मैंने कहा—रुपवा तुझे अकेले भेजते बहुत बुरा लग रहा है आज। जाने कहां से सन्देह घेरे रहे हैं मन को। खैर करेंगे भी क्या। बिना अन्न जल के मरने से तो लड़ते हुए मरना ज्यादा अच्छा है। तब मैंने व्यंग्य किया था मैडम! मैंने कहा कि इस सारी स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं तेरे जीजा।

"वह क्रोध से बोली—चुप करो। उन्होंने कभी तुम्हें विवश तो नहीं किया। उन्होंने तो यही कहा था—हरीश जान लो मैं तुमसे सिर्फ छह साल बड़ा हूं। मैंने छात्र जीवन से लेकर आज तक कई रास्ते पकड़े और बदले पर मैं जानता हूं कि आज के माहौल में जान लेने या देने से कुछ न होगा। शान्ति से लड़ना चाहो तो बढ़ो और मरो। यही कहा न। उसने गुस्से में कहा—देखिएगा कामरेड तुम्हें वही बचायेंगे। केवल वही। मैंने मजाक में कहा था—मैडम कि तुम तो खुलेआम कहती हो साली पर जीजा का आधा हक होता है। फिर उनका पक्ष क्यों नहीं लोगी तुम।"

मैंने रूमाल निकाल कर आंखों पर रख लिया।

"क्यों शिवेन्द्र बात क्या है।" प्रतिभा बोली।

"कुछ नहीं मैडम एक तिनका पड़ गया था। अब निकल गया।" मैंने कहा—"आगे बताओ हरीश!"

"मैं नहीं बता सकता अब मुनीस तुम बसावन काका की बात बता दो।"

"मैडम बसावन काका चार दिन से रोज परसिया के जंगल को देखते। अरंगी-कदवां रोड की पैमाइश करते। उन्होंने परसिया के जंगल में भी खोजा, पर कुछ हाथ न लगा। पांचवीं रात को अचानक परसिया वन से रुपवा बुआ को आते हुए देखा। उन्हें अपनी गलती का भान तो हो ही गया था, इसलिए कुछ बोले नहीं। सड़क से हटकर छिप गए। जब रुपवा आगे निकल गई तब वे फाल बढ़ाते उसके पीछे लगे। रास्ता बदलकर वह सड़क से हटकर करमूपुरा जाने वाली पग-डण्डी से चली। गांव में घुसी। कुत्ते भूंक रहे थे। पर सब पहचानी गन्ध से शान्त हो गए। वह कमरे में गई। बिजली जलाई। बड़ी देर तक कुछ करती रही। वे बाहर बैठे-बैठे उसकी राह देखते रहे। सुबह चार बजे वह गांव से निकली। अचानक सामने से आती स्कूटर का धक्का लगा। वह कुछ नहीं बोली। चलती जा रही थी। बसावन मामा पीछे थे। उन्होंने गमछे में मुंह ढंक लिया था। पास गए तो

देखा स्कूटर पर दो आदमी थे। मुन्नन चला रहा था, और पीछे अपनी तोंद सहलाते सोबरन राय कुर्ते से गर्द गुबार झार रहे थे। बसावन मामा बहुत दुचित्ते में पड़ गए। रुपवा के साथ चले तो ठीक रहेगा या छिपे छिपे ही चलें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उनको तभी सामने से पुलिस की जीप आती हुई दिखी। कहिए राय साहब। दारोगा लखनपाल ने कहा।"

"झूठ है, सरासर झूठ है? मैंने सिर्फ यह पूछा कि सामने वाली औरत क्या आपके साथ की है? मुझे क्या पड़ी थी सोबरन से बातचीत करने की। मैं तो पेट्रालिंग कर रहा था। अचानक सोबरन राय दिख गये थे। सोबरन राय ने अलबत्ता कहा कि—ई औरत केहू के भी साथ होइ सकत है दरोगा जी।"

"बोलिए लखनपाल जी आगे बोलिए—"

"हम यफ० आई० आर० के मुताबिक हरीश और रूपा को ढूंढ़ रहे थे। ऊपर से दबाव पड़ रहा था बार-बार। निकम्मे होने की धुड़की सुन रहे थे। इसलिए हमने पुलिस गश्त तेज कर दी। सातवीं रात जब पुलिस गश्त पर थी तब हम संदेह में पड़ गए और उस औरत को रुकने के लिए कहा। तभी सोबरन राय आये और मैंने पूछा उनसे कि क्या यह आपके गांव की महिला है?

"उन्होंने कहा—हां, इसे कौन नहीं जानता। बस।"

"उसकी मृत्यु के बारे में भी आपको कोई जानकारी न हुई?"

"नहीं मैडम!"

"ठीक है, आप तीनों कैसेट्स हमें दीजिए।"

"मीटिंग खत्म हुई शिवेन्द्र! मैं अब चलूंगी।"

"जैसी आपकी इच्छा, चलें, जीप तक पहुंचा दें आपको।"

"का हो शिवेन्दर पगला गये हो का तोहूं। एक एतना बड़ी पुलिस अफसर बिना खाये-पीए दोपहर ग्यारह से लेकर अब तक निर्जला हैं। तू कहत हौ कि पहुंचा आएं।"

"काका आप कहिए। आप तटस्थ हैं। मैडम आपका कहना मान लें तो हम लोगों से बड़भागी कौन होगा।"

"हुजूर।" दीना चाचा हाथ जोड़े खड़े हो गए।

"बस थोड़ा सा नाश्ता-पानी हुजूर। हम गरीबन के पास जौन कुछ है ओके आप सब गरहन करैं, बस।"

"ठीक है चाचा चलिए, भूख तो नहीं है पर प्यास जरूर लगी है।" बंसल बोली।

"बेटी तू हमें चाचा कह दियौ तो हम तोहे कबीरदास के एक बानियों सुनाय देत हैं—

साधो जल बिच मीन पियासी···हां, हां हुजूर।"

"क्यों, चाचा यह करमूपुरा जनपद की मिट्टी का ही कमाल है कि मिस्टर शिवेन्द्र का प्रताप है, यहां सब लोग काव्या ही बोलते हैं।"

"कुछ तो माटी परताप है ही हुजूर। न होता तो आज पहली बार शिवेन्दर से मिले का एतना समय कैसे निकलता हुजूर। हमरी ठकुरान तो शिवेन्दर वदे आंख बिछाये रहत है हुजूर बाकी शिवेन्दर बहुत कम वखत निकाल पावत हैं अपने लोगन के लिए। हुजूर उलटवांसी में ही कबीरौ के जिअना पड़ा रहा। ऊहौ जल के बीच पियासे रह गए सरकार।"

"आइये···चाचा।"

"बुलाओ लखनपाल अपने कान्स्टेविल्स को।" बंसल बोली—"अच्छा शिवेन्द्र कल तो मुलाकात होगी ही। या इस बार भी करमूपुरा काण्ड की जांच के बाद अंडरग्राउंड रह जाओगे।"

"नहीं मैडम। अब तो आपको विदा करना है तो आपके बंगले को ही अंडर-ग्राउंड क्यों न कर लूं।"

"हूंह्।" मैंने कहा—"फिर तो तुम लोग चन्द्रा के यहां गये होंगे?"

वह तिनक गया। बोला—"रिसर्चर तुम अभी बच्चे हो। चन्द्रा के यहां जाने का क्या तुक था। जब सब कुछ खुले आइने की तरह साफ और स्पष्ट हो गया तो उसके यहां किस वजह से जाते?"

मैंने व्यंग्य से कहा—"तुम बड़े कइयां हो। तुमने चन्द्रा से मिलकर सारी स्थितियों का विवरण दिया होगा। उसने तुम्हारे कार्यों से गद्गद होकर अपने ससुर से कहा होगा काका आप इन सज्जन को नहीं जानते। आप व्यर्थ आशा लगाये हैं कि ये हमारे यहां नाश्ता पानी करके जायेंगे। इनको जो सम्भालने का दायित्व आपके स्वर्गवासी पुत्र ने सौंपा था, इसे इन्होंने सम्भाल दिया। मैंने जो शपथ कराई थी, वह भी तो पूरी हो गई। कातिल से बदला ले लिया इन्होंने, दण्ड भी दिला दिया, अब हमसे क्या सम्बन्ध है इनका। ये सुनीत को आशीर्वाद देने आ गये होंगे?"

"मूर्ख हो। सो जाओ। चन्द्रा का व्यक्तित्व तुम्हारी सोच में अंट भी सकता है; पर मेरे लिए नारी हमेशा दाता ही रही है, वह न स्वप्न की तरह आती है न ख्वाब में झिलमिली दिखाकर चली जाती है। यह बात अलग है कि जो आयीं उनमें वैसी दो ही थीं। सोनवां या फिर चन्द्रा।"

"और तुमने दोनों के साथ पत्थर जैसा व्यवहार किया। लेशमात्र ममता नहीं, दया नहीं···" वह चुप था।

"तुम लगता है मुझे पत्थरदिल, सख्त और जाने क्या-क्या बक रहे हो।

रिसर्चर। नारी क्या पुरुष की केवल भोग्या होती है ? वह भी शरीर तक सीमित ? नहीं रिसर्चर। तुमने वह अमृत कभी चखा नहीं जो शरीर के ताप को लांघकर प्यार को शरीर से अलग मन के धरातल पर ले जाता है। चन्द्रा अलग रही ऐसा सम्भव था ? वह कल्पू के साथ आती तो खुद कल्पू हमें एकांत में छोड़कर घूमने चला जाता। विश्वासघात दुनिया का सबसे निकृष्ट पाप है प्रेमू'''न तो वह मैं कर सकता था न चन्द्रा। एक दिन आई तो बोली—'आपके मित्र कहते थे कि शिबू कहता है कि पति पत्नी को कुछ भी नहीं देता। पत्नी के समर्पण को उसके भोगते हुए वह बहुत उदार और दयालु हो जाता है। उसके अहं को ऊर्जा मिलती है इसी-लिए वह उन क्षणों में पत्नी के शरीर को सहलाता है। बालों को संवारता है, चुम्बन देकर कृतज्ञताएं लुटाता है। वह ऐसा दिखाता है कि अचानक वह सब पर स्नेह लुटाने वाला फरिश्ता बन गया है।'

"'बड़ा दुष्ट था कल्पू !' मैंने कहा—'कहा तो जरूर था यह सब पर इसलिए नहीं कि वह तुम्हें समझाये। क्योंकि तुम दोनों तो निस्वार्थ भाव से एक दूसरे को सबकुछ देते रहते थे।' मैंने कहा।

"'सवाल उनकी दुष्टता का नहीं है शिबू, सवाल उस कृतज्ञता का है जो नारी देना चाहे। नारी का भी तो कोई फर्ज होगा। तुमने मेरे दु.ख को तो बांट लिया, आधा क्या, उससे भी अधिक स्वयं भोगते रहे, शपथ निभाना कोई तुम्हारा दायित्व तो नहीं था। मैं मित्र पत्नी हूं। स्वामिनी तो नहीं हूं न। और यदि अगर मुझे लगे कि मैं किसी का सारा उपकार भूल गई, जिसने दुःख बंटा लिया, क्या उसका दु ख बंटाना मेरा दायित्व नहीं है।' उसने पहली बार मुझे तुम कहा था रिसर्चर ! बहुत अच्छा लगा। मेरी जिन्दगी में तुम कहने वालों का बड़ा टोटा रहा। मां कहती थी। बाबू कहते हैं, जहूर चाचा कहते हैं, पर वह जैसा 'तुम' कह रही थी वह तो वाणी का अमर प्रतिपादन था।

"मैंने कहा—'मित्र सब कुछ तो उस एक बूंद में ही है। तुम्हारी आंख से एक बिन्दु लुढ़क कर कपोल पर सट गया है। इसी ने मेरा सारा दुःख पी लिया। मैं दु.खी कहां हूं।'

"'झूठे हो शिबू साहब, तुम झूठ हो।' वह धीरे-धीरे बोली—'पति का आप पर विश्वास था। वे मुझे आपके पास छोड़ जाते थे। आप तब भी कौन सी दया उढ़ेलते थे मुझ पर। आप तो अपने को भोला भंडारी कहते मात्र हैं। कभी नारी को, जिसे आप प्राणों से ज्यादा प्रिय कहते हैं, कुछ अपने से करने का हक तो दिया करें।'

"मैं खाने बैठा तो वह थाल रखकर बोली—'देखिये, बहुत बदल गई हूं। खाना तो बनाया पर विश्वास नहीं है कि यह पहले जैसा ही लगेगा। हमेशा अतीत दुहराता भी तो नहीं।'

" 'बहुत दर्शन छांटने लगी हो देवि !' मैं मुस्कराया और रोटी का एक टुकड़ा दाल में डुबा कर मुंह में रखा तो मिर्चे की तिताई ने पूरे बदन को झकझोर दिया। खांसी आने लगी—'तुम तो जानती तो चन्द्रा, मुझे मिर्चा पसन्द नहीं। बाप रे, कितनी तीखी है दाल।'

उसने मुस्कराते हुए पानी का गिलास मेरी ओर बढ़ाया—'जब तक आदमी मनपसन्द का ठीक उल्टा अनुभव नहीं करता। वह यथार्थ के धरातल पर नहीं आता।' उसने दाल वाली कटोरी उठाई। रसोईघर से दूसरी कटोरी उठा लाई—'अब अपने पसन्द की दाल खाइए।'

" 'तो, मुझे यथार्थ पर लाने के लिए यह सब तुमने जान-बूझ कर किया ?' मैंने कहा।

" 'हां कभी-कभी ऐसा भी करना पड़ता है। आपने मेरे सिर पर हाथ रख कर शपथ ली थी। अपने मित्र के बधिक से बदला तो चुका दिया ? पर आक्रोश में जाने क्या-क्या बक गई उस दिन, उसे क्षमा कब करियेगा।'

" 'तुमको भी क्षमा करना पड़ेगा ?' मैं बोला—'न मुझे कभी कल्पू ने क्षमा किया न कभी कल्पू को मैंने। क्षमा तो दीवार है। बांट देती है। नरैन ने तो आज तक नहीं पूछा कि उसे क्षमा मिली या नहीं। जो अपने मन से जुड़े हैं, वे छोटा-मोटा अपराध भी करते हैं तो उनका हक है। उसे क्षमा कर दूं तो अपनी छोटी-सी दौलत भी छिन जायेगी। क्षमा न करने से ही तो स्मृति बनी रहती है। याद आती है कि ऐसा तब चन्द्रा ने कहा था। ऐसी चीजों को जब एकान्त में सोचता हूं तो बेबस मुस्कराता हूं पागल की तरह। लोग कभी जान नहीं पाए कि मैं एकान्त में मुस्करा क्यों रहा हूं। नरैन की कही बात याद करता हूं, बड़े गुस्से में कहा था उसने रूपा और नरैन में कोई एक चुनो। मैंने चुन लिया। नरैन आत्महत्या की धमकी दे रहा था। यह उसका दूसरा अपराध था। समझता था कि यह सब देखकर भी नहीं लौटूंगा। पता नहीं तुम लोगों को बहम क्यों हो जाता है। क्षमा-क्षमा कह कर तुम लोग हमें इतना छोटा क्यों करते हो। तुम लोग मुझे खुश करने के लिए क्षमा मांगते हो, और मैं तुम्हें सदा अपने मन में बसाये उसी अपराध पर हंस कर शान्ति पाता हूं। मेरी इस छोटी-सी गठरी को भी छीन लोगे तुम लोग ?'

" 'खैर नहीं मांगती क्षमा। क्यों मांगूं। वह मेरा हक है। नहीं है तो भी अगर बालों में तेल डाल देने से मुझे एक रत्ती बराबर सुख मिलता है तो इतने तुच्छ सुख को भी देने में कंजूसी क्यों ? मैं कुछ छीन नहीं रही हूं। और न ही मन में छीनने का अभिमान ही है। ऐसी कृतज्ञताएं सबकुछ लेकर पुरुष दिखाया करते हैं किन्तु यह तो नारी का सहजात धर्म है। और कौन जाने बाबा, आप जैसे लोग इस मामूली-सी खुशी को भी विधवा के भाग्य में जोड़ने को तैयार न हों।' वह रो पड़ी।

" 'चन्दा, तुम्हें क्या हो जाता है। तुम विधवा हो यह गलत है। तुम एक ऐसे

इन्सान की पत्नी हो जो कभी न गया न जाएगा। तुम जब भी चाहो आ सकती हो लेकिन सोचकर कि कहीं ऐसा करने से परिवार की मर्यादा पर तो ठेस नहीं आएगी, खुद अपने अन्तर्यामी को तो ठेस नहीं लगेगी? यदि तीनों का उत्तर मिले 'नहीं' तब जरूर आना। तुम जो कहोगी वही करूंगा। तुम तेल लगाना चाहती हो लगा दो। कुजात हूं, इसीलिए कहता हूं कि कुजात बनकर जीना द्रोपदी के चीरहरण से भी ज्यादा कष्ट कर होता है। वह विष है, घोर विष। उसे मत पीना। अगर मीरा बनने का निर्णय करके आयी हो तो वह भी स्वीकार है। मैं तुम्हारी प्रतिपल रक्षा के लिए प्रण ले चुका हूं।' मैंने उसे खींचा और उसके अधरों पर अधर रख दिए। वह कई मिनट बैठी रही। सिसक-सिसककर इतने आंसू भी गिर सकते हैं नहीं जानता था। पर उसके आंसुओं से मेरा कुर्ता भींग गया।

" 'बहुत-बहुत खुश हूं', वह बोली—'मुझे आपके शरीर की नहीं, आपकी अन्तरात्मा की चाहत है। आपके सुखों में कभी साझीदार नहीं होना चाहती, पर दुखों पर मेरा आधा हक है इसे कभी मत भूलिएगा। वरना मैंने सुना कि आप अस्वस्थ हैं और अपने शरीर की अवहेलना कर रहे हैं तो मैं शायद जीवित रूप में कभी आपसे नहीं मिलूंगी।'

"बस रिसर्चर यही है वह मधु स्रोत जो मुझे शान्त बनाए रहता है। इस अमृत का एक कतरा पा जाना तब पूछना कि क्या-क्या हुआ बंसल से, या सोनवां से—हमेशा याद रखना कि चन्द्रा मेरी पत्नी नहीं अभिन्न मित्र है। पति-पत्नी में तो लेन-देन घुस सकती है, पर मित्रों में तो हमेशा देने की होड़ रहती है, कुछ पाने की नहीं जो वह देने में हिचके। मेरे मन में ऐसा कुछ नहीं है जो उसकी चाहत पर निछावर न कर सकूं। शरीर बड़ा स्थूल तत्व हैं प्रेमू। तुम नाम के प्रेमू हो···"

वह शायद ऊंघने लगा था। पर मैं बहुत पीड़ित था। मैं सोनवां के बारे में सोच रहा था। यद्यपि उसके भौतिक रूप को साफ-साफ ब्रश या रंग के इस्तेमाल से उभारने की न तो शिबू ने कोशिश की न मैंने ही, उसकी मुखारी जानने के लिए कोई खोद-विनोद किया, पर अंधेरे में मन को डुबाकर, नींद बुलाने की ज्यों-ज्यों कोशिश करने लगा एक औरत बरजोरी मेरे दिमाग पर हावी होने लगी—मैं अगर गलत थी तो क्या शिबू मुझे बचा नहीं सकते थे? यही सवाल किया था उसने? शिबू को क्या कहूं। उसने तो बिना कुछ तोपे-ढांपे सच-सच बयान दे दिया। उसने कभी इनकार तो नहीं किया, पर अपनी आदत के मुताबिक बेमुरबती के साथ उसने अपनी बालसंगिनी से मुंह मोड़ लिया। उसने जहर खाकर जान दे दी। कैसा लगा होगा सोनवां को? मेरे दिमाग की बनावट शिबू जैसी नहीं है। इसका मुझे दुःख भी नहीं है। जिन्दगी में जवानी की उमंगें और खुशियों को बेमानी कहकर शिबू जैसा आदर्शवादी भले ही तस्कीन पाए, मैं उसका कायल नहीं हूं। मैं होता तो जब

वह अमोले के साथ सटकर खड़ी थी, अमोला आम का पेड़ बन गया था, उसकी डालियां मोजरों से भर गई थीं, उसकी जवानी की गंध से भौंरे व्याकुल होते रहे, मैं उसे वहीं छोड़कर अपने घर नहीं आ जाता। अपनी बालसखी के साथ अपने मन को समेटे रहना मूर्खता थी। मैं ललचा रहा था। आप जो कहना हो कहिए। जो सोचना हो सोचिए। मैं होता तो उसे अंकवार में भर लेता। उसके सुगंधित बालों को अपने सिर पर छाया की तरह ओढ़ लेता। कोई देखे नहीं ऐसा सोचता जरूर पर दो चार मिनट जो भी मिलते उसके जलते होंठों पर अपने को लुटा देने में संकोच नहीं होता। होंठों पर होंठ रख देना पाप है तो मैं पापी बनने के लिए हजारों जनम लेने को तैयार रहता। और फिर···मैंने करवट बदली—'हुंह., मेरी चोली के बन्द टूट जाते थे···' मुझे जिन्दगी में ऐसे अवसर मिले हैं जब नवोढ़ा के गुठली जैसे उरोज छाती से दबकर मन को गुदगुदाने लगते हैं। हां, खुद बिना किसी हिचक के उस गधे घूरे पंडित के सामने ही तो सोनवां ने कहा—'मेरा सारा शरीर शिबू से मिलने के लिए तड़पता था।' आज की कोई औरत शायद ही अपनी शारीरिक भूख की बात इतने प्रेम भरे उच्छ्वासों में कह पाए—'तूने क्यों नहीं देखा कि मैं हर रात घंटों क्यों रोया करती थी शिबू के लिए। मेरा मन तड़पता था, मेरे प्राण तड़पते थे और अब जब कुलटा हो ही गई तो सबके सामने ही कह दूं कि मेरा सारा शरीर शिबू के लिए तड़पता था।' इस बेबस बयान को मैं क्या कहूं। इसे तो आप ही बताएं। मैं शिबू का दोस्त हूं तो इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं उसकी सारी दुर्बलताओं को ढापूं। तोपूं। छिपाए रहूं। क्यों ?

"सो जाओ रिसर्चर, मैं खुद इसी उधेड़-बुन में लगा हूं। मैं भी बार-बार यही पूछता हूं कि मैं क्या स्वयं दोषी नहीं हूं ? माना कि सोनवां के रूप पर रीझ कर सोबरन सबकुछ लुटाता रहा और एक अमोले को आम का पेड़ बनने, मंजरियों से लद जाने और खूब जी भर कर वर्षों तक उसका स्वाद लेते रहने की बड़ी योजना बनाई। कम से कम तीन पंचवर्षीय योजनाएं···अन्ततः उसने अमोले की धरती में धंसी जड़ों को उखाड़कर अपने गमले में रोप दिया। वह उसकी चार-दीवारी में कैद हो गया। पर सोनवां पेड़ नहीं थी रिसर्चर ! वह औरत थी। उसे उखाड़े जाते वक्त कोई पीड़ा नहीं हुई, क्यों ? उसने अगर रात के सन्नाटों में शिबू के लिए तड़पन का अनुभव किया तो वह कितनी दूर थी मुझसे। कुल बत्तीस किलोमीटर। और वह अकेली नहीं थी। शोभू तो था ही। शोभू तक को गलत-फहमी में डाले रही वह। शोभू के मन का क्षोभ तो तुमने देखा नहीं रिसर्चर, सोनवां की मासूमियत को और उसके कारण ठगे जाने की स्थितियों के लिए मैं गुनाहगार क्यों हूं। आधा गुनाह मेरे सर और आधा शोभू के सर पर रख देने से ही तो सोनवां बेगुनाह नहीं कहला सकती। तुम मुझे पत्थर की मूरत मत बनाओ रिसर्चर, सोनवां गदराए धन-खेतों की सुगंधि थी। अधपके हेमन्ती वर्ण के धानों की

बालियों में भरे कचरस का स्रोत थी। वैसा स्वादिष्ट नारियल के पानी जैसा सुगंधित रस केवल उसी के शरीर के मधुचक्रों में शहद जैसे भर सकता था। उसको सिर्फ एक बार आलिंगन में लिया था रिसर्चर! जब वह पागल की तरह मुझसे लिपट गई थी। कहने लगी शिबू अब तुम गांव छोड़कर मत जाओ। मुझे बड़ा डर लगता है।

"डर क्यों? मैंने पूछा था।

"उसने कहा था—'औरत हूं, इसलिए। मैं उस वक्त बड़ी बेबस हो जाती हूं शिबू जब पछुवा हवा में सिहरन बढ़ जाती है।'

"मैं मूर्ख नहीं हूं रिसर्चर, मैंने हजारों लड़कियां देखी हैं। मैं नारी का मतलब समझता हूं रिसर्चर। पर तुमने इस कहानी को सुनते वक्त कभी यह नहीं पूछा कि सोनवां के लिए मैं कुछ कर क्यों नहीं पाया। मैं झूठा क्रान्तिकारी नहीं बना रिसर्चर! क्योंकि बिना पढ़ाई पूरा किए, बिना नौकरी पाए उसे कहां-कहां ले जाता। खुद अपनी रोटी के लाले थे। मां रही नहीं। पिता निष्क्रिय थे। सरस्वती के विवाह का बहुत बड़ा दायित्व था—क्या करता मैं, सोनवां के साथ रहता तो नरैन की ही तरह मेरे बाप भी कहते कि तुम्हारे कारनामों से मैं लज्जित हूं अब कौन है ठाकुर जो सरसू से अपना बेटा ब्याहना चाहेगा। इन स्थितियों में कोई भी होता तो क्या करता? एक कमरे का किराया देने का जिसमें सामर्थ्य नहीं था वह गृहस्थी का बोझ किसके भरोसे उठाता। फिर, सवाल है कि क्या उसे इतनी जल्दी अधीर होना चाहिए था। वह सब जानती थी कि तिलकहरू आ रहे हैं, बाबूजी मेरी प्रार्थना को नहीं आज्ञा को मानकर तिलकहरूओं को लौटा रहे थे। क्या सोनवां अंधी थी?"

"दोनों पक्ष आमने-सामने खड़े हैं शिबू, मैं भगवान् कृष्ण तो नहीं हूं कि तुम्हें और उसकी आत्मा को लड़ने के लिए ललकारूं। मैं नहीं पूछूंगा कि उन परिस्थितियों से पलायन क्यों किया तुमने? पर समझ में नहीं आ रहा है मित्र कि इसमें दोष किसका है? दोषी कौन? सोनवां या शिबू। अब भी मेरा फैसला सोनवां की ओर ही झुका है। दोष दोनों का, पर बड़ा भाग तुम्हारा।" मैंने रुखाई से कहा।

वह ठहाका लगाकर हंसा—"वही अकादेमिक शब्दजाल। मैं या वह—प्रश्न है? और यह प्रश्न ही रह जाएगा रिसर्चर। जीवन में बड़ी चीज पाने के लिए बड़ा बलिदान भी देना पड़ता है। तुम नगर की बौद्धिक नारियों से लेकर मजदूरिनों तक को देखो—ऐसी भूख क्यों? हमेशा शरीर को ड्राइंगरूम की तरह सजा कर रखना किसलिए। इसमें विवाहिताएं, अविवाहिताएं सभी शामिल हो जाती हैं। जहां चेतना सही जमीन से थोड़ा बहुत जुड़ती है वहां खादी की साड़ी भी तीन-चार सौ रुपयों से कम वाली न जमती है न फबती है। ऐसे खर्च में मन

को तोष मिलता है। मैं इस संतुष्टि में कोई विशेषण नहीं लगाऊंगा। संतुष्टि मिले और गुंजायश हो तो वे अपना अंतःपुर लाखों कीमती चीजों से सजाएं, क्या फिकर। ठीक है। मूर्ख नेता लाखों लुटाते हैं तो पढ़ी-लिखी नारी के व्यय को शाहखर्ची कहने की मूर्खता मैं नहीं करूंगा। मुझे भी इसे देखने में खुशी होती है। बशर्ते सही टेस्ट झलकता दिखे। पर सोनवां के लिए यह सब कहां से लाता। उस अधकचरी बुद्धि में तो यह कभी उपजा भी न होगा कि एकदम सतेज आधुनिका यह सब दिखावा तो दूर ऐसा एक तिनका तक अपने बदन पर धारण नहीं करती जिस पर उसके प्रेम का या फिर श्रम का हक न हो। एक बात है जो मैं स्वीकार करता हूं। सोनवां के साथ सोबरन ने बलात्कार किया। वह गर्भ उसकी चाहत से नहीं आया। मैं साले सोबरन को बताऊंगा।" उसने कहा।

मैंने चिढ़ के साथ रुखाई से कहा—"छोड़ो। जाने दो यार अचानक मन बहुत खट्टा हो गया। केवल शयन। गंभीर निद्रा।"

"सो पाओगे।" उसने कहा और चुप हो गया। अपनी इस छोटी-सी जिन्दगी में मैंने वह सब किया और भोगा। आज तक मैंने पांच वर्षों में एक बार भी शिबू को कभी ऐसा उत्तर नहीं दिया था। काफी बचाकर अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करना चाहता था। पर जाने क्या हो गया था मुझे। मैं खुद नहीं जानता। कोई आदमी बकवास करे और वह अव्यावहारिक और नासमझ हो तो उसे झटका देकर, उसे कापुरुष कहकर उसे अपनी जुगुप्सा-भरी प्रतिक्रिया से परिचित कराकर मन की व्यथा को निकाला जा सकता है। पर जहां श्रद्धा और प्रेम बहुत ज्यादा हो, जैसा मेरे मन में शिबू के प्रति था, तो सिर्फ मन ही मन सुलगने के अलावा दूसरा विकल्प भी क्या है।

"सोने की कोशिश करो। तुम सो नहीं पाओगे।" उसने चादर हटाते हुए कहा, "जब तक तुम्हारे दिमाग का मकड़जाला छिन्न-भिन्न नहीं होता तुम सोनवां को क्या जान सकोगे? क्या समझते हो कि नारी के अपना होने का मतलब चुम्बन, हरारत, शारीरिक सम्पर्क। यही है तुम्हारे लिए सबसे बड़ी न्यामत। गधे, अगर यही न्यामत होती तो सैकड़ों गरीब औरतों को हमबिस्तर बनाकर या बलात्कार करके उसे सोबरन ने प्राप्त कर लिया होता। अगर यही उद्देश्य है मानव की विकास यात्रा का तो मेरे और सोबरन में क्या फर्क होता। तुम सोबरन के मन में डूबकर अपनी जीभ से लार टपका रहे हो। तुम्हारी जगह कोई और होता तो बता देता कि तुम···क्या हो? अगर चन्द्रा निर्णय लेती कि वह विधवा विवाह करेगी। किसी नवयुवक से वह विवाह करना चाहती तो मैं बड़े भाई की हैसियत से खुद अपने हाथ से गठजोड़ करा देता। उसे हमेशा हमेशा खुश रहने का आशीर्वाद लुटा देता। स्नेह की वर्षा से उसे नहला देता···और डोले में चढ़ाकर हंसते हुए विदा कर देता।"

मधुमक्खियों की घटना के बाद जो स्थिति बनी, उसे बता ही चुका हूं। रातभर जग कर रुपवा उद्धार के दृश्य देखता रहा। हे भगवान कितना-कितना तूफान छिपाये मुंह पर टेप चिपकाए जी रहा है मेरा यार। सुबह हल्की नींद आई तभी मुझे लगा कि कोई झकझोर रहा है मुझे। आंख खुली तो देखा नरैन जी मुस्कुरा रहे हैं।

"प्रेमू भाई साहब, चलिए आपको सैयदराजे तक घुमा लाऊं। चलियेगा?"

"अरे वाह नरैन जी, नेकी और पूछ-पूछ।" मैं झटके से उठा। "क्यों नरैन जी शिबू कहां गया?"

"मैं क्या जानूं प्रेमू भाई जी, हो सकता है कहीं और सोने चले गये हों। दर्जनों प्रेमिकाएं हैं बड़े भाई की। ऐसों के लिए पुवाल पर सोना या कहिए नींद की कसर काढ़ने के लिए करवटें बदलना जरूरी है?" नरैन जी फिस्स करके हंसे।

"नहीं, वह मुझे छोड़कर किसी प्रेमिका-व्रेमिका के पास नहीं जा सकता। अब है ही कौन उसका मन का मीत। सोनवां-रुपवा जब चली गईं तो अब वह क्यों चला जायेगा कहीं।"

"जाइए मुंह हाथ धोकर तैयार हो जाइए। बड़े भाई का टाइम-टेबुल किसी की भी मुट्ठी में बन्द नहीं होता प्रेमू भाई। वे जब हमारे टाइम-टेबुल को कानी आंख देखना नहीं चाहते, कभी नहीं पूछते नरैन कहां जा रहे हो, या कहां जाओगे तो हमें क्या हक है उनके बारे में जानने का। बताइए?"

"ठीक है नरैन जी, कहीं गया होगा। ऐसे ही दो बैठकी में उसने मेरे मन को इतना झुलसा दिया है कि बुद्धि काम नहीं कर रही है! चलिए सैयदराजे, वहीं शायद कुछ शान्ति मिल जाए।"

मैं और नरैन जी गांव बाहर कच्ची रोड पर आये। एक इक्के के पास पहुंचकर वे बोले—"आइए प्रेमू भाई साहब। चला हो शिवराज भाई। ले चला।"

"सोबरन चाचा तो जाने कबके चल पड़े हैं अपने लावलश्कर के साथ।" नरैन ने कहा।

"लावलश्कर लेकर क्या वहां लड़ाई करने गये हैं?"

"लड़ाई ही तो है। तर्ज बदल गई है लेकिन उद्देश्य तो वही है। ढेर सारा नजराना, बासमती चावल की बोरी, दही, घी, वह भी सब शुद्ध—यही है उनका लश्कर। हो सकता है कि उनके दरबारी सुलोचन ठाकुर और ननकुवा भी गए हों। कल्लू चमार तो नजराने की बोरी और सब्जी लिए बड़े भिनुसारे ही जा चुका है।"

हम जब थाने पहुंचे तो थानेदार के कमरे में जाते-जाते रुक गए।

"आइए, आइए, पधारिये, आपका नाम क्या है?" एस० आई० ने पूछा।

सामने कुर्सी पर बैठते हुए सोबरन के चेहरे को देखने वाला तुरन्त भांप सकता था कि अपना नाम बताइए कहकर—थानेदार ने उनकी बेइज्जती कर दी है। अगर इस मुल्क के अमले इतने बेवकूफ हैं कि नफा नुकसान में भेद करने की तमीज नहीं है तो सोबरन राय जैसे मातवर के लिए यह कितनी बेइज्जती की बात है।

"आपने हुजूर पहचाना नहीं शाइत, आप करमूपुरा के जमींदार हैं सोबरन सिंह। राय बहादुर सोबरन सिंह को आप नहीं जानते हुजूर।" सोबरन के दरबारी सुलोचन ठाकुर ने कहा। "अबे, कलुवा ले आ नजराना।" कलुवा ने सजाव दही की मटकी, एक बोरी बासमती चावल, ढेर सी सब्जियां और मिठाई का एक बड़ा डब्बा सामने सजा दिया। सुलोचन बोले—"हुजूर यह सब कुछ घर का ही है। यह सजाव दही देखिए हुजूर। दो इंच मोटी साढ़ी है इस पर। और हुजूर इस देस दिहात में बासमती चावल तो अपने हुजूर रायबहादुर साहब के अलावा किसी को सूंघने भर भी मयस्सर नहीं होता।"

थानेदार ने सामने की घंटी पर हथेली पटकी—"मुंशी जी जरा कांस्टिबुल अब्दुल को भेजिए।"

"आया हुजूर," अब्दुल ने सलाम ठोंका—"हुकुम हुजूर।"

"यह सारा सामान उठाकर बरामदे में फेंक दो। और इन सज्जन से पूछ कर रपट लिख लो। मेरी तो समझ में नहीं आता थाना और नजराना दोनों इनके लिए बराबर हैं। ऐसे आदमी की रपट का क्या भरोसा। फिर भी इस देहात के नामी गरामी आदमी हैं, इसलिए ये जो कहें लिख लो। हम जरूरी समझेंगे तो तफ्तीश के लिए जायेंगे।"

"हुजूर अइसन बेमुरव्वती काहे दिखावत हैं।" सोबरन सिंह बोले—'एक नामी गरामी आदमी के बेहुरमती तो तुच्छ बात हो गइल हुजूर। हमरी भलमन-साहत थी कि मैंने आंख के सामने अपना खेत उजड़ते देखा। सारा अधपका चना उखाड़ा गया। बीसियों जगह आग जलाकर उसे लोग भूनते रहे। अगर खाने भर की बात होती तो हम खुद खुशी से कह देते कि अपने शहरी दोस्तों को खिलाओ। ई सब हम पुश्त दर पुश्त करते आये हैं। जितनी भूख हो होरहा भूंजो और खाओ। पर मैं जब उन्हें मना करने गया तो लोगों ने मुझे पीटा। मेरी पगड़ी उछाली, मेरी मूंछें खींच कर बोले कह बे कर दूं सफाचट? आपके लिए यह सारा वाकया तफ्तीश के काबिल भी नहीं लगा। वाह रे न्याय। नये अफसरान तो हमारी हिफाजत की अर्जी को भी ठोकर मार रहे हैं। अब यह दुखड़ा सुनाने कहां जाऊं। अपने बटेसर के दोस्त शिवशंकर तिवारी से भी कह दूंगा कि भैया 'विशेष छेत्तर' में गांवों को सुरग बनाने जाय रही है अपनी सरकार तो उससे कह दो कि अब अफसरान खुदै नर्क बनाने के लिए इस छेत्तर में आ गए हैं।"

"आपको रोने की जरूरत नहीं है। तफतीश के लिए सबूत चाहिए। पहले यह

बताइए कि आपकी बेइज्जती किसने या किन लोगों ने की। नाम बताइए। नम्बर दो आप खुद सोचिये कि आपका कितना नुकसान हुआ है। उसका ब्यौरा दर्ज कराइये। आपकी मूंछों को खींचा गया, इसका चश्मदीद गवाह बताइए और उससे जो चोट हो, जो भी निशान या कोई चीज दिखे—उसे लिखाइए। मैं तो देख रहा हूं कि आपको कोई खरोंच तक नहीं आई। ऐसी लड़ाई बिना हर्वे हथियार के आपने लड़ी और कहीं दाग या निशान भी नहीं है आप पर। इसे क्या करूं मैं। चश्मदीद गवाह लाइए।"

"नमस्कार दरोगा जी" नरैन जी के साथ मैं आफिस में आया—"कहिए कुशल मंगल तो है?" नरैन जी ने पूछा।

"हां, आइये नरैन जी। कैसे चले।"

तभी नरैन जी और सोबरन जी की आंखें चार हुई। "हम तो एफ० आई० आर० दर्ज कराने आये हैं दरोगा जी।"

"आपने अपने गांव करमूपुरा के जमींदार सोबरन सिंह को नहीं पहचाना क्या? नरैन बाबू?"

"खूब पहचाना। कृपया मेरी अर्जी लिखवाइए और खुलकर कोशिश करिये कि करमूपुरा में लड़ाई रंग बदलकर पूरे क्षेत्र की लड़ाई न बन जाय। आपके सामने जो सज्जन हैं, इन्हें बताइए कि रायबहादुरी और थानेदार को रिश्वत देकर जो रिश्ते बनते हैं, वे प्रायः लीपा-पोती तक सिमटकर रह जाते हैं। एक आदमी साजिश कर रहा है। उसने अपनी पचपन साल की जिन्दगी को गरीबों के खून से रंगा है। उसने अपनी बेटी के बराबर की अछूत कन्याओं के साथ मुंह काला किया है। औरत की हैसियत को ललकारा है। इस आदमी ने जिन्दगी भर झूठ बका है। गलत आरोप लगाकर मेरे परिवार के साफ चेहरे पर कालिख पोती है।"

"कैसे?" सोबरन बोले—"कौन सी कालिख पोत दी हमने? बोलो नरैन जी, कौन सी कालिख पोती है? कालिख तो तुम्हारा भंडुवा सिवेन्दर पोत रहा।"

"सुनिये दरोगा जी, जबान पर गौर करिए। अगर मैं यही चमरौधा निकाल कर इसकी खोपड़ी को रंग दूं तो कैसा लगेगा? इसने मेरे देवता जैसे भाई को भंडुवा कहा इसलिए कि वे एक एक पाप का पाई-पाई हिसाब चुकाना चाहते हैं। सोबरन वह जमाना लद गया जब मैं डरता था कि बड़े भाई के कारण हमारी खानदानी इज्जत धूल में मिल जायेगी। तुमने राजी के साथ, अपनी सगी बेटी के साथ दोगलों जैसा व्यवहार किया। उस दिन शिबू भैया इसलिए चुप रह गए कि मुझ मूर्ख को थोथी पारिवारिक इज्जत का बड़ा खयाल रहता है। ज्ञान प्रकाश जी, आप तो अभी नये आये हैं। अभी तो आप करमूपुरा जनपद को समझने में लगे हैं। ये सज्जन जब एस०आई० शुक्ला थे तब भी, लखनपाल हुए तब भी, हमेशा थानेदारों को खरीदने का धंधा करते रहे हैं। ये मेरे चाचा हैं। इन्होंने मेरी बहन को जो गाय

की तरह सीधी और गंगा जल की तरह पवित्र थी, बदनाम कराया । हम दो भाइयों में फूट पैदा की । इनकी चाल नहीं चल पाई, इसलिए नहीं कि ये बहुत बड़े तीसमार खान हैं, सिर्फ इसलिए कि लेडी एस० पी० बंसल ने इन लोगों की सारी कलई खोल दी । करमूपुरा का गैंग लीडर तो सोबरन हैं । पुलिस ने गलत बयानी की कि लीडर हरीश है ।"

"औफ्, आई सी । तो यही हैं वे सोबरन राय जिन्होंने एक बेमिसाल ईमानदार और इतनी ऊंची पुलिस आफिसर को बदनाम किया । कहिए सोबरन साहब । मैं तो अब तफतीश करूंगा । क्यों अब्दुल···?"

"आया हुजूर !"

"ये सारे नजराने के सामान मैंने बाहर सड़क पर फेंकने को कहे थे न ?"

"हुजूर, जल्दबाजी में फैसला न करें ।" अब्दुल बोला—"हुजूर इनकी बहुत ऊंचे लोगों में पैठ है । हुजूर जब प्रतिभा साहिबा···?"

"बदरी, बदरी !"

मुंशी दौड़ते हुए आया ।

"इस कमीने अब्दुल को बांधकर फेंक दो जंगलों के भीतर···तू मुझे एस० आई० की ड्यूटी सिखायेगा घूसखोर । गरीब होकर तुम लोग गरीबों को पीसने वालों के तलवे चाटते हो । यह न होता इस मुल्क में तो गरीब हिन्दू मुसलमान घूसखोरों से बिना डरे हमारे सामने न्याय मांगते । नहीं तुम लोग गरीब हो, पर तुम लोगों की जमीर में नाबदान का सड़ा पानी भरा है । मुंशी !"

"हुजूर !"

"चलो नरैन जी की एफ० आई० आर० दर्ज करो ।"

"अभी हुजूर !"

"अरे आप भी वोह नीच छोकरी बंसल से डरने वाले मनई हैं । उसका हाल का हुआ । आप को अबहीं मालूम नाही हौ । अब्दुल मियां की बात पर खियाल करो दरोगा जी, नाही अंजाम बुरै होगा । अब्दुल ठीक आदमी है । अब्दुल मियां हीरा मनई है । समझ लो ।"

अचानक ज्ञान प्रकाश उठा—उसने अपने रूल से सोबरन की चांद पर दो बार टन, टन चोट की । "संभल के बोलो । संभल के ।"

"अरे भइया पांडे जी । अब तो देख लिये न । ई पूरा राज नीच जातन वालों से ही भर गया है । ई हो ससुरा नीचै जात का लगत है थानेदार । अब घुस आओ खंभा चीर के । कर दो हरिनाकुस का काम तमाम । जो होयेगा, हम देख लेवेंगे ।"

पांडे जी आए । लम्बी-लम्बी मूंछें । खूब हट्टे-कट्टे थे । उन्होंने घुसते ही ज्ञान प्रकाश से कहा—"एस०आई०, गलती मत करो । सही तरीका सीखो । तुम्हें साग, सब्जी, दही, चावल नहीं चाहिए कोई बात नहीं । हमने सारा सामान अपने नौकर

के हाथ अपने घर भेज दिया। तुम जानबूझकर आग में उंगली क्यों डाल रहे हो।"

"तुम कहना क्या चाहते हो, तुम हो कौन ? पुलिस के कार्य में रुकावट डालने का अंजाम क्या होता है जानते हो ?" ज्ञानप्रकाश ने कहा।

"खूब जानता हूं। यही तो करता रहा हूं दस साल से। मैं एडवोकेट हूं। यानी न्याय का रक्षक। तुम कोई काम अपने मनमाने ढंग से मत करो। वरना पछताओगे। मौर्या हो। कुनबी हो कि कुरमी ? क्या हो ?"

"मैं तुम्हारा बाप हूं।" ज्ञानप्रकाश मौर्या ने अचानक हमला किया था। उसके एक पैर का बूट पांडे के मुंह पर ऐसा लगा कि जैसे कोई पत्थर मारा गया हो। पांडे दुहर गया। पांडे गुंडा था। उसने अब तक जिन्दगी में शायद घूस से रास्ता बनाया था। आज उसने एक नई मुहिम भी देखी। वह अचानक पीछे हटा और शायद दूसरा वार करता, पर उसने मौर्या को देखा। एकटक देखता रहा। "आदर्शवाद छोड़ दो थानेदार जीयो, जीने दो। क्या मिलेगा तुमको। बोलो, शांत भाव से मामला सलटाना चाहते हो कि लड़ाई ही चाहते हो। मैं जानता हूं तुम्हारा बदन बहुत छरहरा है। तुम लड़ने की टेकनीक सीख कर आये हो···पर कर क्या पाओगे। इस मशीनरी को तुम अकेले बदल सकोगे ? मैं जानता हूं। सोबरन को भी जानता हूं और नरैन जी को भी। और यह भी जानता हूं कि नरैन जी को आसानी से मैं हटा नहीं पाऊंगा। इनको मैं अहमियत नहीं देता। इनके पीछे जो सख्श है वह बहुत टेढ़ा आदमी है। मैंने इस मामले में हाथ डालने की कोशिश की सिर्फ एक शर्त पर। वह शर्त तुम्हें स्वीकारनी होगी थानेदार साहब।"

"कौन सी शर्त ?"

"आइए बाहर तो बताऊं।" पांडे ने कहा।

"मैं मुद्दई मुद्दाले के सामने रहते हुए, एकान्त में बातें नहीं करता एडवोकेट पांडे। तुम्हें जो कहना हो यहीं कह दो।"

"इसमें मेरा नुकसान होगा।"

"हूं, तो तुम फीस लेकर आये हो ?"

"बिल्कुल।"

"हूं," मौर्या ने सिर हिलाया।

"कहिए नरैन जी !" पांडे ने कहा—"आप सचमुच सोबरन को बेइज्जत करना चाहते हैं या वार्निंग देकर छोड़ दिया जाय।"

"ई कौन सी बात हौ पांडे जी। सरवे हमें सब तरह से रेत रेत के मार रहे हैं और तू थानेदार और नरैन से समझौता की बात करते हो।"

"सोबरन राय आप गलत आदमी से टकराय रहे हैं। आपके बदन पर कहीं चोट होती, हल्की खरोंच भी होती तो रुई को रंग कर चिपका-विपका कर किसी डाक्टर से सर्टिफिकेट लेता। आप खुदै कह रहे हो सोबरन राय कि उन लोगों ने मधुमाखी से कटवाया। अब भला बताओ एस० आई० साहब, माखी के काटने को

संगीन मामला कहें तो आप दर्ज करेंगे ?"

"क्यों सोबरन राय, आपने कहा है कि मधुमाखियों से कटवाया ?" थानेदार ने पूछा।

"हां, हां, हमने इहै कहा। देखौ हमरे मुंह कौ देखौ। गुबारा होइ गया है फूलकर।" सोबरन राय बोले—"तुमको शाइत कवौ मधुमाखी नहीं काटे हैं। हमैं केहू सौ हंटर भी मारता तो हम सह जाते। भइया ई तो अइसा नरक था, हां बस परभू की किरपा रही कि बच गये। तोहरे हियां ई दरद का कोई जुर्म नहीं बनता, आयं ? अरे वाह भाई। ई तो उहै मसल हौ कि खस्सी के जान जाये, खवैया के सवाद नाहीं। वाह रे नियाव।"

"मैं नहीं जानता था सोबरन राय।" मौर्या बोला—"हम तो यही समझते थे कि आपके लाल लाल फूले हुए गाल फल, दूध, रबड़ी, बादाम वगैरह के खाने से ऐसे चमक रहे हैं।"

"हां, हां कुनवीयै न हो। अउर का सोचौगे। ई दूध बादाम खाये से फूला है। हुं हुंहू होते हुवां तो देखते तुम्हारी···फट जाती, साली, हां।" सोबरन ने फटने का चित्र दिखाया। सब लोग फैली उंगलियों का साकार चित्र देख ठठाकर हंस पड़े। सोबरन राय पागल कुत्ते की तरह झल्लाए—"हमरी एक करोड़ कै इज्जत तुम लोगन के वास्ते हंसी कै बात है। हम नहीं जानते थे पाण्डे कि तू अइसे दगाबाज निकसौगे। चलो, नाहीं बनता जुर्म। फिर खेत को फूंक दिहे ऊहौ जुर्म नाहीं बनत आएं ? बोलो थानेदार।"

"बनता है, खेत फूंका, वो तो बेशक बहुत बड़ा जुर्म है।"

"कहिए नरैन जी ?"

"देखिए मिस्टर मौर्या, आप इस आदमी के नाटक से पिघलिये मत। पूछिए इससे कि किस खेत की बात कर रहा है। देवेन्द्र सिंह का खेत सोबरन राय का खेत कैसे बन गया ?"

"बोलो सोबरन राय, वह तो देवेन्द्र सिंह का खेत है, फिर ?"

"खेत हौ उनका, पर हमरे हियां रेहन भी तो है ?"

"रेहन पांच सौ रुपये पर मेरे चाचा देवेन्द्र सिंह ने रखा था मिस्टर मौर्या। इन्होंने मेरे बड़े भाई शिवेन्द्र को उनके एक दोस्त के सामने, यह सज्जन जो बगल में बैठे हैं, गाली दी। बोले, जेकरे खेत नाहीं होत उहै दोस्त के होरहा खाये के नेवता देत है। पूछिये इस हरामी से कि इसने इस बाहरी आदमी के सामने मेरे बड़े भाई को गाली क्यों दी ? उनका खेत रेहन है। नरैन का घर, नरैन, उसकी सारी प्रापर्टी शिबू भाई पर निछावर रहती है। मेरे खेत में होरहा है, मेरे खेत में ईख है। सब है मेरे पास, फिर उस अहमक हरामी ने मेरे बड़े भाई की जो बेइज्जती की, उसका फैसला करिये, वरना पूरे करमूपुरा जनपद के हरिजन सोबरन राय को

मय कोठी डायनामाइट से उड़ा देंगे ? और तब आपके वास्ते बहुत भारी पड़ेगा मौर्या साहब।"

"क्यों जी सोबरन···क्या नाम है। नरैन जी शिवेन्द्र जी के दोस्त का ?"

"मेरा नाम प्रेम स्वरूप है। डॉ० शिवेन्द्र मेरे मित्र नहीं गुरु हैं। मैं उनके निर्देशन में पी-एच० डी० कर रहा हूं। वे मुझे दोस्त मानते हैं उनकी महत्ता है। एस० आई० इस आदमी ने जिस तरह गन्दे लहजे में शिवेन्द्र साहब को गाली दी, मैं बयान नहीं कर सकता। मेरे पास पिस्तौल होती तो इसके बलसफाचट्ट खोपड़ी में एक साथ पूरी गोलियां उतार देता। अब क्या कहूं आपसे···।"

"अरे बड़े आए गोली मारने वाले। का पिद्दी, का हौ पिद्दी के सोरबा। जियादा मन बहस करबे तो हमरे खोपड़ी में गोली उतारै के पहिले तोहार गरदनियै उतर जायेगी।" सोबरन राय ने मुझको धमकाया। बोले, "इसका बड़ा भाई शिवेन्दर तो आफत का परकाला है! तुम सबन को जेल के दरवाजे भीतर ढकेलवाय के दम लेवेंगे रे प्रेमुआ।"

"देखिए सोबरन राय।" मैंने कहा—"मुझसे मत लड़िये। आपने मेरी आंख के सामने शिवेन्द्र साहब से पांच सौ मूल और सौ सूद के एक हजार रुपये लिए। लिये की नहीं···"

"ठीक है सोबरन राय जी, आपने अभी उत्तर नहीं दिया। रेहन खेत देवेन्द्र सिंह का था। आपने उनके लड़के से पांच सौ कर्ज की रकम और पचीस प्रतिशत सूद यानी पांच सौ का पांच सौ सूद कुल एक हजार ले लिया। फिर वह खेत आपका कैसे हो गया ?"

"येह तरै हुआ कि वोह पर हमार कबजा है। हमार फसल है।"

"क्यों भाई," मौर्या ठहाका लगाकर हंसा—"आपने तो खुद अपनी गिरफ्तारी का वारंट जारी करा दिया। रेहन के लिए खेत की फसल बतौर सूद चाहिए और सूद मूल दोनों एक साथ जोड़कर आपने एक हजार जेब में रख लिया तो फिर फसल आपकी कैसे हो गई। आप दो-दो बार सूद लेंगे ?"

"तोहें का पता, हम न मूल पाये न सूद। कौनो कागज है तोहरे पास। अरे भैया तू और तुम्हारे दोस्त सब पढ़वैया हैं। एतना गलती कोई कर सकत है दरोगा जी कि बिना लिखा-पढ़ी के एक हजार थमाय दे।"

"तो क्या यह झूठ बोल रहे हैं ?"

"सरासर झूठ। कहो सुलोचन हमें ई एक हजार दिये रहे। तू तो वहीं खड़ा रहे। बोल दो। दिये रहे सूद···?"

"बिल्कुल झूठ बोल रहे हैं हुजूर। इनने कबहीं एक हजार नाही दिया। देते तो रसीद तो होती न इनके पास ?" सुलोचन बोला। मैं आश्चर्य से उसकी ओर देखता रहा। मैंने ऐसा जबर्दस्त हरामी नहीं देखा था। मैं लज्जा के साथ बैठ गया।

मेरी सूरत देख कर नरैन जी ठठाकर हंसे।

"आप मुझे क्या गधा समझते हैं। एक तो यह जाहिल सोबरन मुझे जेल भिजवाने की चुनौती दे रहा है। एक हजार को डकार गया। ऐसा मक्कार बेईमान मैंने नहीं देखा। उस पर आप हंस रहे हैं नरैन जी ?" मैंने कहा।

"हां प्रेमू भाई साहब, हंस ही रहा हूं।" नरैन जी बोले—"अब आप समझ गये होंगे कि सोबरन राय की काठी क्या है ? ई रेस का घोड़ा नम्बर वन है। समझे। बैठिये।" नरैन जी ने जोर से कहा—"एस० आई० मौर्या साहब, मैं अपने भाई के खेत को जबर्दस्ती पांच साल से जोतने के जुर्म में एफ० आई० आर० दर्ज कराना चाहता हूं।"

मौर्या घबड़ाया। बोला—"मतलब उस खेत पर इसने जबर्दस्ती कब्जा किया है ?"

"हां, हुजूर जबर्दस्ती कब्जा किया है।" नरैन जी ने कहा।

"अरे, अरे एतना हलाहल झूठ बोलोगे नरैन जी, समझ के बात करो। ऊ खेत रेहन नाहीं है ? हम का जबर्दस्ती कबजा किये हैं।"

"हां, तुमने जबर्दस्ती कब्जा किया है। पांच साल जोतते रहे बटाई पर। हमारी रकम दो फसल की और कुशल चाहो तो अब खेत पर जाना मत।"

"अरे ई देखो, सुलोचन। हमरे पास रेहनौ नहीं था।"

"नहीं था। दिखाओ कागज। पांच बीघा खेत कोई बिना लिखी-पढ़ी के दे सकता है इन्स्पेक्टर मौर्या ?"

"दिखलाइए कागज सोबरन राय जी, लाइए हैंडनोट। कोई रुक्का, कोई भी···।"

"ई सरासर बेइमानी है दरोगा जी, हम त उपकार किये और हवन में अपन हाथौ जल रहा है। अरे वाह···।"

"निकालो हैंडनोट, कहां है हैंडनोट ? रसीद ही दिखाओ। कोई तो प्रमाण दो।"

"ऊ तो हमारे पास नहीं हो।"

"मुंशी जी।"

"जी हुजूर, दफा 420 दफा 307 में पकड़कर इस सोबरन राय और सुलोचन को हिरासत में फेंक दो। यह केवल शैतान नहीं चोर, बेईमान, जालसाज और लुच्चा है। पकड़ो इसे।"

दो सिपाहियों ने सोबरन राय को पकड़ लिया, सुलोचन भाग रहा था कि वकील पाण्डे ने झोंक दिया। मैं बड़े अचंभे में था मैं पूछ बैठा—"एडवोकेट पाण्डे साहब। आप तो सोबरन राय की पैरवी करने आए थे। खुद उनके अंगरक्षक को भागने से रोक भी दिया आपने ?"

"मैं क्या करता प्रेम स्वरूप जी, मैंने कहा, समझाया इन्हें कि हमेशा झूठ की नावें नहीं चलतीं। कभी न कभी गल जाती हैं। इनसे खुद कहा कि मैं एक हजार पा चुका हूं। मैंने कहा कि तुम चुपचाप समझौता करके लौट आओ। इसे अपनी अकल का बड़ा भरोसा था। कहने लगा पांच साल पहले रेहन रखा था देवेन्द्र ने। किसको मालूम है कि मैंने बिना लिखा-पढ़ी के खेत लिया। अब होश आ गए ठिकाने। क्यों?"

"अच्छा पाण्डे जी, अब आप यहां से चलिए।" ज्ञान प्रकाश कड़क कर बोला—"आपने थाने को सब्जी मंडी बना दिया। यह सब नाटक मुझे पसन्द नहीं है। मैं सोबरन और सुलोचन की हर हालत में चालान करूंगा आप जाइए। अब्दुल नौकरी छोड़नी है क्या? मैंने तुमसे कहा बेवकूफ कि इसे हिरासत में फेंको।" ज्ञान प्रकाश ने एक रूल अब्दुल की खोपड़ी पर जड़ दिया। "अक्ल लौटी कि दूं दो-चार और···।"

"नहीं हुजूर।"

सोबरन और सुलोचन जंगले के पीछे डाल दिये गए।

हम लोग उठे। चलने को हुए तो सोबरन ने कहा—"का नरैन बेटा। सगरों देहीं पर मधुमाखी के कटले से अइसी दरद होय रही है। हमें ई मौर्या कुनबी हियैं रोक के जान ले लेवेगा। गांव वाले डागदर कहे रहे कि इन सबन मक्खिन के आंड भीतरे रह जात हैं। अरे अस्पतालवा जाये दे हमें। अब केकरे सरन जाये के परी। बढ़िया होत कि बाहरे बाहरे हमहूं छोटके के साथै कबीरचौरा चल जाते। अब का होगा हो नरैन बेटा?"

"नाटक मत करो।" नरैन जी बोले—"हम तुमसे समझौता करके अपनी बेइज्जती कराएं। जानते हो यह सब सुना शिबू भाई ने तो मारे पनही हमारी हुलिया खराब कर देंगे।"

"ई बहाना मत बनावौ नरैन बेटा, तोंहसे तो शिबू नबत हैं। कबौ मारे तोहें।"

"अबे, गदहे हमें कभी नहीं मारा यही तो गड़बड़ की वजह हो गई। मार देते चार-पांच थप्पड़ तो हम भी आदमी बन गए होते। यही गलती करके तो हम रोते रहते हैं। तुम उनके क्रोध को नहीं जानते। जब उनके सिर पर बरम चढ़ता है तो वे जंगली भैंसे की तरह फो-फों करते किसी को भी सींग पर उठाय कर पटक देते हैं। ना भैया, एक बार गलती कर दी राजी वाले मामले में। मैंने कह भी दिया था उनसे कि अगर हमरे सोबरन चाचा का हाथ हो भी तो प्रतिभा बंसल से पिटवाइयेगा मत। प्रतिभा जी ने कुछ कहा तुमसे? सब सबूत सामने थे। रुपवा ने फोटो दिया और तुम्हारे ऊपर चार्ज प्रमाणित हो गया था, तब भी प्रतिभा जी ने तुम्हें धमकी तक नहीं दी। इसी क्रोध के मारे वे स्कूल से लौटे जा रहे थे

बनारस। बात है कि तुम आदत से बाज आओगे नहीं। और बाप···रे उन्होंने सुन लिया कि मैंने समझौता कर लिया तो वे कभी हमारे घर का पानी भी नहीं पियेंगे। नहीं भैया क्षमा करो। हमारी हिम्मत नहीं है। क्यों प्रेम स्वरूप जी, आप क्या सोचते हैं ?"

नरैन जी ने हल्का इशारा किया। मैंने कहा—"बात तो नरैन जी आप बिल्कुल सत्य कर रहे हैं। सारे झगड़े की जड़ में तो मैं हूं। मैं इस कीचड़ गांव में आया न होता तो सपने में भी नहीं सोच पाता कि हमारे चाचा-बाप ऐसे कमीने होते हैं। आपने शिबू साहब को गाली दी थी सुवर्ण राय। आपने उन्हें दरिद्र कहा था। वे आपकी तरह घूस नहीं बटोरते। गरीबों को कपड़े दे देते हैं। किसी की फीस भर देते हैं। उन्हें बनारस में किसी ने ऐसा कहा होता तो खून हो जाता। मैं और क्या कहूं। चलिए नरैन जी। आपके खानदान का मामला है। आप क्या करेंगे। आखिर सुवर्ण राय भी सुभग सिंह के ही वंश के हैं। मुझे चप्पलों से शिबू साहब तो पीटेंगे ही, पर इनकी दयनीय दशा देखी नहीं जा रही है। अपनी रिपोर्ट वापस ले लीजिए। मैं अपने को गुनहगार कहूंगा। जो सजा देंगे शिबू साहब, भुगत लूंगा। जाने दीजिए इन्हें अस्पताल।"

"मौर्या साहब," नरैन जी ने कहा—"अब यहां बड़े भाई नहीं हैं। मेरे दूसरे बड़े भाई प्रेमू जी का हुकुम है तो मैं अपनी प्राथमिकी रपट वापस लेता हूं। आप इन्हें छोड़ दीजिए। जाएं मधुमक्खियों का आंड़ निकलवाने, वरना पता नहीं हो सकता है इस बार इनकी पेशाब नली ही जाम हो जाये।"

"अरे वाह भइया प्रेमू साहब, तू तो हीरा हौ। तोंहे पहचानै में हमने गलती कर दिया। एही का दंड दिया परभू ने। भइया सारी देह अगियाय रही है।"

"छोड़ दीजिए मिस्टर मौर्या।" नरैन जी ने कहा—"हम एफ० आई० आर० वापस लेते हैं।"

रात के बारह बजे। "उठो।" उसने कहा—"मैं फिर कहता हूं प्रेमू, जिद मत करो। तुम इस लायक अभी नहीं हुए हो कि बिना हिंसा की क्रूरता को सह सको। तुमने यदि मौन तोड़कर फुसफुसा भी दिया तो सब गुड़ गोबर हो जायेगा। अब भी मान जाओ। चुपचाप सोये रहो।"

"नहीं।" मैं अड़ गया—"तुम क्या यार मुझे सौ फीसद उल्लू ही मानते हो। जब होता है तब मुझे मूर्ख कहकर डांट देते हो। मैंने कह दिया था कि साथ-साथ चलूंगा। जब तुमने पूरे तर्क-वितर्क के बाद यह मान लिया था कि मुझे ले चलोगे साथ-साथ तो फिर···।"

"धीरे बोलो—भीतर नरैन है।"

हम दोनों गांव के एकदम उत्तर वाले छबरे (चौड़ा रास्ता) के पास पहुंचे। वहां एक आदमी खड़ा था। फाल्गुन का चांद अपनी चढ़ान पर था। चौदहवीं का फागुनी चांद-चांदनी चमक रही थी। या कर्मनाशा पापनाशा बनकर बहने लगी थी। मैं क्या जानूं। मैंने उस आदमी की ओर देखा उसका चेहरा बड़ा क्रूर था। आंखें मसाल की तरह दहक रही थीं। सिर पर गन्दे गमछे का मुरेठा, बिच्छू के डंक की तरह खूब तुर्रा के साथ ऐठीं हुई मूंछें···नीचे का चेहरा पके-अधपके बालों से ढंका था; पर बाल छोटे थे। उन्हें दाढ़ी नहीं कह सकते थे।

"शिबू भैया !" वह मेरी ओर घूरते हुए बोला—"तुम धोखेबाज हो ई आज लगा। क्यों ? ई हरामी साला कौन है। मैं तुम्हें और इस स्साले जमूरे को इतना पीटूंगा खुदा कसम कि हरामजदगी रफूचक्कर हो जावेगी समझे। एके काहे लेके आये तुम। ई साला डरपोक भेद खोल दें तो हमारा कबीला मुझे कच्चा चबा जायेगा ? बूझे ? कि नाहीं। अबे मैं तो तुम्हारी इज्जत करता था, लेकिन इतनी ठोकर खाकर भी तुझे अक्ल नहीं आई। या खुदारा।"

"भाग स्साले। रहमनवां। नहीं निकाल कर देता हूं अभी दो चप्पलें। स्साले एक ठो बात भी समझने की तमीज नहीं है और तू हरामी अपने को कबीलेदार समझता है। बुलाता हूं अभी जिरवा को, उसे कहकर तुझे दस चाबुक पिटवा न दिया तो स्साले मेरा नाम बदल देना। गधे, तू समझता का है अपने को ? तू क्या करम विधाता है शिबू का ? आया रौब झाड़ने, उल्लू की दुम। तेरी मदद नहीं चाहिए मुझे। आज से तेरे कबीले से कुट्टी। मैं तुम पर थूकने भी नहीं आऊंगा। हर आफत में बिना चिरौरी कराये चला आता था ना, साले। बुलाता हूं कल सैदराजे के थानेदार को। तुझे जरायमपेशा, कतली बताकर जेल न भिजवाया तो कहना···। हां, चलो जी प्रेमू। तुझे ई साला डरपोक कहता है। अबे इसकी बहन को मार डाला था एक कमीने जमींदार ने। तब से यह आज तक कभी सोया ही नहीं चैन से। तुम हीरे को परखोगे ? स्साले नट-नटुल्ली। बोल साला तू डैमोक्रैसी जानता है ? तुमने कम्यूनिज्म का नाम सुना है ? नहीं न हरामी, ये दोनों नागनाथ और सांपनाथ तेरे कोबरों की तरह झूठे नहीं होते, सच्चे हैं, एकदम जहरीले। जानता है दोनों को ? बनिये को ? तानाशाहों को ? बोल ? बोलता क्यों नहीं सूअर के पिल्ले। मैं तेरी मूंछें उखाड़ दूंगा रहमनवां···"

"माफ करो शिबू भइया, गाली बके जा रहे हो। मैं तो बुद्धू हूं ही। तुमसे नहीं कहा था कि गदहा हूं। जब कुछ नहीं बुझाता तो जो आता है बक देता हूं। अपनी कसम तू खुद तोड़ेगा शिबू भाई ?"

"कैसी कसम, कौन सी कसम।"

"भुला दो, भुला दो, हम उल्लू की यही सजा ठीक है। भुला दो। मैं खुद ही छुरा भोंक लूंगा। मेरी बेटी पीटे, इसके पहले मैं अलविदा कह दूंगा—तुमने

कसम नहीं खाई थी कि कभी गलत बोल जाऊंगा तो छिमा कर दोगे ?" रहमान बोला।

"अच्छा अच्छा, इधर हांड़ी पकड़ा दे और सरपट भागता चला जा तिरकोने बीर तक। अपने डेरे पर किसी को खबर दी तो ?..."

उसने हांड़ी देते हुए कहा—"मैं सचमुच का मूरख नहीं हूं शिबू भाई।" वह सरपट दौड़ा और नज़र से ओझल हो गया।

"क्यों जी तुम सांप से डंसवाओगे सोबरन को ?"

"देख बे रिसर्चर के बच्चे। तूने कसम ली थी कि तू चीं-चपड़ नहीं करेगा। मगर तू बहुत होशियार बन रहा है। याद रखो एक भी लफ्ज निकला आगे तो ठीक वही हाल करूंगा जो रहमान का करने जा रहा था। मैंने कह दिया था हरामी कि मैं आज सुभग सिंह के प्रपौत्र मोनू सरदार के हुकुम की तामील करूंगा। मुझे खुद ईश्वर भी रोक नहीं सकेगा रिसर्चर। मैं तड़प-तड़पकर मरते देखूंगा सोबरन साले को। चलना हो चल नहीं भाग।" उसने बड़ी रुखाई से कहा।

"अरे यार चल रहा हूं। पर बड़ा डर भी लग रहा है। पता नहीं माथे पर पसीना क्यों हो रहा है।"

"भाग स्साले, तेरा पैजामा खराब हो जाएगा। लौट जा। बनिया-बक्काल—

सगुन विचारें बाभन बनिया सिर धरि मौर वियाहन जांय।
सगुन विचारें हम का छत्री जो रन चढ़के लौह चबायं।।

"चुप बे हरामी, तू मुझे बनिया कहकर गाली दे रहा है। लगता है तू भी जातिवादी ही हो गया।" मैंने मज़ाक में कहा।

वह बोला—"रिसर्चर जातिवाद गलत है। पर उसका प्रतीक सही है। डरने वाला राजपूत भी होता है, वह भी बनिया है। बनिया जाति में ऐसे-ऐसे वीर हुए हैं—हेमू वक्काल विक्रमादित्य का नाम सुना है ? वह बनिया था ? यह झूठ है ? वक्काल बनिया नहीं राणाप्रताप का भी पुरखा था। समझे। जात कर्मणा होती है, उसे मनोवैज्ञानिक जातिवाद कहते हैं। अभी पढ़ो रिसर्चर..."

वह चला। मैं उसके पीछे लगा चलता गया। चारों तरफ सन्नाटा था। सोबरन राय की कोठी की चाहरदीवारी ऊंची थी, पर सात फुट से अधिक नहीं थी। दीवाल पर कंटीले तार लगे थे। मैं खड़ा रहा। खड़ा तो वह भी था बगल में पर वह उत्साह में डूबा था, और मैं संत्रास में डूबा इधर-उधर देख रहा था। वह सामने के खलिहान की ओर भागा। पटेढ़े के दो पुल्ले लिए आया। एक को मरोड़-कर उसने घोड़े की काठी की तरह बनाया और कंटीले तार पर रख दिया। दूसरे को भी वैसा ही किया। धीरे से बोला—"हांड़ी संभालो। मैं दीवाल पर खड़ा होकर तुम्हें खींचूंगा। आहिस्ते से बिना जल्दबाजी के तुम एक हाथ से गमछे की झोली को थामे रहना।"

"हांड़ी कैसे एक हाथ में थामूंगा।"

बोला—"ऐसे। यानी गमछे के भीतर हांड़ी को लटकाए ऊपर चलना है।"

मैंने गमछे के चारों छोरों की गांठ में हाथ डालकर अच्छी तरह पकड़ लिया। वह लपककर पटेढ़े का सहारा लिये खड़ा हो गया। फिर झुककर मेरा दाहिना हाथ पकड़कर बोला—"धीरे-धीरे घबड़ाओ नहीं। बस धीरे-धीरे उछलने की कोशिश करते रहो।" बाद, हम दोनों चाहरदीवारी से कूदकर गलियारे में आ गए। उसने जैसे-जैसे कहा, वैसे ही वैसे मैं करता गया। छत से नीचे उतरने वाले मोटे पाइप को पकड़कर ऊपरी तल्ले में आ गए। "धीरे से।" वह बुदबुदाया—उसने सोबरन के कमरे के रोशनदान को खोला।

बल्ब जल रहा था।

"अभी सोया नहीं है, बल्ब जल रहा है।"

"जलते ही रखता है। अंधेरे में नींद नहीं आती उसे। बहुत डरपोक है।"

उसने हांड़ी का मुंह खोला। हाथ से झटका दिया। बड़ा ही भयानक काला गेहुंअन (कोबरा) फों-फों करते उठा। उसका फण आठ अंगुल से कम नहीं रहा होगा।

"जाओ !" उसने हांड़ी का मुंह रोशनदान की ओर कर दिया। सांप धीरे से सरका उसने फिर हांड़ी हिलाई। नाग फुफकारते हुए दीवाल से नीचे गिरा। वह सोबरन के पलंग के पाये के पास था। मैं सांस रोके देख रहा था। सोबरन बाईं करवट लेटा था। उसका दायां हाथ पलंग से लटक रहा था। कोबरा उधर मुड़ा। तभी उसने फों किया और हाथ पर फण के थूथुन को पटका···सोबरन घबराकर उठ बैठा। वह समझ नहीं पाया। इधर-उधर देख रहा था। तभी उसने चारपाई की दाहिनी पाटी के नीचे काला नाग देखा और चीखा···उसकी घिग्घी बंध गई। वह सांप से दूर छिटककर रजाई पर बैठ गया। नाग उसकी तरफ एकटक देख रहा था। लम्बी-लम्बी जीभें बार-बार सेकेंड की दो लाल-लाल सुइयों की तरह लप-लपातीं और सोबरन का मुंह विकृत होने लगा। सांप घिसककर रजाई की ओर पैताने आ गया।—सोबरन का ललाट पसीने में डूब गया। उसकी आंखें पथराई लग रही थीं। बिना पलक झपकाए वह दयनीय की तरह हांफते-हांफते फिर सिरहाने आया। तभी कोबरा पलंग के पाये के पास सरकता आया और धीरे-धीरे ऊपर की ओर चढ़ने लगा। सोबरन ने 'हेंह्' कहा और हवा में हथेली नचाते धीरे से कहा—भाग···भाग···जा···हे भगवान···वह एकदम चिहुंक कर उछला और भद्द से चारपाई के नीचे गिर पड़ा। लगा कि अब सांप दबोचेगा—वह बड़े दर्द के साथ चूतड़ सहलाता उठा और भागकर कमरे के बायें कोने में चिपक गया। सांप सरकता उस कोने की ओर बढ़ा—अरे मइया रे···मइया···रे—वह भों-भों करके रोने लगा, पर आवाज भीतर ही घुमड़कर रह जाती थी। क्या बक रहा है

कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। सांप ने कोने में पहुंचकर सोबरन के पैरों में काटने के लिए फण उठाया कि उसने कूदकर पलंग की ओर छलांग लगा दी। तड़ाक की आवाज हुई और वह छाती दबाकर बैठ गया। सांप ने फण मरोड़कर उसकी ओर देखा। दोनों की टकटकी बंध गई···तभी दुर्गन्ध से कमरा भर गया। पाखाना उसकी धोती से सरककर बिस्तर पर फैल गया—'हाय रे दइया···हाय रे, हे राम जी, रच्छा करो परभू' मैं रूमाल से नाक दबाए था, पर जोर से हंसी आ रही थी। शिबू ने मेरी गर्दन पर उंगली से ठोंका—"खबरदार, हंसे साले तो तुम्हें भी इसी रोशनदान में घुसेड़ देंगे।" वह फुसफुसाया।

सांप पता नहीं बदबू से या किसी और कारण से पलंग छोड़कर दूसरे कोने की ओर चला। और कोने में सुस्त पड़ गया। सोबरन की सांस लौटी। वह धीरे-धीरे कमरे के दरवाजे की ओर चला। उसे देखते ही थका सांप उछलकर उसकी ओर लपका···उसने तेजी से उलटे पैर चारपाई पर कूदना चाहा कि धड़ाम से गिरा। उसका सर इतनी तेजी से टकराया कि वह झनझना उठा। मुश्किल से हांफते उठा और सिर की चोट को छूने लगा—उसने हथेली नीचे की—वह खून से लाल हो गई थी···'अब नहीं बचूंगा रे दइया—पता नहीं कौने पाप के दंड देइ रहे हौ परभू। अरे अब हम कसम खात हैं डीह बाबा···अब हम कौनो गन्दा करम नाहीं करबै। बचाय लो हनुमान स्वामी···जै जै जै हनुमान गोसाई—किरपा करौ गुरुदेव के नाई···हे परभू रच्छा करो···रच्छा करौ हे किरपा निधान।'

"अभी क्या चिल्ला रहे हो साले कमीने। देखो एक हफ्ते में तुम्हें कहां से कहां पहुंचा देता हूं, बुलाओ पुलिस। खरीदो अधम थानेदारों को। इस बार साले जहन्नुम रशीद करके रहेंगे तुझे—चल बे हांड़ी उठा।" मैं डर के मारे कुछ न बोला। उसने रोशनदान बन्द किया हांड़ी को वैसे ही गमछे में लटकाये हम बारी-बारी से पाइप पकड़कर नीचे आ गए। पहले उसने मुझे सहारा देकर चाहरदीवारी डंकवाई। फिर कूद कर पटेढ़े पर खड़ा हो गया। हांड़ी मुझे थमा दी। पटेढ़े के एक पुल्ले को सावधानी के साथ तार से अलगाया, और नीचे गिरा दिया। दूसरे पुल्ले को भी सावधानी से बटोरते हुए वह चाहरदीवारी की कोर पर खड़ा हुआ, जब पुल्लों का एक भी पुवाल उलझा दिखाई नहीं पड़ा तो कूदकर नीचे आया। बड़ी सावधानी से पुल्लों को कसकर जस का तस खलिहान में रखकर लौटा—"चल बे बनिया बक्काल। पास कर देता हूं अब तुझे। तू अब भरोसे का आदमी बन गया। चल यार, निकल चलें जल्दी।"

हमने पुन: नरैन की दालान में आकर अपनी-अपनी रजाइयां खींचकर मुंह ढंक लिया। उसने हांड़ी और गमछा दोनों नरैन के कमरे में छिपा दिया था।

बोला—"सुन बे नींद न भी आये तो भी खर्राटे भरता चल।"

मैंने पूछा—"ऐसे?" नाक जोर से घों बोली।

"हां, ऐसे।"

सुबह के पांच बज रहे थे। नरैन जी पत्थर पटिया पर बैठे दातून कर रहे थे। तभी कोई दौड़ता हुआ आया।

"कौन है?" नरैन ने पूछा। सामने मैले-कुचैले घाघरा से गर्द झाड़ती, कमर पर हाथ रखे कोई गन्दी लड़की खड़ी थी।

"नरैन जी!" वह बोली।

"हां।"

"नरैन जी!"

"अरे मूर्ख मेरी ओर क्या ताक रही है टुकुर-टुकुर। का बात है? इतनी सबेरे साली नट्टिन का मुंह देखा। होली सकुशल बीत जाए तो ईश्वर की कृपा समझूंगा।"

"नरैन जी, शिबू भाई साहब को देने वास्ते एक ठो संदेसा है कि हमरे बापू ने शिबू भाई साहब से कहलवाया है कि अब उनको छिमा करें। और मुझको जिरवा से मत पिटवाना।"

"अरे मूर्खे फिर कह···हे भगवान जाने किसने, जाने किसको संदेसा भेजा है। अरी बेवकूफ लड़की हम किससे कहें कि किसको जिरवा से मत पिटवाना···भाग नट्टिन कहीं की। पता नहीं कौन-सा भूत चढ़ा है करमपुरा जनपद पर कि बित्ते भर की छोकरियां फिलासफी बघारने लगी हैं। बोल क्या कहना है? किससे कहना है। पहले यह बता कि क्या संदेसा है। फिर यह बता कि किसने भेजा है। फिर यह बता कि संदेसा है क्या। फिर यह बता कि जिरवा किसे पीटने वाली है। फिर यह बता कि वह पिटाने वाला आदमी कौन है? तभी तो बड़े भाई को समझा सकूंगा।"

"तुम भी बच्चे हो नरैन जी! तुम ई सब लड़ाई का नया तरीका नहीं जान पाओगे।"

"सुन छोकरी।" नरैन जी पत्थर-पटिया से कूदकर दौड़े और जिरवा का झोंटा पकड़कर हिलाया—"मैं बच्चा हूं। मैं लड़ाई का नया तरीका नहीं जानता। स्साली नट्टिन तू हमको उपदेश पिलाने आई है···।"

"हाय रे अल्ला ताला, औरत चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान, उस पर कोई दया नहीं करता। अब छोड़ो नरैन जी ऊ देखो घूरे पंडित आ रहा है।" वह बोली और फुर्र से गली में खो गई।

मैं ठठाकर हंस पड़ा।

"अरे प्रेमू भैया।" नरैन जी बोले—"हो गई न गड़बड़। जानता था कि यह छोकरी तुम लोगों की नींद खराब कराएगी।"

"अरे शिबू भइया, कहां हो भइया···नरैन जी शिबू भइया कहां हैं। गजब हो गया नरैन जी। बाप रे।" भचकते हुए घूरे पंडित पटिया की ओर चले।

"ई लंगड़ाय के काहे चल रहे हैं महाराज," नरैन ने कहा।

घूरे पंडित हांफते हुए बोले—"ई तो जब पुरवइया बहता है नरैन बेटा दरद हो जाता है। ई देखो घुटने के जोड़ पर कितनी सूजन है।" वह धोती हटाने चले तो नरैन जी ने टोक दिया—"अब आप यहां धोती मत खुंटिआइए। मालूम है गांठों पर सूजन होगी। गठिया हो गई है तुमको। ई सब तुम्हारे पाप का भोग-दंड है। अभी क्या सड़-सड़कर मरोगे।"

"अरे काहे सराप रहे हो नरैन बेटा, भइया बरीस भर के बाद होरी आवत है। तुम हमरी होरी को सराप देकर बिगाड़ो मत। आज तो चारों ओर से पुवा और खीर की थालियां लगेंगी घूरे के घर। तुम हमारे जजमान नाहीं हौ का? और तुम एह साल पुवा भी नहीं भेजोगे का?"

"अरे मारो पुवे को गोली, सबेरे-सबेरे तुम्हारा कपि-मुख देखा है, तुमको सारी जजमानी से पुवा मिलता रहेगा। खाना आठ दिन तक। लेकिन तुम्हारे मुख-दर्शन के दण्ड में मेरे आगे की थाली तो उड़ जायेगी। जय हिन्द, नेता जी जाओ यहां से।"

"अरे यह लो हमारी असली बात तो सुनी नहीं, बोल दिए जै हिन्द। देख लेना नरैन जी। जनेऊ छू के कह रहा हूं। इस गांव पर शनिच्चर की दृष्टि पड़ गई है। हाय बेचारा सोबरन। भगवान ऐसा दिन केहू को न देखाये—हे भगवान कौन-कौन-सी दुर्गत नाहीं हुई बेचारे की।"

"क्या हुआ रे पंडित!"

"आ रे का नहीं हुआ। पूरी कोठरी में हग मारा। मूत दिया। सर फाट गया। कमरे में खून के तमाम दागँ-दाग भरे हैं।"

"क्या··?"

"हां भई अभी हुंवें से तो आय रहे हैं। सुनो। सोबरन ठाकुर छत्ते पर वाली कोठरिया में सोये रहे। पता नहीं किधर से इतना मोटा बाप रे—पूरा एक बित्ता मोटा सांप था। ऊ ऊ पोंछ लम्बी-लम्बी। अकड़कर जब उठता था फोंय-फोंय करता तो सांप एक हाथ ऊंचाई पर दुई बित्ते का फन काढ़े खड़ा होय जाता रहा। हम खुदै अपनी आंखिन देखे। झूठ नाहीं।"

"अरे पंडित सोबरन की कोठरी पक्की है। ऊपर की कोठरी में बड़े ठस और खूब कस फाटक हैं। उनमें कोई फांफर भी नहीं है। इत्ता मोटा सांप आया कहां से? तुम नमक-मिर्च लगाकर छोटी चीज का ऐसा बयान करते हो कि मन करता है कि पनही निकाल के तुम्हरे कपार पर सौ मारूं और दस गिनूं।"

"वाह, वाह नरैन जी, यह पुरबहिया भासा भी कितने कमाल करती है। वाह मारूं सौ और गिनूं दस। वाह रे भोजपुरी। जीती रह पुरबहिया माता। तूने तो हिन्दी को गहना पहनाय के चमका दिया है।" मैंने कहा।

"अरे तू तो भइया शिबू साहब के दोस्त हौ। तुम्हें तो पुरबहिया का आनन्द उठाना ही चाहिए। लेकिन बात सही कह रहा हूं प्रेमू बाबू। चाहे नरैन हमें सौ के बदले एक हजार मारैं और गिने शुन्न, बात खरी की खरी है। मैंने देखा है। यों-यों मोटा गेहुअन। सुन तो लो पूरी दास्तान। हां, घिग्घी बंध गई थी बेचारे की। जाने कब से गाय की माफिक डेंकर रहा था। घर के कौनो प्रानी नाहीं सुने। रोते-रोते बुरा हाल था, कोठरी में रहे तो जाने का होगा, पीछे से लगी सिटकनी खोल के भागे तो स्साले सांप को देख के फिर उचककर वोही गूह-मूत वाले बिस्तर पर बैठना पड़े। ऊ तो ईश्वर सहाय हुआ। जाको राखे सांइयां मार सके नहिं कोय। बाल न बांका करि सकै जो जग बैरी होय। मंगरू दुसाध बैलों के वास्ते दाना लेने ठाकुर की बखरी में घुसा तब उसे सुनाई पड़ा—अरे बचाओ रे भइया, अरे कोई आओ रे दइया। मंगरू दौड़ के छत पर गया। काहे चिल्लाय रहे हो, मालिक—सुनाई देत है? काहे ऐसे डकार रहे हो···सुनाई देत है?

" 'अरे मंगरुआ, हमरे कमरा में नागराज आए हैं रे—मैं तो मर गया रे—हाय रे संकट मोचन, बचाओ परभू···' उसने दरवाजे पर धक्का दिया। दरवाजा टस से मस नहीं हुआ। बारे बेचारा दौड़ा और छोटे ठाकुर जगजीत की कोठरी का दरवाजा भड़भड़ाया। ऊ तो खुदै मधुमांछी के काटे से मुरदा जैसा पड़े थे। मंगरुवा से सांप का नाम सुनते ही सनाका खाय गए। दौड़े दोनों छत्ते पर।

" 'का है हो बाबूजी, बाबूजी, का बात है।' दरवाजा भड़भड़ाया, पीटा।

" 'दरवाजा मत पीटो बचऊ। ऊ साला बड़ा कुरोख ताक रहा है हमरी ओर—हाय रे मइया। अरे दरवाजा मत पीटो···ऊ कूद के आय जाएगा हमरी पलंग पर···।'

" 'तब का करैं। दरवजवो बन्द है। खिड़कियौ बन्द हैं···का करैं।'

" 'अरे दौड़ाओ केहू के रहमनवां नट को। कहो कि जो मांगे वही दे देवेंगे···रे···अरे जल्दी दौड़ा फिर साला लाल जीभ निकाल रहा है—सिटकारियां लेइ रहा है हरामी···'

" 'अइसा मत कहो बब्बू तुम दोनों हाथ जोड़ि के बोलो, ई तो तुम्ही कहत रहे कि धन दौलत के रच्छा नागराज करत हैं। चिढ़ गये होंइगे कौनो बात से। गाली मत दो। हाथ जोड़े रहो! मैं खुदै सरपट दौड़ता हूं तिरकोने वीर। जाकर तुरन्त रहमनवां को साथ-साथ लेके आ रहा हूं। डेरायो मत। छेड़-छाड़ मत करना···।' सो भइया ऊ कोठी से बाहर निकले। चिल्लाते जा रहे थे—'अरे नागराज बचाय लो हमरे परिवार के, हाय रे नागराज···' उनकी चिल्लाहट सुन के भैया पूरी उत्तर पट्टी उमड़ पड़ी कोठी पर। कई लोग छोटे ठाकुर के पीछे दौड़े बाकी कोठी में घुस आए। नागराज का नाम सुनते ही अपने गांव के सबसे पुरनिया झिनकू यादव बोले—'अरे भइया हियां भीड़ मत करो। ई नाग देवता तब दरशन

देत हैं, जब गांव पर कौनो भारी विपद आती है। तब ई देखात हैं। अइसे ही आये रहे राय बहादुर साहब के सामने। पूरा गांव भइया आग में जल गया। बेचारे गरीब गुरबा लोग की झोपड़ियन धांय-धांय जल पड़ी इक्कै साथ। हमरे बब्बू बतावत रहे कि ओह परलय के कोऊ बखान नाही कै सकत। अइसी दैवी विपदा भैया जो न कराय दे। हे भगवान, रच्छा करो स्वामी ?' "

घूरे पंडित चुप हो गए। सामने आंख मलते शिबू खड़ा था। बोला—"अरे घूरे पंडित का हो गया है भाई। बड़ा परेशान दिखते हो। नींद तुड़वाय दी। बात का है नरैन।"

"घूरे पंडित यही बताय रहे थे, सगरी उत्तर पट्टी उमड़ कै सोबरन राय की रक्षा करने कोठी पर खड़ी है। और छोटे ठाकुर गये हैं रहमनवां को बुलाने।"

"अब आगे बोलो—घूरे पंडित।"

"शिबू भैया गुस्सा तो नहीं होगे न। मैंने कोई जानकर थोड़े ही जगाया। इतनी बड़ी विपदा आन पड़ी है तब सबको जगा देना, एकजुट होकर गांव को विपदा से बचाना तो गलत नहीं है न शिबू भैया!"

"सच है घूरे महराज, गांव पर विपदा आई है तो पूरे गांव को मिलकर खड़ा होना चाहिए। इसे कौन गधा गलत कहेगा घूरे पंडित। हम लोगों को आपने खबर दी होती तो हम खुद सोबरन काका को बचाने दौड़ते। चाहे कोई बुलाये न बुलाये, हम तो गांव के साथ हैं। फिर क्या हुआ। आगे बताइये घूरे पंडित। हां, एक बात याद आई, जो ऊ हरिना चक के बूढ़े द्विवेदी जी महाराज हैं—क्या नाम है ?···गोगई कहते हैं न नरैन उनको। यही नाम है न ?"

"हां बड़े भाई गोगई पंडित ही कहलाते थे। लोग कहते हैं कि वे अगमजानी थे ?" नरैन धीरे से हंसे—"क्या कहा था बड़े भाई उन्होंने।"

"कहा था, भगवान जाने सच है या झूठ। बोले कि जिस स्थान पर धन रुक जाता है, बढ़ता जाता है, पर खर्चा नहीं जाता है। पुण्य कर्म में दान नहीं दिया जाता तो उस सम्पत्ति को शास्त्र कहते हैं मृतक धन। वह धन जो किसी के काम नहीं आता उस पर नाग देवता का अधिकार हो जाता। जब उस धन पर लोभी का वंशज हाथ बढ़ाता है, और पहले की गलती को सुधारता नहीं यानी दान-पुण्य में खर्च किये बिना हाथ बढ़ाता है, तो नागराज कुपित हो जाते हैं। वह उसका वंश-विनाश कर देते हैं। वह लाख लोगों को बुलाए उसकी रक्षा नहीं होती। पता नहीं घूरे महाराज आप बताइए। रहमनवां को बुलवाया। आगे बताइए···"

"वाह कितना बढ़िया शास्त्र का ज्ञान बताया आपने शिबू भैया! वाह। यह होती है बड़े लोगन की दृष्टि। सारी समस्या ही खुल जाती है अपने आप। सच बात है। गोगई महाराज ने ठीक कहा है। आखिर अगमजानी पंडित थे। साला

सोबरन कंजूस तो नम्बर एक है। और आज तक तो उसने वस्त्र, भोजन, दक्षिणा दूर एक ठो सिद्धा के लिए भी मुझे नहीं बुलाया। ऐसों को, ई सब भोगना ही पड़ता है। बाकी एक बात कहें शिबू भइया, अइसन डेकर-डेकर कर कलपते हमने कोई जानवर को भी नाहीं देखा अपनी जिनगानी में। हां, कसाई जैसे रेत रहा हो और गौ माता छटपटाये, वैसे साला तड़प रहा था।

"रहमनवां आया। भीड़ ने रास्ता दे दिया। वह कोठरी के दरवज्जे पर खड़ा हो गया। उसने महुअर उठाई। बीन बजने लगी। तो वह रुक गया। पाकेट से एक मुट्ठी पीली सरसों निकाला। जै रे मनसा माता। जै रे तिलस्मे होशरुबा, सच सच बोल दे नाग देवता। काहे गुस्सा हैं बोल···। उसने सरसों पर मन्तर पढ़के ऐसा मारा दरवज्जे पर कि लोग तीन हाथ पीछे हट गए। उसने आंख बन्द की। का कहत है। नाही नागराज। नहीं, नहीं। गुरु के शपथ, राम कसम, मक्का कसम, मदीना की कसम—मैं आपको मारने नाही आया देवता, अइसी हरमजदगी मैं नाहीं करूंगा। हुकुम करौ नाग देव। बोल रे सांई मखदूम का चूक व्है गई ई इन्सान से। काहे सजा देइ रहा है ई सांप। बोलो बाबा मखदूम··· भाइयो···मैं बेबस हूं। नागराज हमरी पराथना ठुकराय दिये। कहन लगे कि ये आदमी ने चोरी का माल अपन पुरनिया लोगन के पाक धन में डार दिया हां, उन पुरनियन के पुन्न से हम एह को बचाय रहे थे लेकिन ई हमेशा नीचै काम करत रहा। भाग जा तू नहीं तो तेरा भी बंस-विनास कर देवेंगे हम।

" 'अब्बा चलो। भागो हियां से। हमरे तीन तीन छोटके भाई हैं। तुम नाहीं रहोगे तो हम सब रोटी के लिए तरसते-तरसते मर जायेंगे।'

" 'ठीक है बेटी चल, माफ करना भाई लोगो। लाचारी है।'

" 'का बात है रे दैया, ई बीन काहे नाहीं बाजत है। अरे रहमनवां—अरे रहनमवां—अरे तू कौन सी दुश्मनी काढ़ रहा है रे भैये। मुझे बचाय ले···हम चोरी तो नाहीं किये लेकिन पुरखन के कमाई में घूस कै कमाई जरूर मिलाये हैं रे भइये, माफ करके बचाय ले।'

" 'रहमान भाई, हमरे बाप को बचाय दो एहबार।'

" 'देखो छोटे ठाकुर। हम नट हैं। मुसलमान हैं। हिन्दू को बचाने के खातिर भइये हिन्दू देवीयै के सरन जाना पड़त है। मनसा मैया बचाय सकत हैं। जरूर बचाय सकत हैं, पर उनके गोड़ छानके बांध दिये हैं मखदूम सांई। कहते हैं कि देवी तू पापी के बचायेगी। मैं नहीं हटूंगा तेरे दरवज्जे से। अब बताओ भाई लोगो, हमरे वास्ते तो भाई लोगों जैसी मनसा मैया, वैसे मखदूम सांई। का करें। बोलो भइया। हमरी जान देवै से बचते तो उहौ कर देते। पर भइया जब तक हिन्दू मुसलमान दोनों देवी औलिया इकट्ठा हुकुम नाहीं देते। हम ऐह खतरनाक मामले में कैसे हाथ डालैं।'

" 'सुनो रहमान भाई। ई दूनो देवतन के मनावैं बदे का करैं के होत है?'

" 'छोटे ठाकुर करैं के त कुछ खास ना होत। जान के खातिर हजार दुइ हजार खरचा तो आपै करैंगे, पर हमैं जब तक हुकुम नाहीं मिल जात, बाजार से सिलिक कै चादर, चार बोतल शराब, आठ मुरगा—ई तो मुसलमान देव के चाही, आ पीतांबर, हाथ में सोने के चार-चार चूड़ी, सेनूर आ नरिअर कै वली देन पड़ी मनसा मैया के। ई सब जुहावै में दुइ दिन के समय लागी न भइया।'

" 'औरो कौनो तरीका है का? आप मनौती मान के ई सब देवेकै परितिज्ञा करके पूछ तो सकत हौ न कि हम नागराज के हटाय के तोहरी पूजा कर देवेंगे। बोलो।'

" 'आप हाथ लगाय दो रहमान मियां', फुन्नन मियां बोले—'ई भइया एक खानदानी रईश की जिन्दगी का सवाल है। माना कि औलिया हुजूर इनकी चाल-चलन से चिढ़े हैं लेकिन मदीने वाले के करम से ऊ इनायत भी तो करते रहते हैं बिरादर?'

" 'बात तो मियां ठीक कहते हो। अरज गरज करूंगा। बाबा मखदूम को तो मनाय लूंगा पर मनसा मैया मेरी बात नाहीं सुनैंगी। अब मैया को मशविरा देवें—औलिया कि माफ कर दे देवी इस बार तो ऊ जरूर किरपा कर देवेंगी मगर मियां ई बताओ। खुदै सोचो हम दोनों को दो हजार के चढ़ावा की मनौती कर दें आ दुइ दिन के भीतर—मनौती पूरी न कर पाऊं बिरादर तो दोजख तो मिलबै करेगा, खुदा का कहर टूटेगा हमरे खानदान पै। का करूं। हमारे कबीले पर तो सैकड़ों नाग एकै साथ हमला बोल देवैंगे।' रहमान ने कहा।

" 'छोटे सरकार, इन्हें दो हजार गिन कर थमाइये और खुदा से दया की भीख मांगिए। रहमान मियां आग में हाथ डाल रहे हैं। आपकी खातिर। मेरे कहने से।'

" 'पूरा दो हजार?'

" 'अब बेटा पागल हो गये हो क्या? जिस कंजूसी की सजा बाप पा रहा है, उसी रास्ते तुम भी कदम बढ़ा रहे हो। जाओ भई रहमान। मैंने अरज-गरज की, उसे भूल जाना।'

" 'अरे आप कहां जा रहे हैं चाचा। मैं ले आता हू दो हजार।' "

"फिर!" हम तीनों बहुत उत्सुकता से घूरे पंडित की ओर देख रहे थे।

"रुपया मिला। रहमान ने उसे जेब में रक्खा। बोला—भाइयो चार हाथ पीछे हट जाओ। उसने गमछे से फर्श साफ की। कहने लगा फुन्नन मियां से—बिरादर आपका हुकुम मानकर जान से खिलवाड़ कर रहा हूं। उसने पाकेट से काले रंग की गोली निकाली। हथेली में दबाकर रस्सी की तरह बटने लगा। एक अंगुल लम्बी उस काली चीज को फर्श पर टिका दिया। फिर पाकेट से दियासलाई

निकाली और उसमें आग लगा दी। थोड़ी देर तक सिरे से लपट जैसी निकली और उसने हाथ से हवा करके बुझा दिया। धूवें की गमक चारों ओर छा गई। दूसरे पाकेट से सरसों निकाल कर रक्खा। फिर पाकेट से एक दो पुड़िया निकाला। 'जै मनसा मैया' कहकर उस पुड़िया को फर्श पर गिराया। चमकीला सेनुर था। उसने कहा—'क्यों री जिरवा ! बेले की माला कहां है ?'

" 'ये है, ले' उसने माला फेंकी। सेनुर को उसने माले से ढंक दिया। आंख मूंदकर हाथ जोड़कर बैठा दो क्षण। 'हां रे मैया पूरा करेंगे। कसम है मखदूम सांई, हुकुम-उदीली की तो सजा हो दे देना बाबा, मान जाओ। मान जाओ ?'

"उसने बीन उठाई और लगा घूमने।

" 'अरे ई तो मेरी ओर फिर आय रहा है रहमान मियां···बचाओ परभू। भाइयो खिड़की तोड़ दो।'

"तीन लोगों ने लाठी के हूरे से मार-मार कर खिड़की खोल दी। बदबू से परेशान नाक मूंद वे लोग भागे—'अरे केतना हगा है सोबरन राय ने। राम राम। साला सांप है कि नागराज है। दुइ बित्ते का फन है।'

"बीन बजती रही। सांप एकटक ताकता रहा सोबरन राय की ओर। तभी बीन जोर से बजने लगी। सांप खिड़की के पास आया, पर पकड़ के बाहर था। रहमान चिल्लाया—हुजूर आप बिना डरे दरवाजे की सिकड़ी खोल दीजिए। डरिये नहीं, यह मात गया है। हिल नहीं सकता। डरिये नहीं, उठिये, उठिये हां, खोलिये सिकड़ी—सोबरन राय ने सिकड़ी खोली और पाखाने में डूबी धोती खिसकाते बाहर आए। रहमान बीन बजा रहा था।

" 'जिरवा !'

" 'हां बोल !'

" 'पिटारी दै।'

"पिटारी लिए वह भीतर घुसा और फन दबोच कर बाहर लाया। 'लो भाई लोगो देखो। इंसान की मदद करनी ही होती है—ये देखो।' उसने मुट्ठी ढीली की सांप का बित्ता बराबर फन खुला। सब लोग डर के भागे।"

"फिर ?"

"फिर क्या, तब से तो सोबरन राय एक सौ पांच डिगरी बोखार में पड़े हैं।"

"च्···च्···च्···च्" शिबू बोला—"मान गए पंडित। तुम्हारा भी जवाब नहीं। कहीं ऐसा होता है कि कहीं नागराज कमरे में आ जाएं तो कोई हग-मूत कर कोठरी भर दे। छिः, हम भी जानते हैं नागराज को। जब वे आये तभी सोबरन राय को उनके सामने जाकर घुटने टेक देने चाहिए थे। यह तो गांव का बच्चा भी जानता है कि जहां मूजी की दौलत होती है वहीं खुद मूजी का प्रेत गेडुर

मारे सांप बनकर पहरा देता है। यदि उसकी कंजूसी पर नागराज चिढ़े थे तो उसे माफी मांग लेनी चाहिए थी। हाय बेचारा···।"

"अच्छा नरैन बेटा चलूं। देखूं कि सोबरन राय जी के यहां आज होली पर पकवान बनते हैं कि नाहीं। भइया उनके घरै का भी पुवा बहुत बढ़िया होत है। हम तो तीन दिन तक खाते हैं बसिअउरा। हां नरैन! हमरी थाल मत रुकवाना भैये, हम आसरा लगाये रहेंगे।"

"जाइए, भिजवा दूंगा।"

घूरे पंडित चले गए।

"बड़े भैया, चलूं जरा और विस्तार से सुनूं कि ये तहखाने वाले नागराज थे कि तिरकोने वाले।"

"चुप रह नरैन।" वह बोला—"तुम्हें कैसे मालूम है। तुम तिरकोने गये थे क्या?"

"नाहीं भैया, हमें आप कहां ले जाते हैं अपने साथ। इहां जिरवा आई थी। वह कह रही थी कि मेरे बापू ने शिबू भाई साहब के लिए सनेसा भेजा है कि वे छिमा कर दें···?"

"जिरवा हियां आ गई थी।"

"घबड़ाइए नहीं। ऊ ई सब कुछ कविता में बोल रही थी। आपने दूध पीती छोकरियों से लेकर बुढ़ियों तक को ऐसा काव्य-ज्ञान दे दिया है कि पूरा जनपद धन्य हो जायेगा। इनकी सारी बातें उलटबांसी में होती हैं लेकिन एक साखी सबमें 'कामन' होती है?"

"वह क्या है जो 'कामन' होती है?"

"हाय रे अल्ला ताला औरत चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान, उस पर कोई दया नहीं करता।"

शिबू ठठाकर हंसा। "तुम अब दो ओर से घिर गये हो नरैन। एक ओर तेतरी है तो दूसरी ओर जिरवा। तुम हिन्दू और मुसलमान दोनों छोकरियों के बीच फंस गये हो।"

"मेरे फंसने की चिन्ता मत करिये हुजूर। एकाध बार ऐसा और हो गया तो सोबरन तो मर जायेगा। मधुमक्खियों वाले मामले में ही उसका नर्वस ब्रेक डाउन हो गया था।" नरैन ने कहा।

"नर्वस ब्रेक डाउन हो गया तो मैं क्या करूं। मैंने क्या पागल खाना बना रखा है यहां। तुम मूर्ख हो, तुम राजी को भुला दो, मैं सोबरन को बिना टिकटी पर चढ़ाये नहीं जाऊंगा इस बार। समझे। चलो जी प्रेमू।"

आधा घंटा बाद। प्रातः कार्य से निवृत्त होकर नरैन के ट्यूबवैल पर नहा-धोकर लौटे। नरैन जी ज्यों के त्यों बैठे थे। हमें देखकर बोले—"चलूं भैया नाश्ता

तैयार हो गया होगा।"

"आपको जाने की जरूरत नहीं है। सुभग सिंह के खानदान के सरदार आज से मानू ठाकुर हो गए हैं। देखो वो आ रहे हैं।" उसने कहा।

"ई कहां से जग गया इतने सबेरे—सब पगला गए हैं। इसकी मां तो कटकटाकर चढ़ बैठती है मुझ पर कहती है कि तुम महात्मा गान्हीं बनो। हमरी तो आंख के सामने हमरी ननद चौकठ पर माथा पीट-पीट कर जान दे रही थी। हम भाई जी से कहेंगे कि इसे तड़पा-तड़पा कर मारिये कि मरे भी तो सिर्फ यह याद रहे कि आखिर वह शैतान बना ही क्यों? रो-रोकर यह नरक को भी धोता रहे हरामी।"

"बड़े काका, बड़े काका!" मानू दौड़ा आ गया—"काका, हमारा तो···" उसने अजब तरह से हथेलियों को उलट कर कहा—"पत्ता साफ।"

"ई पत्ता साफ क्या है बे?" नरैन बोला।

"हम 'गान्हीं' से नहीं कह रहे हैं। काका अभी तो महीने भर बाद सांपों की हाड़ियां लाने वाले थे। पता नहीं साला यह नागराज इतनी जल्दी काहे कूद पड़ा। हमारा तो इसने पता ही सफाचट कर दिया। अब तो सोबरन क्या कहते हैं···ऐं, ऐं···ऐं···सावधान···हां सावधान हो गया है।"

"क्यों बे तूने हमें 'गान्हीं' क्यों कहा?"

"मैंने कहां कहा।"

"किसने कहा?"

"मम्मी कह रही थी, बस सुन लिया। काका अब क्या करें?"

"अब सोचेंगे मोनू सरदार। आगे का परोग्राम बनायेंगे। गान्ही महात्मा बहुत चिढ़े हैं हमसे। ई नाश्ता-वास्ता नहीं देंगे। इसलिए सरदार अब तुम्हीं नाश्ता ला दो।"

"बहुत अच्छा। गान्हीं महतमा की जै, गान्हीं महतमा की जै···।" वह भागा। नरैन उसके पीछे दौड़ पड़ा।

"नरैन जी बहुत मारेंगे उसे। शिबू तुम्हें इतना क्रूर नहीं होना चाहिए था।"

"अबे हरामी भग्गूमल रिसर्चर, तुझे मैं अपना 'ब्रेन ट्रस्ट' मानूं। तू है कौन? हुंह, क्रूर मत बनो। अबे सुन ले, मैं बिना चक्कावान की चिता पर लाश रवाना किए बनारस नहीं जाऊंगा। तुझे जाना हो तो बता, कर्मनाशा स्टेशन पर बैठा दूंगा।" वह बोला और चुप हो गया।

नरैन जी नाश्ता की ट्रे उठाए आ रहे थे। साथ ही सुन्दर युवक आया।

"अरे शोभू।"

नरैन जी कूदे और दोनों अंकवारी में बंध गए। नरैन जी बोले—"शोभू

तुम कितने निठुर होते जा रहे हो। साल में सिर्फ एक बार आते हो। तुम्हें जोहते-जोहते आंखें पथरा जाती हैं।"

"नरैन जी आप बहुत बड़े आदमी हो। बहुत बड़े। तुम्हारी बराबरी जब जीजा नहीं कर सकते तो शोभू क्या कर पाएगा।"

"चुप हो जा, तू हमेशा उलटबाँसी बोलता है। बड़े भैया ने तो करमूपुरा जनपद में जीना मुहाल कर दिया है। पता नहीं कौन सा जादू है इस आदमी में कि मुझको छोड़कर बाकी सब वह नहीं बोलते जो सामने है, कुछ ऐसा बोलते हैं कि जो भीतर है मथ-मथाकर आंसू की तरह बरसने लगता है। तुम्हारे परिवार को तो शोभू मैंने पहचाना ही नहीं। तुम ऐसे आदमी को बड़ा कहते हो···लानत है मुझ पर···।"

"नहीं नरैन जी, 'आप पर लानत है' कहने वाला इंसान नहीं हो सकता। जीजा में क्या है बस एक गुण, कि जिसका हाथ पकड़ेंगे उसके साथ ही मरेंगे, उसके साथ ही जियेंगे। बस इन्होंने सोनवां के जाते ही करमूपुरा से नाता तोड़ लिया। वह लड़की बहुत छोटी थी नरैन जी। उसके साथ अत्याचार हुआ, उसने यह सब बताने में देर कर दी। उसके मुखड़े में आकर्षण था, मैं जानता हूं नरैन जी, वह बहुत भीतर-भीतर जीने लगी थी। और शिबू भाई साहब से बातें करते वक्त लड़ती थी, पर जब शिबू भाई हंसकर चले जाते थे तो घंटों रोती थी···गलती कहूं—क्या कहूं। हो गई। हरीश कहता है कि वह रौमेंटिक थी—रौमेंटिक नहीं थी वह। वह स्वाभिमानी थी। पुरानी राजपूत लड़कियों की तरह स्वाभिमानी थी—उसे लगा कि वह शिबू भाई के योग्य नहीं रही, बस उसने जहर खा लिया।···"

"चुप हो जाओ शोभू।"

"नहीं आज रो लेने दो जीजा जी। नरैन भाई साहब आपने गलत कब कहा। आप तो ठीक बोले—रुपवा और नरैन में एक चुनना बोले। एकदम ठीक। मानता हूं कि शिबू आपको लांघ गए। उन्होंने निराधार आरोप को सुनते ही आपकी ओर नंगी पीठ कर दी। और छड़ी हाथ में दे दी···बड़ी बात है। मानता हूं नरैन जी। किन्तु उससे भी बड़ी बात है कि आरोप में विश्वास करते हुए भी आपसे छड़ी नहीं उठ पाई। शिबू भाई तो अग्निपुत्र हैं। वे आंसू पी जाते हैं। वह स्वभाव है। उनको तो ईश्वर ने यह क्षमता दे दी है। इसमें कौन सी महानता है। उन्होंने अपना काम किया। वह उनका दायित्व था। राजी के विवाह की रुकावट को हटा देने की शपथ ले चुके थे। हटा दिया। जब मालूम हुआ आपको तब रुपवा, हरीश और शिबू भाई तो चल पड़े···लेकिन आपने उनके जैसे बदनाम कुजात भाई को वापस करने की जो दौड़ लगाई—वैसा कोई करता है। अपनी गलती पर कभी सोबरन रोता है। हरीश रोता है। सुदर्शन रोता है? चन्द्रा रोती है? रुपवा रोती

है, बन्ने रोता है, कौन रोता है। थोड़ी सी चुनौती आपको दे सकती है तो सिर्फ चन्द्रा। वह रोना भी जानती है नरैन जी पर उसने हंसना भी सीख लिया है इस मायावी जानवर से जिसका नाम है शिवेन्द्र···।"

"शरारत के पुतले नम्बर वन, आ अब मुझसे भी मिल ले।" शोभू ने शिबू की आंखों में झांका उसके चेहरे को देखकर लग रहा था कि वह शोभू नहीं सोनवां है वह उस कदर उन आंखों में झांक रहा था, हल्के सहज मुस्कुराहट के साथ कि मैं सोच नहीं पा रहा था कि इसे क्या कहूं। शिबू ने दोनों बांहों से उसे जकड़ लिया। वे गले से गले नहीं मिल रहे थे। प्रेमी प्रेमिका की तरह अपने से दूसरे, दूसरे से अपने गालों को सटाकर रो रहे थे। अजीब घुमड़न थी।

"बड़े भाई, हो गया। बाहर कोई लोग आ रहे हैं।" नरैन बोले।

शिबू ने रोते हुए कहा—"हमें छिपाना ही क्या है।"

शोभू ने खुद को छुड़ाया और उसके पैरों में गिर पड़ा—"जीजा कब तक ऐसे ही रोते रहोगे ?"

"जब तक तू रोता रहेगा।"

"लो बड़े भाई मुंह धो लो, जहूर चाचा आ रहे हैं। जल्दी करो···।"

उसने अनमना होकर गिलास पकड़ा। मुंह धोने के पहले ही जहूर चाचा ने देख लिया—"क्यों नरैन बेटे। आज पत्थर पिघल कैसे गया ?"

"नमस्ते जहूर चाचा।"

"ओह बरखुदार। तुम तो शोभू ऐसा तरसा देते हो। पूरे साल में एक बार तुम्हें मादरे वतन की याद आती है। खैर बेटे तू बहुत आगे बढ़ो। इस गांव के गरीब परिवारों में कभी एक हीरा भी जनम लेगा, कौन सोचता था। आज तू कलकत्ते में प्रोफेसर बन गया है। मुझे तो मालूम नहीं। पर रोशन कहती है शोभू भैया की तरह तवारीख इल्मी कोई नहीं है।"

"रोशन पागल है चाचा।" शोभू बोला—"तवारीख बहुत बारीक इल्म है चाचा। अपनी कौमी शख्सियत को पहचान कर तवारीख से सबक लेने वाले लोग नहीं हैं। मैं बता सकता हूं चाचा कि सुभग ठाकुर और अशरफ मियां में या मकबूल मियां में मेल क्यों था। बन्ने और फुन्नन क्या हैं। क्यों हैं। मैं बता सकता हूं। सोनवां जज्बाती औरत थी। हरीश यही कहता है। मैं पूछता हूं उससे कि बोल—यशोदा जज्बाती नहीं थीं ? देवकी जज्बाती नहीं थीं। मरियम जज्बाती नहीं थीं। जैनब जज्बाती नहीं थी। छोड़ो पुरानी बातें। आ जाओ नए जमाने में। कमला नेहरू जज्बाती नहीं थीं। कस्तूरबा जज्बाती नहीं थीं। और नीचे उतरो। आज बताओ इन्दिरा जज्बाती नहीं थीं। औरत जब भी जज्बाती होती है वह सारी सीमाओं को तोड़कर तवारीख को बदल देती है। जज्बाती होना गाली नहीं है। इन औरतों की पूजा करो। इबादत करो। तभी तुम समझ पाओगे कि तवारीख

का मतलब क्या होता है।"

"क्यों शोभू बेटे, जरा एक बात को खुलासा करके बताओ। क्या तवारीख कहती है कि किसी बदमाश को धीरे-धीरे रेत कर हलाल करना चाहिए ?" जहूर चाचा ने पूछा।

"हां चाचा तवारीख कहती है। हर चीज का कोई बंधा-बंधाया तरीका नहीं होता कि इस तरह का माहौल हो तो यही बनेगा। नहीं, देखो चाचा रक्तबीज का आपने नाम सुना है ?"

"नहीं बेटे, बता मुझे ?"

"चाचा रक्तबीज राक्षस था। उसकी खासियत थी कि जब भी उसकी गर्दन कटती और एक कतरा खून गिरता तो वहीं दूसरा रक्तबीज पैदा हो जाता था। इसलिए तवारीख को बदलना जरूरी हो जाता है। रक्तबीज को दंड तो मिलना ही चाहिए न चाचा ?"

"जरूर मिलना चाहिए।" जहूर मियां बोले—"पर यह तरीका तो फांसी में चलता ही है।"

"यही तो आपकी गलती है चाचा। कभी भी सच्ची और असली तवारीख ने रक्तबीज का नाम नहीं लिया। क्योंकि तवारीख अपने राजा के पैरों के निशान पर चलती है। आप बताइए चाचा आप जैसा ईमानदार आदमी कचहरी में हलफ लेकर कहे कि यह शख्स रक्तबीज है। बोलिए—कचहरी मानती है ? जज मानता है। उच्च न्यायालय मानता है। सर्वोच्च न्यायालय मानता है ? नहीं चाचा क्योंकि इनका फैसला वे करते हैं जिन्होंने इन्हें देखा ही नहीं है। इसलिए हजारों औरतों की जिन्दगी को नाबदान में बदल देने वाले इन केचुवों को पैर से रगड़-रगड़ कर धूल में मिला देना होगा। ताकि इनकी दुर्गति जनता सामने देखे और ऐसे लोगों से होशियार रहे और आने वाले रक्तबीज इधर झांकने में गुरेज करें।

"देखो चाचा, आज पूरी दुनिया में हिन्दुस्तान की बेइज्जती इसीलिए हो रही है कि वह अस्सी करोड़ जनता वाला देश अपनी चालीस करोड़ स्त्रियों को गुलाम की तरह 'ट्रीट' करता है। माना कि जैविक और प्राणि विज्ञान के हिसाब से औरत पुरुष की प्रतियोगिता में कमजोर पड़ेगी, क्योंकि बलात्कार जैसी चीजें औरत के साथ ही घटेंगी। आपने कभी सुना कि सूर्पणखा ने लक्ष्मण के साथ बलात्कार करना चाहा था किया ? नहीं इस दृष्टि से नारी हमेशा कमजोर ही साबित होगी। साम्प्रदायिक दंगे हों तो, युद्ध हों तो, देशों के बंटवारे हों तो सबसे ज्यादा मार्मिक पीड़ा बच्ची, युवा प्रौढ़ा या वृद्धा नारी को ही होती है। वह इतनी अमानुषिक पीड़ा देकर पुरुष अपने झूठे नकाब में निर्दोष का निर्दोष रहता है और नारी अनचाहा गर्भ ढोने को मजबूर होती है। कभी एक भी ऐसा केस नहीं मिलेगा जो सिद्ध करे कि बलात्कार सोनवां के साथ सोबरन ने नहीं सोबरन के साथ सोनवां ने

किया था। ऐसी स्थिति में नारी शोषकों को खुले आम चौराहों पर फांसी दे दी जाए तो एक साल में यह निकृष्टतम दुष्कर्म बन्द हो जाएगा, पर कहो चाचा कभी सोबरन को फांसी देना तो दूर अपराध के लिए अड़तालिस घंटे हिरासत में भी डाला आपके मुल्क के न्याय ने ?" शोभू तैश में था।

"खैर छोड़ो, लेकिन अपने बड़े भाई को समझाओ। यह पहले से भी ज्यादा पत्थर दिल होता जा रहा है।"

"नहीं चाचा, आपने तो आते ही कहा था—क्यों नरैन बेटे आज पत्थर पिघल क्यों गया।"

"खैर बात तो करना चाहता था इस मसले पर,...लेकिन इस आदमी ने मुझे गाली दी है और मूर्ख कहा है। आज भी कुछ कहूंगा तो यह गाली ही देगा और मूर्ख ही कहेगा।"

"तुम कहना क्या चाहते हो जहूर चाचा बोलो। समझ में नहीं आ रहा है कि सुबह-सुबह तुम लेक्चर झाड़ने क्यों आ गए यहां। कौन है जिसे कोई रेत-रेत कर मार रहा है। बताओ चाचा। अगर तुम्हारा संकेत सोबरन की ओर है तो जबान बन्द रखो। तुम बिना वजह मुझ पर शक कर रहे हो। तुम दैवी आपदा को मेरे मत्थे मढ़ने की मूर्खता क्यों कर रहे हो ? मैं क्या तिरकोने का रहमान हूं कि सांप पर सरसों छींट के हुकम दे दूं कि जा डंस ले जहूर मियां को।"

"हां, हां, जहूर को भी डंसवा दो। डंसवा दो। इसीलिए तो तुम्हें हाथों के झूले में झुला-झुलाकर बड़ा किया कि एक दिन अपना ही सपूत मुझे ही बेवकूफ कहेगा और मेरी वफात की मन्नत मांगेगा।"

"छिः छिः।" शिबू बोला—"अरे चाचा। तुम तो मामूली सी बात से पिघल जाते हो। इसी वजह से कम्बख्त फुन्नन मियां जैसे गन्दे लोग तुम्हें गाली देते हैं। मैंने एक बार पूछा झगड़ा शान्त न होता हो चाचा तो बताओ फुन्नन को एक मिनट में सिखला दूं, कि शराफत का मतलब कायरता नहीं होती। लेकिन तुम तो धरमराज हो। मैं क्या कर सकता हूं तुम्हारे लिए। अब बताओ असल मसला क्या है ?"

"वाह जो असल मसला था, उसी पर तो बात करने आए थे, जब उसी को बेवकूफी कह दिया तो आगे कौन सा मसला है जिस पर बात करनी है मुझे ?"

"सुनो जहूर चाचा, बोल दो। आज की होली तुम्हारे लिए सिरदर्द क्यों बन गई है। सोबरन बीमार है बेचारा तो फुन्नन मियां के दरवाजे होली पार्टी नहीं जाएगी। तुम अपनी कहो। वहां भी दक्खिन पट्टी के लोग जायेंगे तभी जब तुम बुलाओगे। नहीं चाहते बुलाना, तो जाओ। हमें तुम्हारे दरवज्जे पर होली गाने का शौक भी नहीं है। नरैन कह दो लोगों से कि फुन्नन ने मना कर दिया है और जहूर मियां भी यही चाहते हैं कि काफिर लोग उनके दरवज्जे पर होली गाने न

जाएं।" वह बोला और झटक कर दालान की ओर चल पड़ा।

जहूर चाचा ने अचानक हिचकी ली और रो पड़े। उनकी आंखों से मोटी-मोटी बूंदें गिर रही थीं।

"ई क्या कर रहे हो चाचा।" नरैन ने उनकी आंखें पोंछते हुए कहा—"भाई का दिल पत्थर का नहीं है चाचा। जब उन्होंने मुझ पर गुस्सा करके गांव छोड़ दिया तब हम दौड़ पड़े थे। मैंने गलती कर दी थी चाचा। बिना क्षमा मांगे मैं जी नहीं सकता था। मैं तो उनका छोटा भाई हूं, वे तो आपको अपने बाप की तरह मानते हैं। आपको झटके के साथ यह नहीं कहना चाहिए था कि हां, हां जहूर को भी डंसवा दो। सारा गांव जिसे दैवी आपदा कह रहा है उस पर आप यह बयान क्यों दे रहे हैं। आप तो उन्हें सोबरन का कातिल बनाते जा रहे हैं। हर बार आप यही करते हैं। मधुमक्खियों वाले मसले में भी आपने यही गलती की और आपने आज भी वही कर दी। मैंने तो सुबह प्रेमू भैया के सामने जरा सी शंका से देखा उनकी ओर तो वे गुस्से में चढ़ बैठे—हां, हां तुम राजी को भुला दो, मैं नहीं भूला हूं। चाचा मेरे परिवार ने मुझे गालियां दीं। घर गया तो आपकी बहू ने दुत्कारा। बड़ी फटकार पड़ी—मेरी ननद जब चौकठ पर मत्था पीट रही थी गांधी बाबा तो आप यहां बैठकर आसमान देख रहे थे। अब चले हैं 'गान्हीं' बनने···और तो और जिन्दगी में पहली बार मोनू ने मुझ पर छींटाकशी की। गान्ही महतमा की जै गान्ही महतमा की जै—बोलता मुझे चिढ़ाता भागा। ई सब चाचा उनका गुस्सा है। जितना ही टोकोगे उतना ही वह भड़केगा। इसको बुझाने की सिर्फ एक दवा है चाचा···आधा घंटे में वे नार्मल हो जायेंगे।

"हां, यह तै है चाचा कि अब वे होली पार्टी के साथ आपके यहां नहीं जायेंगे?"

"क्यों, क्यों नहीं जाएगा हमारे यहां?"

"ई तो आप पूछिए।"

जहूर मियां चले तो मैं भी पीछे-पीछे चला। वहां पुवाल पर शिबू पट्ट लेटा था। उसके सिर के नीचे तकिया थी। और वह हिचक-हिचक कर रो रहा था। जहूर चाचा ने यह देखा। तो वे आंख से गमछा लगाए दहाड़ मारकर रोने लगे। नरैन, शोभू, मोनू सभी दौड़े आए। किसी ने आज तक शिबू को रोते हुए नहीं देखा था।

नरैन गुस्से में बोला—"जाओ जहूर मियां यहां से। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता बड़े भाई आज तक कभी रोये नहीं थे। निकल जाओ यहां से।" नरैन ने जहूर मियां को धक्का देकर दालान से निकाल दिया।

"नहीं नरैन। कह दो जहूर चाचा से हमारी होली पार्टी उनके यहां जाएगी। तुम्हें इस तरह बेमुरव्वत होकर नहीं बोलना चाहिए था। जहूर चाचा हमारे बाप

हैं। क्षमा मांग लो। मेरी ओर से भी। प्रेमू, तू चला जा चाचा के साथ। वैसे तो बदस्तूर आज के पकवान दोनों मुसलमान घरों में जायेंगे ही पर रोशन से कहना कि मैं खाना वहीं खाऊंगा।"

नरैन, मैं, शोभू सभी बाहर आए। "अब हंसो चाचा ?" नरैन ने पीठ में खुदक्का दिया। जहूर मियां ने गमछे से आंखें पोंछीं—"बहुत शरारती है। चलूं नरैन उसके खाने का मतलब है विरयानी। विरयानी उसे बहुत पसन्द है। तैयार कराऊं।"

"क्यों चाचा खाली बड़े भाई को बुलाओगे ?"

"तुम सभी को न्यौता है भई।" जहूर मियां मुस्कराते हुए चले। मैं पीछे-पीछे चला तो बोले—"अब बैठ जा प्रेमू। उसने गुस्से में कहा था कि रोशन से कहना। वह जानता है न कि रोशन को खबर मिली नहीं कि वह एक पैर पर नाचना शुरू कर देगी। सबसे पहली खबर फुन्नन के पास पहुंचेगी कि आज शिबू भैया मेरे यहां खाना खाने आ रहे हैं। उसका प्यार बच्चियों को कितना बेखौफ और निडर बनाता जा रहा है। देख लेना करमूपुरा जनपद में दस साल के अन्दर ही औरत को देखकर मर्द माथा झुका लेंगे। उसे रास्ता देंगे। औरतों को वह एक नई दुनिया बख्श रहा है। जिसमें एक लाख सोबरन भी चाहें तो बइंसाफी और जुल्म नहीं कर पायेंगे।"

"पर काका तुम तो उसे जुल्म ढाने वाला पत्थर कह रहे थे।"

"भई हमलोग पुरानी उमर के आदमी हैं। हमें यही सिखाया गया है। शराफत और नर्मी बड़ी चीज है। पर आज से उससे कभी नहीं पूछूंगा कि तूने ऐसा क्यों किया ? हां।"

शाम के तीन बजे थे। हम सभी जहूर चाचा के यहां से पूड़ी, पुलाव और विरयानी खाकर पुवाल पर उठंगे हुए थे। शिबू और शोभू एक दूसरे की गरदन में हाथ डाले तिरसठ की मुद्रा में मुंह से मुंह सटाये बातें कर रहे थे। तभी एक अधेड़ औरत सीढ़ियां पार करती हमारी ओर बढ़ी—"कहां है रे साला। अबे शिबुआ·· सुनता नाहीं।"

शिबू उसे देखते ही उछला—"अरे भौजी, माफ कै दे हमें। बड़ी गलती हो गई। भौजी हम एकदम बिसर गये।"

"साला कुत्ते की औलाद !" बुढ़िया ने मुट्ठी में उसके बालों को कस कर बांधा। बोली—"क्यों रे हरामी आज के दिन तू इहौ भूल गया साले कि मैं तुझे

गोबर से बिना नहलाये खाना नहीं खाती ? क्यों, अब तो बालटी में गोबर घोलने की भी जरूरत नहीं है। सोबरनवां के गोबर गैस वाले प्लान्ट से खूब बारीक चटनी की तरह गोबर लाई हूं, तुझे चटाने के वास्ते। बोल साले तेरी हिम्मत कैसे पड़ी। बिना उपधाइन भौजी को चटक पके रंग में रंगे तेरी होली शुरू ही नहीं होती थी। मेरे परान, क्यों नहीं आया रे शिबुआ। मैं तीन बजे तक तेरी राह देखती रही। जब से ऊ गये कोई तो नहीं पूछता उपधाइन को। अपना दर्द तो खाली अपना ही रह गया था। न कोई औलाद न कोई वंश, न कोई चिरई, न तोता न मैना। कुछ भी तो नहीं बोलता मेरे अंगने में। एकदम अंधेरा है। मैं पाण्डे परिवार की लड़की, बीए पास कर यही देखने आई थी। करमूपुरा। तू कहता था भौजी ! अब तेरे पनघट का नाम करमूपुरा हो गया। बड़ी कठिन है डगर पनघट की। उंहू मैंने सोचा कि चल जीने का सहारा हो गया। साल में एक बार शिबुआ साला तो आ जाता है। उसी ने तो बताया था मुझे कि पनघट की डगर को लांघे बिना नटखट के दर्शन नहीं होते। क्यों पिछले बारह साल से तू पनघट का नटखट बना रहा। तेरे अलावा कोई मेरे यहां नहीं झांकता। कोई मुझे देखकर मुस्कुराता नहीं, कोई देख-रेख तो दूर बीमार-तीमार होने पर एक गिलास पानी भी नहीं देता। यदि मेरा पति भरी जवानी में चला गया तो उसे मेरा कर्मफल कहो; किन्तु इसके लिए हमें अपराधी क्यों बनाता है यह समाज। तू भी भूल गया शिबू। तेरे मन का आंगन भी सिकुड़ गया मेरे लिए। कितनी आस लगाये बैठी रही। तू अब आयेगा, तुझे यों नहलाऊंगी पक्के हरे रंग में। सबज सारी उन्हें बहुत अच्छी लगती थी रे शीबू। जब भी बाजार से लाते बस, एक बात। इसे पहन लेगी चंपा तो सचमुच तू चंपा की हरी पत्तियों से ढकी डालियों जैसी लगेगी। बोल तूने उनके मरने के बाद मुझे हरे रंग की साड़ी क्यों खरीद कर दी ? तू तो उस वक्त बीस साल का था। तुझे पता क्यों नहीं था कि विधवा को रंगीन साड़ी पहनने का हुकुम नहीं है। उपधाइन के बाप की लाल बेठन में लिपटी मनुस्मृति में विधवा के शृंगार को पाप कहा जाता है। बाप ? वे भी बाभन बाप ? क्या होता है कि इनका सास्तर सब जानती हूं रे। सब जानती हूं। हरामी बाप के बिना बुलाये छोटे भाई की शादी में चली गई। मैं तो काफी दूर थी। नई बहू के मुंह देखने की लालसा क्या जुर्म है। मेरे बाप ने कहा—'हट जा, विधवा की छाया नहीं पड़नी चाहिए ये नई गृहस्थी बनाने जा रहे हैं। तू जानकर इनका अशुभ क्यों सोच रही है, हट जा। दादी बहुत नर्म थीं। आधा घूंघट उठा चुकी थीं, बाकी उठाकर मुंह दिखाने ही चली थीं कि बेंत की छड़ी मेरे बाप ने अपनी ही मां पर चला दी। इसके बाद जो असली अपराधी थी, यानी मैं, जानता है स्साला तू कि कितनी छड़ियां गिरी मुझ पर ?"

"हां, भौजी अड़तालीस बार छड़ी चलाई गई थी तेरे बदन पर।"

"चल भगवान की कृपा है तुझे छड़ियों की गिनती तो याद रही। क्यों कोई याद करे कि बगल की औरत को उसका पति क्यों पीट रहा है। पड़ोस में नई बहू गाय की तरह डकर-डकर कर क्यों रो रही है। नहीं पूछना चाहिए। किसी को नहीं पूछना चाहिए। सब यही कहते हैं यह उनका घरेलू मामला है। जानता है क्यों कहते हैं ऐसा ? बोल क्यों कहते हैं ?"

"इसलिए कहते हैं भौजी जब वे अपनी मां, बेटी, बहन, बहू को पीटें तो दूसरा उनसे पूछने की हिम्मत न करे।"

"अरे, तुझे तो अपनी कही बात भी याद रहती है रे, अरे शिबू। तू बड़ा नट-खट है। तुझे जब अपनी कही बात याद रहती है तो स्साले अपना वादा याद क्यों नहीं रहा ? बोल हरामी बोल। सोनवां के मरते ही तू क्यों भाग गया शहर। बोल, जवाब दे। हर औरत दूसरी औरत के दर्द को जानती है। सोनवां का दोष क्या था रे। कोई आदमी मेरी जैसी अबला को सड़क से खींच कर, कोठी के भीतर ले जाकर बलात्कार कर सकता है—सोनवां को तूने मरने से रोका क्यों नहीं बोल ? बोल हरामी, स्साले बोल ?"

"मैं रोक नहीं पाया भौजी क्योंकि उसने मुझसे मिलने के पहले ही जहर खा लिया था ?" शिबू बोला।

"क्यों रे, गांव कहता है कि उसके पेट में तेरा बेटा था। गांव को सत्य नहीं मालूम था, यह तो अच्छा ही था, तू कहता कि यह मेरा बेटा है, और उसे बनारस ले जाता तो वह क्या बच नहीं सकती थी ?"

"नहीं बच सकती थी भौजी ?"

"ई कौन बोला रे ? कौन है स्साला हमारी एकान्त बात को सुनने वाला। अरे शिबू तू मरद है कि जनखा है। मार डाल इसे। यह साला गांव भर में कहेगा कि सोनवां के पेट में सोबरन का लड़का था। मार डाल, मार डाल इसे। कम से कम मरने के बाद तो दुनिया कहे कि तूने धोका नहीं दिया। उसका कोई दोष नहीं था। क्या तू अपनी जीवन-संगी के लिए वह तोहमत स्वीकार नहीं करेगा ? बोल ?"

"शिबू भाई ने तो तोहमत स्वीकार कर ली थी भौजी ?"

"आखिर कौन है ? क्यों रे शीबू कौन है जो औरत के बारे में ऐसे बोल रहा है मानो सारी दुनिया इसकी हथेली में बन्द है और ई साला बन्दर की औलाद कहता है तूने तोहमत स्वीकार कर ली थी।"

"वह सही कह रहा है भौजी ?"

"आयं, तूने जब तोहमत स्वीकार कर ली थी तो वह मरी क्यों ? उसने जहर क्यों खाया।" उसने जलती आंखों से घूरते हुए शिबू की आंखों में देखा, "बोल, उसने जहर क्यों खाया।"

"इसलिए भौजी कि वह अपने को शिबू भाई साहब के योग्य नहीं मानती थी। इसीलिए जहर खा लिया ?"

"देख फिर बोला, डोमड़ा कौवा। कौन है यह। कौन है शिबू।"

"सोनवां का भाई शोभू।"

"ओह, अरे शोभू। तू तो कभी मेरे यहां आता ही नहीं। अगर मुझे मालूम होता कि सोनवां ने इसलिए जहर खा लिया तो मैं ऐसा पाप क्यों करती।" बुढ़िया रोने लगी।

"तूने कौन सा पाप कर दिया भौजी," शोभू घबड़ाकर बोल पड़ा।

"मैं तो आज भी नहाने के बाद सूर्य देवता को अर्घ्य देती हूं तो कहती हूं कि हे सब कुछ को देखने वाले साक्षी तुम शिबू को वादाखिलाफी का दंड जरूर देना। मैं समझने लगी थी शोभू कि शिबू रंगा स्यार है। वह प्रेम करके एक औरत के गर्भ में बच्चा डालता है और दूसरी ओर अपने को निर्दोष कहकर भाग जाता है। हे भगवान यह मैंने क्या किया ?"

"तुमने कुछ नहीं किया भौजी। तूने तो सब ठीक ही किया। तेरी प्रार्थना पर भी मुझे सूर्य देवता ने दंड नहीं दिया क्योंकि वह जानते थे कि मैं उसे उसी रूप में ले जाने के लिए ही आया था।"

बुढ़िया चुप हो गई। फिर बोली—"ललाट ऊपर कर। ला। ले हां, आज तुझे खाली अभ्रक वाली अबीर लगाऊंगी। अद्धी का कुरता जो पहने है। बिगड़ जायेगी तेरी सूरत। किसी की नजर न लगे— यह ले तेरे गाल पर यह हरी अबीर भी लगा दी। बस। जा रही हूं। जीवो तुम लोग। खूब दिल खोल के होली खेलना, हां।···सबसे गले मिलना। मियां लोगों के यहां जरूर जाना···"

"हे···हे·· हे···हे।"

शिबू दौड़ा और उसने बुढ़िया की कलाई पकड़ ली।

"ई है बेइंसाफी तुम्हरी सुनो राधिका प्यारी।

हाथ छुड़ाये जात कहां हो अब है हमरी बारी।"

बुढ़िया हां हां करती ही रही कि शिबू ने पूरी अबीर उसके गालों पर मल दी।

"नटखट, ई क्या करता है ?" बुढ़िया ने शिबू की आंखों में देखा—"कब तक तू खाली पिंजरे में दाना-पानी रखेगा। अब तो इसे छोड़कर चली जाना चाहती हूं। कौन सा सुख है कि बधी रहूं।" और वह चली गई।

"भैया," शोभू बोला—"आप मुर्दे में जान डाल देते हैं। आपके मन के भीतर जो दर्द है दुखियों के लिए, उसे गांव वाले सह नहीं पायेंगे। कोई यह नहीं कहेगा कि उस दिन होली के अवसर पर एक विधवा के आंसुओं को पोंछकर शिबू ने उसके होंठों पर मुस्कुराहट ला दी थी। सब यही कहेंगे कि उस कुजात ने ब्राह्मणी

विधवा को भी किसी ओर का नहीं रखा। क्यों प्रेमू भैया।"

मैंने कहा, "नहीं शोभू मैं इस मामले में शिबू की तरफ रहूंगा। पिछले एक हफ्ते के भीतर मैंने इतनी तस्वीरें देखी हैं करमूपुरा जनपद में कि शिबू किसी की हत्या भी कर दे तो मैं कसम ले लूंगा कि मैं नहीं जानता। उसने नहीं किया है। भाई आपने नरैन जी के चेहरे को नहीं देखा? वे आश्चर्य से ताक रहे थे और उनकी आंखें बरस रही थीं।"

"अरे प्रेमू भैया, आंख से आंसू तो किसी तिनके के पड़ जाने से आये होंगे। हां प्रेमू भैया एक बात जरूर कहूंगा कि मैं पढ़-लिखकर भी घोंघा ही रह गया। एक मिनट की हंसी भी कितना सहारा दे देती है। बड़े भैया पर उंगली उठाने वाले की कलाई काट दूंगा।" नरैन जी ने कहा।

"अरे नरैन, क्यों व्यर्थ परेशान हो रहा है। दुनिया में अगर एक प्रतिशत भी लोग नरैन बन जाते, तो जमाना कुछ और होता।" शिबू ने कहा।

"बड़े भाई, छोटी सी बात भी कह दूं और आपको अच्छी लगे तो मेरी तारीफ का ऐसा पुल बांध देते हैं कि शरम से गर्दन झुक जाती है। प्रेमू भैया आप इस बुढ़िया की उमर जानते हैं?"

"मैं नहीं जानता नरैन जी, आप बताइए।"

"बिल्कुल सही तो मैं भी नहीं जानता। बस इतना ही जानता हूं कि ब्याह कर लाई गई तो यह अठारह साल की थी। दस साल के बाद ही बिना औलाद कैलास उपाध्याय चल बसे। तब यह अट्ठाइस की तो होगी। उस वक्त इसे साड़ी लेकर जब बड़े भाई गये होंगे तो वे बीस के थे। बुढ़िया ने यही कहा। अब शिबू भाई साहब बत्तीस के हैं सो हमारी भौजी केवल चालीस वर्ष की है प्रेमू भइया। सिर्फ चालीस वर्ष की। इसके चेहरे की झुर्रियां देखिये, इसके धँसे हुए गाल देखिए, इसकी अथाह आंखों की उदासी देखिये। इसके जटा जैसे पक्के अधपक्के केश देखिए। यह सब किसने किया। एक पढ़ी-लिखी सुन्दर औरत को असमय विधवा बनाया ईश्वर ने, मान लिया, पर विधवा को प्रेत में किसने बदला। कैलास तो जान निछावर करता था अपनी चंपा पर। उसने तो इसे हड्डियों का ढांचा बनाया नहीं। फिर यह ऐसी बनी क्यों?"

"यों बनी प्रेमू भैया," शोभू बोला—"इसके पति के मरने के बाद ही इसके देवर और ससुर ने हिस्से को हड़पने के लिए चाल चली। इसके देवर ने पंचायत में खड़ा होकर कहा कि हम तो सोंचे रहे पंचो कि पढ़ी-लिखी है हरामजादी ई हमरे, उपध्याय वंश पर दाग नहीं लगाएगी। मगर इसका चरित्तर देख के रहा न गया तो हम पंचायत में आये हैं सोबरन राय जी, आप नियाव कराओ।"

"फिर क्या न्याय हुआ नरैन जी।"

"न्याय तो आपके मित्र ने होने ही नहीं दिया। वे चंपा के पास आने-जाने लगे तो आप बताइए कि क्या न्याय हुआ होगा ?"

"डर गया होगा सोबरन !" मैंने कहा।

"नहीं सोबरन डरपोक है यह तो प्रमाणित तब हुआ जब नागराज ने दर्शन दिया। बड़े भाई कहते थे कि साला बहुत डरपोक है। हमसे स्वीकृति के सिर हिलाने का इन्तजार भी करते थे वे··· पर हम चुप हो जाते थे। बोलते थे—ठीक है ठीक है। सोबरन डरपोक नहीं है। यही है न तुम लोगों का फैसला। देखूंगा एक दिन कि डरपोक है कि नहीं। रात में तो आपने स्वयं देखा ही होगा प्रेमू भैया कि सोबरन कितना डरपोक है !" नरैन जी मेरी ओर मुस्कुराते देख रहे थे।

"मैं, मैं कैसे देख सकता था कि सोबरन डरपोक है। मैं नागराज के साथ-साथ तो गया नहीं था।" घबड़ाकर मैंने कहा।

"प्रेमू भइया, बड़े भाई ने मुझे अगमजानीश्वर बना दिया है। पहले मैं भी मूर्ख बना रहा फिर धीरे-धीरे समझ में आया कि वचन देकर निभाने के लिए जब आग में कोई कूदता है तो वह उसका नतीजा भी जानता रहता है। तब से मैं धीरे-धीरे अगमजानीश्वर बनने लगा। आप तो जानते हैं प्रेमू भैया कि कितने परिवर्तन के बावजूद वे मुझे खतरनाक मुहिम में साथ नहीं ले जाते। पर दालान के भीतर वाली कोठरी में गमछे में हांड़ी देखकर मैंने अगमजानीश्वर से पूछा—भगवन पिटारी लिए कंटीले तारों से भरी चारहदीवारी को क्या कोई आदम लांघ सकता है ? शोभू था नहीं। नरैन साथ गया नहीं। गांव में कोई भी युवक विश्वास योग्य नहीं है फिर इस कार्य में दूसरा सहायक कौन था ? रहमान नट उस तमाशे को देख तो सकता था पर वह शामिल नहीं था क्योंकि आधी रात के बाद अगर वह सहायक बना होता तो जिरवा यह कहने क्यों आती कि नरैन जी शिबू भाई साहब से कहना कि मेरे बापू को छिमा करके जिरवा से मत पिटवाना। यानी रहमान ने कोई गलती की होगी और उसे जिरवा से पिटवाने की धमकी दी गई। वह बड़े भाई से कितना डरता है। हम जानते हैं। वे उस पियक्कड़ को उस मुहिम के लिए साथी बना नहीं सकते, फिर एक व्यक्ति बच गया प्रेमू भैया···" नरैन जी ठहाका लगाकर हंसे।

मैंने लाचारी से शिबू के चेहरे की ओर देखा। वह गंभीर था। बोला—"इसमें घबड़ाने की क्या बात है रिसर्चर ! मैं देख रहा हूं धीरे-धीरे मेरी कार्य-पद्धति से लोग परिचित होने लगे हैं। यानी मेरी कार्य-पद्धति और गतिविधि दोनों को आशका के कोष्ठकों में बन्द कर दिया गया है।" वह चुप हो गया।

दो मिनट तक चुप्पी बनी रही। नरैन भाई ने पूछा—"जब बड़े भाई चंपा भौजी के पास विधवा होने के बाद उसे तनाव से बचाने के लिए वहां आने जाने लगे

तो क्या एक्शन लिया होगा सोबरन ने ?"

मैं सिर खुजाने लगा।

"अबे बोल रिसर्चर ! यह तो तेरा इम्तहान है। ई सब गांव वाले छोकरे हम नगरीय सभ्यता वालों को बेनकाब करना चाहते हैं। अरे भाई बुद्धि पर जोर लगा। बोल तो ?" शिबू ने जीभ मरोड़कर टकटक आवाज की।

"क्यों शिबू तू मुझे हल का गद्दड़ बैल समझकर टक्टक क्यों कर रहा है। अबे मैं क्या बैल हूं। मैं बैल हूं।" मैंने कहा—"अभी तक तो जिन्दगी देखी ही नहीं थी।"

"बैल नहीं तो बता कि सोबरन ने चंपा कांड में क्या एक्शन लिया होगा।"

"यार कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।"

"वह तो हर बार एक ही एक्शन लेता है, यानी बड़े भाई को चरित्रहीन कह-कर गांव वालों में उन्हें बदनाम करने के अलावा वह कर भी क्या सकता है।" नरैन जी ने कहा।

हम चुप थे।

"ऐसा है नरैन मैं कल बनारस जाऊंगा। तुम पूर्ववत सारी सूचनाएं देते रहना।"

"लेकिन बड़े भाई 'गान्ही महतमा' की जो सांसत होगी, उसका क्या करूं। आपने उसकी लाश को टिकटी पर रखवा कर ही बनारस जाने का ऐलान किया था। उसका क्या होगा ?"

"मैं जहूर चाचा, जैसे लोगों को तकलीफ नहीं देना चाहता। वे लोग पुराने हैं। उन्हें शराफत और शालीनता में बहुत आस्था है। अभी नहीं तोडूंगा। देखूंगा। मैं इस टिकटी वाले ऐलान को पूरा करने के लिए सही वक्त का इन्तजार करूंगा।"

तभी दालान में बटेसर के तिवारी जी के पुत्र आए।

वे दौड़कर शिबू के चरणों की ओर झुके तो उसने न केवल अपना पैर खींच लिया बल्कि खड़ा होकर उन्हें बरजोरी गले से लगा लिया। "कहो महेन्द्र कैसे हो ?"

"ठीक हूं भाई साहब। भाभी ने भेजा है। एक चिट्ठी भी दी है।"

"तो लाओ देखूं।"

"यह आपके नाम नहीं हैं बड़े भाई।" महेन्द्र बोला। "नैरन जी को लिखा है। लीजिए नैरन जी। आपकी चिट्ठी है यह। मुझे कुछ नहीं मालूम। लिफाफा बन्द करके भाभी ने हुकुम दिया कि सीधे करमूपुरा जाइए और यह चिट्ठी नरैन जी को दीजिए। देर हुई तो मैं शायद बस पकड़ न पाऊं।" नरैन ने चिट्ठी खोली।

प्रिय नरैन जी

मैं आपसे उम्र में बड़ी हूं इसलिए आशीष ही लिख रही हूं। आप तो अगम-जानीश्वर कहलाते हैं। अभी-अभी घूरे पण्डित अपना पकवान वसूलने आये थे। नागराज के प्रकोप की कहानी सुनी। घूरे पण्डित मक्कार हैं। उन्होंने जहूर बाबा वाला पूरा प्रसंग भी बताया। उसके पूर्व मधुमक्खियों के हमले का भी विवरण मिला था। हमारे आदरणीय श्वसुर कहते हैं कि पापी को किसी-न-किसी दिन उसके पाप का दण्ड भगवान देते हैं। बुड्ढे लोगों की सोच ही है ऐसी। उसे क्यों तोड़ा जाये। लेकिन मैं भगवान के एक सेवक को जानती हूं। और जो कुछ हुआ है उसे न्यायपूर्ण मानती हूं। नरैन जी, आप बुरा मत मानना। एक कुजात संगदिल आदमी को पहचानने के लिए करमूपुरा जनपद को कितना समय चाहिए। मैंने खुद गलती की। मैंने अपने पति के जिगरी दोस्त पर आरोप किया कि उनकी हत्या हरीश ने की और हरीश तुम्हारा आदमी है, न्याय करो। आपने वही गलती की कि राजी की शादी तुमने कटवाई है जवाब दो। हमें उनसे न्याय मिला। पर गलत आरोपों को लगाने वाले हम क्या जिम्मेदार नहीं हैं? वह आदमी अपने निजी लोगों के आरोपों से कितना तिलमिलाया होगा। जान की बाजी लगाकर आरोपों को झूठ साबित कर देने वाला आज इतना संगदिल है तो गुनहगार भी तो हमीं हैं। कहिए नरैन जी। अपराधी नम्बर एक मैं हूं। अपराधी नम्बर दो आप हैं। पर अब शिबू साहब करमूपुरा में रुकेंगे नहीं। वे नौबतपुरा से रेल या कंदवा मार्ग से बस द्वारा बनारस चले जायेंगे। वे जहूर मियां के उपदेश को तो ठोकर मार सकते हैं; पर उनके आंसू को वह ठुकरा नहीं पायेंगे। बस पूछियेगा कि नौबतपुरा जाते वक्त क्या पांच मिनट अपने मित्र की धरोहर सुनीत को आशीर्वाद देने के लिए निकाल पायेंगे।

शुभेच्छु

चन्द्रा

नरैन गम्भीर हो गए। "बड़े भाई मैं चन्द्रा भाभी को केवल बहुत ऊंची महिला मात्र मानता था। पूज्य ब्राह्मण वंश की बेटी, नई शिक्षा में पली, असह्य पीड़ा को झेलने वाली नारी के धैर्य ने मेरे दिल को हिला दिया था। लेकिन आज तो मैं बौना लग रहा हूं। मेरे एक सवाल का प्रेमू भाई उत्तर नहीं दे पाये तो मैंने समझा कि प्रेमू भाई से ज्यादा हूं मैं। अभी आपने घोषणा कर दी थी कि कल बनारस जायेंगे···अब लीजिए यह चिट्ठी और बारी-बारी सब लोग पढ़िये और देखिये कि सत्य-मार्ग पर चलने वालों के हृदय किस बेतार के तार से जुड़े होते हैं। चलिए महेन्द्र बाबा जी, अकेले गया तो आपकी जजमान यानी मोनू की मां मुझे क्षमा नहीं करेगी। चलिए। जानता हूं कि आज पकवानों से गले तक भरे हुए हैं। एक दो

पुवे ही खा लीजिए। वह तो आपके चरण धोती है न। आइए।"

जब महेन्द्र और नरैन जी आये तो वह तकिये के सहारे उठंगा कुछ सोच रहा था। उसकी आंख जाने किस चीज को एकटक देख रही थीं। इस स्थिति को मैंने धीरे-धीरे समझा। पहले इसको बिना सोच-विचारे डिप्रेशन [थकान] कहा करता था, लेकिन धीरे-धीरे जान सका कि दूसरों की बिना चिन्ता किये कहीं खो जाने का नाटक, जिसे हमारे मित्र और मैं भी घमंड और अहंकार कहते थे, एक तरीका है उसका। वह ऐसे क्षणों में ही संभवतः मामूली बुद्धि की सीमा को तोड़कर आने वाली घटनाओं और उनके नतीजे को भांप लेता था। वह पांच मिनट चुप रहा और फिर मुस्कराते हुए बोला—"महेन्द्र जरा यह बताओ कि तिवारी चाचा के पास इस वक्त कितने रुपये होंगे ?"

महेन्द्र अचानक चकराया, सिर खुजलाते हुए बोला—"भाई साहब एकदम ठीक तो नहीं जानता। पर बीस-पच्चीस हजार जरूर होंगे।"

"कल्पू के खाते में कितने रुपये हैं ? चन्द्रा ने बतलाया कभी।"

"वे कौन-सी चीज छुपा कर रखती हैं शिबू भैया वह तो रुपयों की जरूरत पड़ने पर चन्दौली बैंक से ले आने का चेक और पास बुक मुझे दे ही देती हैं। वे तो बड़े भैया के जाने के बाद ही वह चेक बुक बाबू जी को दे रही थीं। भैया के खाते में उनचास हजार के लगभग हैं। बड़े भाई आप ई सब पूछ क्यों रहे हैं ?"

"कुछ नहीं, ऐसे ही !"

सहसा पचीस-तीस लोग, जिनमें पांच वर्ष के बच्चों से लेकर पैंसठ वर्ष के बूढ़े तक शामिल थे, गुलाल में नहाये, रंग-बिरंगी अबीर से चेहरे पर इन्द्रधनुष लटकाये मस्ती के साथ—होली है, होली है—चिल्लाते आ गये। सबसे आगे एक आदमी था जो साठ वर्ष से कुछ कम का ही रहा होगा उमर में—चिल्लाया—"होली है स्सालो, सुभग सिंह के 'लिंग' से जनम लिहे हो ससुर, हियां होली का कोई परबन्ध नाहीं किये। एकदम सन्नाटा में काहे ऊंघते हो। वे शिवुआ, कहां है नरैना, अबे स्साले सोभुवा हरामियो···"

शिबू दौड़ा—"जय हो सकलू चच्चा, जय हो, तुम्हारी जवानी कतल किए जा रही है मालिक का रंगीन पुआ जइसे गाल हैं तोहार···आज हम दांतै से तोहार गाल काट लेइब, सुनो ?"

"अबे···" सकलू चच्चा पीछे की ओर भागे—"मादर···हरमेशा होली पर गालै काटत है। तीन दिन छरछरात रहत हैं ई साले गाल। एहबार मादर···अउरो

बौराय के आय रहा है।"

"अरे भगे कहां रे सकलू तोर तो लाले लाले गाल हैं।

मत ललचाओ रानी तुम्हरे चुम्मा बिना बेहाल हैं, हम तो बेहाल हैं···"

बेहाल हैं, बेहाल हैं ढप्प···वाह जुगी जी होरी है, होरी है, होरी है···सहसा ढोलक गमक उठी—'सदा अनन्द रहे एहि द्वारे मोहन खेलें होरी हो···' तभी दो आदमियों ने सामने रखी दरी बिछा दी। पार्टी साज के साथ बैठ गई। नरैन जी चारों ओर इन्तजाम देख रहे थे। एक बड़े कंडाल में एक किलो पिसे हुए बादाम डाल दिया। चोरी से आधा किलो भांग भी घोल दी गई। पूरा दस किलो दूध डाल के हरखू सरदार लकड़ी से चलाय रहे थे।

"बरफ के पूरी सील डाल दो हरखू चच्चा। अबे हरामी, आओ देखता हूं कौन है माई का लाल जो पांच गिलास ठंढाई पी सके।" नरैन जी बोले।

सभी दौड़े। स्टील के लम्बे-लम्बे ग्लास थे। तीन तक पीते ही लोगों के ऊपर नशा चढ़ने लगा। दो-तीन तो बेहोश हो गए।

"ई क्या है नरैन? भांग में कुछ और पड़ा है क्या?" शिबू बोला।

"मुझे तो नहीं मालूम बड़े भाई। अभी पूछता हूं हरखू चाचा से। वे ही पीस रहे थे। उन्होंने ही कहा कि इतनी बढ़िया भंग पीसी है मैंने कि कोई भी माई का लाल पांच गिलास से अधिक नहीं पी सकता।"

"बुलाओ तुरन्त।"

चाचा हाथ जोड़कर खड़े हो गए। "शिबू बेटा ई थोड़ी तेज हौ। केहू के जान के खतरा तौ नाहीं है। बेटा। मदारै का कुल दस फूलौ मिलाय दिया, वो से कैहू मर नाहीं जाई। समझे?"

"आप ई एतना मूरख हौ हरखू चाचा। हुंह, पीसे तो कह देते। बड़ा गड़बड़ कर दिया आपने। अरे भाइयो, आज ई ठंढाई मत पिओ, हम दूसरी बनवाय रहे हैं।" शिबू ने हाथ जोड़कर कहा।

"एमे है का रे सिवुआ साले!" सकलू चाचा बोले—"एक कीलो सरवा बादाम था। दस कीलो दूधो रहा होयेगा। एतनी बढ़िया ठंढाई काहे फेंकवा रहा है?"

"मदार के दस फूलों का गुच्छा भी पीस दिया है हरखू चाचा ने।"

"अरे तो लड़कन बदे दूसर बनवा दे, हमहन त एकै छक के पीवेंगे हां।"

भंगेड़ियों ने सचमुच छककर पीया। उनमें से अधिकांश की आंखें लाल सुर्ख हो गईं। चेहरे पर पहले से भी ज्यादा रंगीनी उभर कर छा गई। वे फिर लहालोट होकर होली गान में पग गये। मुझे इन गानों की किस्म तो न कभी मालूम थी और न तो हो सकती थी। बार-बार बीच में गाना खत्म होते ही युवक चिल्लाते अब बहुत हो गई होरी। अब चहका गाओ। 'चहका' शब्द का अर्थ मैं नहीं जानता।

शिबू पास होता तो पूछता जरूर की होली और चहका का फर्क क्या है। मुझे तो सिर्फ इतना लगा कि होली गीत में स्वर मध्यम था, धीरे-धीरे उठती थी लय। पर चहका तो सचमुच चहका ही था। तूफान मेल से होड़ लेती ढोलकों की धा-तिना, धा-तिना झांझों की झनकार, झालों की खनक एक अजीब किस्म के नशे में डुबो रही थी। बीच-बीच में सब चिल्लाते थे, जियो राजा, होरी है, होरी है।

"सकलू दादा, सकलू दादा।" मोनू उस्ताद ने कहा—"हम को कन्हैया ले लो। हम भी चहका गायेंगे।"

"अरे यारो, अरे बख्तावर मियां, आप लोगन को आज हमरे नाती मोनू ठाकुर चहका गाके सुनइहैं। हां, मोनू सरदार···"

एक क्षण मोनू चुप रहे—"बोल बेटवा शुरू कइ दे···"

"जै बोलो महत्मा गानी की जै बोलो महत्मा गानी की।"

तमाम ढोल मलीरे बजने लगे। सारी भीड़ मोनू ठाकुर के चहके की पहली कतार को दुहराने लगी—

"जै बोलो महत्मा गानी की जै बोलो महत्मा गानी की···"

तभी गुस्से में नरैन जी मोनू की ओर लपके। पीछे से उसके कुर्ते को पकड़कर शिबू ने खींच दिया—"ई क्या बचपना है। लड़के की प्रतिभा को कुचलना ठीक नहीं होता नरैन। आज होली है उसकी भी बात सुन लो।"

"बड़े भाई आप नहीं जानते।" नरैने बोले—"यह हमरा जीना हराम कर देगा···"

"कुछ नहीं करेगा···तुम भी तो ऐसे ही थे कभी ?"

नरैन को शिबू ने अपनी ओर खींच लिया, इतना देखना था कि मोनू उस्ताद चहक उठे—

गानी जी ने राज्ज दिलाया···गानी जी ने राज्ज दिलाया।

भीड़ एक साथ गा रही थी—

गानी जी ने राज्ज दिलाया
जीना औ मरना सिखलाया—जीना औ मरना सिखलाया
अब हैं उनके चेले निखट्टू—अब हैं उनके चेले निखट्टू
सबके सब हैं भाड़े के टट्टू
कर दो इनका बिस्तर, गोल
बोल गान्ही महत्मा की जै
बोल गान्ही महत्मा की जै
एक थे चाचा नेहरू हमारे—एक थे चाचा नेहरू हमारे
देश के नेता युवकों के प्यारे—देश के नेता युवकों के प्यारे

दीन दुःखी जन के रखवारे—दीन दुःखी जन के रखवारे
उनकी भी हालत कर दी ऐसी, उनकी भी हालत कर दी ऐसी
जैसे ढोल में पोल
बोल गानी महत्मा की जै
बोल गानी महत्मा की जै

सबसे अधिक व्यस्त वहां दो जन थे। शिबू और शोभू। इन दोनों से गले मिलने तमाम चमरौटी, हरिजन टोले, मुसहर और गोंड़ नदी की तरह उमड़कर नरैन के सहन में खलबली मचा रहे थे।

"क्यों नरैन बेटा।" जहूर चाचा बोले—"पिछली होली कितनी उदास थी।"

"क्यों न होती चाचा। पिछली होली को तो मोहन, मथुरा से लौटा ही नहीं था।"

"हां भई, शिबू और शोभू को तो शायद सबसे गले मिलने में दो घण्टे लग जायेंगे। देख रहे हो भीड़।" जहूर चाचा मुस्कुराते हुए बोले।

"चाचा आप क्या इस भीड़ से···।" नरैन जी बोले।

"नहीं नरैन, तुम्हें भी शिबू की हवा लग गई है क्या? मैं फुन्नन से डरकर अपनी होली रुकवा दूंगा? एक नहीं एक हजार फुन्नन मियां आ जायें अशरफ मियां के सहन में होरी होगी, होगी नरैन बेटे। मैं उनकी परवाह नहीं करता। वह बेईमान है, टुच्चा है। उसे दक्खिन पट्टीवालों की होली से नफरत है तो उसने इस पट्टी से आये पकवानों की थालें क्यों कुबूल कीं। लौटा देता। साला कमीना है। उसने यह भी नहीं सोचा कि ईद पर हमारी सिवइयां भी दक्खिन पट्टी वाले लौटा देंगे। अरे भाई यह तरीका पिछले ढाई सौ साल से करमूपुरा में चलता आ रहा है, हजारों जहूर या फुन्नन आयेंगे-जायेंगे, पर करमूपुरा तो वही रहेगा, जो है। अच्छा चलूं मैं सिर्फ अन्दाज लगाने आया था। पिछली साल बहुत-सी बादाम ठंढाई बेकार गई। इस बार अब ठीक है। उतनी ही बनवाऊंगा।"

तभी रहमान मियां के साथ एक दर्जन छोकरे और छोकरियां अपने डमरु, ढोल और तासे बजाते आ गये—"अरे स्साला नरैना···।"

"ऐ बे बुड्ढे, नरैन भाई को गाली मत दे, वरना ऊ तुझे ठोकरियां के बहरी अलंग फेंक देंगे।" जिरवा बोली।

"आओ आओ!" नरैन जी ने जिरवा की ओर बनावटी गुस्से से देखा—"आय गई साली उलटबांसी सुनाने। क्यों री तू हिन्दू और मुसलमान लड़कियों की नेता कब से बन गई। कौन इन पर दया नहीं दिखलाता, बोल, नहीं तो स्साली तेरी चोटी पकड़ के घुमरी खिला दूंगा।"

"अयं, अयं!" जिरवा की सांसें टंग गईं—"नरैन जी, ई का होती है। का

खिलायेंगे मुझे ? जहर तो नहीं दोगे न, ई घुमरी सांप के जहर से कम है, कि ज्यादा है।" वह हकला कर बोली।

"तुम्हें अभी घुमरी खिलाता हूं···" नरैन को अपनी ओर दौड़ते देख वह भाग रही थी कि उसकी चोटी नरैन की मुट्ठी में आ गई। उन्होंने उसकी दोनों कलाई पकड़ीं और चक्कर में घुमाने लगे।

"हाय मैया मरी···बचाओ रे कोई।"

पांच मिनट तक घुमाकर उन्होंने सहसा छोड़ दिया। वह खड़ी हुई फिर धड़ाम से नीचे गिरी—"अरे बापू···" वह चीख कर बोली—"स्साले ई का होय रहा है, नरैन जी का मकान काहे नाच रहा है।"

रहमान दौड़कर आया—"अबे बेवकूफ, स्साली मकान नाही घूमत है तोर दिमाग घूम रहा है, हां। एक मिनट में ठीक हो जायेगा।"

"अबे जब इसमें इतना मजा था तो स्साले तूने मुझे पहले ही घुमरी क्यों नाहीं खिलाई ? ई तो लग रहा है कि चर्खी पर बैठ गई हूं। वाह नरैन जी तुम तो हुशियार होते जा रहे हो।"

"हरामी छोकरी !" नरैन उसके पास पहुंचे—"पहले क्या मैं बुद्दू था। मूर्ख था। बेवकूफ था। तेरा घाघरा एकदम बदबू करता है। छि: छि:, पांच मिनट घुमाते ही बदबू से कै सी लगने लगी थी। तू इसे साफ नहीं करती क्या ?"

"मुझे फुर्सत मिले तब ना घाघरा साफ करूं।"

"तू कौन सा कोल्हू ढकेलती है रे मूर्खे।"

"मैं नट औरतन को लड़ाई का तरीका बताती हूं। ऐसा है नरैन जी कि औरत जब तक डरपोक रहेगी उसे सब लोग सताते रहेंगे। इसलिए हम औरतन को नई दुनिया की ओर ले चल रहे हैं, जहां औरत मरद सब बराबर होंगे। कोई फरक नहीं। उनको इक्कल बनना है। पाठनर बनके चलना होगा।"

"ई स्साला इक्कल और पाठनर, ई का है रे चुहिया।"

"आप नहीं समझ पाए न नरैन जी ? आप नहीं समझोगे नरैन जी। ई मर्द लोगन के वास्ते नहीं है। औरत को जगना पड़ेगा।"

"अरी साली तू औरतों को जगा रही है तो जगा। ई तो बता दे कि इक्कल माने क्या होता है।"

"बताया तो था औरत मरद सब बराबर होंगे, बताया नहीं था ?"

"अच्छा-अच्छा 'इक्वल' कहना चाहती थी।" हम दोनों ने एक साथ पूछा।

"कहना चाहती थी नहीं बाबा। कहा था। यही तो कहा था।"

"हूं यानी इक्वल, और पार्टनर बनना होगा।"

"हां जी, यही तो बोली थी।"

वह उठी और भीड़ में खो गई, "लो प्रेमू भइया हमें अब ये छोकरियां इक्कल

और पाठनर समझाएंगी। बलिहारी हैं वड़े भैया। जय हो, महाप्रभु। हम मर्दों का तो जीना हराम कर दोगे तुम। इसी तरह ई सब शान बघारती रहीं प्रेमू भइया तो औरतें खाना भी नहीं बनाएंगी।"

"इक्कल और पाठनर बनिये नरैन जी", मैंने कहा—"ई सब आने वाली जेनरेशन की नेता बन रही हैं नरैन जी। शीबू मास्टर इन्हें पक्की चेलाइन बनाकर ही दम लेंगे।"

ठीक पांच बजे होली पार्टी हुड़दंग मचाती जहूर मियां के दरवज्जे की ओर चलीं। बीच में छोटी-बड़ी जात वालों के यहां पांच-छ: जगहों पर रुकी भी थी।

ढोलक और मजीरे की आवाज सुनते ही जहूर मियां और रोशन दरवाजे पर आकर खड़े हो गए। दरी बिछी थी। कंडाल में ठंढई घोल रहा था कोई। नरैन जी ने कहा—"का हो शिवबचन चाचा, तेज तो नाहीं हौ न ?"

"अब एकदम फीका कर देवें भांग तो बेटा मजा का रहेगा ऐं ? है कि नहीं ?" शिवबचन चौधरी बोले।

पार्टी दरी पर बैठ गई। तभी फुन्नन मियां का लड़का मुनीर घर से बाहर आया—"सुन बे रामसकला आज तूने गन्दी गाली दी तो मैं खून का दरिया बहा दूंगा।"

"होश में हौ मियां" रामसकल ने कहा—"तोहरे जस हमरे नाती हैं। हमसे फंसौगे तो तुम्हारी जीभ उखड़वाय लेवेंगे ससुर। तुम अपना में बूझत का हौ। तोहरे दरवज्जे हम तो मूतने भी नहीं आए। हां पूछो जहूर से। ई कहेंगे कि गाली मत दो, तो हम ई पारटी तोड़ देवेंगे। लोट जावै अपने घर समझै।"

"का बात है सकलू चाचा ?"

"अरे बेटवा, ई मुनीरवा सार हमके धमकाय रहा है। एह बिड़टी को पांख निकस आई है। तोड़ के तोहें बोरे में ढूंस देवेंगे हरामी। ई हमको कह रहा है शीबू कि गारी देवोगे तो खून के दरिया बहा देएंगे।"

"क्यों मुनीर तुमने ऐसा कहा ?" शीबू ने पूछा।

"हां, हां कहा। सौ बार कहा। तुम हो कौन मुझसे जवाबतलब करने वाले।" वह बिफरकर बोला।

तभी फुन्नन मियां की बीबी बुरका उठाकर बाहर आई और बोलीं—"ऐसे नीच किस्म के लोगों से क्यों उलझता है रे मुनीर जिसने अपने खानदान की इज्जत बेशर्मी से सरेआम नीलाम कर दी, वह दूसरे की इज्जत क्या बचाएगा ?"

"सुन रे बुढ़िया सकीना, साली चुड़ैल, तू आज नरैन से टकरा गई है—उठो, मूरत, मंगलू, शिवन्न मारे जूतों रंग दो इस खूसट बुढ़िया को। हम नीच हैं हराम-

जादी तू सचमुच गद्दार है, अब तू करमपुरा में रहने लायक नहीं रही। फूंक दो फुन्नन की बखरी···" बीसियों नवयुवक गाना-बजाना छोड़कर सकीना और मुनीर की ओर दौड़े।

"रुक जाओ नरैन···" शीबू बोला—"तुम्हारी इज्जत अगर इतनी कच्ची है कि एक बदतमीज औरत की गाली से ढह सकती है, तो तुम अपनी इज्जत को और पुख्ता बनाओ। हां, मुनीर को मैं खुद समझाऊंगा आज।" वह मुनीर की ओर झपटा।

तभी फुन्नन मियां दौड़ के आये। "माफ करना शीबू बेटा। हमलोग गालियां सुनने के आदी नहीं हैं। जहूर मियां हैं। उन्हें सुनवाओ। चलो सकीना, चलो मुनीर।"

"हां, मैं इन गालियां को प्यार करता हूं" जहूर चाचा बोले—"एक बदचलन जमींदार के तलवे चाटने वाला इन मुहब्बत की गालियों को कैसे सुन सकेगा।"

"तुम होते कौन हो जी", सलमा चाची बाहर आकर बोली—"हम जब दुलहन बनकर आये तब से इन गालियों को सुनते रहे हैं। बुर्के में छिपे रहने पर भी इन चीजों को सराहते रहे हैं। सकलू की उमर आज साठ साल की है। उसका बाप अशरफ मियां की यहीं खुलेआम गालियों से नवाजता था। वह तो सुभग ठाकुर को भी गन्दी से गन्दी गालियां देता था। पहली बार जब उसने होली पार्टी में सुभग ठाकुर के इश्क की दास्तान पर गालियां दीं तो वे हंसते हुए बोले थे—अशरफ एक दिन तो सबको मौका मिलना चाहिए कि साल भर में जो कुछ हमारे लिए इकट्ठा है, वह गालियों में बता दिया जाय। एक साल में तो हमारे गरीब लोगों को दिल की बात कहने का एक ही मौका मिलता है यानी होली। लो जी रामदीन ई है तुम्हारी बखशीस। सुभग ठाकुर ने एक अशर्फी दी थी। जो आज भी रामसकल बाइज्जत संभालकर रखे हैं। मैं 65 साल की हूं। उसकी भाभी हूं। उसका हक बनता है कि मुझे गाली दे। सारी भौजाइयां आज के दिन गाली सुन-कर अपने देवरों को मिठाइयां खिलाती हैं और तुम कहते हो कि ये यहां से चले जांय मैं तुम पर लानत भेजती हूं।" सलमा चाची लौट पड़ीं।

"तुम्हें गाली सुननी है बुढ़िया तो सुन। लेकिन याद रखो। अशरफ मियां को गाली दी गई तो···।"

"सुनो बरखुरदार तुमने आज बंटवारा कर ही दिया। रामसकल उस आधे अशरफ मियां को गाली देगा जो मेरा है। तुम अपने आधे अशरफ को बचाकर ले जाओ और घर में घुसकर दरवाजा बन्द कर लो। चलो शिबू बेटा।" जहूर चाचा ने कहा।

बोलो जहूर चाचा की जै। सारी पार्टी चिल्लाई—जै···शुरू करो···

अशरफ मियां के दरवाजे वाली होली एक याददाश्त बन गई थी। क्योंकि शुरू के चखचख से होली पार्टी उदास हो गई थी। लेकिन जब जहूर चाचा और सलमा चाची ने थप्पड़ का मुंहतोड़ जवाब दिया तो एकाएक उनका हौसला आसमान छूने लगा। बांध के टूटने से जैसे पानी खलबलाता हुआ भागता है तेजी से वैसे ही ढोलक और मजीरे बजने लगे। तभी एक नौजवान ने छेड़-छाड़ की। "सकूल चाचा अब अपना असली रूप तो दिखा दो। हां चाचा, सुनाओ जहूर मियां की कहानी।"

सलमा चाची बोली—"वही तोता रटन्त लतीफा हर बार सुनाता है गधा। अबे कुछ नया सुना।"

"का करें भौजी हमें कोई लिख के दे तो हमहूं नया सुनावैं। अबही बेलभद्दर गुरु नया सुनावैंगे। उनको शिबू ने कविताई बनाय कै दी। आ हमें उहै तोता रटन्तै आवत है।"

"अरे सुनाओ चाचा, वही सुनाओ। तुम्हारे मुंह से जब ऊ लतीफा निकलता है तो भोजपुरिया बोली नवेली जैसी चहकती है।" शिबू बोला।

"अरे चुप कर, शिबू तू क्यों गाली दिला रहा है?" सलमा चाची ने कहा।

"गाली, अरे चाची गाली है वो? सुनाओ सकलू चाचा।" शिबू बोला—"हमरे दोस्त भी देख लें भोजपुरिया का बांकपन।"

"हां चाचा शुरू करो।" रोशन बोली।

सकलू चाचा बड़े गम्भीर भाव से खड़े हुए। जैसे वह आज बहुत बड़ा जंग जीतने जा रहे हों।

"देखो सकलू दादा।" मोनू उस्ताद बोले

"का है सरदार" सकलू चाचा ने मोनू को उठा लिया—"सुन लो भई, हमरे नाती का हुकुम। हां बोल बेटवा।"

"तुम हमारी सलमा दादी को गारी दोगे तो तुम्हें गुलेल से मार देंगे। समझे?" एक साथ जहूर मियां, सलमा चाची, रोशन, नरैन जी, शिबू सभी ठहाका मारकर हंस पड़े।

"ऐ मोनू" नरैन जी उसकी ओर गुस्से में दौड़े—"उतर सकलू काका के कंधे से। वे गाली कहां दे रहे हैं?"

"तुम 'गानी जी' नहीं जानते हम जानते हैं। ऊ गाली है। ऊ गाली न होती तो इतने लोग हें, हें, हें, हें, हें करके हंसते क्यों हैं?"

"अच्छा बेटवा, अब लोग नहीं हंसेगे—हां भाइयो, कोऊ हंसना नाहीं। हें-हें-हें करके। नाहीं मोनू ठाकुर गुलेल मार देवेंगे।" सकलू चाचा बोले—एक बार के बात हौ भइया···"

"ढप्प" —ढोलक पर हथेली ठनकी।

"अच्छा। क्या बात हो भइया? अपने जहूर मियां अउर सलमा भौजी करारी गांव जाय रही थीं।"

"अच्छा—कहां जात रहे दोनों?"

"करारी गांव। करमूपुरा के सीध में है भइया···"

"ढप्प।"

"अच्छा—हां तो मीयां बीबी ने का देखा···"

"का देखा हो?"

"देखा···कि नदी में पानी जियादा है···"

"फिर?"

"अबे फिर क्या। दूनों ने अपनी-अपनी फतुही उतारी और मूड़े पर रख के हेल गये भैया···नद्दी में?"

"हां, भइया नद्दी में···"

"फिर?"

"अनचक्के में भइया सलमा भौजी बोलीं···"

"का बोली?"

"अरे दौड़ो दौड़ो दौड़ो मियां, अरे दौड़ो, दौड़ो मियां!

झिंगा बाझल बाय रे,

इत्ती बड़ी मछरी ना जाल में समाय रे,

अपने जहूर मियां बड़े खुश हुए पंचों कि चलो आज मछरी के सुरुवा सटकेंगे···"

"ढप्प"

"अच्छा फिर···?"

"फिर क्या मछरी पकड़ने मियां जब बीबी के हियां पहुंचे—तब?"

"तब सलमा भौजी बोलीं।"

"अरे जाल गई फट्ट।

"मछरी के लेबे कट्ट-रे—जाल गई फट्ट···।

"और जाल गई फट्ट, मछरी के लेबें कट्ट रे।"

ढोलक मजीरे तूफान मेल से होड़ ले रहे थे। सकलू यादव एक बांह से दूसरे की केहुनी पकड़े अश्लील मुद्रा में दूसरे को बार-बार हिला रहे थे और बार-बार 'जाल गई फट्ट मछरी के लेबे कट्ट' चिल्लाए जा रहे थे।

"अबे साले हरामी सकलुवा। तुझे कुछ नहीं आता। जैसे तेरी ई अद्धी का कुरता सड़ गया है···साला—वैसे ही तुम्हारा दिमाग सड़ गया।"

सलमा चाची आंगन में दौड़ीं और एक बाल्टी रंग सकलू चाचा पर फेंककर बोलीं—"पांच साल से यही कुरता पहनता है। हर होली पर। यही।"

"का करूं भौजी लड़कन के जब नया कपड़ा नाहीं मिलत तो खुद का पहनीं। कईसों दिन बीत रहल हैं।"

"लो तेरे खातिर कल अपने से यह अद्धी का कुरता सिल कर रखा था। ले पुरानी उतारकर ई नया पहन ले।"

अचानक मैंने देखा। गाली गाते हुए रामसकल झरझर रोने लगे।

"तुम कितना खयाल रखती हो चाची।" शिबू ने ललकारा।

"बोलो, एक साथ सलमा चाची की जै, सलमा चाची की जै।"

सहसा शिबू दौड़ा। "रुक जाओ बेलभद्र गुरु आज हम गाएंगे एक जोगीड़ा। आज इंसानियत की जीत हुई है। मैं अपने मन की खुशी को रोक नहीं पाऊंगा।"

सहसा ढोलक मजीरे एकदम चुप हो गए। सभी लोग सांस रोके शिबू के जोगीड़े का इंतजार कर रहे थे। उसने कुछ सोचा और बोला—

यह तो कहा खूब कहा, यह तो कोई रंग

बाजे बजने लगे—सभी गा रहे थे—

यह तो कहा खूब कहा, यह तो कहा खूब कहा
यह तो कोई रंग

हम लोग आस लगाये थे कि वह कहता क्या है—बोला—

यह तो कहा खूब कहा, यह तो कोई रंग है
औरत औरत का फरक बताओ तब तुम्हारा संग जुगी जी वाह बा
तब तुम्हारा संग जुगी जी वाह बा
एक औरत है नाक चढ़ौनी
बिला वजह नकियाती है···तड़ातड़ कर तालियां बजने लगीं।
खिसियानी बिल्ली के माफिक खंभे से टकराती है।
ऐसे से चिढ़ना तो यारो खुद अपने ऊपर गाली है।
ऐसे तिनकों से व्यर्थ उलझकर करो न उत्सव भंग
करो न उत्सव भंग जुगी जी करो न उत्सव भंग
जुगी जी वाह, वाह—

हंसते-हंसते लोग लोटपोट करने लगे।

एक औरत है सीधी-सादी / सब पर प्यार लुटाती है,
सब पर ममता माता जैसी / देवी-सी बन जाती है।
देख के उसका प्यार अनोखा
सकलू रह गए दंग
सकलू रह गए दंग
जुगी जी वाह बा—बाह

"बड़े भाई, जिओ, जिओ" नरैन जी बेतहाशा चिल्लाए।

"बेलभद्दर गुरु के नाम में इतनी कशिश क्यों है ?" मैंने नरैन जी से पूछा।

नरैन जी बोले—"प्रेमू भैया यही सवाल पिछले बीस साल से इस गांव का हर आदमी पूछता है। बेलभद्दर गुरु का एक घर है। मिट्टी की दीवालें हैं। छप्पर हैं। घर में उनके और उनकी मां के अलावा कुछ भी नहीं है।"

"क्यों इनकी खेती-बारी नहीं है ?" मैंने पूछा।

"खेती-बारी होती तो लोग जान नहीं लेते कि किस पट्टी के किस घराने में वे पैदा हुए। कोई आदमी जिसकी गांव में घर, जमीन हो वह अनजान कैसे रह सकता है प्रेमू भैया। यही तो रहस्य है ?"

"वे खाते-पीते कैसे हैं ? अपनी और बूढ़ी मां की परवरिश कैसे करते हैं।" मैंने पूछा।

नरैन एक क्षण चुप रहे बोले—"यह तो सिर्फ आपके दोस्त जानते हैं। हम-लोगों के पूछने पर केवल एक उत्तर मिलता है, वक्त आने दो नरैन बता दूंगा। पता नहीं उनकी परवरिश कैसे होती है। लोग कहते हैं कि बड़े भाई मनीआर्डर से रुपये भेजते हैं। लेकिन हमने कभी आज तक मनीआर्डर आते देखा नहीं। लोग कहते हैं कि वे सीधे कंदवा से डाकखाने में जाकर रुपये ले आते हैं। मारो गोली, वह लो बेलभद्दर गुरु खड़े हो गए हैं। देखो इस बार कौन लोग हैं आपके दोस्त के सामने ?

"सारा गांव होली के इसी जोगीड़े की प्रतीक्षा करता है प्रेमू भाई। जिस पर जोगीड़ा होता है उसकी पूरे साल भर नींद हराम रहती है। लो।"

"सुनो रे भाई

बेलभद्दर गुरु बोले—

ई तो कहा खूब कहा, यह तो कोई रंग है
जमींदार की किसम बताओ···
जमींदार की किसम बताओ···
तब तुम्हारा संग
तब तुम्हारा संग जुगी जी वाह बा।
तब तुम्हारा संग जुगी जी वाह बा
जमींदार सब कतली डाकू परजा को डरवाते हैं
कुछ हैं साले करम निक्खटू जनता का धन खाते हैं
छीन लो इनसे अपनी रोटी
छेड़ दो इनसे जंग—
छेड़ दो इनसे जंग जुगी जी वाह बा, वाह जुगीजी वाह बा
अब आये हैं राय बहादुर जीना किया हराम

गांव की बेटी-बहू छीनना हो गया इनका काम
एक पाप का सौ-सौ दंड कर दो फंसरी तंग
कर दो फंसरी तंग, जुगी जी वाह कहो बाह बा

दक्खिन पट्टी की जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच जो ठहाके पर ठहाके लगाए उससे जहूर मियां के कबूतरों के अड्डे से सैकड़ों कबूतर उड़े और परवाज करने लगे। तभी दौड़ते हुए छोटे ठाकुर आए।

"शिबू भाई साहब" वह बोला—"हमरे बुड्ढे बाप पर तरस खाय लो भैया। तुम्हारे चरनन पर नाक रगड़त हैं—माफ कर दो। हमरे बाबू को। ऊ-जार-बेजार रोइ रहे हैं। एक्के ढक लगी है कि शिबू को हाथ जोड़ के कह देना—हम अब पाप नाहीं करेंगे।"

"अरे भाई तो इसमें मैं क्या कर सकता हूं। हम कहां उनके खिलाफ कुछ कर रहे हैं। अरे भैया ऊ जैसे तुम्हारे बाप हैं वैसे ही हमारे चाचा भी हैं। मैं तो प्यारे भाई अपने बाप देवेन्दर को भी नहीं छोड़ता। उहौ ऐसा नीच काम करते तो उन्हें भी माफ नहीं करते। हम तो उनके नाम पर भी एक जोगीड़ा बनाय देते। ई कहौ भैया जगजीत कि हम खाली एक ठो जोगीड़ा बोल के मन के खुनुस उतार रहे हैं। हम भई तुम्हें सताएंगे क्यों? हमरी तुम्हारी दुश्मनी है क्या? अब बरिस दिन में एक बार होरी आती है। हम जब सकलू चाचा को चिढ़ाते हैं, जहूर चाचा को चिढ़ाते हैं तो यह मजाक है। हंसी-खुशी का गाना-बजाना है। अब कैसी तबीयत है सोबरन चाचा की। भइया यह सुनके कि वे बाल-बाल बचे। नागराज ने उन्हें छिमा कर दिया, वरना हमने तो कभी अइसा सुना ही नहीं कि अपने घर के ही नागराज अपने को ही डंसने आय आएं। अइसे कौनो काम करे होंगे सोबरन चाचा। अगली नागपंचमी पर भैया हमको चिट्ठी लिख देना वहां एक जानकार जोगी हैं। उनसे पूजा-पाठ करवा दूंगा। सर्प-बाधा नहीं होगी भैये। जाओ, कह दो चाचा से कि हम लोग अब उत्तर पट्टी में नहीं गाएंगे। दक्खिन पट्टी लौट जाएंगे।"

"हां भैया बड़ी किरपा होगी," जगजीत ठाकुर बोले।

दूसरे दिन शाम दो बजे उसने नरैन से कहा—"नरैन, अब मैं जा रहा हूं। तुम्हारे सामने रास्ता बिल्कुल साफ है। लगता भी है कि ऐसा ही रहेगा। तुम मोनू की पढ़ाई पर ध्यान तो रखोगे ही, अगर उचित समझना तो ठीक शिक्षा के लिए उसे मेरे पास छोड़ जाना। उसकी मां अकेली जरूर रह जायेगी। पर आज की स्थिति देखते हुए, हर तरह से उसे प्रतियोगिताओं में उतरना पड़ेगा। वह सब, प्यार-दुलार से मिलेगा, कम से कम मैं ऐसा नहीं देख पा रहा हूं। चलो प्रेम।"

"आप भी कमाल करते हैं बड़े भाई, एक बार की गलती का दंड कब तक देते

रहेंगे मुझे तो साथ-साथ चलना है, केवल चन्द्रा भाभी तक नहीं, बहुत दूर तक···"

नरैन ने उसके कपड़ों का थैला उठाया।—"शोभू, अभी आ रहा हूं। नौबतपुर (कर्मनाशा स्टेशन) पहुंचा आऊं।"

"चलिए नरैन जी, मैं भी कुछ दूर तक ही सही जीजा का साथ दे आऊं। पता नहीं फिर कब मिलेंगे।" शोभू हंसा—"जीजा मैंने एक निश्चय किया है। तुम तेतरी की बात करने जा रहे हो, करना मत। मैं उसे कलकत्ते ले जाऊंगा। ठीक कहा था सोबरन ने। तुमने सोनवां रुपवा का उद्धार तो कर दिया। तेतरी का···।" शोभू की आंखें डबडबाई।

"यह क्या हो जाता है शोभू।" उसने कहा—"मेरे लिए सोनवां, रुपवा कोई गैर तो नहीं। हां, मैं उन्हें जिस रूप में चाहता था देखना, नहीं देख पाया। पर मैं तो संतुष्ट हूं।"

"यही तो पीड़ा है जीजा कि तुम अपने ऊपर सुलोचन दुसाध का परिवार उठाये चलते रहे, सोनवां, रुपवा क्यों, शोभू भी तो तुम्हारे ऊपर जिन्दगी भर भार ही रहा। कम लोग जानते हैं कि तुमने मेरी शिक्षा के लिए कितना थकाया अपने को, ट्यूशनें करनी पड़ीं तुम्हें···नहीं, अब बहुत हो गया। तेतरी को मैं ले जाऊंगा। तुम कुछ दिन आराम से जीना सीखो···। चलिए नरैन जी।"

हम तीनों नरैन के ट्यूवेल की ओर बढ़ रहे थे कि दौड़ते हुए जहूर चाचा—चिल्लाए "अबे, शिबू···रुक जा, रुक जा।"

हम सब रुक गए। जहूर चाचा पास आते गए। आकर बोले—"यह क्या? न सलाम न दुआ, न मिलना न जुलना···ऐसे क्यों जा रहा है! जहूर को सचमुच पागला ही देगा क्या?" जहूर चाचा उसके पास आये—"इतनी जल्दी क्यों जा रहा है?"

"चाचा मैंने तै किया कि अगर शराफत से बुरे लोग सुधर सकते हैं तो मुखालफत क्यों? मैं आपको अब करमूपुरा सौंप कर जा रहा हूं। मैं भी चाचा बहुत खुश हूं। जिन्दगी में एक आदमी तो मिला जिसे अब भी शराफत पर विश्वास है। यकीनन चाचा बहुत खुश हूं। अब आप करमूपुरा जनपद को संभालो···। आदाब अर्ज है चाचा।" उसने निश्छल ढंग से हंसते हुए कहा—"नहीं चाचा शंका से मत देखो मेरी आंखों में। जो तुम देख रहे हो वही सच है। मैं पूरे जनपद को चाचा सिर्फ तुम्हारे भरोसे ही छोड़े जा रहा हूं।"

"लेकिन शिबू बेटे, मैं बूढ़ा हूं। मैं अकेले कुछ नहीं कर सकता। मैंने गलती कर दी। शराफत और इंसानियत की बात गलती ही है। इंसानियत है कहां। तुम यह सब मुझ पर छोड़ के मत जा।"

"अब तो तुम दांव हार गये हो चाचा।" उसने कहा—"खुदा हाफिज।"

"मैं तुम्हें बनारस से खींच लाऊंगा शिवू···देखना······हां, ऐसे नहीं जाने दूंगा।" जहूर चाचा हिचक कर रो पड़े। मैं, नरैन जी, शोभू सोच रहे थे कि वह कुछ करेगा। रोते हुए जहूर चाचा को चुपवायेगा लेकिन नहीं वह चलता गया। हम भी उसके साथ-साथ कठपुतले जैसे चलते गए।

"बड़े भाई जहूर चाचा पर ऐसी रुखाई ठीक थी ?" नरैन ने कहा

"कोई दूसरा रास्ता बचा ही नहीं नरैन। मैं उनके पास जाता तो उनके गले लग कर वैसा ही फूट-फूट कर रो उठता, फिर···क्या करता···? रो लेने दो उन्हें। मैं भी क्या उनकी सिसकियों से बच सका हूं। सिर्फ आंसू नहीं आये। बस।"

"अच्छा जीजा।"

वह शोभनाथ से उसी प्रेम के साथ मिला। हंसकर बोला—"शोभू एक सलहज ला दे ?"

"वह तो जीजा, तब आयेगी जब मेरी दूसरी बहन तुम्हारी जिन्दगी की बाग-डोर संभालेगी···।"

शोभू लौट गया।

हम आगे बढ़े। मैंने बहुत ढिठाई से पूछा—"शिवू मैं तेरे इस नकली त्रिभुज को जिसे तू अभेद्य किलेबन्दी समझता है, तोड़ देता हूं। तुमने प्रेमू जैसे कथाकार को धोखा देने का अहं संजोया कैसे ? बोल क्या वजह है कि तेरी हर नारी पात्र काम-वासना की ही शिकार हुई। सोनवां सिर्फ इसलिए लुटी कि वह सुन्दर थी···? ठीक है, नारी को सुन्दर कहने से वह खुश होती है, कभी-कभी इस मूर्खता से भरी खुशी के मकड़जाले में ही उलझ जाती है, किन्तु वह तो तेज वाली थी। उसे सोबरन का शिकार कहकर मौन हो जाना तुम्हारी कायरता थी।"

"कायरता कहो, रिसर्चर या नंगे सत्य की कुरूपता। तुम इसे सह नहीं पाओगे। तुम्हें भरम है प्रेमू कि औरत को मांसलता से ऊपर भी कोई दर्जा मिलता है समाज से। नहीं रिसर्चर, नहीं। जर, जमीन, जोरू। इन तीनों कोण से बने त्रिभुज को सोचो। तीनों एक नहीं है क्या ? क्या कोई जोरू के साथ जर को पाने के लिए ललचाता नहीं ? क्या जर के लिए जोरू को दांव पर रखा नहीं जाता, क्या औरत विधवा हो जाय तो समाज और औरत के बीच का रिश्ता सिर्फ धोखा नहीं हो जाता रिसर्चर ! प्रेम का नाटक इसीलिए होता है। विधवा को चंगुल में रखने से उसके पति की जमीन हड़पी जा सकती है। वहां जहां जर, जोरू, जमीन के साथ जंघा जुड़ता है रिसर्चर, वहीं औरत का सौ फीसद बदन तराजू पर रखा रहता है। वह मांस बेचने वाली या मांसखोर की हवस का शिकार बन कर रोती है। अस्मिता से कटी एक एब्सर्ड तस्वीर बनकर रह जाती है। औरत रत्न है, औरत के साथ खूब मजा है, प्रेम का नाटक होता है, बच्चे जनती है क्योंकि जिसके साथ रहती है उसके सामने उसे परत दर परत नंगा होते ही रहना पड़ता है रोज व रोज। यही

धर्म है । तब मर जाती है । जब कठोर जवांमर्दी दिखाने वाले जानवर घिनौने पशु अंग से क्रूरता के साथ एक कुंई के फूल जैसे कोमल पदार्थ को लहूलुहान कर देता है। औरत उसे प्रथम सुहागरात की तोहफा कहती है, पर वह भूल जाती है कि यही तोहफा उसके दासता का दस्तावेज है । तुम ही बताओ रिसर्चर क्या, इसी रत्न कहे जाने की लालसा, बिना दायित्व के पुरुष संगी की दोस्ती या कम कामरेडशिप या, जीवन साथी से बराबर का हक पाने की हवस कि तुम जिन्दगी हो, तुम मेरी प्रेरणा हो, तुम मेरे मन की रानी हो—सुनकर वह ऐसी लट्टू हो जाती है कि जानवर के हाथ में अपने को सौंप देती है। और उसे प्रेरणा की देवी कहाने वाले असभ्य, धोखेबाज, चालाक लोग सब कुछ भोग कर गन्ने का रस चूस कर उसे कूड़ेदान में फेंक देते हैं। रिसर्चर यही तो कहा था नरैन और शोभू ने । यही पूछ रहे थे ये सब कि सोबरन विधवा ब्राह्मणी को निःस्वार्थ सहायता के बदले में मुझे कौन सा सम्मान देगा ? औरत को बचाने की कोशिश करने वाले पर दोष लगेगा चरित्रहीन और कामातुरता का, और उसे चूसने वालों को कहा जायेगा नारी की तकदीर को बनाने वाले महान जीवन साथी, कामरेड ।"

मैं मूर्ख की तरह देख रहा था ।

मैं एकदम अकेला था ।

"सुनता रहा हूं कि पढ़ी-लिखी पुरुष परित्यक्ता शहरी नारी ही अकेली होती है, रोज इस पर कहानियां आती हैं, रोज दूरदर्शन पर कोई न कोई परित्यक्ता नारी इस अत्याचार पर आंसू बहाती है, पर वह अपने से क्यों नहीं पूछती कि ऊपर के सवालों का कोई जवाब है। क्या वे महान बनने की कोशिश में ही जानबूझ कर नहीं कूदी थीं और मक्कारों की दुनियां में इनके लिए जगह क्या है ? जवानी खत्म होने पर ही होश में आना कितनी और कैसी बेबसी है ।"

बटेसर पहुंचते ही बोला—"भूल जाओ रिसर्चर ! इसमें कोल्हू के बैल की तरह अंटोतल लगाये सिर्फ एकरस चक्कर-पर-चक्कर लगाते मर जाओगे क्योंकि तिल तमझकर कोल्हू में डाले गए को पेरते रहोगे पर कुछ नहीं मिलेगा क्योंकि यहां तिल है ही नहीं सूखी बालू है । नरैन, तुम चलो प्रेमू के साथ, तिवारी चाचा के बइठके पर, मैं दो मिनट में आया ।" वह गली में खो गया ।

हम जब बइठके में पहुंचे तो वहां महेन्द्र था। दौड़कर आया—"क्यों नरैन भाई साहब, शिबू जी कहां हैं ?

"मैं जानूं तब तो बताऊं महेन्द्र," हम बइठके की ओर बढ़े । नरैन ने तिवारी चाचा के चरण छूकर कहा—"तिवारी चाचा स्वास्थ्य तो ठीक है । बड़े मुरझाये लगते हैं । क्या बात है ?"

"मैं क्या जानूं क्या बात है, शिबू कहां गया, वही जाने ।" तिवारी जी बोले—"बैठो नरैन बेटा । ई तो शायद शिबू के दोस्त हैं ।"

"हां चाचा, प्रेम स्वरूप नाम है।"

तभी बखरी के दरवाजे से एक हाथ में भरी बाल्टी और एक हाथ में बताशे की तश्तरी लिए एक महिला दिखी। महेन्द्र दौड़ा—"अरे भाभी, मुझे बुला लेतीं। तुम तो कभी किसी के आने पर बाल्टी भर पानी लिए आई नहीं···आज क्या हो गया आपको?"

चन्द्राजी ने घूंघट संभाला। पल्ले को सिर पर रखती हुई बोली—"शिबू साहब किधर गये नरैन जी।"

नरैन उनके पास पहुंचकर चरण छूने झुके ही थे, बोलीं—"यह पाप क्यों नरैन जी।"

"पाप नहीं भाभी, पुण्य का लोभ है। ऐसे चरण जो प्रत्येक करमूपुरा जनपद के रहने वाले के लिए मां के चरण बन गए हैं। क्यों तिवारी चाचा?"

"बाबू जी आज पता नहीं क्यों उदास हैं।" चंद्रा भाभी बोलीं—"क्यों बाबू जी सिर में दर्द तो नहीं है न?"

"अरे ना दर्द-वर्द नाहीं है। बस समुझ में ना आवत है कि शिबू गये कहां।"

तभी एक अधेड़ उम्र के आदमी के साथ वह आया। मैंने नरैन जी से पूछा तो बोले--"यही हैं दीना चाचा।"

उसने तिवारी चाचा के चरण छुए—"कहो चाचा कैसे हो?"

"ठीकै हूं शिबू बेटा! तोहार बात भैया कबों-कबों सिर चकराय देत हैं।"

"गोड़ लागी तिवारी बाबा," दीना चाचा बोले—"देखो शिवशंकर तिवारी, हम तोहरे पास कहै आये हैं कि तू हमरे पच्छिम वाला खड़हरवा में अपन नई बखरी बनाय लो। हम तो कल्पू बेटा से तब भी कहे रहे कि पूरब अलंग दरवाजा कर लो भइया। हमरे भीत से सटाके भीत मत बनावो। सो भइया आज शिबू बेटा का हुकुम होई गया कि तिवारी चाचा की बखरी का दरवज्जा पूरब मुहैं रहेगा, तो हम भला अइसने परतापी बाभन परिवार के चरन पखारे के पुन्न काहे छोड़ैं। बनवाओ भइया। जब तलक दीना सिंह के घरैं के एक्को प्रानी जीयत रहेगा, आपका बाल बांका नाहीं होइ सकत।" वे बोले और शिबू की ओर देखकर हंसे।

शिव शंकर तिवारी और भी सोच में डूब गए।

"इसमें सोचना क्या है बाबू जी", महेन्द्र ने कहा—"ई तो वरदान बन गया।"

"नई बखरी के जरूरत का हौ महेन्दर?"

"आप तो दरवाजे पर मक्खी उड़ाते बैठे रहते हैं। रोज-रोज वह नट्टिन भाभी जी को गन्दी गालियां देती है। उनका चुपचाप बैठना मुश्किल कर दिया है उसने और आप कह रहे हैं जरूरत क्या है?"

"अरे भई, अइसी बात होत रही तो हमें बताये काहे नाहीं तू लोग। तो ई माजरा है। हम भी कहैं कि शिबू बेटा के माथे कि फिरकी कौने कारन गतिमान भयी।" तिवारी ठठाकर हंसे—"अरे महेन्दरा, तू भाभी देवर मिलके हमें पगलाय दोगे। अरे ऊ हरमजादी ई करत रही तो हम का मर गए थे ? हमहूं ससुरी के जीभ पकरि के खींच लेबैं। बोलैं तो हरामजादी···अरे वाह हमरी सीता जस पतोह के उ छिनार···।'

"नाहीं बाबू जी", चन्द्रा जी बोलीं—"आपको गन्दी गाली नहीं देनी चाहिए। वह भी तो आपकी भतीजी ही है। लीजिए शिबू साहब, बताशे तो गरीबों के रसगुल्ले हैं आपकी भाषा में।"

"देखो चन्द्रा, मैं तुमसे एक हजार बार कह चुका हूं कि मेरी और कल्पू की बातचीत का कोई दुमछल्ला पकड़कर मत बोला करो···" शिबू की आंखें डबडबा गयीं।

"अपराध हो गया।" चन्द्रा बोली—"पेट खराब न हो इसलिए मंगाया था। दोपहर को आ जाते तो खाना खिला देती। उसे मंगाने का न सवाल उठता न तो मैं आपके मित्र के वाक्य को इस तरह कहने का साहस करती···। लीजिए।"

मैं अथाह सागर में डूब गया। गांव में इतनी गहरी धार में हंसते-हंसते जीने वाली ऐसी औरतें भी हैं। मैं सोचता रहा देर तक···यह भी तो पूर्वांचल ही है।

"घबड़ाने की बात नहीं है रिसर्चर, यह तो सिर्फ एक छींटा है। कभी धार देखना हो तो मेरे साथ पुनः आना करमूपुरा में···" शिबू बोला—"तिवारी चाचा। आपके पास जो पचीस हजार रुपये हैं, हैं न ?"

"हां, हां वह तो महेन्दर तोहें बताई चुके हैं।"

"तो उसमें पचीस हजार कल्पू के खाते से निकाल कर चन्द्रा मिलायेगी। पचास हजार रुपये की बखरी—दीना चाचा के खंडहर में असाढ़ चढ़ते-चढ़ते बन जानी चाहिए। कहां रखे हैं रुपये ?"

"अरे भैया जवन हैं सब बेटी बेटे नाती के खातरै तो हैं। अपन मनसूबा कहो।"

"हमें कुछ कहना नहीं है न कुछ बताना है। अब तक मैं समय को आजमाता रहा तिवारी चाचा, अब समय मुझे आजमाने चला है। मैं अपने मन में बसे लोगों के चारों ओर ऐसा चक्रव्यूह बना दूंगा कि समय को घुसने की जगह ही न मिले। आपको मंजूर है न पचीस पचीस हजार।"

"भैया कहा न कि सब इन लोगन का ही है।"

"नाहीं चाचा, आप और कल्पू में जैसा दिली रिश्ता था, वैसा ही महेन्द्र के बेटे और सुनीत के बेटे में रहे—यही मेरी विनय है। कहो महेन्द्र।"

"बात तो ठीक है भाई साहब लेकिन भाभी के तो हम दोनों बेटे ही हैं। मैं भी। सुनीत भी।"

वंश का परताप। एही के लिए तो शिबू चिन्तित हैं।"

"ठीक है चाचा" महेन्द्र बोला।

"क्यों चन्द्रा ?" शिबू ने पूछा।

"मैं आज्ञा मानती हूं उस पर कुछ कहना मेरी शक्ति के बाहर है।"

मैं फिर चकराया। एकटक उस युवती विधवा को देख रहा था।

"एक बात अउरो हौ तिवारी बाबा।" दीना चाचा बोले।

"कहो ठाकुर भैया, पूछ के बताइ है, का हुकुम है ?"

"तिवारी बाबा, अब पुरनका बखत बीत चुका। अब आगे के ओर देखो तिवारी जी। कब तलक हम पुरनियां दुनियां के संभारे के नाटक करत रहेंगे। तूं हमरी पतोह सारंगा को जानत हौ न ? सारंगा के एह पूरै जनपद में हजारो देवर हैं हो। पर भई सारंगा जब ले आई वोह इहै कहते रही कि जेकर एक्के भौजाई हूं वही हमार एक्के देवर रहेंगे शिबू और कोह नहीं। भइया सारंगा का कहनाम है कि चन्द्रा बेटी के देवर बिना अब ऊ नयका स्कूल लड़किन वाला चलाय नाहीं सकत। जब ले चन्द्रा बेटी हुंकारी नाहीं भरैगी तिवारी, शिबू एह गांव से बाहर नाहीं जाय सकत हैं। अब बताओ तिवारी बाबा शिबू के एह बटेस्सर में खूंटा से बांध दैं हम तो केतना लोगन के नुस्कान होई। सो भैया हिया तोहूं हौ, चन्द्रौ बेटी है भइया शिबू के खूंटा से छुडावै चाहो तो हुंकारी भर दो कि हमरी सीता जैसी पवित्तर चन्द्रा बिटिया सारंगा कै का कहत है सहजोग देई।"

"हां चन्द्रा।" शिबू बोला—"सारंगा कह रही थी कि उसका स्कूल जूनियर हाईस्कूल हो गया है। जिला परिषद् की मंजूरी भी आ गई है। मैं देख के आ रहा हूं।"

"चन्द्रा घर में बन्द दिन भर बैठकर मक्खी कब तक मारेगी तिवारी चाचा ? हां एक चन्द्रा एक वाक्य सारंगा ने और कहा है, उसे दीना चाचा तो कह नहीं सकते। मैं ही कह दूं। उसने कहा कि कभी अपने देवर को न्यौता देकर जिमा नहीं सकी तो मेरी साध देवरानी पूरा कर दें तो अपने को बड़भागी मानूंगी। अब दो बहनें एक साथ ही हंसेंगी भी, रोयेंगी भी।"

"यह तो सारंगा का बड़प्पन है शिबू साहब। वह मुझे बहुत स्नेह करती हैं। मैं उनकी आज्ञा टाल सकूंगी क्या ? टालूंगी तो बगल में रहना मुश्किल कर देंगी सारंगा बहन।"

हम सभी ठठाकर हंस पड़े।

"कहिये तिवारी चाचा," शिबू बोला—"आप फिर सन्नाटे में डूब गए। बहू को पढ़ाने के लिए भेजना पसन्द नहीं है ?"

"पसन्द नापसन्द की क्या बात है।" महेन्द्र बोला—"ऐसे खाली बैठी रहेंगी

तो कभी आराम नहीं कर सकतीं। केवल एक रोग है इन्हें। वह है सोचना, सोचना, सोचना। आप ठीक कह रहे हैं शिबू भाई साहब, भाभी कह दो कि मंजूर है पढ़ाना।"

"मैं कैसे कहूं महेन्द्र जी, कहना तो बाबू जी को है।"

"घर का खाना बनाना, सुनीत की देखभाल···सोच लो तोहन लोग।" तिवारी जी बोले।

"ऊ सब मैं करूंगा," महेन्द्र बोला—"सुनीत तो इनके यहां जाता ही नहीं।"

"और खाना बनाना भी आप करेंगे देवर जी ?"

"नहीं भई, वह सब देवरानी करेंगी" शिबू बोला—"मैं तिलकहरु लेकर आने ही वाला हूं। अच्छा तिवारी चाचा, चलूं अब।"

वह बिना कुछ कहे झोला लेकर चल पड़ा।

"करमूपुरा जनपद से कुट्टी करके जा रहे हैं क्या ?" चन्द्रा धीरे से बोली—"अब कब दर्शन होंगे ?"

वह उसके पैरों में झुकने ही वाली थी कि उसने रुखाई से कहा—"अपने को संभालो। परम्परा तोड़ना बहुन कठिन होता है। जितनी टूट रही है उतनी ही को संबल बनाना है। करमूपुरा जनपद कभी भूलेगा क्या ? जरूर आऊंगा।"

वह बिना कुछ कहे निर्मोही जैसा चल पड़ा।

"शिबू मास्टर !" मैंने कर्मनाशा स्टेशन की ओर यात्रा में कहा। "इस घटना ने तुम्हारी सारी पोल खोल दी। जिसे दुनिया दिमाग की फिरकी कहती है, वह असल में तुम्हारी एक पद्धति है, पर रहस्य तो बिल्कुल नहीं है। तुम चन्द्रा के बारे में ही मेरा विश्लेषण सुनो।"

"सुनाओ।" वह मुस्कराया।

"सुनो, जब तुम्हारे पास महेन्द्र चिट्ठी लेकर आये तो दो चीजें स्पष्ट हुईं। एक तो यह कि तुम जिस तरह सोचते हो, वैसे ढंग वाले लोग ही तुम्हारे मन को जान सकते हैं। तुम जहूर के प्रति कितना स्नेह रखते हो यह चन्द्रा ने उसी दिन जान लिया था जब जहूर तुम्हारे प्रति अपनी श्रद्धा के कारण अपने समधी को लात मारकर चले आये थे। और भी बहुत से सूत्र होंगे जो मुझे ज्ञात नहीं हैं, पर करमूपुरा के निकट बटेश्वर में रहने वाली और तुमसे जुड़ी चन्द्रा जी जानती थीं। इसीलिए आप करमूपुरा रुकेंगे नहीं—यह सीधा और स्वाभाविक निष्कर्ष था। उन्होंने तुक्का नहीं, सही निष्कर्ष का तीर चलाया था।"

"ठीक है। आगे बोलो !" रिसर्चर उसने कहा।

"फिर जब महेन्द्र से रुपये की जानकारी की तो सोचना पड़ा मुझे कि पचीस हजार और खाते वाले पचास हजार निश्चय ही किसी बड़े काम के लिए चाहिए।

चूंकि तुम सब काम पूरा करा चुके हो सिर्फ एक समस्या रह गयी थी वह थी आंगन की डंडवारी। तुम बता भी चुके हो कि रमानाथ की औरत गन्दी और झगड़ालू है अतः मैंने ताड़ लिया कि तुम इतने रुपये अन्यत्र घर बनवाने के लिए एकत्र करना चाहते हो, हां मुझे दीना चाचा के खंडहर का पता नहीं चला—और क्या इतना काफी नहीं है ?'' मैंने उसकी ओर देखा।

''आगे बताओ···''

''मैं बताता हूं बड़े भाई।'' नरैन जी ने कहा।

''बोलो ?''

''आपको मालूम था कि सारंगा के यहां का कन्या प्राइमरी स्कूल जूनियर हाई स्कूल बनने वाला है या बन गया है—''

''बनने वाला नहीं बन गया था क्योंकि मैंने ही दौड़-धूप कर बनवाया और मैंने ही अनुदान दिलाया। मुझे मालूम था। सारंगा को भी मालूम था। मैंने उससे कहा था कि चन्द्रा को निराशा के बाहर निकालने के लिए तुम्हें उस पर दबाव डालकर यहां ले आना चाहिए और सारंगा भाभी मान गयी थीं ? अब आगे बोलो···।'' उसने कहा।

''अब कितना बोलें हम लोग ?'' मैंने और नरैन जी ने एक साथ कहा।

''अच्छा ठीक है। सुनो, तुम दोनों ध्यान से सुनो। आदमी इस विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्यजनक या करामाती यन्त्र है। उसे खास तरह से सोचने की पद्धति में ढाल दो तो ऐसी अद्‌भुत जानकारियां वह देता है जो लोगों को चौंका देती हैं। एकदम भविष्यवाणी जैसी लगती है, पर वे भविष्यवाणियों से कहीं अधिक प्रामाणिक और सत्य होती हैं। इसकी बस एक पद्धति है। लेकिन सीमा भी है। यह तुम सिर्फ उसी व्यक्ति के बारे में बता सकते हो जिसके तन-मन से जुड़ी चीजों का तुम्हें अद्यतन ज्ञान हो। मैं नरैन का बता सकता हूं, तुम्हारा बता सकता हूं, वैसे ही जैसे चन्द्रा का, रोशन का, बंसल का मैं बता सकता हूं। क्योंकि जानकारी का क्षेत्र जितना छोटा होगा, एकाग्रता ज्यादा शक्तिशाली होगी और तुम स्वीकृत-अस्वीकृत करते चलो तो अंततः उसे जान सकोगे जिसे सामान्य लोग चीटिंग या धोखा कहते हैं। अथवा अतिवादी स्तर पर जाकर त्रिकालदर्शी कहते हैं। दूसरी शर्त बहुत बड़ी है। इस पद्धति से कुछ उपलब्धि करना तब कठिन हो जाएगा जब तुम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए गलत चीज की गलत व्याख्याएं बकने लगोगे। जैसे मैं भी एक क्षण के लिए सोचूं कि मुझे रोशन से कुछ चाहिए तो रोशन के सामने ऐसा करना बहुत बुरा होगा क्योंकि प्रथमतः तुम अपना एक प्रिय व्यक्ति खो दोगे। द्वितीयतः यदि तुमने ऐसा शुरू किया तो रोशन जिन्दगी भर अत्याचार सहेगी, पर तुमसे वह कभी भी मन का सत्य कहेगी नहीं। क्योंकि तब तुम एक छली और स्वार्थी के रूप में अपनी छवि को कलुषित कर लोगे। तीसरी बात कि

प्राय: तुम्हें दैनंदिन कार्यों के लिए सक्रिय मस्तिष्क को रिक्त बनाने की प्रक्रिया का अभ्यास होना चाहिए ताकि उस व्यक्ति से संबंधित गलत सूचनाओं या व्याख्याओं को तुम निरर्थक समझ कर फेंक दो और नया सोचो। आरोपों में सत्य मत खोजो।"

"हां बड़े भाई, यह कठिन काम है।" नरैन जी बोले।

"मैं भी मानता हूं शिबू, थोड़ा कठिन है पर साधा जा सकता है।"

वह तड़तड़ा कर हंसा—"अगर सही गुरु मिल सके।"

कर्मनाशा स्टेशन पर मुगलसराय जाने वाली पैसेंजर रुकी। हम तीनों एक डिब्बे में जगह खोज कर बैठ गए। दो-चार मिनट बातें होती रहीं।

"क्यों बड़े भाई !" नरैन ने कहा—"मोनू को इसी साल भेज दूं ?"

"तुम उसे लेकर आ जाना। उसकी मां को भी। वहां रहकर हम देखेंगे। कुछ दिन।"

तभी गाड़ी की सीटी बजी।

नरैन जी ने शिबू के चरण छूकर प्रणाम किया। उसने खड़ा होकर नरैन को आलिंगन में भर लिया।

"हमेशा सावधान रहना।"

नरैन जी प्लेटफार्म पर खड़े थे। गाड़ी सरक रही थी।

मैंने हाथ हिलाया—"गुड बाइ करमूपुरा। फिर आऊंगा। क्यों तुम अपनी मातृभूमि को अलविदा नहीं कहोगे शिबू ?"

"रिसर्चर ! मां को भी अलविदा कहा जाता है कभी।"

☐ ☐